CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

11

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

11·2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सांस्कृतिक विद्या
चरित्रवन, बक्सर (शाहाबाद)
(५८)

ऋग्वेदका सुबोध भाष्य

उषा-देवता

(चारों वेदोंमें आये उषा देवताके मंत्रोंका अर्थ तथा विवरण)

लेखक
महामहोपाध्याय पं० श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल, साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार

स्वाध्याय-मण्डल, पारडी (सूरत)

मूल्य ३) रु.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक :
वसंत श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,
स्वाध्याय मण्डल, आनंदाश्रम,
पारडी [जि. सूरत]

संवत् २०१२ : सन् १९५६

प्रथम वार

मूल्य तीन रुपिया

मुद्रक :
वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,
भारत-मुद्रणालय, आनन्दाश्रम,
किल्ला-पारडी, [जि. सूरत]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

विषयसूची

विषय	पृष्ठ
१ शुनःशेप ऋषि	१-२
दिव्य कन्याका आदर्श। अमर उषा। घोडोंपर बैठनेवाली। धनका दान करनेवाली। तरुण कुमारीका आदर्श (२)	
२ प्रस्कण्व ऋषि	३-१०
ऋषिका नाम ६। उषाके विशेषण। घरका नेतृत्व करनेवाली तरुणी। उषाका वर्णन ७। शत्रुको दूर करे ९।	
३ गौतम ऋषि	१०-१६
ध्वजको ऊंचा करना १३। वीरोंके तीक्ष्ण शस्त्र। गौ माता है। उत्तम गृहिणी १४। स्त्री अपना सौंदर्य बढावे। धन कैसा हो १५।	
४ कुत्स ऋषि	१७-२३
बालककी माता २१। स्त्रियोंके लिये उपदेश।	
५ कक्षीवान् ऋषि	२४-३२
तरुणी स्त्री ३०। भ्रातृहीन स्त्री ३०-३२	
६ विश्वामित्र ऋषि	३३-३६
आदर्श तरुणी ३५।	
७ वामदेव ऋषि	३६-४१
८ सत्यश्रवा ऋषि	४१-४५
शत्रुको दूर करें ४५।	
९ भरद्वाज ऋषि	४६-४८
१० वसिष्ठ ऋषि	४९-६४
स्त्रियोंकी योग्यता ५०। पुत्रीकी शिक्षा ५१। स्त्रीका अधिकार स्त्री प्रशासिका है। स्त्री रथमें बैठकर जाती है। गायों नहीं है! भगवा ध्वज ५४। राजप्रासाद। सूर्योदयके पूर्व उषाके बहुत दिन। स्त्रीके लिये आदेश ५७।	
११ संवर्त ऋषि	६४
१२-१४ उषासानक्ता, मेधातिथि, दीर्घतमा, अगस्त्य	६५-६८
१५-१७ गृत्समद, विश्वामित्र, वसुश्रुत	६६
१८-२० वसिष्ठ, जमदग्नि, असितः	६७
२१-२१ सुमित्र, जमदग्नि	६८
ऋग्वेदमें उषाके मंत्र	६८-१७८
उषाका उत्पन्नकर्ता इन्द्र ६८। तीनवार अन्न सेवन ६९। उषाके पूर्व अग्निदेव। ज्ञानी याजक अग्नि प्रदीप्त करते हैं ७०। पहिली उषा। उषाके पश्चात् सूर्योदय ७१। रात्री और उषाका परिभ्रमण ७२। स्त्री जारसे संबंध न करे। मिलाप करनेवाली उषा ७३। बल बढानेवाली उषाएं ७७। उषाका रथ तोडनेवाला इन्द्र ७८। आनेवाली बहुत उषाएं ७९। तीन उषाएं ८१। उषाका सत्कार करनेवाला इन्द्र ८२। अनेक उषाएं। उषाके सात पुत्र ८४। इन्द्रका द्वेष करनेवाली स्त्रीका वध ८६। उषाका रथ तोड दिया। उषाका सत्कार ८८। आर्यपत्नी उषा ९३।	
यजुर्वेदमें उषाके मंत्र	१०९-११२
अथर्व वेदमें „ „	११३-११९
विभिन्न देवताओंके मंत्रोंमें उषाका वर्णन	११९
उषा देवताके मंत्रोंके ऋषि	१२०
उषाका वर्णन	१११-१४७
उषा कन्या है १२१। उत्तम बहिन। तरुणी उषा। प्रशंसनीय उषा १२२। स्त्री वीरा हो। कर्ममें कुशल। यशस्विनी उषा १२३। गौका रक्षण। घोडोंकी पालना। रथपर बैठनेवाली। उषाका दातृत्व। विदुषी। निर्दोष १२४। सौंदर्य। दो वेणीवाली। तेजस्वी पुत्रवाली १२५। धनवाली तरुणी। उषाका आदर्श १२६। विशाल बुद्धिवाली स्त्री। समभाव १२७। सबका निरीक्षण १२८। सुन्दरताको बढाना। दो वेणियां १३०। शरीरके अवयवोंका दर्शन। छातीको दिखाना १३१। मार्गदर्शन १३२। दिव्य व्रतोंका पालन। शुभ कर्म करनेकी प्रवृत्ती। उद्यमशीलता १३३। वस्त्र बुननेका कार्य १३४। ऋणको दूर करना। संरक्षण करनेवाली स्त्री। पहिले जागना १३६। द्वार खोल दो १३७। घरमें प्रकाश करो। विरुद्ध रूपवाली दो बहिनें। उत्तम गृहिणी १३९। मातापिताकी तृप्ति। पिता। पतिप्रेम १४१। पुत्रवाली स्त्री पति और श्वशुरकी सेवा। घर। रथ, घोडे और गौवें। अन्न १४३। धन। स्त्री धन दान करती है १४४। उषाके लिये नमन १४६। उषाका ध्वज। न्यायालयमें स्त्रीका जाना। जारसे संबंध।	

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

उषा देवताका काव्य

उषा देवताका यह उत्तम काव्य है। इसमें ४४९ मंत्र हैं। करीब ३३ देवताओंके वर्णनोंमें ये मन्त्र आये हैं। ९२ ऋषियोंके सूक्तोंमें उषाका वर्णन है। उषाका काव्य काव्यकी दृष्टीसे भी बडा महत्त्वका है। इसमें अलंकार, बोध तथा उत्तम उपदेश तरुण स्त्रियोंके लिये है। इस दृष्टीसे यह काव्य वारंवार मनन करने योग्य है।

उषा कन्या है, वह तरुण बनती है, वह विदुषी है। शूर है, घरमें पहिले उठती है, घरमें प्रकाश करती है। घरकी स्वच्छता करती है, गौवें बछडे आदिको देखती है। रथपर बैठकर घूमती है। अपना सौंदर्य बढाती है और अपना सौंदर्य बताती भी है।

पुत्री, बहन, पत्नी, माता आदिके सदाचारके उपदेश देनेके लिये सुंदर वर्णन करके अनेक महत्त्व पूर्ण उपमाओं द्वारा स्त्रियोंके सामने ये उपदेश रखे हैं।

अनेक ऋषियोंके सूक्तोंमें उषाका वर्णन है। सब वर्णन पाठक वारंवार पढें, उनके उपदेशोंकी तुलना करें और बोध प्राप्त करें।

यहां हमने थोडासा स्पष्टीकरण किया है और दर्शाया है कि वेदमंत्रोंसे बोध किस तरह लिया जाता है। पाठक विशेष मनन करके अधिक बोध प्राप्त करें। स्त्रियोंके लिये ये उषाके मंत्र विशेष ही उपयोगी हैं। तरुण स्त्रियोंको इनका मनन अधिक करना योग्य है।

स्वाध्याय मण्डल,
पारडी, जि. सूरत
ता. १३।३।५६

लेखक
श्री. दा. सातवलेकर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋग्वेदका सुबोध भाष्य

उषा देवता

(१) शुनःशेप ऋषिका उषाका वर्णन

(ऋ० १।३०।२०-२२)

आजीगर्तिः शुनःशेपः स वैश्वामित्रो देवरातः । २०-२२ उषाः । गायत्री ।

१ कस्त उषः कधप्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये । कं नक्षसे विभावरि ॥ २० ॥

२ वयं हि ते अमन्मह्याऽऽन्तादपराकात् । अश्वे न चित्रे अरुषि ॥ २१ ॥

३ त्वं त्येभिरा गहि वाजेभिर्दुहितर्दिवः । अस्मे रयिं नि धारय ॥ २२ ॥

---

१ (हे कध-प्रिये) स्तुति जिसको प्रिय है ऐसी (अ-मर्त्ये) अमर (विभावरि) विशेष प्रभावाली (उषः) उषा देवी ! (ते भुजे कः मर्तः) तुझसे भोग प्राप्त करनेके लिये कौन मनुष्य योग्य है ? और तू (कं नक्षसे) किसके पास जाती है ? (२०)

२ (अश्व्ये न चित्रे अरुषि) हे घोडीयोंसे युक्त अथवा व्यापक, अथवा घोडियोंके समान चित्र विचित्र तेजवाली उषा देवी ! (आ आन्तात् आ पराकात्) समीपसे अथवा दूरसे (वयं हि ते) हम सब तेरा ही (अमन्महि) ध्यान करते हैं । (२१)

३ हे (दिवः दुहितः) स्वर्गकन्ये उषा ! (त्वं त्येभिः वाजेभिः) तू उन अन्नों और बलोंके साथ (आ गहि) आओ और (अस्मे रयिं नि धारय) हमें धन देदो ॥ (२२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुनःशेप ऋषिका उषा दर्शन

दिव्य कन्याका आदर्श

ये शुनःशेप ऋषिके उषा देवताके तीन मंत्र हैं। इनमें उषाको ' **स्वर्गकन्या** ' कहा है। यह (**दिवः दुहिता**) द्युलोककी पुत्री है। यह (विभावरी) विशेष चमकनेवाली, विशेष तेजस्विनी है, यह (अरुषी) प्रकाश करनेवाली, स्वयं प्रकाश फैलानेवाली है। द्युलोक प्रकाश देनेवाला है। द्युका ही अर्थ प्रकाशनेवाला है। ये सब उषाके विशेषण उसकी तेजस्विता बता रहे हैं।

अमर उषा

' **अ-मर्त्या** ' यह उसका विशेषण उसका " सदा आनेका भाव " बता रहा है। वस्तुतः यह उषा सूर्योदय होनेसे नष्ट होती है, परंतु फिरसे दूसरे दिन वैसीही तरुणी बनकर चमकती हुई आती है। इसलिये कभी वृद्ध न होनेके कारण और सदा तरुण रहनेके कारण इसका वर्णन ' अ-मर ' पदसे किया गया है।

घोडोंपर बैठनेवाली

' **अश्व्या** ' यह एक इसका और विशेषण है। घोडोंसे यह युक्त है। उषःकाल होते ही वीर लोग घोडोंपर सवार होकर बाहर जाते हैं। उषा आते ही चारों ओर घुडसवार चलने लगते हैं। इसलिये इसको ' अश्व्या ' कहा है। इसी तरह ' **कथ-प्रिया** ' भी इसको कहा है। कथा जिसको प्रिय है। उषःकाल होते ही ईश्वरके स्तोत्र स्तोतागण गाते हैं, कथाएं कहीं जाती हैं। इसलिये उषाको कथा तथा स्तुतिप्रिय है ऐसा वर्णन किया गया है।

१ **कः मर्तः ते भुजे**— कौन मनुष्य तुझसे भोगके पदार्थ प्राप्त करनेके लिये योग्य होता है? इस प्रश्नका उत्तर आगेके मंत्रोंमें आया है। जो (उषः-बुध्) उषःकालमें जागता है और कार्य करने लगता है वह भोगके पदार्थ प्राप्त कर सकता है। जो उषःकालमें सोता रहेगा वह भोग प्राप्त नहीं कर सकता। अतः उषःकालमें उठकर अपना कार्य शुरू करना चाहिये। यह इस मंत्रका बोध है।

१ ' **कं नक्षसे ?** ' किसके पास तू जाती है? अर्थात् जो उषःकालमें उठता है, अपना कार्य शुरू करता है, उसको भोगके पदार्थ देनेके लिये उसके पास उषा जाती है, कार्यकर्ताको उषा धन देती है। अतः उषःकालके पूर्व उठकर कार्य शुरू करना चाहिये यह इसका आशय है।

२ **वयं हि ते आ आन्तात् आ पराकात् अमन्महि**— हम सब समीपसे और दूरसे उषाका स्तोत्र गाते हैं, उषाकी ओर देखते हैं, उषाका वर्णन करते हैं, उषाके प्रकाशसे प्रकाशित होते हैं, उषःकालके पूर्व उठकर अपना कर्तव्य करते हैं।

धनका दान

३ **त्वं वाजेभिः आगहि**— हे उषा! तू उन अन्नोंके साथ आओ और ' **अस्मे रयिं निधारय** '—हमें धन दो। क्योंकि हम उषःकालके पूर्व उठे हैं और उषाके प्रकाशका ध्यान कर रहे हैं। इसलिये हमें अन्न और धन मिलना चाहिये। यह अन्न और धन हमें मिला, तो उसका उपयोग करके हम यज्ञ करेंगे, जिससे विश्वका हित होगा।

तरुण कुमारीका आदर्श

उषाका वर्णन ' तरुणी ' का वर्णन है, यह द्युलोककी पुत्री है। द्यु पिता है, पृथ्वी माता है, इनसे उषा कन्याका जन्म हुआ है। द्यावापृथिवीकी यह पुत्री है। द्यावापृथिवी श्रेष्ठ देवताएं हैं, उन दिव्य देवताओंकी यह दिव्य तेजस्विनी और यशस्विनी पुत्री है। आगेके सूक्तोंमें पाठक इसी उषा देवताका वर्णन देख सकते हैं। इन वर्णनोंमें दिव्य कन्याका आदर्श पाठक देख सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्कण्व ऋषिका उषावर्णन

(ऋ० १।४८।१-१६)

प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः । प्रगाथः ।

४ सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः ।
सह द्युम्नेन बृहता विभावरि राया देवि दास्वती ॥ १ ॥

५ अश्वावतीर्गोमतीर्विश्वसुविदो भूरि च्यवन्त वस्तवे ।
उदीरय प्रति मा सूनृता उषश्चोद राधो मघोनाम् ॥ २ ॥

६ उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम् ।
ये अस्या आचरणेषु दध्रिरे समुद्रे न श्रवस्यवः ॥ ३ ॥

७ उषो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनो दानाय सूरयः ।
अत्राह तत् कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम् ॥ ४ ॥

८ आ घा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुञ्जती ।
जरयन्ती वृजनं पद्वदीयत उत्पातयाति पक्षिणः ॥ ५ ॥

---

४ हे (दिवः दुहितः उषः) स्वर्गकन्ये उषा देवी ! (वामेन सह नः व्युच्छ) उत्तम धनके साथ हमारे लिये प्रकाशित होती रह । हे (विभावरि देवी) तेजस्वीनी देवी ! (बृहता द्युम्नेन सह) बडे तेजस्वी धनके साथ प्रकाशित होओ और हे उषा ! (दास्वती) दान देनेवाली तू (राया) बडे वैभवसे प्रकाशित हो जाओ ॥ (१)

५ (अश्वावतीः गोमतीः) घोडोंवाली और गौवोंवाली तथा (विश्व सु-विदः) सब प्रकारके धनको प्राप्त करानेवाली उषाएँ (वस्तवे भूरि च्यवन्त) प्रजाजनोंके निवासको हितकारी करनेके लिये बहुत प्रकारसे प्रकाशित हो चुकी हैं । (मा प्रति सूनृता उदीरय) ऐसी तू मेरे लिये हितकारी वाणी बोल । हे (उषः) उषा ! (मघोनां राधः चोद) धनवानोंके योग्य धन हमारे पास भेज ॥ (२)

६ जो (उषाः देवी उवास) उषा देवी पहिले भी निवास कर चुकी थी (रथानां जीरा) वह रथोंको चलानेवाली उषा (च नु उच्छात्) और भी प्रकाशती रहे । (श्रवस्यवः समुद्रे न) धनकी इच्छा करनेवाले लोग जिस तरह समुद्रमें नौकाएं चलाते हैं, उस तरह (ये अस्याः आचरणेषु दध्रिरे) जो रथ इस उषाके आगमनके समय तैयार रखे रहते हैं उन रथोंको उषा चलाती है ॥ (३)

७ हे (उषः) उषा देवी ! (ते यामेषु) तेरे आगमनके समय (ये सूरयः) जो विद्वान् (मनः दानाय प्र युञ्जते) अपना मन धनादिका दान करनेमें लगा देते हैं, (एषां नृणां) इन मनुष्योंके (कण्वतमो नाम कण्वः) अत्यंत बुद्धिमान करके जो प्रसिद्ध है वह कण्व ऋषि (अत्र अह गृणाति) यहां ही स्तोत्र गाता है ॥ (४)

८ (सू-नरी योषा इव) उत्तम गृहिणी स्त्रीके समान (प्रभुञ्जती उषाः) विशेष रीतिसे सबका पालन करनेवाली उषा (घ आ याति) आ रही है । वह (वृजनं जरयन्ती) बलवान् बना देती है (पद्वत् ईयते) पांववालोंको चलाती और (पक्षिणः उत्पातयति) पाक्षियोंको उडाती है ॥ (५)

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९ वि या सृजति समनं व्य१र्थिनः पदं न वेत्योदती ।
वयो न किष्टे पप्तिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनीवति ॥ ६ ॥
१० एषायुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।
शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान् ॥ ७ ॥
११ विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्रिधः ॥ ८ ॥
१२ उष आ भाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।
आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभगं व्युच्छन्ती दिविष्टिषु ॥ ९ ॥
१३ विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरि ।
सा नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामघे हवम् ॥ १० ॥
१४ उषो वाजं हि वंस्व यश्चित्रो मानुषे जने ।
तेना वह सुकृतो अध्वराँ उप ये त्वा गृणन्ति वह्नयः ॥ ११ ॥

---

९ (या स-मनं विसृजति) जो मननशील पुरुषोंको कार्य करनेके लिये प्रेरित करती है, (अर्थिनः वि) धनेच्छुओंको जो प्रेरित करती है तथा (ओदती पदं न वेति) जीवन देनेवाली यह उषा एक स्थानपर स्थिर नहीं रहती। हे (वाजिनीवति) वैभवसंपन्न उषा देवी ! (ते व्युष्टौ) तेरे प्रकाशित होनेपर (पप्तिवांसः वयः) उडनेवाले पक्षी भी (न किः आसते) बैठे नहीं रहते ॥ (६)

१० (एषा) यह उषा (परावतः सूर्यस्य उदयनात् अधि) दूरसे सूर्यके उदयके पूर्व ही (अयुक्त) अपने रथोंको जोतती है। (इयं सुभगा उषा) यह उत्तम भाग्यवाली उषा (मानुषान् अभि) मनुष्योंके प्रति (शतं रथेभिः वि याति) सेकडों रथोंसे जाती है ॥ (७)

११ (विश्वं जगत्) सब जगत् (अस्याः चक्षसे ननाम) इस उषाको देखते ही नमस्कार करता है क्योंकि यह (सु-नरी) उत्तम संचालन करनेवाली उषा (ज्योतिः कृणोति) प्रकाश करती है। (मघोनी दिवः दुहिता उषाः) ऐश्वर्यवाली यह स्वर्गीय कन्या यह उषा (स्रिधः द्वेषः अप अप उच्छत्) हिंसक शत्रुओंको दूर करती है ॥ (८)

१२ हे (दिवः दुहितः उषः) स्वर्गकन्ये उषा देवि ! (चन्द्रेण भानुना आ भाहि) तू आल्हाददायक प्रकाशसे प्रकाशित हो। (दिविष्टिषु व्युच्छन्ती) दिनोंके इष्टीके समय अन्धकारको दूर करती हुई (अस्मभ्यं भूरि सौभगं आवहन्ती) हमारे लिये विपुल सौभाग्य ले आओ ॥ (९)

१३ हे (सु-नरि) उत्तम नेतृत्व करनेवाली उषा देवी ! (यत् वि उच्छसि) जब तू अन्धकार दूर करती है, तब (त्वे हि विश्वस्य प्राणनं जीवनं) सब विश्वका प्राण और जीवन तेरे अन्दर ही रहता है। हे (चित्रामघे वि-भा-वरि) विलक्षण धनवाली तेजस्वीनी उषा देवि ! (सा) वह तू (बृहता रथेन) अपने बडे रथसे आ और (नः हवं श्रुधि) हमारी प्रार्थनाका श्रवण कर ॥ (१०)

१४ हे (उषः) उषा ! (यः मानुषे जने चित्रः) जो मानवी लोगोंमें विलक्षण अन्नधन है, (वाजं वंस्व हि) उस अन्नधनका तुम स्वीकार कर, यज्ञमें दिये हुए अन्नभागका स्वीकार कर। तथा (ये वह्नयः त्वा गृणन्ति) जो याजक तेरी स्तुति गाते हैं, (तेन सुकृतः अध्वरान् उप वह) उनसे संतुष्ट होकर पुण्य कर्म करनेवालोंको यज्ञोंके समीप ले जाओ ॥ (११)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५ विश्वान् देवाँ आ वह सोमपीतयेऽन्तरिक्षादुषस्त्वम् ।
सास्मासु धा गोमदश्वावदुक्थ्य१मुषो वाजं सुवीर्यम् ॥ १२ ॥
१६ यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदृक्षत ।
सा नो रयिं विश्ववारं सुपेशसमुषा ददातु सुग्म्यम् ॥ १३ ॥
१७ ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्व ऊतये जुहूरेऽवसे महि ।
सा नः स्तोमाँ अभि गृणीहि राधसोषः शुक्रेण शोचिषा ॥ १४ ॥
१८ उषो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः ।
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः ॥ १५ ॥
१९ सं नो राया बृहता विश्वपेशसा मिमिक्ष्वा समिळाभिरा ।
सं द्युम्नेन विश्वतुरोषो महि सं वाजैर्वाजिनीवति ॥ १६ ॥

(ऋ० १।४९।१-४)
(प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः । अनुष्टुप्)

२० उषो भद्रेभिरागहि दिवश्चिद्रोचनादधि ।
वहन्त्वरुणप्सव उप त्वा सोमिनो गृहम् ॥ १ ॥

---

१५ हे (उषः) उषा ! (त्वं) तू (सोमपीतये) सोम पानके लिये (विश्वान् देवान् अन्तरिक्षात् आ वह) सब देवोंको अन्तरिक्षसे ले आओ । हे (उषः) उषा ! (सा) वह तू (गोमत् अश्ववत् उक्थ्यं सुवीर्यं वाजं) गौओं और घोडोंसे समृद्ध प्रशंसनीय वीर्य बढानेवाला अन्न बल तथा उत्तम वीर्य (अस्मासु धाः) हमारे अन्दर धारण कर ॥ (१२)

१६ (यस्याः रुशन्तः अर्चयः) जिस उषाके शत्रुनाशक तेजस्वी किरण (भद्राः) कल्याणकारी हैं ऐसे (प्रति अदृक्षत) दीख रहे हैं । (सा उषाः) वह उषा (नः) हमें (विश्ववारं सुपेशसं सुग्म्यं रयिं) सबके स्वीकार करने योग्य सुंदर और सुखकारक धन (ददातु) देवे ॥ (१३)

१७ हे (महि उषः) श्रेष्ठ उषा ! (त्वां ये चित् हि) तुम्हारी जो कोई (पूर्वे ऋषयः) प्राचीन ऋषि (ऊतये अवसे जुहूरे) संरक्षण और अन्न प्राप्तिके लिये प्रार्थना करते थे, (सा) वह तू (राधसा शुक्रेण शोचिषा) सिद्धि, वीर्य और तेजसे युक्त होकर (नः स्तोमान् अभि गृणीहि) हमारे स्तोत्रोंकी प्रशंसा कर ॥ (१४)

१८ हे (उषः) उषा ! (यत् अद्य) जब तूने आज (भानुना) अपने प्रकाशसे (दिवः द्वारौ ऋणवः) द्युलोकके दोनों द्वार खोल दिये हैं, (नः अवृकं पृथु छर्दिः) तब हमें अहिंसक विस्तीर्ण तेजस्वी घर रहनेके लिये (प्र यच्छतात्) दे दो । हे देवि उषा ! तथा (गोमतीः इषः प्र) गोदुग्धादि युक्त अन्न हमें प्राप्त हों ॥ (१५)

१९ हे (उषः) उषा ! (बृहता विश्वपेशसा राया) बड़े अत्यंत सुंदर धनसे (नः सं मिमिक्ष्व) हमें संयुक्त कर, तथा (इळाभिः सं आ) गौओंसे युक्त कर । हे (वाजिनीवति महि उषः) अन्नवाली श्रेष्ठ उषा ! (विश्वतुरा द्युम्नेन सं) शत्रुनाशक तेजस्वी धनसे हमें युक्त कर । तथा (वाजैः सं) अन्नों और बलोंसे हमें युक्त कर ॥ (१६)

२० हे (उषः) उषा ! (दिवः रोचनात् चित् अधि) द्युलोकके तेजस्वी स्थानसे (भद्रेभिः आ गहि) कल्याण करनेवाले मार्गोंसे इधर आओ । (अरुण-प्सवः) अरुण वर्णके घोडे (त्वा सोमिनो गृहं) तुझे सोमयाजकके घर (उप वहन्तु) पहुंचा देवें ॥ (१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२१ सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उषस्त्वम् ।
तेना सुश्रवसं जनं प्रावाद्य दुहितर्दिवः ॥ २ ॥
२२ वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपच्चतुष्पदर्जुनि ।
उषः प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि ॥ ३ ॥
२३ व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमाभासि रोचनम् ।
तां त्वामुषर्वसूयवो गीर्भिः कण्वा अहूषत ॥ ४ ॥

---

२१ हे (उषः) उषा ! (त्वं यं सुपेशसं सुखं रथं) तू जिस सुन्दर सुखदायी रथपर (अध्यस्थाः) बैठी है । हे (दिवः दुहितः) स्वर्गीय कन्ये ! (तेन) उस रथसे (अद्य सुश्रवसं जनं) आज उत्तम अन्नवाले मनुष्यका (प्र अव) विशेष रक्षण कर ॥ (२)

२२ हे (अर्जुनि उषः) गौरवर्णवाली उषा ! (ते ऋतून् अनु) तुम्हारे आगमनके अनुसार (द्विपत् चतुष्पत्) द्विपाद मनुष्य, चतुष्पाद पशु और (पतत्रिणः वयः चित्) उडनेवाले पक्षी (दिवः अन्तेभ्यः परि) द्युलोकके अन्ततक तेरा स्वागत करनेके लिये (प्र- आरन्) उडते हैं ॥ (३)

२३ हे (उषः) उषा देवी ! (व्युच्छन्ती) अन्धकारको दूर करनेवाली तू (रश्मिभिः विश्वं रोचमानं) अपने किरणोंसे सब विश्वको तेजस्वी करके (आ भासि) प्रकाशित करती है । (तां त्वां) उस तुझको (वसूयवः कण्वाः) धनकी इच्छा करनेवाले ज्ञानी कण्व ऋषि (अहूषत) बुलाते हैं ॥ (४)

कण्व कुलोत्पन्न प्रस्कण्व ऋषिका

उषाका वर्णन

ऋषिका नाम

इन मंत्रोंमें ' ७ कण्वतमः कण्वः गृणाति '- कण्वोंमें श्रेष्ठ कण्व अर्थात् प्रस्कण्व ऋषि स्तुति करता है ऐसा (१।४८। ४ में) कहा है । तथा ' १३ वसूयवः कण्वाः अहूषत '- धनकी इच्छा करनेवाले कण्व ऋषि स्तुति करते हैं । इस तरह इन मंत्रोंमें कण्व ऋषिका तथा कण्व गोत्रवालोंका नाम आया है । कईयोंकी संमति यह है कि ' कण्व ' पद ' कण् ' धातुसे बनता है, इस कारण ' स्तुति करनेवाला, प्रवचनकार ' ऐसा इसका अर्थ है । ' कण्वतमः ' का अर्थ प्रवचन करनेवालोंमें श्रेष्ठ विद्वान् । इस तरह अर्थ माननेसे किसी व्यक्तिका संबंध इन सूक्तोंसे नहीं होता ।

हमने वसिष्ठ मंत्रोंमें वसिष्ठोंके नाम देखे और यहां हम कण्वके नाम देखते हैं । इस विषयमें दोनों संमतियां हमने पाठकोंके सामने रखीं है । इसका अधिक विचार पाठक करें ।

उषाके विशेषण

' उषा, उषस् ' इन पदोंका अर्थ ' प्रकाशनेवाली ' है । यह सदा तेजस्विनी है, अन्धकार दूर करती है और लोगोंको प्रकाश बताकर मार्गदर्शन करती है । जनताको कार्य करनेमें प्रयुक्त तथा प्रेरित करती है ।

इस उषाका प्रमुख नाम ' दिवः दुहिता ' है । अनेक वार ये ही उषाके वर्णनमें पद आगये हैं । द्युलोककी यह पुत्री है । यह स्वर्गीय कन्या है, दिव्य पुत्री है । घरमें पुत्री कैसी होनी चाहिये । इसका उत्तर यह है कि ' उषाके समान आर्योंके घरकी पुत्री ' होनी चाहिये । उषा आदर्श है पुत्रीके लिये । स्वर्गीय कन्याका अर्थ ही आदर्शकन्या है ।

यह ' देवी ' है । देवी प्रकाशनेवालीको कहते हैं । तेजस्वी होनेसे देवी कहलाती है । आर्योंके घर पुत्रियोंसे तेजस्वी होने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहिये। '**विभावरी**' का भी यही अर्थ है, (वि) विशेष रीतिसे (भा) प्रकाश करनेमें (वरी) श्रेष्ठ जो होती है। यह कन्याका तेजस्वी होना सूचित करता है।

'**अर्जुनी**' यह इसका नाम इसके प्रकाशमान होनेकी सूचना देता है। श्वेतवर्णवाली गौरवर्णवाली उषा सूर्योदयके पूर्व होती है। इस समय इसका नाम 'अर्जुनी' होता है।

घरका नेतृत्व करनेवाली तरुणी

'**सु-नरी**' का अर्थ 'सुंदरी' है अथवा 'उत्तम नेतृत्व करनेवाली' है। जब कन्या प्रौढ होती, पुरुषके साथ विवाह करने योग्य हो जाती है, तब वह घरका उत्तम नेतृत्व कर सकती है और उस समय वह यौवनसंपन्न होनेके कारण 'सुंदरी' भी कही जा सकती है। '**चित्रा-मघा**' इस समय उसका सौंदर्य विलक्षण आश्चर्यकारक होता है। वह (मघा) बडी भी होती है और विलक्षण आभूषण भी धारण करती है। अतः विशेष सुंदर दीखती है। इस समय यह '**मही**' अर्थात् 'बडी' कहलाती है। यह कुमारी नहीं, कन्या नहीं परंतु यौवनमें बढनेवाली अतः (मही) बडी कहलाती है। इसी समय यह सब घरका नेतृत्व करती है। यह ऐसी सुयोग्य समझी जाती है कि पति इस पर अपना घरका सब कार्य छोड-कर आनन्दसे अन्य कार्यमें दत्तचित्त हो सकता है।

इतनी इसकी योग्यता होनेके कारण यह इस समय '**वाजिनीवती**' अर्थात् 'अन्नवाली' कहलाती है। इसके अर्थ 'अन्नवाली, बलवाली, ओजस्विनी' आदि होते हैं।

यह उषा गौरवर्ण है, तेजस्विनी है, बल बढानेवाला अन्न तैयार करनेकी विद्या यह जानती है। अन्न शीघ्र पच जाय और खानेवालेका बल बढावे ऐसा अन्न तैयार करनेकी विद्या यह जानती है। यह लाल, पीला आदि अन्न रंगोंके चमकीले वस्त्र पहनती है, अपनी सुंदर रूप और कान्ति बढाती है और अधिकाधिक सुंदर बनती जाती है।

आर्यकन्या ऐसी बननी चाहिये। रूपवती, तेजस्वी, सत्कर्म प्रवृत्त, सुन्दर वस्त्र धारिणी, अपने सौंदर्यको बढानेवाली, लोगोंका चित्त अपने सद्भावसे अपनी ओर आकर्षित करनेवाली, सत्प्रवृत्त, सद्वृत्त, लोगोंको सत्कर्ममें प्रवृत्त करनेवाली दिव्य प्रवृत्ती बढानेवाली ऐसी आर्यकन्या होनी चाहिये। इस विषयका वर्णन और देखिये—

उषाका वर्णन

४ हे उषः! वामेन सह, द्युम्नेन सह, बृहता राया सह व्युच्छ (१।४८।१)- हे उषा! उत्तम प्रिय सुन्दर, तेजस्वी विशाल धनके साथ प्रकाशित हो। अन्धकारको दूर करो। यहां 'वाम' पद बडा महत्त्वका है। 'प्रिय, सुन्दर, आदरणीय, रमणीय, अपने पास रखने योग्य, स्त्रियोंके आभूषण के लिये योग्य' ये अर्थ 'वाम' के हैं। धन ऐसा हो जो स्त्रियोंके साथ रहना योग्य है। इस धनका '**दास्वती**' दान वह करे।

५ अश्वावतीः गोमतीः विश्वसुविदः वस्तवे भूरि च्यवन्त (१।४८।२)— घोडोंवाली तथा गौओंवाली सब धनको प्राप्त करनेवाली उषाएं निवास करनेवाले मनुष्योंका हित करनेके लिये प्रकाशित हो रही हैं। उषा प्रकाशती है, लोगोंको प्रकाश मिलता है जिससे उनको जीवन रस मिलता है। उषा न आगयी तो मनुष्य सूर्य प्रकाशसे वंचित रहेंगे। '**विश्व-सु-विदः**' सबको सुख प्राप्त होता है वह उषाके आनेके कारण है। यह उषा (अश्वावती) घोडोंवाली और (गोमती) गौओंवाली है अर्थात् उषःकालमें वीर घोडोंपर सवार होते हैं और बाहर जाते हैं, इसलिये उषाके साथ घोडोंका संबंध है और यह उषा गौओंवाली भी है। उषाके समय गौओं-का दोहन किया जाता है, गौओंसे दूध निकालते हैं और चरने-के लिये बाहेर गौवें जाती है। उषःकालमें ही चारों ओरकी गौवें बाहर आती हुई दीखती हैं। उषःकालमें गौओंका दोहन होता है, इसलिये उषा ही गौओंका दोहन करती है, वह स्वर्गकन्या गौओंका दोहन करती है। उषःकालमें गौओंका दोहन होना चाहिये और गौका दोहन करना दुहिताका पुत्रीका कार्य है, घरकी पुत्री गायोंका दोहन करे। पुत्री दोहन करने-वाली है इस कारण '**दुहिता**' कहलाती है।

मघोनां राधः चोद- धनवानोंके धनोंको दानके लिये प्रेरित कर। धन धनवानोंके कोशमें बंद न रहें। वह बाहर आजांय और जनताके हितके लिये किये जानेवाले यज्ञकर्मोंमें धनोंका व्यय हो।

सूनृता उदीरय— अच्छा हितकारी, शुभ भाषण बोल। बोलना हो तो शुभ भाषण बोल। अहितकारी भाषण कोई न बोले। कल्याण जिससे होगा ऐसा ही भाषण कर। पुत्री क्या बोले? इसका उत्तर सूनृत, सत्य, सुन्दर, मीठा भाषण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोले। कन्याओंको इस तरहका बोलना सिखाया जाय यह इस मंत्रसे बोध मिलता है।

कन्या गौका दोहन करे, रथको घोडे जोतकर अथवा घोडेपर सवार होकर सवेरे ही बाहर जाय, सबको धन प्राप्त करनेके कार्यमें लगा देवे, स्वयं भी ऐसे कार्य करे। रहने सहनेके सुख साधन बढावे, धनोंका शुभ कार्यमें व्यय करे और हितकारी भाषण करे।

६ रथानां जीरा उषा देवी उवास उच्छात् च- (१।४८।३)- रथोंका संचालन करनेवाली उषा देवी उदित होचुकी और प्रकाशने लगी है। इस तरह पुत्री उषःकालमें उठे और रथको जोतकर भ्रमण करे। पुत्रीका प्रकाश इस तरह चारों ओर हो। चारों ओरके मनुष्य इसकी प्रशंसा करें।

श्रवस्यवः समुद्रे दध्रिरे— धनकी इच्छा करनेवाले लोग समुद्रमें जैसी नौकाएं डालते हैं, नगरान्तरमें जाकर व्यापार करके धन कमाते हैं, उस तरह यह उषा रथको उषःकालमें जोतती है और सबको कार्य व्यवहारमें प्रवृत्त करती है और धन कमानेके व्यवहार करवाती है।

ये अस्याः आचरणेषु दध्रिरे— जो रथ उषाके आनेके समय तैयार रहते हैं, वे उषा आते ही चलाये जाते हैं। अर्थात् उषःकालमें स्त्री पुरुष घोडोंपर अथवा रथोंपर सवार होकर भ्रमणके लिये बाहेर जाय, तथा अपने कार्य व्यवसायके लिये लग जांय।

७ ते यामेषु सूरयः मनः दानाय प्रयुञ्जते, एषां नृणां कण्वः गृणाति (१।४८।४)- उषाके आनेके समय जो ज्ञानी लोग अपने मनको दानके कार्यमें प्रवृत्त करते हैं उन मनुष्योंमेंसे यह कण्व ऋषि उषाकी स्तुति करता है। अन्योंकी अपेक्षा इसकी स्तुति अधिक अच्छी होती है क्योंकि यह अधिक विद्वान है। विद्वानके स्तोत्र अच्छे होते हैं।

८ यह उषा उत्तम नेतृत्व करनेवाली (**सूनरी योषा**) गृहिणी स्त्री है। पहिले यह कन्या थी, पुत्री थी, छोटी आयु-वाली थी। अब यह (सू-नरी योषा) घरका उत्तम नेतृत्व करनेवाली तरुण स्त्री हुई है। अर्थात् कवि ऐसा वर्णन कर रहा है कि यह तरुणी पतिके घर जाकर पतिके घरका उत्तम रीतिसे संचालन कर रही है। (**प्रभुञ्जती**) यह उत्तम अन्न तैयार करके घरके लोगोंको खिलाती है। तरुण स्त्री उत्तम अन्न तैयार करके घरके लोगोंको खिलाती और उनको बलवान बनाती है। (**वृजनं जरयन्ती**) बलवान बना देती, चपल बना देती है, वृद्ध अर्थात् दीर्घायु बना देती है। उत्तम अन्नसे यह होता है। घरमें जो तरुण स्त्री हो वह अपने घरमें ऐसा व्यव-हार करे।

पद्वत् ईयते, पक्षिणः उत्पातयति- यह उषा पांव-वालोंको, मनुष्यों और पशुओंको उठाती और कार्यमें प्रवृत्त करती है, और पक्षियोंको अपने घोंसलोंसे बाहर आकर उडनेमें प्रवृत्त करती है। इसी तरह घरकी स्त्री सबसे प्रथम उठे, घरमें दीवे जलावे, प्रकाश करे, पशु और मनुष्योंको जगावे और उन-को कार्यमें प्रवृत्त करे।

पतिके घर पहुंचने पर तरुण स्त्री क्या करे, इसका उपदेश इस मंत्रमें है।

९ समनं विसृजति— वह उषा मननशील पुरुषोंको कार्य करनेके लिये प्रवृत्त करती है। **अर्थिनः विसृजति-** धन चाहनेवाले कार्यकर्ताओंको उनके कार्य करनेके लिये प्रेरित करती है।

ओदती पदं न वेति— यह नवजीवन देनेवाली उषा अपने स्थानपर बैठकर आलस्यमें रहना जानती नहीं। अर्थात् यह अपने घरके कार्योंमें दक्ष और तत्पर रहती है। सदा कार्य करती और दूसरोंसे करवाती रहती है।

ते व्युष्टौ पप्तिवांसः वयः न किः आसते— उषा प्रकाशित होनेपर उडनेवाले पक्षी एक स्थानपर बैठे नहीं रहते। उषा स्वयं आलस्यमें नहीं रहती और दूसरोंको भी आलस्यमें रहने नहीं देती।

१० एषा सूर्यस्य उदयनात् अयुक्त— यह उषा सूर्यके उदय होते ही रथको जोतकर अपने कार्यको करनेके लिये जाती है। यह '**सुभगा उषा मानुषान् शतं रथेभिः अभि वियाति—** यह भाग्यवाली उषा मनुष्योंके पास रथोंमें बैठकर जाती है और उनसे कार्य करवा लेती है। तरुण स्त्री रथ जोतकर अपना कार्य करे, दूसरोंको कार्यमें लगावे और किसीको भी आलस्यमें रहने न दे। सब कर्तव्य तत्पर होकर स्वयं करे और सबसे कार्य करावे। स्वयं उद्यमी बनकर दूसरोंको उद्यमी बना देवे। घरकी स्वामिनी ऐसी हो।

११ अस्याः चक्षसे विश्वं जगत् ननाय— इसके दर्शनसे इसके सन्मुख सब जगत् इसको प्रणाम करता है। इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरुणीका प्रभाव लोगोंपर ऐसा पडता है कि वे इसके सामने आदरसे नतमस्तक होते हैं। सब लोग ऐसा कर्म करने कर-वानेमें कुशल तरुणीका आदर करें। वैदिक समयकी तरुणीकी ऐसा योग्यता रहती थी। कोई पुरुष इसका अपमान करनेके लिये प्रवृत्त नहीं होता था। सब इसके सामने सिर झुकाकर इस तरुणीका आदर करते थे।

शत्रुको दूर करे

उषा ज्योतिः कृणोति, स्त्रिधः द्वेषः अपउच्छात्- उषा अपने घरमें प्रकाश करती है और उससे हिंसक शत्रुओंको दूर कर देती है। तरुणी स्त्री अपने घरमें उषःकालमें उठे, कमरोंको प्रकाशित करे और हिंसकों और द्वेष करनेवाले शत्रु-ओंको दूर करे।

इस उपदेशसे पता चलता है कि कुमारीकाओं और तरुणि-योंको स्वसंरक्षण और गृहसंरक्षण करनेकी शिक्षा मिलनी चाहिये। ऐसी तरुणी स्वसंरक्षण करनेमें और अपने घरका संरक्षण करनेमें समर्थ होती हैं। घरमें हिंसक शत्रु आजांय, तो वह न डरे, पर उनको घरसे भगा देवे। इतनी प्रभावी तरुणी हो। आर्य तरुणीका यह आदर्श है।

१२ हे उषः! चन्द्रेण भानुना आभाहि— हे उषा आल्हादकारक प्रकाशसे प्रकाशित होती रह। तुम्हारी प्रसिद्धि आनंद बढानेवाली हो।

दिविष्टिषु व्युच्छन्ती— देवयज्ञोंमें प्रकाश करो, यज्ञके समय उत्तम प्रकाश हो।

अस्मभ्यं भूरि सौभगं आवहन्ती— हमारे लिये बहुत ऐश्वर्य ले आओ। सौभाग्य, ऐश्वर्य, धन आदि हमें चाहिये।

१३ हे सूनरि! यत् व्युच्छसि, त्वे विश्वस्य प्राणनं जीवनं-हे उत्तम नेतृत्व करनेवाली उषा! जो तुम्हारा प्रकाशित होना है, उस प्रकाशमें सब विश्वका प्राण और जीवन है। उषासे सूर्यका प्रकाश मिलता है वह सब स्थिरचरको जीवन देनेवाला है। अतः कहा है—

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। ऋ०

'सूर्य स्थावर जंगमका आत्मा है।' सूर्य किरणोंमें जीवन रहता है उससे स्थावर जंगमके सब पदार्थ जीवनमय हो जाते हैं। उषाके आनेसे इस सूर्य प्रकाशके मिलनेकी संभावना हो जाती है। यह उषाका महत्त्व है। घरकी तरुणी अपने सात्विक प्रकाशसे प्रकाशित होती रहे, यज्ञशालामें प्रकाश करे, सर्वत्र सौंदर्य बढावे। सबको नवजीवन देवे।

बृहता रथेन- बडे रथमें बैठकर उषा यज्ञस्थानमें आजावे और वहांका स्थान प्रकाशित करे।

१४ यः मानुषे जने चित्रः, वाजं वह— जो मानवोंके पास उत्तम विलक्षण धन होगा, उस बलवर्धक अन्नादि धनको प्राप्त कर और वैसा धन हमें दे दो।

ये वह्नयः त्वा गृणन्ति, तेन सुकृतः अध्वरान् उपवह—जो स्तोत्रपाठक तेरी स्तुति करते हैं, उस स्तुतिको सुननेके लिये सत्कर्म करनेवालोंके यज्ञोंके पास तूं जा। 'वह्नि' का अर्थ 'अग्नि' है। 'वहन करनेवाला' ऐसा इसका मूल धात्वर्थ है। इसलिये 'घोडा, बैल, वाहनका साधन' ऐसा भी इसका अर्थ होता है। 'सुकृत् करनेवालोंके यज्ञस्थानमें पहुंचानेवाले वाहन' ऐसा यहां भाव अभीष्ट है। उषा लोगोंको यज्ञशालामें पहुंचाती है, क्योंकि उषःकालमें याजक यज्ञका कार्य शुरू करते हैं। घर घरमें तरुण स्त्री हवन करे यह इस मंत्र-का बोध है।

१५ हे उषा! गोमत् अश्ववत् उक्थ्यं वाजः सुवीर्यं अस्मासु धाः (१।४८।१२)— हे उषा! तू गौओंवाला तथा घोडोंवाला प्रशंसनीय अन्न जो उत्तम वीर्य शरीरमें उत्पन्न करता है, वैसा अन्न हमें दे। वैसा बल दे। गौवें दूध दही मक्खन घी आदि पदार्थ देती हैं, घोडे बाहरके प्रदेशसे अन्नादि पदार्थ लाते हैं। ये पदार्थ खानेसे उत्तम संतान निर्माण करनेवाला वीर्य शरीरमें उत्पन्न होता है। ऐसा वीर्य हमारे शरीरमें बढे और हमें उत्तम बलवाली संतान हो।

१६ यस्याः रुशन्तः अर्चयः भद्राः प्रति अदृश्यत, सा उषाः नः विश्ववारं सुपेशसं सुगम्यं रयिं ददातु— जिस उषाके किरण सुन्दर और कल्याण करनेवाले हैं, वह उषा मनुष्योंको स्वीकारने योग्य सुंदर सुखदायी धन हमें देवे।

१७ हे महि! ये पूर्वे ऋषयः त्वां ऊतये अवसे जुहूरे, सा त्वं राधसा शुक्रेण शोचिषा नः स्तोमान् अभिगृणीहि— हे श्रेष्ठ उषा देवि! प्राचीन श्रेष्ठ ऋषि अपनी सुरक्षाके लिये तुम्हारी प्रार्थना करते रहे, वह तू उत्तम तेजस्वी सिद्धिके साथ हमारे यज्ञोंके संबंधका उत्तम वर्णन कर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे शुभ कर्मकी प्रशंसा कर। जिससे हमें अधिक शुभकर्म करनेकी उत्तेजना मिले।

१८ हे उषः ! अद्य भानुना दिवः द्वारौ ऋणवः, नः अवृकं पृथु छर्दिः गोमतीः इषः प्रयच्छतात्।– हे उषा ! आज तूने अपने प्रकाशसे द्युलोकके दोनों द्वार खोल दिये हैं, अब हिंसा जहां नहीं होती ऐसे विशाल घर और गौवोंके साथ पर्याप्त अन्न हमें प्रदान कर। तरुण स्त्री घरमें प्रातः काल उठे, घरमें प्रकाश करे, घरके द्वार खोले, हिंसक शत्रु आदि दुष्ट कहीं आसपास बैठे हों तो उनको दूर हटा देवे, और अपना घर सुरक्षित करे, गौओंका दोहन करे, दूध दही तैयार करे, पुष्टिकारक अन्न तैयार करे और घरके लोगोंको समय–पर प्रदान करे। यह तरुण स्त्रीका कर्तव्य है।

१९ हे उषः ! बृहता विश्वपेशसा राया, इळाभिः, विश्वतुरा द्युम्नेन, वाजैः नः संमिमिक्ष्व— हे उषा ! विशाल और सबसे सुंदर धनसे, गौओंसे, शत्रुनाशक तेजस्वी धनसे और बलवर्धक अन्नोंसे हमें युक्त कर। इतने पदार्थ हमें चाहिये।

२० हे उषा ! द्युलोकके तेजस्वी स्थानसे हमारे पास प्रतिदिन आ और हमारे घरोंको प्रकाशित कर।

२१ हे उषा ! तूं उत्तम बनाये सुन्दर रथपर बैठ और उत्तम यशस्वी अन्नका दान करनेवाले मनुष्यका संरक्षण कर।

२२ हे उषा ! तुम्हारे आते ही दो पांव वाले, चार पांव–वाले तथा उडनेवाले सब प्राणी उठते हैं और द्युलोकके अन्ततक पक्षीगण संचार करते हैं। चारों ओर आनन्दही आनंद अनुभवमें आने लगता है। ऐसा आनंद देना यह तुम्हाराही गुण है।

२३ हे उषा ! प्रकाशित हो, अन्धेरा दूर कर, अपने किरणोंसे सब विश्वको प्रकाशित कर, कण्व गोत्री लोग अथवा ज्ञानी तुम्हारी प्रशंसा गा रहे हैं अतः हमें सुखी कर, हमारा संरक्षण कर।

गोतम ऋषिका उषा वर्णन

(ऋ० १।९२।१-१५)

(गोतमो राहूगणः। उषाः। १-४ जगती, ५-१२ त्रिष्टुप्, १३-१५ उष्णिक्)

२४ एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते।
निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः ॥ १ ॥
२५ उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत।
अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः ॥ २ ॥

२४ (एताः उ त्याः उषसः) ये वे उषाएं (केतुं अक्रत) प्रकाश कर रहीं हैं। (रजसः पूर्वे अर्धे) अन्तरिक्षके पूर्व दिशाके अर्धभागमें (भानुं अञ्जते) ये प्रकाश कर रही हैं। (धृष्णवः आयुधानि निष्कृण्वानाः इव) प्रतापी वीर अपने शस्त्रोंको चमकदार करते हैं उसके समान (अरुषीः मातरः गावः प्रति यन्ति) सब विश्वको प्रकाशित करनेवाली लाल गोमाताएं–लाल सूर्यकिरणें प्रतिदिन आती हैं ॥ (१)

२५ (अरुणाः भानवः वृथा उदपप्तन्) लाल रंगके तेजस्वी किरण सहजहीसे ऊपर आने लगे हैं। (सु-आयुजः अरुषीः गाः अयुक्षत) सहजहीसे इस ज्योतिको ऊपर लानेवाली लाल गौवें अथवा बैल रथकेसाथ जोते गये हैं। (उषासः पूर्वथा वयुनानि अक्रन्) ये उषाएँ पूर्वके समान लोगोंसे कर्मोंको करवाती हैं और अब (अरुषीः रुशन्तं भानुं अशिश्रयुः) लाल रंगवाली उषाओंने अधिक तेजस्वी प्रकाश धारण किया है ॥ (२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२६ अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः ।
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते ॥ ३ ॥

२७ अधि पेशांसि वपते नृतूरिवापोर्णुते वक्ष उस्रेव बर्जहम् ।
ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रजं व्यु१षा आवर्तमः ॥ ४ ॥

२८ प्रत्यर्ची रुशदस्या अदर्शि वि तिष्ठते बाधते कृष्णमभ्वम् ।
स्वरुं न पेशो विदथेष्वञ्जञ्चित्रं दिवो दुहिता भानुमश्रेत् ॥ ५ ॥

२९ अतारिष्म तमसस्पारमस्योषा उच्छन्ती वयुना कृणोति ।
श्रिये छन्दो न स्मयते विभाती सुप्रतीका सौमनसायाजीगः ॥ ६ ॥

३० भास्वती नेत्री सूनृतानां दिवः स्तवे दुहिता गोतमेभिः ।
प्रजावतो नृवतो अश्वबुध्यानुषो गोअग्राँ उप मासि वाजान् ॥ ७ ॥

---

२६ (अपसः नारीः न) कर्ममें कुशल स्त्रियोंके समान ये उषाएँ (समानेन योजनेन) एक ही आयोजनासे (आ परावतः) दूर प्रदेशतकके भागको (विष्टिभिः) किरणोंसे (अर्चन्ति) अलंकृत करती है। और (सुकृते सुदानवे) सदाचारी उत्तम दाता (सुन्वते यजमानाय) सोमयाजी यजमानके लिये (विश्वा इत् अह) सब प्रकारका (इषं वहन्तीः) अन्न लाती हैं ॥ (३)

२७ यह उषा (नृतूः इव) नर्तकीके समान (पेशांसि अधि वपते) विविध रूपोंको धारण करती है। (उस्रा इव) गौके समान (बर्जहं वक्षः अप ऊर्णुते) दूधसे भरे अपने वक्षःस्थलको खुला करती है। (विश्वस्मै भुवनाय ज्योतिः कृण्वती) सब जगत्के लिये प्रकाश कर देती है, (गावः व्रजं न) गौवें व्रजको व्यापती हैं उस तरह ये (उषाः तमः वि आवः) उषाएँ अन्धकारको घेरकर प्रकाशको प्रकट करती हैं ॥ (४)

२८ (अस्याः रुशत् अर्चिः) इस उषाका तेजस्वी प्रकाश (प्रति अदर्शि) प्रतिदिन पूर्व दिशामें दीखता है। यह प्रकाश (वि तिष्ठते) सर्वत्र व्यापता है और (अभ्वं कृष्णं बाधते) महान् काले अन्धकारको दूर करता है (विदथेषु स्वरुं न पेशः अञ्जन्) यज्ञोंमें जैसे यूपको घीसे लीपकर सुशोभित करते हैं, उस तरह (दिवः दुहिता) द्युलोककी पुत्री उषा (चित्रं भानुं अश्रेत्) विलक्षण प्रकाशको धारण करती है और अधिक सुंदर बनती है ॥ (५)

२९ (अस्य तमसः पारं अतारिष्म) हम इस अन्धकारके पार हो गये हैं। (उच्छन्ती उषा वयुना कृणोति) प्रकाशनेवाली उषा सबके कर्मोंको करवाती है। (श्रिये छन्दः न) संपत्तिकी प्राप्तिके लिये धनीके साथ उसका छन्दानुवर्ती पुरुष जैसा हंसता है उस तरह (विभाती) प्रकाशनेवाली (सुप्रतीका) सुन्दर स्त्री (सौमनसाय) पतिका मन प्रसन्न करनेके लिये हंसती है वैसी यह उषा हंसती है। उसने हम सबको (अजीगः) जगाया अथवा अन्धेरेको निगल दिया है ॥ (६)

३० (भास्वती) तेजस्विनी (सूनृतानां नेत्री) सत्य भाषणोंको प्रेरित करनेवाली (दिवः दुहिता) द्युलोककी पुत्री उषा (गोतमेभिः स्तवे) श्रेष्ठ गौतम ऋषियों द्वारा प्रशंसित हुई है। हे (उषः) उषा देवि ! तू (प्रजावतः नृवतः) सन्तानोंसे और वीरोंसे युक्त (अश्वबुध्यान् गो-अग्रान्) घोडों और गौवोंसे युक्त, ऐसे (वाजान् उप मासि) अन्नों, बलों और ऐश्वर्योंको हमें देती है ॥ (७)

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३१ उषस्तमश्यां यशसं सुवीरं दासप्रवर्गं रयिमश्वबुध्यम् ।
सुदंससा श्रवसा या विभासि वाजप्रसूता सुभगे बृहन्तम् ॥ ८ ॥

३२ विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति ।
विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः ॥ ९ ॥

३३ पुनः पुनर्जायमाना पुराणी समानं वर्णमभि शुम्भमाना ।
श्वघ्नीव कृत्नुर्विज आमिनाना मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः ॥ १० ॥

३४ व्यूर्ण्वती दिवो अन्ताँ अबोध्यप स्वसारं सनुतर्युयोति ।
प्रमिनती मनुष्या युगानि योषा जारस्य चक्षसा वि भाति ॥ ११ ॥

३५ पशून्न चित्रा सुभगा प्रथाना सिन्धुर्न क्षोद उर्विया व्यश्वैत् ।
अमिनती दैव्यानि व्रतानि सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दृशाना ॥ १२ ॥

३६ उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।
येन तोकं च तनयं च धामहे ॥ १३ ॥

---

३१ हे (उषः) उषा देवि ! (तं यशसं सुवीरं) उस यशस्वी वीरोंके साथ रहनेवाले (दासप्रवर्गं अश्वबुध्यं रयिं) सेवक वर्गसे और घोडोंसे युक्त धनको (अश्यां) हम प्राप्त करें । हे (सुभगे) उत्तम भाग्यवाली उषा देवी ! (सुदंससा श्रवसा) उत्तम कर्मसे कीर्तिवाली (वाजप्रसूता) तथा अन्नकी वृद्धि करनेवाली होकर (या बृहन्तं विभासि) जिस बडे ऐश्वर्यको प्रकाशित करती है, वह धन भी हमें मिले ॥ (८)

३२ (देवी) यह प्रकाशमान उषा (विश्वानि भुवना अभिचक्ष्य) सब भुवनोंको देखकर, (प्रतीची चक्षुः उर्विया विभाति) पश्चिम दिशामें विशेष प्रकाशसे प्रकाशती है । (विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती) सब जीवोंको कार्य करनेके लिये जगाती है । और (विश्वस्य मनायोः) सब मननपूर्वक कार्य करनेवाले मानवोंके (वाचं अविदत) वाणीको प्राप्त होती है अर्थात् कवियोंको वर्णनकी स्फूर्ति देती है ॥ (९)

३३ (पुनः पुनः जायमाना) पुनः पुनः प्रतिदिन होनेवाली (पुराणी) प्राचीन होती हुई नवीन जैसी (समानं वर्णं अभि शुंभमाना) एक ही रूपको प्राप्त करके अत्यंत शोभनेवाली (देवी) यह उषा देवी (मर्तस्य आयुः जरयन्ती) मनुष्यकी आयु क्षीण करती है । (कृत्नुः श्वघ्नी इव) काटनेवाली कुत्तेको मारनेवाली वाघीणके समान (विजः आमिमाना) पक्षियोंको काटती है वैसी उषा मानवोंकी आयुको काटती है ॥ (१०)

३४ (दिवः अन्तान्) द्युलोकके अन्तभागोंको (वि ऊर्ण्वती) प्रकाशित करनेवाली उषा (अबोधि) जाग उठी है । वह (स्वसारं) अपनी रात्रीरूपी बहिनको (सनुतः अप युयोति) गुप्त प्रदेशोंमें प्रेरित करती है । (मनुष्या युगानि प्रमिनती) मानवी आयुष्यके युगोंको विनष्ट करती हुई (योषा जारस्य चक्षसा) यह उषारूपी स्त्री जार रूपी सूर्यके प्रकाशसे (वि भाति) विशेष प्रकाशती है ॥ (११)

३५ (चित्रा सुभगा) विलक्षण शोभासे शोभनेवाली (पशून् न प्रथाना) पशुओंके समान चारों ओर फैलती है । वह (उर्विया व्यश्वैत्) बडी होकर विश्वभर उस तरह व्यापती है, (सिन्धुः न क्षोदः) जिस तरह नदीके पूरसे आया उदक सर्वत्र व्यापता है । (दैव्यानि व्रतानि अमिनती) देवताओंके कर्मोंका नाश वह कदापि नहीं करती और (सूर्यस्य रश्मिभिः दृशाना चेति) सूर्यके किरणोंसे दीखती हुई यह सबको ज्ञात होती है ॥ (१२)

३६ हे (वाजिनीवति उषः) समृद्धियुक्त उषा देवि ! (अस्मभ्यं तत् चित्रं आ भर) हमारे लिये वह उत्तम वैभव भरपूर दे, (येन) जिससे हम (तोकं तनयं च धामहे) पुत्रपौत्रोंका धारण करनेमें समर्थ हो जायगे ॥ (१३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३७ उषो अद्येह गोमत्यश्वावति विभावरि ।
रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति ॥ १४ ॥
३८ युक्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यारुणाँ उषः ।
अथा नो विश्वा सौभगान्या वह ॥ १५ ॥

---

३७ हे (गोमति अश्वावति) गौओं और घोडोंवाली (विभावरि) तेजस्विनी (सूनृतावति) प्रिय तथा सत्य भाषण बोलनेवाली (उषः) उषा देवि ! (अद्य इह अस्मे) आज यहां हमारे लिये (रेवत् वि उच्छ) धनसे युक्त प्रकाश दे ॥ (१४)

३८ हे (वाजिनीवति उषः) अन्नवाली उषा देवि ! (अद्य अरुणान् अश्वान् युक्ष्व हि) आज तू लाल रंगवाले घोडे अपने रथको जोत । (अथ) और (नः) हमारे लिये (विश्वा सौभगानि) सब प्रकारके भाग्ययुक्त ऐश्वर्य (आ वह) ले आ ॥ (१५)

राहूगण पुत्र गौतम ऋषिका
उषा वर्णन

गोतम ऋषिका उषा वर्णन अब देखिये, ये देखते हैं कि—

ध्वजको ऊंचा करना

२४ एता उषसः केतुं अक्रत (१।९२।१)- ये उषाएं प्रकाश कर रही हैं। जैसा ध्वज (केतु) ऊपर फहराते हैं उस तरह उषाके किरणरूपी ध्वज आकाशमें फैल रहे हैं।

रजसः पूर्वे अर्धे भानुं अञ्जते— आकाशके पूर्व दिशाके विभागमें प्रकाश हो रहा है। अन्य सब आकाशमें प्रकाश नहीं है, पूर्व दिशाही लाल रंगसे शोभायमान दीखने लगी है। लाल रंगके किरण ऊपर आ रहे हैं।

वीरोंके तीक्ष्ण शस्त्र

धृष्णवः आयुधानि निष्कृण्वाना इव— शूरवीर युद्धके समय अपने शस्त्रास्त्र तीक्ष्ण करते हैं, उस तरह यह उषा पूर्व दिशाको तेजस्विनी बना रही है। यहां उषा स्त्री है, वह शूरवीरोंकी तरह अपने शस्त्रोंको तेज कर रही है, यह उपमा बता रही है कि स्त्रियोंको भी शस्त्र तीक्ष्ण करना और उनसे शत्रुओंको दूर करना चाहिये। पुरुष समीप न रहे तो स्त्रियोंको अपनी सुरक्षा करनेके लिये, अपने ऊपर आक्रमण करनेवाले दुष्टोंको दूर करनेके लिये, तैयार रहना चाहिये। संरक्षण करनेके लिये पुरुष न रहे तो वह कार्य स्त्रियां करें और अपना संरक्षण उत्तम रीतिसे करें।

गौ माता है।

अरुषीः मातरः गावः प्रति यन्ति— लाल रंगवाली गौमाताएं प्रतिदिन आती हैं। प्रतिदिन उषःकालमें गौवें बाहर चरनेके लिये खुली छोडी जाती हैं। उस तरह उषःकालमें सूर्यकिरणें बाहर खुली छोडी जाती हैं। जो ऊपर आती और विश्वको प्रकाशित करती हैं। यहां ' गौ ' को माता कहा है। गौ मनुष्योंकी माता है। वह लाल रंगकी होगी तो उसके दूधमें जीवनसत्त्व अधिक रहता है। इसलिये लाल रंगवाली गौवें माताएं होती हैं। **' अरुषीः गावः मातरः '**- लाल रंगवाली गौवें माताएं कहलाती हैं।

२५ अरुणाः भानवः उदपप्तन् (१।९२।२)- लालरंगके किरण ऊपर आ रहे हैं। ऊपरका आकाश लालरंगसे सुशोभित हुआ दीख रहा है।

अरुषीः सु-आ-युजः गाः अयुक्षत— लाल रंगवाले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखसे जोते जानेवाले बैल रथको जोते गये हैं। यहां 'गाः' का अर्थ 'गौवें' नहीं है, प्रत्युत 'बैल' है, घोडे ऐसा भी किया जा सकता। क्योंकि गौवें वाहनको जोती जाती नहीं थी और 'गो' पद गोवंशका वाचक प्रसिद्ध है।

उषासः वयुनानि अक्रन्— उषाएं कर्मोको करने लगी हैं अर्थात् उषःकालमें उठकर लोग अपने कर्मोको करने लगे हैं, चारों ओरके लोग अपने कार्यमें निमग्न हुए हैं।

अरुषीः रुशन्तं भानुं अशिश्रियुः— लाल रंगवाली उषाओंने अधिक तेजस्वी प्रकाश धारण किया है। कन्या जब बडी होती है तब वह अधिक तेजस्वी दीखने लगती है। उषाका रंग पहिले साधारणसा था, वह अब विशेष तेजस्वी हुआ है। जैसी कन्या तरुण होनेपर विशेष शोभती है, वैसी उषा अब अधिक सुंदर दीखने लगी है, वह जो पहिले कन्या थी वह अब तरुणी हो गयी है।

उत्तम गृहिणी

२६ अपसः नारीः इव (१।९२।३)—कर्म करनेमें कुशल स्त्रियोंके समान उषाएं कर्म करती हैं और कर्मोको कराती भी हैं। उषा आते ही यज्ञ शुरू होते हैं, यह उनका कर्म करना या कराना है। तरुण स्त्री अपना कर्म कुशलतासे करे तथा दूसरोंसे भी अच्छी तरह कर्म करावे। स्त्रीमें यह योग्यता चाहिये कि वह आते ही सब लोग कर्ममें तत्पर हो जांय। कोई उनके सामने कर्म करनेमें कसूर न कर सके। गृहिणीकी यह योग्यता चाहिये। तब वह घरका संचालन कर सकेगी।

समानेन योजनेन आपरावतः विष्टिभिः अर्चन्ति- एकही आयोजनसे दूरसे भी आकर कर्मोंसे सबको सुपूजित करते हैं। 'समान योजन' का आशय एक ही आयोजन, एक ही नियोजन, एक संकल्पित कर्म, पहिलेसे निश्चित कियां हुआ एक बडा कार्य कि जिसमें अनेकानेक कार्यकर्ता लगते हैं। ऐसे बडे बडे नियोजन यह तरुणी उषा करती है और उसमें अनेक कार्यकर्ताओंको लगा देती है और उनको (विष्टिभिः अर्चन्ती) धनोंसे पूजित करती हैं। कर्म करनेके बाद उनको उचित वेतन कर्मफल अथवा आजीविका देकर सुप्रसन्न करती है। 'विष्टि'-का अर्थ 'वेतन, मजदूरी, कर्मफल, धंदा, कामधंदा' है। वेतनोंसे कार्यकर्ताओंको पूजित करना चाहिये। उषा अर्थात् तरुण स्त्री यह करती है। वैदिक समयकी तरुणी एक बडे कार्यमें अनेक कार्यकर्ताओंको नियुक्त करके उनको भरपूर वेतन देती थी। इतनी योग्यता आर्य तरुणीकी होनी चाहिये।

सुकृते सुदानवे विश्वा इषः वहन्तीः— उत्तम कर्म करनेवालेको तथा उत्तम दानी कर्मकर्ताको भरपूर अन्न देती है। वेतन देनेमें कभी कृपणता नहीं करती। 'सुकृते' जो अपना कर्म उत्तम रीतिसे करता है, उसीको भरपूर वेतन देती है। पर यदि कोई कर्म करनेमें कसूर करेगा, तो उसको उचित जितना देना चाहिये उतना वेतन तो देती ही है पर उसका सत्कार वह नहीं करती।

इस मंत्रमें उषाकी कार्यतत्परता कितनी बडी हो गयी है देखिये। तरुणी स्त्रीको ऐसे कार्य करने चाहिये और अपने घरके व्यवसायोंको लाभकारी बना देना चाहिये। जहां ऐसी स्त्रियां होंगी वहां घरमें पर्याप्त धन आता रहा तो उसमें आश्चर्य ही क्या है ?

स्त्री अपना सौंदर्य बढावे

२७ नृतूः इव पेशांसि अधिवपते— यह उषा स्त्री नाचनेवाली स्त्रीके समान अपने वस्त्रों और अलंकारोंको वारंवार बदलती रहती है। अपने वेष बदलती है और अधिकाधिक सुंदर दीखती है। जैसी नर्तकी अपने वेष बदलकर अधिक सुंदर होती है, इसी तरह यह उषा अपने रंग बदलकर अधिक तेजस्विनी दीखती है। तरुणी अपने अलंकार, आभूषण और वस्त्र बदले और अधिक सुंदर बनकर लोगोंके सामने आजाय। 'सुवासिनी' उत्तम स्त्रीको कहते हैं। मलिन वस्त्र तो घरमें कोई मरा तो ही पहने जाते हैं। अन्यथा पतिवाली स्त्रीको जहांतक हो सके वहांतक अपनी सुंदरता बढानी चाहिये।

यहां 'नृतूः' नर्तकीका उदाहरण दिया है। नृत्य करनेका धंदा करनेवाली स्त्री नृतू कहलाती है। आधिकाधिक सुंदर बनना यह उनका धंदा ही होता है। यद्यपि यह उपमा हीन है, तथापि अधिक सौंदर्य प्रसाधन करनेका भाव बतानेके लिये यही उपमा अच्छी है। अतः इसमें हीन आचरणका भाव पाठक न देखें। जिस कार्यके लिये उपमा दी जाती है, उतना ही कार्य उस उपमामें देखना चाहिये। यहां सौंदर्य बढानेका उपदेश किया है उतना ही भाव यहां देखना योग्य है।

उस्राः इव वर्जहं वक्षः अप ऊर्णुते— गौओंके समान अपना पुष्ट वक्षःस्थल खुला करके स्त्री बताती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्वोक्त रीतिसे वारंवार वस्त्रालंकार बदल कर स्त्री अपना सौंदर्य बढावे और अपनी हृष्टपुष्ट छाती बतावे। '**वक्षः अप ऊर्णुते**— छातीको खोल कर बताती है। तरुण स्त्री ऐसे हाव-भाव करती है कि जिससे उनकी पुष्ट छाती सहजहीसे लोगोंको दीखे। '**उस्राः इव**' गाय जैसी अपने स्तन दिखाती है वैसी उषा दिखाती है, और वैसी तरुणी भी दिखाती है। वास्तवमें यहां थोडीसी अत्युक्ति की है। तरुण स्त्रीको अपने अंग अच्छी तरह ढंककर रखना उचित है। पर जो तरुणी स्त्री कन्याकी अवस्थासे उपर आगयी है और परिपूर्ण प्रौढ तरुणी बनी नहीं, वह सहजहीसे निष्कपटभावसे अपनी छातीको विशेष विचार न करती हुई खुली भी करती है अथवा प्रकट भी करती है, इसका ख्याल ही उसको नहीं होता। उषा इस तरह कर रही है। ऐसा कवि वर्णन कर रहा है। नूतन यौवन धारण करने-वाली तरुणीका यह वर्णन है।

विश्वस्मै भुवनाय ज्योतिः कृण्वती— सब भुवनों-को प्रकाश देती है। इसलिये वह अपने शरीरावयव खुले कर देती है ऐसा काव्यमय वर्णन हुआ है। विना शरीरावयव खुले किये उषाका प्रकाश चारों ओर कैसा जा सकता है ? उषा अपने अवयव खुले करती है, अतः चमकती है और लोगोंका चित्त आकर्षित करती है। ऐसा ही वर्ताव तरुणी नर्तकी करती है।

गावः व्रजं न, उषाः तमः वि आवः—गौवें गोशाला खुलते ही जिस तरह वाहर आती हैं उस तरह उषा अपने प्रकाशको वाहर करती है जिससे अन्धकार दूर हो जाता है और प्रकाश होता है।

२८ अस्याः रुशत् अर्चिः प्रत्यदर्शि (१।९२।५)- इस उषाकी तेजस्वी ज्योति कैसी सुंदर दीख रही है देखो तो सही !

वितिष्ठते, अभ्वं कृष्णं बाधते— यह प्रकाश चारों ओर फैलता है और काले विशाल अन्धकारको दूर करता है।

विदथेषु स्वरुं न पेशः अञ्जन्, चित्रं भानुं अश्वेत्— यज्ञोंमें यूपके स्तंभको जैसे घृतादि लगाकर सजाते हैं, उस तरह विशेष प्रकाशका आश्रय करनेसे वह विशेष सुन्दर दीखती है।

यह तरुणी अपने घरमें प्रकाश करती है, अन्धकार दूर करती है, अपना रूप सुन्दर करके दिखा देती है, और सबको ऐश्वर्यकी प्राप्तिका मार्ग दिखा देती है।

२९ अस्य तमसः पारं अतारिष्म (१।९२।६)— इस अन्धकारके पार हम पहुंच गये हैं, हम प्रकाशमें आ गये हैं।

उच्छन्ती उषा वयुना कृणोति— प्रकाशनेवाली उषा कर्मोंको करनेकी प्रेरणा देती है। इस तरह तरुण स्त्री घरके पुत्र-पौत्रोंको जलदी उठाकर उनको कर्मोंके करनेके लिये प्रेरित करे।

श्रिये छन्दः न, विभाती सुप्रतीका सौमनसाय अजीगः— जिस तरह धनोंसे ऐश्वर्य प्राप्त करनेके लिये उसके छन्दके अनुसार, उसके मनके अनुसार, दूसरे लोक कार्य करते हैं, उस तरह तेजस्वी सुन्दर तरुण स्त्री अपने पतिके मनकी सुप्रसन्नताके लिये हंसती हुई, घरके मनुष्योंको जगाती है। अथवा अन्धेरेको दूर करती है। यहां पतिके घरमें स्त्री कैसी रहे इसका उत्तम वर्णन है। पतिको प्रसन्न करनेके लिये पत्नी सदा हंसती रहे, प्रसन्नचित्त होकर रहे। घरके लोगोंको जगा देकर उनको भी आनंद प्रसन्न रखना घरकी गृहिणीका कार्य है।

३० भास्वती सूनृतानां नेत्री गोतमेभिः स्तवे— तेजस्विनी और सत्कर्मोंकी प्रेरिका उषाकी गोतम ऋषियोंके द्वारा स्तुति की जा रही है।

हे उषः ! प्रजावतः नृवतः अश्वबुध्यान् गो-अग्रान् वाजान् उपमासि— हे उषा ! वीर पुत्र-पौत्रोंसे और घोडों तथा गौओंसे युक्त अन्नों और बलोंको तू हमें देती है।

धन कैसा हो

३१ हे उषः ! यशसं सुवीरं दासप्रवर्गं अश्वबुध्यं रयिं अश्याम् (१।९२।८)- हे उषा ! हमें यशस्वी, पुत्र-पौत्रोंवाला, सेवकवर्गसे युक्त, घोडोंसे युक्त धन प्राप्त हो। यहां इच्छा यह की गई है कि हमें यश मिले, हमें वीर पुत्र उत्पन्न हो, हमारे घरमें सेवक पर्याप्त संख्यामें रहें, तथा हमारे घरमें घोडे, गौवें, रथ आदि हों। ऐसा धन हमें प्राप्त हो। हमारा घर ऐसा ऐश्वर्य युक्त हो। हीनता, दीनता, दरिद्रता हमारे पास न हो।

सुदंससा श्रवसा वाजप्रसूता बृहन्तं विभासि- उत्तम कर्म जिससे किये जा सकते हैं, जिससे यश मिलता है, जिससे पर्याप्त अन्न मिल सकता है, ऐसा विशाल धन हमारे लिये प्रकाशित कर। अर्थात् ऐसा धन हमें मिले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३२ देवी विश्वानि भुवना अभिचक्ष्य प्रतीची चक्षुः उर्विया विभाति (१।९२।९)— यह प्रकाशमान उषा सब भुवनोंको देखती हुई पश्चिमकी ओर अपना आंख करके विशेष रीतिसे प्रकाशती है।

विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती— सब जीवोंको अपने अपने कार्य करनेके लिये यह उषा जगाती है। इस तरह घरकी गृहिणी अपने बालबच्चोंको जगाती और कार्योंमें प्रेरित करती है।

विश्वस्य मनायोः वाचं अविदत्— सब मानवोंकी प्रशंसा प्राप्त करती है। अर्थात् सब मनुष्य उषाकी उक्त कारण स्तुति करते हैं।

३३ मर्तस्य आयुः जयरन्ती (१।९२।१०)— मनुष्योंकी, आयु यह उषा आती है और कम करती है। एक वार उषा आगयी तो मनुष्योंकी आयु कम हो जाती है।

कृत्नुः श्वघ्नी इव विजः आमिमाना— कुत्तेको काटनेवाली हिंसक वाघीनके समान, तथा पक्षियोंको काटने-वालीके समान, यह उषा प्राणियोंकी आयु कम कर देती है।

३४ दिवः अन्तान् वि ऊर्ण्वती अबोधि— आकाश-के अन्तभागतक प्रकाशको फैलानेवाली उषा अब जाग उठी है।

स्वसारं सनुतः अपयुयोति— अपनी रात्री रूप बहिन को शीघ्र ही दूर करती है।

मानुष्या युगानि प्रमिनती— मनुष्योंकी आयुके दिन और रात्रीकी जोडीका नाश करती है, दिन आकर रात्री जाती है, पश्चात् दिन आता है। इस तरह जो आता है वह विनष्ट हो जाता है।

जारका हानिकारक वैभव

योषा जारस्य चक्षसा विभाति— यह स्त्री अपने जारके वैभवसे प्रकाशती है। किसी स्त्रीको पति जितने आभूषण डालता है, उससे अधिक जार डालता है। इसलिये कोई स्त्री जारके वैभवसे अधिक शोभती हैं। पर यह वैभव लेने योग्य नहीं, क्योंकि यह जार ही इस स्त्रीका नाश करता है। सूर्य उषाका जारकरके यहां वर्णन किया है। यह अलंकार है। यहां सूर्यमें जार पनकी संभावना नहीं। पर सूर्यके वैभवसे यह उषा अधिक प्रकाशती है। इस जारसे वैभव प्राप्त करनेके मिषसे यह उषा सूर्यके साथ अधिक रमने लगती है और ऐसा करते करते अन्तमें वही जार आकर इसका नाश करता है। अतः जारसे संबंध रखना किसी स्त्रीके लिये योग्य नहीं है। उषाके वर्णनमें यह उपदेश स्त्रीके लिये यहां दिया है।

३५ यह उषा '**दैव्यानि व्रतानि अमिनती**'-- दिव्य कर्मोंका कदापि नाश नहीं करती। सब दिव्यकर्मोंको यथा-सांग पूर्ण करती है।

सूर्यस्य रश्मिभिः दृशाना चेति— सूर्यके किरणोंसे यह उषा दिखाई देती है ऐसा ज्ञात होता है। सूर्यकिरणोंसे उषाकी उत्पत्ति होती है। सूर्य किरणोंसे उषाकी शोभा बढती है।

३६ हे वाजिनी वति उषः! येन तोकं तनयं च धामहे तत् चित्र असभ्यं आभर (१।९२।१३)-हे वैभव-युक्त उषा! जिससे पुत्रपौत्रोंका तारण हम कर सकेंगे वैसा उत्तम वैभव हमें भरपूर भर दे।

३७ उषा (गोमती अश्वावती) गौओं और घोडोंसे युक्त है, (विभावरि सूनृतावती) वैभववाली और उत्तम भाषणवाली है, (अस्मे रेवत् व्युच्छ) हमारा हित करनेके लिये धनके साथ प्रकाशित हो।

३८ हे उषा! आज लाल रंगोंके घोडोंको तुम अपने रथको जोत और हमें सब प्रकारके उत्तम भाग्य दे दो।

॥ यहां गोतम ऋषिका उषाका वर्णन समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुत्स ऋषिका उषा वर्णन

(ऋ. १।११३।१-२०)

(कुत्स आंगिरसः। उषाः। त्रिष्टुप्)

३९ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा ।
यथा प्रसूता सवितुः सवायँ एवा रात्र्युषसे योनिमारैक् ॥ १ ॥
४० रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागादारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः ।
समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं चरत आमिनाने ॥ २ ॥
४१ समानो अध्वा स्वस्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे ।
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे ॥ ३ ॥
४२ भास्वती नेत्री सूनृतानामचेति चित्रा वि दुरो न आवः ।
प्रार्प्या जगद्व्यु नो रायो अख्यदुषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ॥ ४ ॥

---

३९ (इदं ज्योतिषां श्रेष्ठं ज्योतिः) यह तेजस्वी पदार्थोंके तेजसे भी अधिक श्रेष्ठ तेज-उषाका तेज-(आगात्) आरहा है, पूर्व दिशामें आरहा है, (चित्रः प्रकेतः विभ्वा अजनिष्ट) यह विलक्षण रमणीय प्रकाश फैलता हुआ प्रकट हो रहा है। (यथा रात्रिः सवितुः सवाय प्रसूता) जिस तरह रात्री सूर्यकी उत्पत्तिके लिये उत्पन्न हुई, (एवा) वैसी ही यह रात्री (उषसे योनिं अरैक्) उषाके जन्म लिये स्थान खुला कर रही है ॥ (१)

४० (रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्या) तेजस्वी बालकवाली स्वयं तेजस्विनी गौरवर्ण उषा (आ गात्) आगई है। (अस्याः) इस उषाके लिये (कृष्णा) काली रात्रीने (सदनानि अरैक् उ) रहनेके स्थान खुले करके रखे हैं। (समान-बन्धू अमृते) जिनका बन्धु एक ही है ऐसी ये रात्री और उषा अमर हैं और (अनूची) क्रमसे आती हैं। ये दोनों (द्यावा) प्रकाशमान (वर्णं आमिनाने) और विश्वके रंगको बदलती हुई (चरतः) भ्रमण करती हैं ॥ (२)

४१ (स्वस्रोः अध्वा समानः) रात्री और उषा इन दोनों बहिनोंका मार्ग एक ही है और वह (अनन्तः) अन्त-रहित है। (देवशिष्टे) ईश्वरकी आज्ञानुसार चलनेवाली ये दो बहिनें (अन्या अन्या तं चरतः) क्रमसे एकके पीछे दूसरी इस मार्गसे चलती हैं। ये दोनों (नक्तोषासा सुमेके) रात्री और उषा उत्तम स्नेह धारण करनेवाली (विरूपे समनसा) परस्पर विरुद्ध रंग रूपवाली होनेपर भी एक मतसे सब कार्य करनेवाली (न तस्थतुः) ये कभी एक स्थान पर ठहरती नहीं, अथवा (न मेथेते) परस्परका कार्य विगाडती भी नहीं ॥ (३)

४२ (भास्वती) प्रकाशमयी (सूनृतानां नेत्री) सत्कर्मोंको संचालिका यह उषा (अचेति) दीखने लगी है। (चित्रा नः दुरः वि आवः) यह विलक्षण सुंदर उषा हमारे द्वारोंको खोलती है। (जगत् प्रार्प्य) जगत्को प्रकाशित करके यह उषा (रायः नः अख्यत् उ) धनोंको हमारे लिये घोषित करती है, देती है। और यह (उषाः विश्वा भुव-नानि अजीगः) उषा सब भुवनोंको प्रकाशमें निगल देती है, प्रकाशित करती है ॥ (४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४३ जिह्मश्ये ३ चरितवे मघोन्याभोगाय इष्टये राय उ त्वम् ।
दभ्रं पश्यद्भ्य उर्विया विचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ॥ ५ ॥
४४ क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै ।
विसदृशा जीविताभिप्रचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ॥ ६ ॥
४५ एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः ।
विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ ॥ ७ ॥
४६ परायतीनामन्वेति पाथ आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् ।
व्युच्छन्ती जीवमुदीरयन्त्युषा मृतं कं चन बोधयन्ती ॥ ८ ॥
४७ उषो यदग्निं समिधे चकर्थ वि यदावश्चक्षसा सूर्यस्य ।
यन्मानुषान् यक्ष्यमाणाँ अजीगस्तद्देवेषु चकृषे भद्रमप्नः ॥ ९ ॥
४८ कियात्या यत् समया भवाति या व्यूषुर्याश्च नूनं व्युच्छान् ।
अनु पूर्वाः कृपते वावशाना प्रदीध्याना जोषमन्याभिरेति ॥ १० ॥

---

४३ (जिह्मश्ये चरितवे) सोनेवालेको घुमानेके लिये (आभोगाय) भोगोंको प्राप्त करनेके लिये (इष्टये राये) यज्ञ करनेके लिये तथा धन प्राप्त करनेके लिये (त्वं उ मघोनी) तू धनवाली उषा प्रकाशती है । (दभ्रं पश्यद्भ्यः विचक्षे) जिनको कम दीखता है उनको अधिक दिखानेके लिये (उर्विया उषाः) विशाल उषा (विश्वा भुवना अजीगः) सब भुवनोंको जगाती है ॥ (५)

४४ हे उषा ! (क्षत्राय त्वं) क्षत्रियके युद्धादि कर्मके लिये (श्रवसे त्वं) अन्नादिके अथवा कीर्तिके लिये, (महीयै इष्टये त्वं) बडे यज्ञके लिये (अर्थं इव इत्यै त्वं) अपेक्षित अर्थके पास पहुंचनेके लिये (विसदृशा जीविता अभिप्रचक्षे) विविध प्रकारके जीवन साधन देखनेके लिये (उषा विश्वा भुवनानि अजीगः) तू उषा सब भुवनोंको जगाती है ॥ (६)

४५ (एषा दिवो दुहिता) यह द्युलोककी पुत्री (व्युच्छन्ती) अन्धकारको दूर करती है ऐसा (प्रत्यदर्शि) दीख पडता है । यह (युवतिः) तरुणी (शुक्रवासाः) शुभ्र वस्त्र पहननेवाली (विश्वस्य पार्थिवस्य वस्व ईशाना) सब पृथ्वी-परके धनकी स्वामिनी है । हे (सुभगे उषः) उत्तम भाग्यवाली उषा ! (अद्य इह व्युच्छ) आज यहां प्रकाश कर ॥ (७)

४६ यह उषा (परायतीनां पाथः अनु एति) भूतकालमें गई हुई उषाओंके मार्गसे आती है तथा (आयतीनां शश्वतीनां प्रथमा) आनेवाली अनेक उषाओंमें यह प्रथमा उषा है । यह (उषाः) उषा (व्युच्छन्ती) प्रकाशती और (जीवं उदीरयन्ती) जीवितोंको उठाती है और (कं चन मृतं बोधयन्ती) किसी मृत जैसे सोनेवालेको भी जगाती है॥ (८)

४७ हे (उषः) उषा ! तूने (अग्निं समिधे यत् चकर्थ) अग्निको प्रज्वलित करनेके लिये जो किया और (सूर्यस्य चक्षसा यत् वि आवः) सूर्यके प्रकाशसे जो तूने प्रकाश किया, और (यक्ष्यमाणान् मानुषान् यत् अजीगः) यज्ञ करनेवाले मनुष्योंको जगाया, (तत् अप्नः भद्रं) वह कल्याणकारक कर्म और (देवेषु चकृषे) देवोंके लिये प्रिय कर्म तूने किया है ॥ (९)

४८ (कियति समया यत् आ भवाति) कितने समय तक यह उषा यहां होती है ? (याः व्यूषुः) जो प्रकाशित हो चुकी थी, (याः च नूनं व्युच्छान्) और जो आनेवाली उषाएं हैं वे भी भला कितनी देर रहेंगी ? (पूर्वाः वावशानाः अनुकृपते) पूर्व कालमें गयी उषाओंका स्मरण करानेवाली वर्तमान उषा प्रकाशनेमें समर्थ होती है, यह (प्रदीध्याना अन्याभिः) प्रकाशमान होनेवाली उषा अन्य उषाओंके (जोषं एति) साथ जाती है ॥ (१०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४९ ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् व्युच्छन्तीमुषसं मर्त्यासः ।
अस्माभिरू नु प्रतिचक्ष्याभूदो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान् ॥ ११ ॥
५० यावयद्द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती ।
समुङ्गलीर्बिभ्रती देववीतिमिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ ॥ १२ ॥
५१ शश्वत् पुरोषा व्युवास देव्यथो अद्येदं व्यावो मघोनी ।
अथो व्युच्छादुत्तराँ अनुद्यूनजरामृता चरति स्वधाभिः ॥ १३ ॥
५२ व्य१ञ्जिभिर्दिव आतास्वद्यौदप कृष्णां निर्णिजं देव्यावः ।
प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वैरोषा याति सयुजा रथेन ॥ १४ ॥
५३ आवहन्ती पोष्या वार्याणि चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना ।
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्वैत् ॥ १५ ॥
५४ उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगादप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति ।
आरैक्पन्थां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ॥ १६ ॥

---

४९ (ये मर्तासः) जो मानव (व्युच्छन्तीं पूर्वतरां उषसं) प्रकाशनेवाली पूर्व समयकी उषाको (अपश्यन्) देख चुके (ते ईयुः) वे चले गये । (अस्माभिः नु प्रतिचक्ष्या अभूत्) हमारे द्वारा यह उषा देखी जा रही है, तथा (ये अपरीषु पश्यान्) जो आनेवाली उषाको देखेंगे, (ते यन्ति) वे सब जानेवाले हैं ॥ (११)

५० (यावयत्–द्वेषाः) शत्रुओंको दूर करनेवाली, (ऋतपाः) सत्यका पालन करनेवाली, (ऋते-जाः) सत्यके लिये उत्पन्न हुई, (सुम्नावरी) सुख देनेवाली, (सूनृता ईरयन्ती) वाणीको प्रेरित करनेवाली (सुमंगलीः) उत्तम मंगल करनेवाली (देववीतिं बिभ्रती) देवोंके लिये यज्ञका धारण करनेवाली (श्रेष्ठतमा) अत्यंत श्रेष्ठ ऐसी तू, हे (उषः) उषा ! (इह अद्य व्युच्छ) यहां आज प्रकाशित हो ॥ (१२)

५१ (देवीः उषाः पुरा शश्वत् वि उवास) दिव्य उषा पूर्व समयसे सदा प्रकाशती आयी है । (अथो अद्य मघोनी इदं व्यावः) और आज धनवाली यह उषा इस जगत्को प्रकाशित कर रही है । (अथो उत्तरान् द्यून् अनुव्युच्छात्) और भविष्यमें भी दिनोंमें यह ऐसी ही प्रकाशती रहेगी । ऐसी यह (अजरा अमृता स्वधाभिः चरति) जरारहित और मरणरहित उषा अपनी धारक शक्तियोंके साथ चलती रहती है ॥ (१३)

५२ (दिवः आतासु) द्युलोककी सब दिशाओंमें (अंजिभिः वि अद्यौत्) प्रकाश किरणोंसे यह प्रकाशती है । (देवी कृष्णां निर्णिजं अप आवः) यह दिव्य उषा काले अन्धकारको दूर करती है । (अरुणेभिः अश्वैः सयुजा रथेन) उत्तम रीतिसे लाल रंगवाले घोडोंके साथ जोते हुए रथसे (आ याति) यह आती है और (एषा प्रबोधयन्ती) यह उषा सबको जगाती है ॥ (१४)

५३ (पोष्या वार्याणि आवहन्ती) पोषणके लिये आवश्यक धनोंको लानेवाली (चेकिताना) सबको प्रकाश दिखानेवाली यह उषा (चित्रं केतुं कृणुते) विलक्षण सुंदर प्रकाश फैलाती है । (ईयुषीणां शश्वतीनां उपमा) गत उषाओंमें अन्तिम तथा (विभातीनां प्रथमा) आनेवाली उषाओंमें पहिली (उषाः) यह उषा (वि अश्वैत्) विशेष चमक रही है ॥ (१५)

५४ हे मानवो ! (उदीर्ध्वं) उठो, (नः असुः जीवः आगात्) हमारा यह प्राण रूप प्रकाश आ गया है । (तमः अप प्रागात्) अन्धकार दूर हुआ, (ज्योतिः आ एति) ज्योती आ रही है । (सूर्याय यातवे पन्थां आरैक्) सूर्यके गमनके लिये मार्ग खुला हो रहा है, (यत्र आयुः प्रतिरन्त अगन्म) जहां आयु बढती है वहां हम पहुंच जांय ॥ (१६)

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५५ स्यूमना वाच उदियर्ति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातीः ।
अद्या तदुच्छ गृणते मघोन्यस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् ॥ १७ ॥
५६ या गोमतीरुषसः सर्ववीरा व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय ।
वायोरिव सूनृतानामुदर्के ता अश्वदा अश्नवत् सोमसुत्वा ॥ १८ ॥
५७ माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्बृहती वि भाहि ।
प्रशस्तिकृद्ब्रह्मणे नो व्यु१च्छा नो जने जनय विश्ववारे ॥ १९ ॥
५८ यच्चित्रमप्न उषसो वहन्तीजानाय शशमानाय भद्रम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ २० ॥

---

५५ (वह्निः रेभः) स्तोत्र पाठ करनेवाला कवि (विभातीः उषसः स्तवानः) प्रकाशनेवाली उषाओंकी स्तुति करता हुआ, (स्यूमना वाचः उदियर्ति) जिसमें मन रमता है ऐसी स्तोत्रोंकी वाणी बोलता है। हे (मघोनि) धनवाली उषा ! (अद्य गृणते तत् उच्छ) आज स्तोताके लिये वह प्रकाश दे और (अस्मे प्रजावत् आयुः नि दिदीहि) इसके लिये पुत्र पौत्रोंके साथ रहनेवाला आयु रूपी धन दे दो ॥ (१७)

५६ (दाशुषे मर्त्याय) दाता मनुष्यके लिये (गोमतीः सर्ववीराः या, उषसः) गौओंवाली और वीरोंसे युक्त ये उषायें (व्युच्छन्ति) प्रकाश रही हैं। (वायोः इव सूनृतानां उदर्के) वायुके समान शीघ्रगामी स्तुतिरूपी सत्यभाषणोंके प्रकाशित होनेपर (अश्वदाः ताः) घोडोंको देनेवाली वे उषायें (सोमसुत्वा अश्नवत्) सोमयाग करनेवालोंको प्राप्त होतीं हैं ॥ (१८)

५७ हे उषा ! तू (देवानां माता) देवोंकी माता है, तू (अदितेः अनीकं) अदितिका मुख है। तू [यज्ञस्य केतुः) यज्ञका ध्वज होकर (बृहती विभाहि) विशेष रीतिसे प्रकाशित हो। (नः ब्रह्मणे प्रशस्तिकृत् व्युच्छ) हमारे ज्ञानकी प्रशंसा करती हुई प्रकाशित हो। हे (विश्ववारे) सबके द्वारा आदरणीय उषा ! (नः जने जनय) हमें अपने लोकोंमें सन्मानके स्थानमें पहुंचा दो ॥ (१९)

५८ (यत् चित्रं अप्नः उषसः वहन्ति) जो विलक्षण धन उषाएं धारण करती हैं। वह धन (ईजानाय शशमानाय भद्रं) यज्ञ करनेवाले याजकके लिये कल्याण करनेवाला होता है। यह प्रार्थना मित्र, वरुण, अदिति, सिन्धु, पृथिवी और द्यौ ये देव (नः म महन्तां) हमारे लिये सफल करें ॥ (२०)

आंगिरस गोत्री कुत्स ऋषिका

उषा वर्णन

कुत्स ऋषि उषाका वर्णन करनेके प्रसंगमें कहते हैं—

३९ इदं ज्योतिषां श्रेष्ठं ज्योतिः आगात् (१।११३।१) — हे लोगो ! यह ज्योतियोंमें श्रेष्ठ ज्योतिरूप तेज उषाके रूपमें आकाशमें आ रहा है, देखो यह कितना रमणीय है। यह **'चित्रः प्रकेतः विभ्वा अजनिष्ट'**—यह तेज विलक्षण है, ज्ञान देनेवाला है, और चारोंओर फैलनेवाला है। ऐसा यह विलक्षण तेज आकाशमें फैल रहा है।

रात्रिः सवितुः सवाय प्रसूता— यह रात्री सूर्यकी उत्पत्ति के लिये प्रसूत हो गयी है। रात्री प्रसूत होकर उसके उदरसे सूर्य उत्पन्न होता है। अर्थात् यह काली रात्री तेजस्वी सूर्यकी माता है। **'एवा उषसे योनिं आरैक्'** – यह रात्री उषाके लिये उत्पत्तिस्थान खुला करके दे रही है। अर्थात् रात्रीसे उषा उत्पन्न होती है और उसी रात्रीसे सूर्य भी उत्पन्न होता है। ऐसी यह तेजस्वी उषा अपने साथ दिव्य ज्योति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकर आरही है। लोगो! इस उषाका यह दिव्य तेज देखो, कैसा यह तेज आनन्ददायक है, सबको यह तेज जगा रहा है, सब विश्वको प्रकाशित कर रहा है। देखो! देखो यह अद्भुत तेज आ रहा है।

बालककी माता

४० रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्या आगात् (१।११३।२):

तेजस्वी बालक जिसके गोदमें है ऐसी तेजस्विनी गौरवर्णवाली माता उषा आगयी है। इसका तेज देखो, कैसा चमक रहा है।

इस वर्णनकी उषा बालकवाली है। पहिले हमने कन्या रूपमें उषा देखी, उसके पश्चात् तरुणी उषा देखी, उसके पश्चात् पतिकी इच्छा करनेवाली और अपनी छातीको बतानेवाली उषा हमने देखी। अब इस मंत्रमें जो उषाका वर्णन है वह (रुशत्-वत्सा) जिसका बालक तेजस्वी, सुंदर, हृष्टपुष्ट, पूर्णांग, हास्य-मुख है, जिसके आंखमें तेज चमक रहा है, ऐसे बालककी यह माता है। उषाके ये काव्यमय वर्णन कैसे मनोरम हैं यह देखने योग्य है।

कृष्णा अस्याः सदनानि आरैक्— कालेवर्णके रात्रीने इस उषाके लिये अनेक स्थान खुले किये हैं। अर्थात् जहां रात्रीका काला अन्धेरा छाया था, वहां अब उषाका प्रकाश पड रहा है। और अन्धेरा दूर हो रहा है।

अमृते समानबन्धू अनूची द्यावा वर्णं आमिमाने चरतः — अमर धर्मवाली दोनों रात्री और उषाका बन्धु एक ही है। इन दो बहिनोंका भाई एक ही है, ये क्रमसे एकके पीछे एक आते हैं, ये दोनों अपने वर्णको बदलती हैं और विश्वमें संचार कर रही हैं। रात्रीके पीछे उषा, उषाके पीछे उनका भाई दिन, और दिनके पीछे पुनः रात्री ऐसा, क्रम चल रहा है। यह क्रम बंद नहीं होता। यहां उषा और रात्री ये दो बहिनें हैं और इन दोनोंका भाई दिन है। ये सदा चल रही हैं, कहीं ठहरती नहीं और कभी विश्राम भी नहीं करती। ये अपना रंग बदलती हैं, उषा भी पांच दस निमेषोंमें अपनी लाल, पीला, श्वेत ऐसे रंग बदलती है और रात्री भी प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ प्रहरमें रंग बदलती है। इस तरह यह एकके पीछे एक आती हैं और दूसरी जाती है।

४१ स्वस्रोः समानः अनन्तः अध्वा (१।११३।३)– रात्री और उषा इन दोनों बहिनोंका एकही समाप्त न होनेवाला मार्ग है। पृथ्वीके ऊपर गोल घूमनेके कारण कितना भी इन्होंने भ्रमण किया तो भी यह मार्ग गोल होनेसे समाप्त होनेवाला नहीं है। तथा ये रात्री और उषा एकके पीछे एक आती है, इस कारण ये पृथ्वीके पीछे घूमती ही रहेगी और इनका परिभ्रमण समाप्त नहीं होगा। पृथ्वी गोल है, रात्री और उषा इस गोल पृथ्वीपरसे एकके पीछे एक ऐसी घूमती हैं इसलिये इनका मार्ग समाप्त होनेवाला नहीं। यह भूगोल और खगोल विद्याका ज्ञान यहां प्रकट हो रहा है। गोल वर्तुल जो मार्ग होगा, वह कभी समाप्त नहीं होगा।

देवशिष्टे अन्या अन्या तं चरतः — ईश्वरके नियमा-नुसार एकके पीछे एक इस तरह रात्री और उषा एकके पीछे एक इस क्रमसे आती रहती हैं। यहां समझना चाहिये कि रात्री, उषा इन दो बहिनोंके पश्चात् दिन यह उनका भाई आता है और इस भाईके पीछे फिर रात्री और उषा आती है। केवल उत्तरीय ध्रुवके पास रात्री और उषा ये एकके पीछे एक इस तरह ३० दिन तक आते हैं और पश्चात् सूर्य उगता है जो पृथ्वीपर पांच मास प्रकाश गिराता है।

स्त्रियोंके लिये उपदेश

नक्तोषासा विरूपे सुमेके समनसा न तस्थतुः, न मेथेते — रात्री और उषा ये दो बहिने परस्पर विरुद्ध रंगरूपवाली होनेपर भी परस्पर स्नेहभाव धारण करनेवाली जैसी रहती हैं और एक मनसे कार्य करती हैं। ये किसी स्थानपर बैठती नहीं और परस्परके कार्यका बिगाड भी नहीं करती।

रात्री बिचारी काले रंगकी स्त्री है, उषा सुंदर रंगरूपवाली गौर वर्णकी नर्तकी जैसी अतिसुंदर स्त्री है। स्त्रियोंमें अपने सौंदर्यके कारण ईर्ष्या द्वेष रहता है, वैसा ईर्ष्याद्वेष इनमें नहीं होता। ये परस्पर मिल जुलकर रहती है। उषा अपने सौंदर्य-की घमंड नहीं करती और रात्री अपने काले रंगके कारण अपने आपको हीनदीन नहीं मानती और नाही सुन्दरी उषाका द्वेष करती है। ये दोनों स्त्रियां परस्पर प्रेम करती हैं और एक विचारसे कार्य करती है किसी स्थानपर विश्राम नहीं करती, आलस्य नहीं करती, बातें करती हुई कार्यमें विलंब नहीं करती और परस्पर के कार्यमें क्षती नहीं करती। इस तरह स्त्रियां परस्पर प्रेमसे बर्ताव करें।

इस मंत्रमें स्त्रियोंके लिये बडा उपदेश है। काले रंगवाली अथवा कुरूप स्त्रियां गौरवर्णवाली सुंदर स्त्रियोंका द्वेष न करें, इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारण स्पर्धा ईर्ष्या द्वेष मनमें धारण न करें। परंतु परस्पर मित्रतासे और स्नेहभावसे वर्तें। सब मिलकर घरका अथवा कार्यालयका कार्य एक विचारसे करें। किसी समय आलस्यसे अपना कार्य न छोड कर बैठें, कार्यमें किसी कारण विघ्न न करें। परंतु प्रेमके पारस्परिक वर्तावसे अपने घरका वंशका जातीका और राष्ट्रका गौरव बढा देवें। इस मंत्रका एक एक पद स्त्रीका आदर्श जीवन कैसा होना चाहिये इसका उपदेश कर रहा है। उसकी ओर पाठक ध्यान दें।

स्त्रियोंमें मत्सर रहता है, जो स्त्री सुन्दर होती है, जो पुत्रवती होती है, जिसपर पति अधिक प्रेम करता है उसके साथ ईर्ष्या स्पर्धा तथा मत्सर करना, यह दोष स्त्रियोंमें होता है। वैसा स्वभाव न हो यह उपदेश यहां किया है। उषा स्त्री अत्यंत सुंदरी है, मनोहारिणी है, तेजस्विनी है, सुपुत्रवाली है, पुत्र भी अत्यंत सुंदर और तेजस्वी है। रात्री काली है। विरूप है, भयानक है, तथापि इनमें परस्पर द्वेष नहीं है, परस्पर प्रेम है, एक विचारसे इनका पारस्परिक कार्य चलता है। अतः यह स्त्रियोंका आदर्श इस मंत्रने यहां बताया है।

४२ भास्वती सूनृतानां नेत्री चित्रा अचेति दुरः वि आवः (१।११३।४) — तेजस्विनी, सन्मार्गोंकी शुभ-भाषणोंकी प्रेरणा करनेवाली यह सुंदर स्त्री उषा जाग उठी है, यह अपने घरके द्वार खोल रही है।

जगत् प्रार्च्य रायः नः अख्यत् — यह उषा जगत्को प्रकाश देती है और हमें धन देती है।

उषा विश्वा भुवनानि अजीगः — यह उषा आकर सब भुवनोंको, सब प्राणियोंको जगाती है। इसी तरह स्त्री घरमें सबसे प्रथम उठे और घरके लोगोंको जगावे और उनको अपने अपने कर्मोंमें प्रयुक्त करे।

४३ जिह्मश्ये चरितवे, आभोगाय इष्टये राये, दभ्रं पश्यद्भ्यः विचक्षसे, उर्विया उषाः विश्वा भुवना अजीगः (१।११३।५) — सोनेवालोंको उठाकर घुमानेके लिये, भोग प्राप्तिकी इच्छावालेको धन देनेके लिये, कम दीखनेवालेको अधिक दीखे इसलिये, यह विशाल उषा सब भुवनोंके पास आकर अपने प्रकाशसे सबको जगा रही है।

लोग सोते न रहें, उठें और अपने कार्य करें, प्रयत्न करके भोग प्राप्त करें, धन कमावें, अन्धेरेमें पडे न रहें पर प्रकाशमें आकर अपना अभ्युदयका साधन करें, इसीलिये उषा प्रकाशती है और सबोंको जगाती है।

४४ क्षत्राय, श्रवसे महीयै इष्टये, अर्थं इत्यै, विसदृशा जीविता अभिप्रचक्षे उषा विश्वा भुवनानि अजीगः (१।११३।६) — शत्रुके साथ युद्ध करनेके लिये, यश प्राप्त करने के लिये, अन्न प्राप्त करनेके लिये, महान इष्ट कर्म करनेके लिये, पर्याप्त धन प्राप्त करनेके लिये, तथा विविध प्रकारके जीवनके साधन देखनेके लिये यह उषा प्रकाशती है और सब भुवनोंको जगाती है। यहां शौर्य, कीर्ति, धन, तथा भोग प्राप्त करनेके लिये मनुष्य उषःकालमें उठें और जागें, ऐसा कहा है।

४५ एषा दिवो दुहिता व्युच्छन्ती प्रत्यदर्शि (१।११३।७)— यह स्वर्गकन्या उषा अन्धकार दूर कर रही है ऐसा दीखता है।

शुक्रवासाः युवतिः विश्वस्य पार्थिवस्य वस्व ईशाना— शुभ्र वस्त्र पहनकर यह तरुणी स्त्री सब पृथ्वीपरके धनका स्वामित्व कर रही है। इस उषाके आधीन सब धन हैं!

हे उषः! अद्य इह व्युच्छ — हे उषा! तू आज यहां आकर यहांका अन्धकार दूर कर।

४६ परायतीनां पाथः अनु एति, आयतीनां शश्वतीनां प्रथमा, उषा व्युच्छन्ती, जीवं उदीरयन्ती, कंचन मृतं बोधयन्ती उषा (१।११३।८) — गत उषाओंके मार्गसे आती है, भविष्यमें आनेवाली उषाओंमें यह आजकी उषा प्रथम आयी है, यह अन्धकारको दूर करती है, जीवितोंको तो उठाती ही है, पर किसी किसी मृतको भी जगा देती है। अर्थात् आलसीको उत्साहित कर देती है।

४७ हे उषः! यक्ष्यमाणान् मानुषान् यत् अजीगः, तत् अप्नः भद्रं देवेषु चकृषे (१।११३।९) — हे उषा! तुमने जो याजकोंको जगा दिया, वह कल्याण करनेवाला कर्म देवोंके लिये तुमने किया है। अब याजक यज्ञ करेंगे और उससे विश्वका कल्याण होगा।

४८ कियति समया आ भवाति? याः व्यूषुः, या च व्युच्छान् (१।११३।१०) जो आचुकी, जो आनेवाली हैं और जो आयी हैं, ये उषाएं कबतक आती रहेंगीं? रात्री और उषा कबतक आती रहेगी? यह वर्णन बीचमें दिन न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होनेका वर्णन है। उत्तरीय ध्रुवमें एक उषाके पश्चात् ही दूसरी उषा आती है। तीस उषःकाल आनेके पश्चात् सूर्य दीखने लगता है। यह वर्णन ऐसे क्रमशः आनेवाली उषाओंका प्रतीत होता है।

४९ ये मर्तासः व्युच्छन्तीं पूर्वतरां उषसं अपश्यन्, ते ईयुः; अस्माभिः या प्रतिचक्ष्या अभूत्, ये च अपरीषु पश्यान्, ते यान्ति (१।११३।११)— जो मनुष्य पूर्वकालकी प्रकाशती उषाको देखते थे वे चले गये, हम आज इस उषाको देख रहे हैं, ये हम भी चले जांयगे। और जो आगामीनी उषाको देखेंगे, वे भी निःसंदेह जायंगे। यहां कोई स्थायी रहनेवाला नहीं है। उषा ही एक जैसी पुनः पुनः आती है। हम हमेशा उषाको देखेंगे ऐसी बात नहीं है।

५० यावयत्-द्वेषाः ऋतपाः ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती सुमंगली देववीतिं बिभ्रती श्रेष्ठतमा उषा इह अद्य व्युच्छ (१।११३।१२) — शत्रुको दूर करनेवाली, सत्यका पालन करनेवाली, सत्यके प्रचारके लिये प्रसिद्ध, सुख बढानेवाली, मीठी वाणी बोलनेवाली, मंगल कामनावाली, देवोंकी प्रीतिके लिये यज्ञ करनेवाली श्रेष्ठ उषा आज प्रकाशित हो रही है। प्रकाश होनेके कारण शत्रु तथा डाकू भाग जाते हैं, प्रकाश होनेसे सत्य दीखता है, अन्धेरेमें छल कपट होता है। सूर्य प्रकाशसे सबका कल्याण होता है, दिनमें ही यज्ञ होते हैं, यह सब उषासे होता है, इस कारण उषा श्रेष्ठ है। यह आज प्रकाशित हो रही है।

५१ उषा पूर्व समयमें प्रकाशती रही, इस समय प्रकाश रही है, और भविष्यमें भी प्रकाश देती रहेगी। ऐसी यह तीनों कालोंमें प्रकाशनेके कारण अजर अमर उषा है, यह अपनी धारक शक्तिसे प्रकाशित होती रहे।

५२ दिवः आतासु अञ्जिभिः व्यद्यौत्, देवी कृष्णां निर्णिजं अपावः, अरुणेभिः अश्वैः सयुजा रथेन आयाति, प्रबोधयन्ती (१।११३।१४) — आकाशमें चारों ओर यह उषा प्रकाश रही है, इस दिव्य उषाने काले अन्धेरेको दूर किया है, लाल घोडोंको अपने रथको जोता है और उस रथसे यह आती है और सबको जगा रही है।

५३ पोष्या वार्याणि आवहन्ती, चेकिताना, चित्रं केतुं कृणुते। ईयुषीणां शश्वतीनां उपमा, विभातीनां प्रथमा उषाः व्यश्वैत् (१।११३।१५) पोषण करनेवाले स्वीकार करने योग्य धनोंको यह उषा लाती है, यह उषा सबको प्रकाश देती है, और सुन्दर तेज फैला रही है। यह आजकी उषा गत उषाओंमें अन्तिम है और आनेवाली उषाओंमें पहिली है, यह कैसी उत्तम चमक रही है देखो।

५४ उदीर्ध्वं, असुः जीवः नः आगात्, तमः अप आगात्, सूर्याय यातवे पन्थां आरैक्, यत्र आयुः प्रतिरन्त अगन्म (१।११३।१६) हे मनुष्यो ! उठो, जागो, प्राण जैसा यह जीवन प्रकाश आ गया है, अन्धेरा दूर हुआ है; सूर्य के प्रकाशके लिये मार्ग हुआ है, यहां हम अपनी आयुको बढाते हुए प्रगति करेंगे।

५५ हे मघोनि ! अद्य उच्छ, अस्मे प्रजावत् आयुः नि दिदीहि (१।११३।१७) — हे शोभावाली उषा ! आज तू प्रकाशित हो और हमें पुत्रपौत्रादिसे युक्त दीर्घायु दे। हमें उत्तम संतान हो और दीर्घ आयु भी मिले।

५६ दाशुषे मर्त्याय गोमतीः अश्वदाः सर्ववीराः उषसः व्युच्छन्ति (१।११३।१८) — दाता मानवोंको गौवें घोडे और वीर पुत्र देनेवाली उषाएं प्रकाशित हो रही हैं।

५७ देवानां माता, अदितेः अनीकं, यज्ञस्य केतुः बृहती विभाहि। नः ब्रह्मणे प्रशस्तिकृत् विभाहि। नः जने जनय (१।११३।१९) देवोंकी माता, अदितिके मुखके समान, तेजस्वीनी तथा यज्ञके ध्वज जैसी यह विशाल उषा चमक रही है। हमारे ज्ञानकी चारों ओर प्रशंसा हो, इस तरह यह उषा प्रकाशती रहे। हे उषा ! लोगोंमें उन्नतिके मार्गसे ले चलो।

५८ उषसः चित्रं भद्रं अप्नः वहन्ति, तत् नः मित्रादयः मामहन्ताम् (१।११३।२०) — उषाएं विलक्षण कल्याणकारी धन हमारे पास लाती हैं, उस धनको मित्रादि देव हमारे लिये बढा देवें।

॥ कुत्स ऋषिका उषावर्णन समाप्त ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कक्षिवान् ऋषिका उषा वर्णन

(ऋ० १।१२३।१-१३)

(कक्षीवान्दैर्घतमस औशिजः । उषाः । त्रिष्टुप् ।)

५९ पृथू रथो दक्षिणाया अयोज्यैनं देवासो अमृतासो अस्थुः ।
कृष्णादुदस्थादर्या ३ विहायाश्चिकित्सन्ती मानुषाय क्षयाय ॥ १ ॥
६० पूर्वा विश्वस्माद्भुवनादबोधि जयन्ती वाजं बृहती सनुत्री ।
उच्चा व्यख्यद्युवतिः पुनर्भूरोषा अगन्प्रथमा पूर्वहूतौ ॥ २ ॥
६१ यदद्य भागं विभजासि नृभ्य उषो देवि मर्त्यत्रा सुजाते ।
देवो नो अत्र सविता दमूना अनागसो वोचति सूर्याय ॥ ३ ॥
६२ गृहंगृहमहना यात्यच्छा दिवेदिवे अधि नामा दधाना ।
सिषासन्ती द्योतना शश्वदागादग्रमग्रमिद्भजते वसूनाम् ॥ ४ ॥
६३ भगस्य स्वसा वरुणस्य जामिरुषः सूनृते प्रथमा जरस्व ।
पश्चा स दध्या यो अघस्य धाता जयेम तं दक्षिणया रथेन ॥ ५ ॥

५९ (दक्षिणायाः पृथुः रथः अयोजि) इस दक्ष उषाका विस्तीर्ण रथ जोतकर तैयार हो चुका है। (एनं अमृतासः देवासः आ अस्थुः) इस रथपर अमर देव बैठ गये हैं। (विहायाः अर्या) विशेष श्रेष्ठ यह उषा (मानुषाय क्षयाय चिकित्सन्ती) मनुष्योंके सुखपूर्वक निवासके लिये यत्न करती हुई (कृष्णात् उत् अस्थात्) असंत काले अन्धकारसे ऊपर उठी है, प्रकाशित हुई है ॥ (१)

६० (विश्वस्मात् भुवनात् पूर्वा अबोधि) सब प्राणियोंके पहिले यह उषा जागृत होती है, यह उषा (बृहती सनुत्री वाजं जयन्ती) बडी दान करनेवाली तथा धन जीतनेवाली है। वह (युवतिः) तरुणी (पुनः भूः) पुनः पुनः होनेवाली (पूर्वहूतौ प्रथमा उषाः) प्रथम हवन करनेके समय प्रथम यजनीय उषा (आ अगन्) आगयी और (उच्चा व्यख्यत्) उच्च स्थानसे देखने लगी है ॥ (२)

६१ हे (सुजाते देवि उषः) उत्तम कुलीन दिव्य उषा ! (मर्त्यत्रा) मनुष्योंका पालन करनेवाली तू (अद्य यत् भागं नृभ्यः विभजासि) आज जो धनका भाग मनुष्योंको देती है (अत्र) उस समय (दमूना सविता देवः) दान देनेवाला जगत्का उत्पन्न करनेवाला देव (नः सूर्याय अनागसः वोचति) हम निष्पाप हैं ऐसा सूर्यके सामने कहे ॥ (३)

६२ (अहना दिवे दिवे) उषा प्रतिदिन (गृहं गृहं अच्छ याति) घर घर जाती है और (नाम अधिदधाना) यश अधिक धारण करती है। (सिषासन्ती द्योतना शश्वत् आगात्) हविर्भाग सेवन करनेवाली यह प्रकाशती हुई उषा प्रतिदिन आती है और (वसूनां अग्रं अग्रं इत् भजते) धनोंमें श्रेष्ठ भागका सेवन करती है ॥ (४)

६३ हे (सूनृते उषः)उत्तम भाषण करनेवाली उषा ! तू (भगस्य स्वसा) भग देवताकी सहोदरी और (वरुणस्य जामिः) वरुणकी बहिन है ऐसी तू (प्रथमा जरस्व) पहिले स्तुति होनेवाली हो। (पश्चा) इसके नंतर (यः अघस्य धाता) जो पापका धारण करनेवाला पापी शत्रु है (स दध्या) वह पकडा जायगा और (तं दक्षिणया रथेन जयेम) उसे तेरी दक्षतासे तथा रथसे हम पराजित करेंगे ॥ (५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६४ उदीरतां सूनृता उत्पुरंधीरुदग्नयः शुशुचानासो अस्थुः ।
स्पार्हा वसूनि तमसापगूळ्हाविष्कृण्वन्त्युषसो विभातीः ॥ ६ ॥
६५ अपान्यदेत्यभ्य१न्यदेति विषुरूपे अहनी संचरेते ।
परिक्षितोस्तमो अन्या गुहाकरद्यौदुषाः शोशुचता रथेन ॥ ७ ॥
६६ सदृशीरद्य सदृशीरिदु श्वो दीर्घं सचन्ते वरुणस्य धाम ।
अनवद्यास्त्रिंशतं योजनान्येकैका क्रतुं परि यन्ति सद्यः ॥ ८ ॥
६७ जानत्यह्नः प्रथमस्य नाम शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची ।
ऋतस्य योषा न मिनाति धामाहरहर्निष्कृतमाचरन्ती ॥ ९ ॥
६८ कन्येव तन्वा३ शाशदानाँ एषि देवि देवमियक्षमाणम् ।
संस्मयमाना युवतिः पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती ॥ १० ॥
६९ सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषाविस्तन्वं कृणुषे दृशे कम् ।
भद्रा त्वमुषो वितरं व्युच्छ न तत्ते अन्या उषसो नशन्त ॥ ११ ॥

---

६४ (सूनृता उदीरतां) स्तोत्र कहे जांय, (पुरंधीः उत्) विशाल बुद्धियां कार्यमें लगें, (अग्नयः शुशुचानासः) अग्नि प्रदीप्त होकर (उत् अस्थुः) जलते जांय । (विभातीः उषसः) प्रकाशती उषाएँ (तमसा अप गूळ्हा) अन्धकारसे ढंके (स्पार्हा वसूनि) स्पृहणीय धन (आविष्कृण्वन्ति) प्रकट करती रहें ॥ (६)

६५ (विषुरूपे अहनी संचरेते) विरुद्ध रूपवाली रात्री और उषा क्रमसे संचार कर रही हैं । (अन्यद् अप एति) रात्रीका अन्धकार चला जाता है और (अन्यत् अभि एति) दिनका प्रकाश आ जाता है । (परिक्षितोः अन्या) इन घूमनेवालोंमेंसे एक रात्री (तमः गुहा अकः) अन्धकारसे सबको आच्छादित करती है, और दूसरी उषा (शोशुचता रथेन अद्यौत्) तेजस्वी रथसे प्रकाशती है ॥ (७)

६६ (अद्य सदृशीः) आज भी ये समान हैं और (श्वः उ सदृशीः इत्) कल भी ये उषाएं समान ही होंगी । (वरुणस्य दीर्घं धाम) वरुणके विस्तीर्ण स्थानकी (अनवद्याः सचन्ते) ये शुद्ध उषायें सदा सेवा करती हैं । (एका एका) एक एक उषा (त्रिंशतं योजनानि) तीस योजन (सद्यः क्रतुं परियन्ति) तत्काल ही कर्म प्रवर्तक सूर्यके आगे चलती हैं ॥ (८)

६७ (अह्नः प्रथमस्य नाम जानती) दिनके प्रथम भागका यश जाननेवाली (शुक्रा श्वितीची) शुद्ध और तेजस्विनी उषा (कृष्णात् अजनिष्ट) रात्रीके काले अन्धकारमेंसे प्रकट होती है। यह (योषा) स्त्री उषा (ऋतस्य धाम न मिनाति) सत्यके व्रतको तोडती नहीं और (अहः अहः निष्कृतं आचरन्ती) प्रतिदिन नियत स्थानपर आती और नियमपूर्वक रहती है ॥ (९)

६८ हे (देवि) उषा देवि ! (तन्वा शाशदाना कन्या इव) शरीरको स्पष्ट दिखानेवाली कन्याके समान (इयक्षमाणं देवं एषि) इष्ट सुख देनेवाले पति देवके पास तू जाती है। (युवतिः संस्मयमाना) तरुणी स्त्री हंसती हुई और (पुरस्तात्) पतिके सन्मुख (विभाती) चमकती हुई (वक्षांसि आविः कृणुषे) अपनी छाती प्रकट रूपसे दिखाती है ॥ (१०)

६९ (मातृमृष्टा योषा इव) माताद्वारा पवित्र बनी तरुणी स्त्रीके समान (सुसंकाशा) तेजस्विनी तू (कं तन्वं दृशे आविः कृणुषे) अपने सुन्दर शरीरको लोगोंको दिखानेके लिये प्रकट करती है। हे (उषः) उषा ! (त्वं भद्रा वितरं व्युच्छ) तू कल्याण करनेवाली होकर दूरतक प्रकाशती रह । (ते तत् अन्याः उषसः न नशन्त) तेरा वह तेज अन्य उषाएं प्राप्त नहीं कर सकेंगी ॥ (११)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७० अश्वावतीर्गोमतीर्विश्ववारा यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।
परा च यन्ति पुनरा च यन्ति भद्रा नाम वहमाना उषासः ॥ १२ ॥

७१ ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना भद्रंभद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ।
उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छास्मासु रायो मघवत्सु च स्युः ॥ १३ ॥

(ऋ० १।१२४।१-१३)

(कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः । त्रिष्टुप् ।)

७२ उषा उच्छन्ती समिधाने अग्ना उद्यन्त्सूर्य उर्विया ज्योतिरश्रेत् ।
देवो नो अत्र सविता न्वर्थं प्रासावीद्द्विपत्प्र चतुष्पदित्यै ॥ १ ॥

७३ अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनामायतीनां प्रथमोषा व्यद्यौत् ॥ २ ॥

७४ एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥ ३ ॥

---

७० (अश्वावतीः गोमतीः) घोडोंसे और गौओंसे युक्त (विश्ववाराः) सबको स्वीकारने योग्य (सूर्यस्य रश्मिभिः यतमानाः) सूर्यके किरणोंसे अन्धकार दूर करनेके लिये यत्न करनेवाली (भद्रा नाम वहमाना उषासः) कल्याण करनेका यश धारण करनेवाली उषाएं (परा च यन्ति) दूर जाती हैं और (पुनः आयन्ति च) फिर आती हैं ॥ (१२)

७१ हे (उषः) उषा ! (ऋतस्य रश्मिं अनुयच्छमाना) सूर्यके किरणोंके अनुकूल रहनेवाली तू (अस्मासु भद्रं भद्रं क्रतुं धेहि) हमारे अन्दर कल्याणकारक कर्म करनेकी बुद्धि स्थापन कर। तू (सुहवा नः अच्छ व्युच्छ) बुलानेपर हमारे सामने प्रकाशती रह। (अस्मासु मघवत्सु च रायः स्युः) हमारे और धनिकोंमें पर्याप्त धन रखो ॥ (१३)

७२ (समिधाने अग्नौ) प्रज्वलित अग्नि होनेपर (उषा उच्छन्ती) उषा अन्धकार दूर करती है और (उद्यन् सूर्यः) उदित हुए सूर्यके समान (उर्विया ज्योतिः अश्रेत्) विशाल तेज धारण करती है। (अत्र सविता देवः नः अर्थं) यहां सूर्य देव हमारे लिये आवश्यक धन तथा (द्विपत् चतुष्पद्) द्विपाद और चतुष्पादोंको (इत्यै प्र प्र असावीत्) गमन करनेके लिये मार्ग कर देवे ॥ (१)

७३ (दैव्यानि व्रतानि अमिनती) दिव्य व्रतोंका नाश न करनेवाली, परंतु (मनुष्या युगानि प्रमिनती) मनुष्योंके आयुका नाश करनेवाली (ईयुषीणां शश्वतीनां उपमा) सदा आती रही उषाओंके अन्तमें आनेवाली तथा (आयतीनां प्रथमा) आनेवाली उषाओंमें पहिली यह (उषा व्यद्यौत्) प्रकाशती है ॥ (२)

७४ (एषा दिवो दुहिता) यह द्युलोककी पुत्री (ज्योतिः वसाना समना) ज्योतिरूप वस्त्र पहननेवाली उत्तम मनवाली (पुरस्तात् प्रति अदर्शि) पूर्व दिशामें दीखने लगी है। यह उषा (ऋतस्य पन्थां साधु) सत्यके मार्गसे ठीक तरह जैसी (प्रजानती इव अनु एति) विदुषी स्त्री जाती है वैसी जाती है। तथा (दिशः न मिनाति) दिशाओंमें यह किसी तरह बाधा नहीं डालती ॥ (३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७५ उपो अदर्शि शुन्ध्युवो न वक्षो नोधा इवाविरकृत प्रियाणि ।
अद्मसन्न ससतो बोधयन्ती शश्वत्तमागात्पुनरेयुषीणाम् ॥ ४ ॥
७६ पूर्वे अर्धे रजसो अप्त्यस्य गवां जनित्र्यकृत प्र केतुम् ।
व्यु प्रथते वितरं वरीय ओभा पृणन्ती पित्रोरुपस्था ॥ ५ ॥
७७ एवेदेषा पुरुतमा दृशेकं नाजामिं न परि वृणक्ति जामिम् ।
अरेपसा तन्वा३ शाशदाना नार्भादीषते न महो विभाती ॥ ६ ॥
७८ अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारुगिव सनये धनानाम् ।
जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः ॥ ७ ॥
७९ स्वसा स्वस्रे ज्यायस्यै योनिमारैगपैत्यस्याः प्रतिचक्ष्येव ।
व्युच्छन्ती रश्मिभिः सूर्यस्याञ्ज्यङ्क्ते समनगा इव व्राः ॥ ८ ॥
८० आसां पूर्वासामहसु स्वसॄणामपरा पूर्वामभ्येति पश्चात् ।
ताः प्रत्नवन्नव्यसीर्नूनमस्मे रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः ॥ ९ ॥

---

७५ (शुन्ध्युवः वक्षः न) शुद्धस्वच्छ छातीके समान (उपो अदर्शि) समीपसे ही उषा दीखती है । उस उषाने (नो-धा इव प्रियाणि आविः अकृत) नवीन वस्तुका धारण करनेवालेके समान अपने प्रिय हेतु प्रकट किये हैं । (अद्मसत् न ससतः बोधयन्ती) घरमें रहनेवाली स्त्री जैसी सोनेवालोंको जगाती है, वैसी वह उषा (आईयुषीणां शश्वत्तमा) आनेवालोंमें निश्चयसे प्रथम आनेवाली (पुनः आ अगात्) पुनः आगयी है ॥ (४)

७६ (अप्त्यस्य रजसः पूर्वे अर्धे) व्यापक अन्तरिक्ष लोकके पूर्व अर्धमें (गवां जनित्री केतुं प्र अकृत) किरणोंको प्रकट करनेवाली उषाने प्रकाश किया है । (पित्रोः उपस्था) द्यावा पृथिवीके समीप रहकर (उभा आपृणन्ती) इन दोनों लोकोंको प्रकाशसे भरपूर भरनेवाली उषा (वितरं वरीयः विप्रथतेउ) विशेष श्रेष्ठ प्रकाशसे आकाशको भर देती है॥ (५)

७७ (एषा एव इत्) यह उषा (पुरुतमा) विस्तीर्ण होती हुई (कं दृशे) सुखके अनुभूतिके लिये जिस तरह (अजामिं न परि वृणक्ति) विजातीयको त्यागती नहीं वैसी ही (न जामिं) स्वजातीयको भी नहीं छोडती। दोनोंको प्रकाशित करती है । (अरेपसा तन्वा शाशदाना) निष्पाप शरीरसे प्रकाशित होती हुई यह उषा (न अर्भात् ईषते) न छोटेसे दूर भागती है और (न महः) न बडेको त्यागती है, पर दोनोंको (विभाती) प्रकाशित करती है ॥ (६)

७८ (अभ्राता इव प्रतीची पुंसः एति) भ्रातृविहीन स्त्री जैसी पीछे हटकर अपने पितादिके पास जाती है, (धनानां सनये गर्तारुक् इव) धनोंकी प्राप्तिके लिये कोई स्त्री जैसे न्यायालयमें जाती है, (उशती सुवासा जाया पत्ये इव) पतिकी इच्छा करनेवाली उत्तम वस्त्र धारण करनेवाली स्त्री जैसी पतिके पास जाती है, यह (उषा) उषा (हस्रा इव अप्सः नि रिणीते) हंसती हुई स्त्रीके समान अपनी सुंदरताको प्रकट करती है ॥ (७)

७९ (स्वसा) एक बहन (ज्यायस्यै स्वस्रे) अपनी श्रेष्ठ बहनके लिये (योनिं आरैक्) स्थान खुला करती है । (अस्याः प्रतिचक्ष्य इव अप एति) इसके देखते ही वह स्वयं हट जाती है । (सूर्यस्य रश्मिभिः व्युच्छन्ती) सूर्यके किरणोंसे अन्धेरेको दूर करती हुई यह उषा (समनगा इव व्राः आञ्जि अंक्ते) मिलकर जानेवाले विद्युत समूहके समान रूपसे प्रकाशती है ॥ (८)

८० (आसां पूर्वासां स्वसॄणां) इन पूर्व समयके बहिनोंमें (अहसु अपरा) दिनोंके मध्यमें एक (पश्चात् पूर्वां अभि एति) पीछेसे आकर दूसरीके पीछेसे जाती है । (ताः उषासः प्रत्नवत् नव्यसीः) वे उषाएं पुरातनके समान नवीन भी (नूनं अस्मे रेवत् सुदिना उच्छन्तु) निश्चय पूर्वक हमारे लिये धन युक्त शुभ दिन प्रकाशित करती रहें ॥ (९)

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८१ प्र बोधयोषः पृणतो मघोन्यबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।
रेवदुच्छ मघवद्भ्यो मघोनि रेवत्स्तोत्रे सूनृते जारयन्ती ॥ १० ॥
८२ अवेयमश्वैद्युवतिः पुरस्ताद्युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम् ।
वि नूनमुच्छादसति प्र केतुर्गृहंगृहमुप तिष्ठाते अग्निः ॥ ११ ॥
८३ उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन्नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥ १२ ॥
८४ अस्तोढ्वं स्तोम्या ब्रह्मणा मेऽवीवृधध्वमुशतीरुषासः ।
युष्माकं देवीरवसा सनेम सहस्रिणं च शतिनं च वाजम् ॥ १३ ॥

---

८१ हे (मघोनि उषः) धनवती उषा ! तू (पृणतः प्रबोधय) दाताओंको जगाओ । (अबुध्यमानाः पणयः ससन्तु) अज्ञानी दान न देनेवाले कंजूस बनिये सो जांय । हे (मघोनि) धनवाली उषा ! (मघवद्भ्यः रेवत् उच्छ) धनवानोंके लिये धनके साथ प्रकाश दे । हे (सूनृते) उत्तम रीतिसे बोलनेवाली उषा ! (जारयन्ती) सब प्राणियोंकी आयु कम करती हुई तू (स्तोत्रे रेवत् उच्छ) स्तोताके लिये धनके साथ प्रकाशित हो ॥ (१०)

८२ (इयं युवतिः पुरस्तात् अव अश्वैत्) यह तरुण स्त्री उषा पूर्व दिशामें बढ रही है । यह (अरुणानां गवां अनीकं युंक्ते) लाल रंगके घोडोंके समूहको अपने रथमें जोतती है । यह उषा (नूनं वि उच्छात्) निश्चयसे प्रकाशती है और (असति प्र केतुः) अन्धेरेमें प्रकाश करती है । (अग्निः गृहं गृहं उपतिष्ठाते) अग्नि घर घरमें प्रदीप्त होता है ॥ (११)

८३ (ते व्युष्टौ) तेरा प्रकाश होनेपर (वयः चित् वसतेः उत् अपप्तन्) पक्षिगण ऊपर उडते हैं । (ये नरः च पितुभाजः) जो मनुष्य हैं वे अन्नकी इच्छासे भ्रमण करते हैं । हे (देवि उषः) उषा देवी ! (अमा सते) घरमें रहनेवाले (दाशुषे मर्त्याय) दाता मनुष्यके लिये (भूरि वामं वहसि) तू बहुत धन देती है ॥ (१२)

८४ हे (स्तोम्याः) प्रशंसनीय उषाओ ! (मे ब्रह्मणा अस्तोढ्वं) मेरे स्तोत्रसे तुम्हारी स्तुति हो रही है । हे (उषासः) उषाओ ! (उशतीः अवीवृधध्वं) उन्नतिकी इच्छा करनेवाली हम सब प्रजाजनोंकी वृद्धि करें । हे (देवीः) दिव्य उषाओ ! (युष्माकं अवसा) तुम्हारे संरक्षणसे (सहस्रिणं च शतिनं च वाजं सनेम) सहस्रों और सेकडों प्रकारके धन अन्न और बलको हम प्राप्त करेंगे ॥ (१३)

दीर्घतमाके पुत्र कक्षीवान्‌का

उषाका वर्णन

कक्षीवान् ऋषि उषाका वर्णन करते हुए ऐसा कहते हैं—

५९ दक्षिणायाः पृथु रथः अयोजि, एनं अमृतासो देवासः आ अस्थुः (१।१२३।२)— सब कार्य दक्षतासे करनेवाली उषाका विस्तृत रथ जोता गया है और उस रथपर अमर देव आकर बैठे हैं।

यहां ' दक्षिणा ' शब्द है। दक्षिणाका अर्थ यज्ञकी दक्षिणा है, जो याजकोंको दी जाती है। पर ' दक्षका भाव ' ऐसा भी इसका अर्थ होता है। दाक्षिण हस्तका अर्थ कार्य करनेमें प्रवीण हाथ । इसी तरह 'दक्ष उषा' ऐसा यहां इसका अर्थ है । दक्षिणा देनेवाली, धनदान करनेवाली वेतन देनेवाली ये भी इस पदके भाव हो सकते हैं । उषा धनका दान करती है ऐसा कई मंत्रोंमें वर्णन इससे पूर्व आचुका है। मंत्र क्रमाङ्क २६ में ' योग्य कार्य करनेवालेको सुयोग्य वेतन ' देनेका उल्लेख है । वही भाव दक्षिणा देनेवालीके अर्थमें पाठक देख सकते हैं। याजकोंको दक्षिणा दी जाती है वह भी तो एक प्रकारका कृतकर्मका वेतन ही तो है। इस दक्षिणाका भाव विचार करके पाठक जानें। यहां यह 'दक्षिणा' उषाका गुण बोधक नाम है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विहायाः अर्या मानुषाय क्षयाय चिकित्सन्ती कृष्णात् उदस्थात्— वह श्रेष्ठ उषा मानवोंके सुखदायी निवासके लिये ज्ञानपूर्वक यत्न करती है और उसने अपने आपको अन्धकारसे ऊपर उठाया है। यही मनुष्योंका कर्तव्य है, वे अज्ञानान्धकारसे अपने आपको ऊपर उठावें, विपत्तिसे ऊपर उठकर संपत्तिको प्राप्त करें और मानवी जनताका सुखपूर्वक निवास हो ऐसा प्रयत्न करें।

६० **विश्वस्मात् भुवनात् पूर्वा अबोधि; बृहती सनुत्री वाजं जयन्ती** (१।१२३।२)- यह उषा सब प्राणियोंसे पूर्व उठती है, और यह बडी दान करनेवाली अन्न बल तथा धनको जीत लेती है। सबसे पूर्व उठकर अपने कार्य को लगनेसे अन्न प्राप्त होता है, बल बढता है और प्रयत्न करनेसे धन भी मिलता है।

युवतिः पुनर्भूः पूर्वहूतौ प्रथमा उषा आ अगन्, उच्चा व्यख्यत्— यह उषा तरुणी स्त्री पुनः पुनः आनेवाली प्रथम आहुती डालनेवाली सबसे प्रथम स्थानमें विराजमान होती है और उच्च स्थानसे सब देखती है। इस तरह तरुण स्त्री पुनः पुनः आकर कार्यका निरीक्षण करे, हवन करनेके लिये प्रथम आकर बैठे और उच्च स्थानमें विराजे और सब देखे।

यहां ' पुनर्भूः ' (पुनः भूः) पद है। जो विभवा स्त्री पुनः विवाह करती है उसका वाचक यह पद है। वेदमें भी **' समानलोको भवति पुनर्भुवा अपरः पतिः '** (अथर्व० ९।५।२८) ऐसा मंत्र आया है। इसमें कहा है कि इस तरहका द्वितीय पति पहिले जैसा होता है। यद्यपि ' पुनर्भूः ' का ऐसा प्रयोग वेदमें है, तथापि यहां वह अर्थ नहीं है। क्योंकि उषाका ऐसा कोई संबंध इन सूक्तोंमें नहीं है। अतः यहां उषाका वारंवार यहां होना, वारंवार आना, इतना ही अर्थ अभीष्ट है।

६१ **हे सुजाते उषः देवि ! मर्त्यत्रा भागं नृभ्यः विभजासि, अत्र दमूना देवः सूर्याय नः अनागसः वोचति** (१।१२३।३)— हे कुलीन उषा देवी ! मनुष्यों-का तारण करती हुई तू मनुष्योंके लिये जिस समय धनका भाग देती है, उस समय दानशील देव सूर्यके सामने हमें निष्पाप बतावें।

मर्त्यत्रा नृभ्यः भागं विभजासि— मनुष्योंका तारण करनेके लिये मानवोंको धनका योग्य भाग देना चाहिये। आवश्यक भोग साधन न मिले तो मनुष्य सुखसे नहीं रह सकेंगे। यही अर्थात् धनका सुयोग्य बंटवारा ही मनुष्योंको सुखसे यहां रख सकता है और मनुष्योंको ' **अन्-आगसः** ' निष्पाप बना सकता है। मनुष्योंसे जो पाप होता है वह धनका विषम भाग होनेसे होता है। मनुष्यको आवश्यक भोग न मिले, तो वह पाप करनेमें प्रवृत्त हो जाता है। इसलिये यहां '**मर्त्यत्रा नृभ्यः भागं विभज** ' मनुष्योंका रक्षण होनेके लिये मानवों को धनका विभाग योग्य रीतिसे मिले ऐसा कहा है।

६२ **सिषासती द्योतना शश्वत् आगात्** (१।१२३। ४)— हविर्भाग लेनेवाली उषा प्रतिदिन आती है। (**नाम अभिदधाना**) कीर्तिको धारण करती है, स्तुति सुनती है और (**गृहं गृहं याति**) घर घरको पहुंचती है, घर घरमें प्रकाश करती है और (**वसूनां अग्रं भजते**) धनोंमें श्रेष्ठ धन प्राप्त करती है।

स्त्री भी प्रतिदिन हवन करे, यश कमावे, घरमें प्रकाश करे और प्रयत्नसे श्रेष्ठ धन प्राप्त करे।

६३ **हे सूनृते उषः ! भगस्य स्वसा, वरुणस्य जामिः, प्रथमा जरस्व। पश्चा यः अघस्य धाता, स दध्या, तं दक्षिणया रथेन जयेम** (१।१२३।५)— हे उत्तम भाषण करनेवाली उषा ! तू भगकी और वरुणकी बहिन है। तू सब देवोंमें पहिली है, तू स्तुति प्रारंभ कर। पश्चात् जो पापी है उसको पकडेंगे और दक्षतापूर्वक चलनेवाले रथसे उसको पराभूत करेंगे।

स्त्री उत्तम और मीठा भाषण करे, सौभाग्यवाली हो, दिव्य भाववालोंमें पहिली हो, ईश्वरकी भक्ति करे, जो पापी होगा उसको घेरा और पकडा जाय और उसको दक्षतासे तथा वीरता-से पराभूत किया जाय।

६४ **सूनृता, पुरंधीः उदीरतां, शुशुचानासः अग्नयः उदस्थुः। विभातीः उषसः तमसा अप गूळ्हा स्पार्हा वसूनि आविष्कृण्वन्ति** (१।१२३।६)— स्तोत्र पाठ करो, अग्नि प्रदीप्त करो, उसमें हवन करो, तो तेजस्वी उषाएं गुप्त धनोंको प्रकट करेंगी।

६५ **विरूपे अहनी संचरेते, अन्यत् अपैति, अन्यत् अभ्येति; परिक्षितोः अन्या तमः गुहा अकः अन्या शोशुचता रथेन अद्यौत्** (१।१२३।७)- विरुद्ध रूपरंगवाली रात्री और उषा क्रमसे संचार करती हैं, एक आकर जाती है और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरी आती है। घूमनेवाली इन दोनोंमें एक अन्धकारसे सबको ढंक देती है और दूसरी अपने तेजस्वी रथसे प्रकाश करती रहती है।

यहां रात्री और उषाका वर्णन है। क्रमसे रात्री और उषा आती है ऐसा यहां वर्णन है। यहां जो (**शोशुचता रथेन अन्या अधौत्**) तेजस्वी रथसे दूसरी प्रकाश रही ऐसा कहा है वह उषा है। अन्यत्र उषाका वर्णन ऐसा ही आया है। यहां दिनका वर्णन नहीं है। दिन न होते हुए रात्री और उषाका क्रमसे संचार उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशमें ही संभव है। इस सूक्तका ऋषि भी '**दीर्घतमाका पुत्र**' अर्थात् बडे प्रदीर्घ अन्धकारका पुत्र ' कक्षीवान् है। ' कक्षी-वान् ' का अर्थ ' गुप्त स्थानवाला, अन्धेरे कमरेमें रहनेवाला, गुप्तस्थानमें रहनेवाला। ' प्रदीर्घ अधंकारका पुत्र अन्धेरे कमरेवाला ही हो सकता है। प्रदीर्घ अन्धकारकी रात्री उत्तरीय ध्रुवपर ही होती है और वहीं रात्री और उषाका क्रमसे एकके पीछे दूसरी का आना एक दो मास तक होता है। सूर्योदयके पूर्वकी यह स्थिति है और उषःकालका दर्शन भी प्रथम दक्षिण दिशामें ही वहां होता है। इस कारण भी उषाका नाम 'दक्षिणा' हो सकता है।

६६ **अद्य सदृशी, श्वः सदृशी, अनवद्याः वरुणस्य दीर्घं धाम सचन्ते।** (१।१२३।८)-जैसी आज उषा आती है वैसी ही कल आती है। यह अनिन्द्य उषा वरुणके दीर्घ स्थानकी सेवा करती है।

एका एका त्रिंशतं योजनानि सद्यः क्रतुं परि-यन्ति— एक एक उषा तीस योजनोंकी परिक्रमा करती है।

इस मंत्रमें कहा है कि 'वरुणका दीर्घस्थान' उत्तर समुद्र होगा और ' तीस योजन उषाका परिभ्रमण ' तीस उषाओंका क्रमसे एकके पीछे एकका आना होगा।

६७ **प्रथमस्य अह्नः नाम जानती शुक्रा श्वित्रीची कृष्णात् अजनिष्ट** (१।१२३।९)—प्रथम दिनको जानने वाली गौरवर्ण शुभ्र उषा काली रात्रीके काले अन्धकारमेंसे उत्पन्न हुई है। रात्रीके अन्धकारसे उषा प्रकट होती है।

ऋतस्य धाम न मिनाति, अहः अहः निष्कृतं आचरन्ती— सत्य व्रतका उल्लंघन नहीं करती और प्रतिदिन निश्चित स्थानपर ही आ जाती है।

रात्रीके काले अन्धकारसे उषाकी उत्पत्ति तो स्पष्ट है। सत्य नियमका उल्लंघन उषा कभी नहीं करती, और प्रतिदिन निश्चित स्थानपर जाती है। उत्तरीय ध्रुवमें प्रतिदिनकी उषा एकही स्थानपर आती नहीं परंतु अपना स्थान बदलती है परंतु वह बदलना भी निश्चित प्रमाणसे होता रहता है।

तरुणी स्त्री

६८ **हे देवि ! तन्वा शाशदाना कन्या इव इय-क्षमाणं देवं एषि। संस्मयमाना युवतिः पुरस्तात् विभाती, वक्षांसि आविः कृणुषे** (१।१२३।१०)— हे दिव्य उषा ! तू अपने शरीरसे सुंदर दीखनेवाली कन्याके समान अपने पूजनीय पतिदेवके पास जाती है। हंसती हुई तरुण स्त्री अपने पतिदेवके पास चमकती हुई जाती है और अपनी छाती को किंचित् खोलकर भी बताती है।

यह वर्णन तरुण स्त्रीका है जो रंगरूपसे सुन्दर है, शरीरसे सुदृढ और हृष्टपुष्ट है, वस्त्रभूषणोंसे सजी है, अपने पतिके ऊपर प्रेम करती है, पतिके विषयमें मनमें पूज्यभाव धारण करती है, वह हंसती और नेत्रकटाक्ष करती हुई चमकती दमकती हुई और अपनी पुष्ट छातीको दिखाती हुई पतिके सन्मुख आती जाती है। वैसी यह उषा अपने पति देवके सामने चमक रही है।

६९ **मातृमृष्टा योषा इव सुसंकाशा कं तन्वं दृशे आविः कृणुषे** (१।१२३।११)— मातासे परिशुद्ध की गई तरुणीके समान सुन्दर बनी हुई यह तरुणी अपने शरीरके अवयवोंको बतानेके लिये प्रकट करती है। अपने अवयवोंको ढंकतीसी दीखती है, पर खोलकर साथ बताती भी है।

हे उषः ! त्वं भद्रा वितरं व्युच्छ, अन्याः उषसः ते तत् न नशन्तः— हे उषा ! तूं कल्याण करती हुई अधिक प्रकाशित हो। अन्य उषाएं तेजस्वितामें तेरी बराबरी नहीं कर सकती हैं।

मातासे परिशुद्ध रीतिसे सजाई हुई तरुण स्त्री जैसी अधिक शोभावाली दीखती है। पतिके पास जानेवाली तरुणी जिस समय उसकी माताके द्वारा सजाई जाती है उस समय वह अधिक ही सुशोभित दीखती है। यहां रात्रीको माता माना है और उषा उसकी तरुण पुत्री है जो प्रिय पतिदेवके पास जा रही है। उस समय वह तरुणी माताके द्वारा सजाई जाती है इसलिये विशेष शोभती है। यह वर्णन कितना हृदयंगम है इसका मनन पाठक करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७० घोडोंवाली और गौओंवाली तथा सबके द्वारा आदर करने योग्य यह उषा सूर्य किरणोंके साथ खेलती है, अन्धेरेको दूर करती है। यह कल्याण करनेवाली उषा दूर जाती सी दीखती है, पर फिरसे पुनः उसी स्थानपर आती है।

घोडोंवाली और गौओंवाली उषा है। इसका स्पष्टीकरण इससे पूर्व किया गया है। एक वार जाती है और वही फिर आती है। यह वर्णन तो स्पष्ट रीतिसे उत्तरीय ध्रुवका ही होगा क्योंकि अन्य स्थानकी उषा जानेपर दिन आता है, पश्चात् रात्री आती है और पश्चात् उषा आती है। पर यहां की उषा तो **(परा यन्ति, पुनः आयन्ति)** जाती है और पुनः फिरसे आती है। उषाका जाना और उसीके साथ पुनः आना उत्तरीय ध्रुवको छोडकर किसी अन्य प्रदेशमें नहीं होता है।

७१ सूर्य किरणोंको देनेवाली, हमारे कल्याणकारी यज्ञका संपादन करनेवाली वर्णनीय उषा प्रकाशित होती रहे और वह हमें धनोंका प्रदान करे।

७२ अग्नि प्रज्वलित होनेपर उषा आती है और अन्धकार-को दूर करती है। सूर्य अधिक तेजस्वी होता है। यह सविता देव हमें धन और द्विपात् और चतुष्पादोंको गमन करनेके लिये मार्ग कर देवे। अर्थात् उषा आनेके बाद हमारे मनुष्य तथा गौऐं और घोडे चरनेके लिये मार्ग खुला हो जाय।

यहां '**इत्यै**' पद है। गमनका मार्ग खुला हो जाय। इस प्रार्थनासे गमनका मार्ग बंद हो जाता था, ऐसा सूचित हो जाता है। बर्फ पडनेसे मार्ग बंद हो जाता था वह फिर उषः काल होने और सूर्य आनेसे खुल जाता है। अथवा मार्ग करनेवाले बर्फको दूर करते हैं।

७३ दिव्य नियमोंके अनुसार आनेवाली उषा मानवी आयुको घटाती है। यह उषा गत उषाओंमें अन्तिम और आनेवाली उषाओंमें पहिली आज प्रकाशित हो रही है।

७४ यह स्वर्गीय कन्या उषा प्रकाशका रंगीन वस्त्र पहनती है और पूर्व दिशासे ऊपर आती हुई दीख रही है। यह अपने सत्यमार्गसे ठीक रीतिसे जाती है। जैसी विदुषी स्त्री योग्य मार्गसे जाती है उस तरह दिशाओंमें किसी तरहसे बाधा न पहुंचाती हुई यह उषा आरही है।

७५ **शुन्ध्युवः वक्षः न उप उ अदर्शि** (१।१२४।४)- शुद्ध स्वच्छ की हुई छाती जैसी सुंदर दीखती है उस तरह यह उषा स्वच्छ और सुन्दर दीख रही है।

नोधा इव प्रियाणि आविः अकृत— नवीन गायक जैसा अपने विशेष आलाप सुनाता है उस तरह यह उषा अपने प्रिय सुंदर अवयवोंको प्रकट करती है। जैसी तरुणी अपना सौंदर्य प्रकट करती है वैसी उषा अपनी प्रभा दिखा रही है।

सद्मसत् न ससतः बोधयन्ती— घरमें रहनेवाली स्त्री जैसी सोनेवाले घरवालोंको समयपर जगाती है, उस तरह उषा सबको जगाती है।

आयुषीणां शश्वत्तमा पुनः आ अगात्— वारंवार आनेवाली उषा पुनः आज आगयी है।

७६ **अप्त्यस्य रजसः पूर्वे अर्धे गवां जनित्री केतुं प्र अकृत** (१।१२४।५)-व्यापक अन्तरिक्ष लोकके पूर्व दिशाके आधे भागमें किरणोंको उत्पन्न करनेवाली उषाने अपना ध्वज फहराया है। उषा आ रही है।

पित्रोः उपस्था उभा आपृणन्ती वितरं वरीयः व्युप्रथते— द्यावापृथिवी रूपी दोनों मातापिताओंके समीप रहकर यह उषा श्रेष्ठ प्रकाशको अन्तरिक्षमें भरपूर भर देती है। अन्तरिक्षका सब स्थान उषाके प्रकाशसे भर रहा है।

७७ **एषा पुरुतमा कं दृशे न अजामिं, जामिं परि वृणक्ति**—(१।१२४।६)—विस्तृत होनेवाली उषा सुंदरताको अनुभव होनेके लिये परकीयको अथवा स्वकीयको दूर नहीं करती। सब पर अपना प्रकाश डालती है और उसको सुंदर बना देती है। जो उसके सामने आता है उसको सुंदर बना देती है।

अरेपसा तन्वा शाशदाना, न अर्भात् ईषते, न महः, विभाती— निर्दोष शरीरसे प्रकाशित होनेवाली यह उषा, छोटेको तथा बडेको, किसीको भी त्यागती नहीं; सबको विशेष रीतिसे प्रकाशित करती है। संपूर्ण विश्व उषाके प्रकाशसे प्रकाशित होता है।

स्त्री भी अपने उत्तम निर्दोष और निष्पाप चारित्र्यसे सब पर प्रभाव डाले और अपने विषयमें सबोंके मनमें अच्छा आदर उत्पन्न करे।

७८ **अभ्राता इव प्रतीची पुंसः एति** (१।१२४।७)- भ्रातृहीन स्त्री जैसी पीछे हटकर अपने पिता आदिके पास निराश्रित होनेपर जाती है,

धनानां सनये गर्तारुक् इव— धनोंकी प्राप्तिके लिये जिस तरह कोई विधवा आदि स्त्री न्यायालयमें जाती है, उस तरह—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुवासा जाया पत्ये इव उषा हस्रा इव अप्सः निरिणीते- सुंदर वस्त्र पहनकर पतिकी इच्छावाली यह उषा हंसती हुई अपनी सुंदरताको प्रकट करती है।

यह मंत्र कुछ कठिनसा है। इसलिये इसका थोडा अधिक विवरण करना आवश्यक है। इस मंत्रपर सायण आचार्य लिखते हैं—

" अभ्राता इन भ्रातृरहिता इव पुंसः पित्रादीन् प्रति प्रतीची स्वकीयस्थानात् प्रतिनिवृत्तमुखी सती पतिं गच्छति। यथा लोके भ्रातृरहिता योषित् स्वोचितवासोलंकारलाभाय पितॄन् एति। सति भ्रातरि स एव उचित-प्रदानादिना सम्यक् तोषयति, तदभावात् पितरमेव प्राप्नोति। यद्वा। सति स्वभ्रातरि स एव पितुः पिण्डदानादिकं संतानकृत्यं करोति। तस्याभावात् स्वयमेव तत्कर्तुं पित्रादीन् गच्छति। तद्वदियं उषा अपि स्वोचित-प्रकाशलाभाय स्वप्रकाशदानाय वा पितृभूतं सूर्यं आभिमुख्येन गच्छति। अयमेको दृष्टान्तः। तथा धनानां सनये गर्तारुगिव। गर्तं इति गृहनाम। अत्रौचित्येन राजपुरुषैः न्यायनेतृभिः अधिष्ठितं स्थानमुच्यते, तदारोहतीति गर्तारुक्। यथा लोके काचित् गतभर्तृका योषित् धनानां स्वकीय-रिक्थानां सनये लाभाय गर्तं आगच्छति। तां तु सभ्या विचार्य...तदीयं धनं वितरन्ति।

(सायन भाष्य ऋ० १।१२४।७)

निरुक्तमें यही मंत्र है—

अभ्रातृकेव पुंसः पितॄन् एति अभिमुखी सन्तानकर्मणे पिण्डदानाय न पतिं गर्तारोहिणीव धनलाभाय दाक्षिण्याजी। गर्तः सभा स्थाणुः गृणातेः सत्यसंगरो भवति। तं तत्र याऽपुत्रा याऽपतिका सा रोहति तां तत्राक्षैराघ्नन्ति सा रिक्थं लभते। (नि० ३।५)

इस सबका भाव वही है कि जो हमने ऊपर दिया है। ' कोई स्त्री जिसको भाई नहीं है वह पिताके घर जाकर आश्रय लेती है, तथा जो विधवा होती है अथवा निराश्रित होती है वह न्यायालयमें जाती है और अपने लिये पंचोंकी अनुकूलतासे धन प्राप्त करती है, उस तरह यह उषाके पास दिनरूपी भाई न होनेसे अपने पिता द्युलोकके पास आती है और वहां पिताके आश्रयसे रहती है। तथा विधवा निराश्रित स्त्री जैसी न्यायालयमें जाती है और वहांके पंचोंके सन्मुख अपना कहना कहकर हिस्सेका धन प्राप्त करती है, उस तरह यह उषा पति न होनेके कारण आकाशस्थित पंचोंके न्यायालयमें जाती है, और आकाशस्थ देवोंकी पंचायतके सामने अपना कथन कहकर धन प्राप्त करती है और धनवती होती है। इस तरह यह उषा निराश्रित स्त्री जैसी कविने वर्णन की है।

इसी मंत्रमें तीसरी उपमा यह है कि " सुन्दर वस्त्र पहन कर पतिके साथ रहकर आनंद प्राप्त करनेके लिये हंसकर अपने मुखचन्द्रके दांत दिखानेवाली तरुणीके समान यह उषा है।

ये तीन उपमाएं यहां दी हैं। ऐसी निरुक्तकार और सायणाचार्यका भाव है। श्री स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी भी इसी तरह इस मंत्रका अर्थ करते हैं—

" जैसे बिनाभाईकी कन्या अपनी प्रीतिसे चाहे हुए पतिको आप प्राप्त होती है वा जैसे न्यायाधीश राजा राजपत्नी और धनादि पदार्थोंके विभाग करनेके लिये न्यायासन अर्थात् राजगद्दीको प्राप्त होता वा जैसे हंसमुखी स्त्री आनन्द युक्त पतिको प्राप्त होती और अच्छे रूपसे अपने हाव भावको प्रकाशित करती वैसे ही यह प्रातः समयकी वेला है। (ऋ० १।१२४।७)

सायण भाष्य और स्वामी भाष्यमें थोडा अर्थान्तर है। पर भ्रातृरहित स्त्री, न्यायालयमें जाना समान है। जो अर्थका थोडा परिवर्तन है वह पाठक जान सकते हैं। इस अर्थसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक समयमें भी अनाथ स्त्रीको न्यायालयमें जाना पडता था और वहां पंचोंके द्वारा अपना धन प्राप्त करना पडता था। स्त्रीको भाई न रहा तो पिताके आश्रयको वह आती थी अथवा स्वयं अपना विवाह कर लेती थी। इस मंत्र पूर्वार्धमें जो उषाका वर्णन है वह निराश्रित स्त्रीका जैसा वर्णन है। इसी मंत्रके उत्तरार्धमें स्त्रीका आनन्दके साथ पतिके पास जाना लिखा है। निराश्रित अवस्थामें भी स्त्रियोंको आजीविकाके लिये योग्य धन उसके संबंधियोंसे मिलता था, राजसभाके तथा न्यायालयके पंच स्त्रीके धनका निर्णय करके उसको धन दिलवा देते थे, ऐसा यहां इस मंत्रसे पता लगता है। कुटुंबमें स्त्री निराश्रित हुई तो भी राजन्यायालयसे उसको आश्रय मिलता था। स्त्रीके अधिकारका इतना पालन वैदिक कालमें होता था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७९ स्वसा ज्यायस्यै स्वस्रे योनिं आरैक् (१।१२४।८)— छोटी वहिन अपनी बडी वहिनको स्थान कर देती है। यहां छोटी वहिन रात्री और बडी वहिन उषा है। रात्री उषाको स्थान कर देती है।

अस्याः प्रतिचक्ष्य इव अपैति— इस उषाको देखते ही वह रात्री दूर चली जाती है। उषाको आती हुई देखते ही रात्री चली जाती है। और उषाको स्थान कर देती है।

सूर्यस्य रश्मिभिः व्युच्छन्ती समनगा इव व्राः अञ्जि अंक्ते— सूर्यके किरणोंसे प्रकाशनेवाली यह उषा सम्यक् चलनेवाले किरण समूहोंके समान सुरूपताको समानतया व्यक्त करती है।

८० जो उषाएं इससे पूर्व जा चुकी हैं, उनमेंसे अन्तिम उषाके पीछेसे एक एक नयी उषा क्रमसे आती है। इसलिये पूर्वकी तरह ये आनेवाले नये दिन अर्थात् नयी उषाएं हमारे लिये पर्याप्त धन ले आयें और उस धनके साथ ये उषाएं प्रकाशती रहें।

८१ हे मघोनि उषः ! पृणतः प्रबोधय (१।१२४।१०)- हे धनवाली उषा ! दाताओंको जगाओ।

अबुध्यमानाः पणयः ससन्तु— न जागनेवाले, सोते रहनेवाले कंजूस बनिये सोते रहें, उनको लाभ न मिले, क्योंकि वे दान नहीं करते।

हे मघोनि मघवद्भ्यः रेवत् उच्छ— हे धनवाली उषा ! जो धनका दान करते, जो अपने धनका यज्ञ करते हैं, उनके लिये धनके साथ प्रकाश दे दो।

हे सूनृते ! जरयन्ती स्तोत्रे रेवत् उच्छ— हे शुभ भाषण करनेवाली उषा ! प्राणियोंकी आयु कम करनेवाली तू स्तोत्र पाठ करनेवालेके लिये धनके साथ प्रकाश दे। अथवा प्रकाशके साथ धन दे।

८२ यह तरुणी स्त्री उषा पूर्व दिशासे प्रकाश रही है। इसने अरुण रंगवाले घोडे अपने रथको जोते हैं। यह उषा अब विशेष प्रकाशती जायगी, वह प्रकाशका ध्वज इधर आकर फहरेगा। और घर घरमें यज्ञका अग्नि जलता रहेगा।

८३ ते व्युष्टौ सत्यां वयः उदपप्तन्— उषाके प्रकाश होनेपर पक्षी अपने घोंसलोंसे वाहर उडने लगते हैं।

ये पितुभाजः नरः— जिनके पास अन्न हैं वे भी उठकर यज्ञ करने लगते हैं। उषाके उदयके पश्चात् यह ऐसा होता है।

हे देवि ! अमासते दाशुषे मर्त्याय भूरिवामं वहसे— हे उषा देवि ! अपने घर रहकर यज्ञ और दान करनेवाले मनुष्यके लिये तू बहुत धन लाकर दे दो।

८४ हे स्तोभ्याः ! मे ब्रह्मणा अस्तोढ्वं—हे प्रशंसनीय उषाओ ! मेरे इस स्तोत्रसे तुम्हारी स्तुति हो रही है क्योंकि तुम स्तुतिके योग्य हो।

हे उषासः ! उशतीः अवीवृधध्वं— हे उषाओ ! तुम हमारी उन्नतिकी इच्छा करके हमारी उन्नति करो।

हे देवीः ! युष्माकं अवसा शतिनं सहस्रिणं च वाजं सनेम— तुम्हारे संरक्षणसे सुरक्षित होकर हम सेकडों और हजारों प्रकारके धन अन्न और बल प्राप्त करेंगे।

विश्वामित्र ऋषिका उषा वर्णन

(ऋ. ३।६१।१-७)

(गाथिनो विश्वामित्रः। उषाः। त्रिष्टुप्)

८५ उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि।
पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे ॥ १ ॥

---

८५ (वाजेन वाजिनि) अन्नसे अन्नवाली (मघोनि उषः) धनवाली उषा ! (प्रचेताः) ध्यान देती हुई (गृणतः स्तोमं जुषस्व) स्तोताओंके स्तोत्र श्रवण कर। हे (विश्ववारे देवि) सबके द्वारा स्वीकारके योग्य उषा देवी ! तू (पुराणी युवतिः) पुरातन होनेपर भी तरुणी तथा (पुरंधिः) बडी बुद्धिमती (व्रतं अनुचरसि) व्रतका अनुष्ठान करती है॥ (१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८६ उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती ।
आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये ॥ २ ॥
८७ उषः प्रतीची भुवनानि विश्वोर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः ।
समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व ॥ ३ ॥
८८ अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी ।
स्व १ र्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद्दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः ॥ ४ ॥
८९ अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम् ।
ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत्प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक् ॥ ५ ॥
९० ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् ।
आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः ॥ ६ ॥
९१ ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन् वृषा मही रोदसी आ विवेश ।
मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं विदधे पुरुत्रा ॥ ७ ॥

---

८६ हे (देवि उषः) उषा देवि ! (चन्द्ररथा) चन्द्रके समान सुंदर रथमें बैठनेवाली (सूनृता ईरयन्ती) मधुर वाणीको प्रेरित करनेवाली, (अमर्त्या विभाहि) अमर स्वरुपिणी तू प्रकाशित हो । (ये पृथुपाजसः हिरण्यवर्णाः) जो विशेष बलवान तथा सुवर्णके समान रंगवाले और (सुयमासः अश्वाः) स्वाधीन रहनेवाले घोडे हैं वे (त्वा आ वहन्तु) तुझे यहां ले आवें ॥ (२)

८७ हे (उषः) उषा ! (विश्वा भुवनानि प्रतीची) सब भुवनोंके सन्मुख (अमृतस्य केतुः) अमृतके ध्वजके समान (ऊर्ध्वा तिष्ठसि) तू उच्च स्थानमें खडी रहती है । हे (नव्यसि) नित्य नवीन बननेवाली उषा ! (चक्रं इव) चक्रके समान (समानं अर्थं चरणीयमाना) एक ही अर्थ प्राप्तिके लिये चलनेवाली तू (आ ववृत्स्व) पुनः पुनः फिरती रह ॥ (३)

८८ (स्यूम इव अवचिन्वती) प्रकाश किरणके समान अन्धकारको दूर करनेवाली (मघोनी उषा) धनवाली (स्वसरस्य पत्नी) दिनकी पत्नी उषा (याति) चलती है । (स्वः जनन्ती) प्रकाशको प्रकट करनेवाली (सुभगा सुदंसा) भाग्यवाली सुंदरी (दिवः पृथिव्याः आन्तात्) द्युलोक और पृथिवीके अन्तिम भाग तक (आ पप्रथे) प्रकाशित होती है ॥ (४)

८९ हे स्तोता लोगो ! (वः अच्छ) आप सबके सन्मुख (विभातीं देवीं उषसं) प्रकाशनेवाली उषा देवीकी (नमसा वः सुवृक्तिं प्रभरध्वं) नमस्कार पूर्वक तुम सब स्तुति करो । (मधुधा) मधुरताका धारण करनेवाली उषा (दिवि ऊर्ध्वं पाजः अश्रेत्) द्युलोकमें उच्च भागपर अपना तेज रखती है । (रण्वसंदृक् रोचना) रमणीय दर्शनवाली तेजस्विनी उषा (प्र रुरुचे) प्रकाशित हो रही है ॥ (५)

९० (ऋतावरी दिवः अर्कैः अबोधि) सत्यपालन करनेवाली यह उषा द्युलोकपर आनेवाले किरणोंसे जानी गई है । यह (रेवती) धनसंपन्न उषा (रोदसी चित्रं अस्थात्) द्यावापृथिवीपर विविध रंगवाली शोभाको स्थापित कर रही है । हे (अग्ने) अग्नि ! (आयतीं विभातीं उषसं) आनेवाली इस प्रकाशित उषाके प्रति (वामं द्रविणं भिक्षमाणा एषि) स्वीकरणीय धनकी अपेक्षा करता हुआ तू जाता है ॥ (६)

९१ (वृषा ऋतस्य बुध्ने) बलवान सूर्य दिनके प्रारंभमें (उषसां इषण्यन्) उषाओंको प्रेरित करता हुआ (मही रोदसी आ विवेश) विशाल द्यावा पृथिवीमें प्रविष्ट हुआ है । (मित्रस्य वरुणस्य मही माया) मित्र और वरुणकी यह महती शक्ति (चन्द्रा इव भानुं पुरुत्रा विदधे) सुवर्ण के सदृश रमणीय उषाके समान प्रकाश चारों ओर धारण करती है ॥ (७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वामित्र ऋषिका उषा वर्णन

विश्वामित्रके उषा देवताके ७ मंत्र हैं। इनमें ये ऋषि इस तरह उषाका वर्णन करते हैं–

आदर्श तरुणी

८५ वाजिनी, मघोनी, प्रचेताः विश्ववारा, देवी, पुराणी, युवतिः पुरंधिः (३।६१।१)– (वाजिनी) अन्न के साथ रहनेवाली, उत्तम अन्न तैयार करनेवाली, (मघोनी) धनवाली, ऐश्वर्यवाली, (प्रचेताः) उत्तम अन्तः–करणसे युक्त, (विश्व–वारा) सबसे श्रेष्ठ, सबके द्वारा प्रशंसित, सबके द्वारा आदर करने योग्य, (देवी) प्रकाशमान्, तेजस्विनी, (पुराणी) प्राचीन समयमें जैसी थी वैसी ही आज भी जो आती है, (पुरंधिः) विशेष बुद्धिमती (युवतिः) तरुणी यह उषा है। यह उषा (व्रतं अनुचरति) अपने नियमोंका पालन करती है। अपने व्रतोंका अनुष्ठान करती है।

इस मंत्रमें आदर्श तरुणीका वर्णन उषाके मिषसे किया है। यह उत्तम बुद्धिमती, विदुषी, धर्मनियम पालनमें तत्पर है।

८६ चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती अमर्त्या (३।६१।२)- यह उषा चन्द्रके समान सुन्दर आल्हाददायक रथमें बैठती है, मधुर तथा शुभ भाषणकी प्रेरणा करती है और यह अमर है। यह नित्य तरुणी है। इस मंत्रमें आर्य कन्याका वर्णन ऋषि ऐसा करता है कि वह तरुणी सुन्दर रथमें बैठती है। तथा इस रथ–को उत्तम घोडे जोते रहते हैं––

पृथु–पाजसः हिरण्यवर्णाः सुयमासः अश्वाः आवहन्ति—बहुत बलवाले, सुवर्ण जैसे रंगवाले अर्थात् लाल और पीले रंगके सुशिक्षित होनेके कारण सदा स्वाधीन रहनेवाले घोडे इस तरुणीके रथको खींचते हैं। तरुणी ऐसी हो कि जो ऐसे सुन्दर रथमें बैठकर अपने कार्यकर्ताओंका निरीक्षण प्रति–दिन करती रहे।

८७ यह उषा (अमृतस्य केतुः) अमरत्व प्राप्तिका ज्ञान देती है, अमृतका ध्वज फहराती है। अर्थात् अमृतत्त्व प्राप्तिका मार्ग बताती है, (विश्वा भुवनानि प्रतीची) सब भुवनोंका निरक्षिण करती है, (नव्यसी) नवीन जैसी, जैसी नयी जन्मी कन्या सुन्दर दीखती है, वैसी सुन्दर दीखनेवाली, (समानं अर्थं चरणीयमाना) एक ही ध्येयकी प्राप्तिके लिये, एक ही साध्य सिद्ध करनेके लिये प्रयत्न करनेवाली (चक्रं इव आववृत्स्व) चक्र घूमता है वैसी सतत भ्रमण करती है

यहां ऐसी तरुणी स्त्रीका वर्णन किया है कि जो सब कार्य–कर्ताओंका निरीक्षण करती है, एक ध्येयकी प्राप्तिके लिये प्रयत्न करती है, उसकी सिद्धिके लिये वारंवार यत्न करती है अर्थात् प्रथम वारके यत्नसे सिद्धि नहीं हुई तो सिद्धि मिलने तक पुनः पुनः यत्न करती है। निराशा जिसके पास नहीं है।

८८ (स्यूम इव अवचिन्वती) प्रकाशके किरणोंके समान अन्धेरेको दूर करती है, अपने घरमें प्रकाश करती है। (स्वसरस्य पत्नी मघोनी उषा याति) दिन रूपी पुरुषकी पत्नी, (स्व–सरस्य पत्नी) अपने बलसे आगे बढनेवाले पुरुषार्थी वीरकी सह धर्मचारिणी यह उषा रूपी स्त्री पतिके साथ अपनी प्रगति करती है। (स्वः जनन्ती) अपना प्रकाश, अपने आत्माकी शक्ति प्रकट करनेवाली, (सु–भगा सु–दंसा) उत्तम भाग्य–वाली, धन ऐश्वर्यसे युक्त, उत्तम सुंदरी (दिवः पृथिव्याः आन्तात् आ पप्रथे) द्युलोक और पृथिवीके आन्तिम भाग तक यह अपना प्रकाश फैलाती है। अपना प्रभाव सर्वत्र फैलाती है।

८९ मधु–धा रण्व–सदृक् रोचना प्ररुरुचे— मधुरताका धारण करनेवाली सुन्दर दीखनेवाली तेजस्विनी उषा प्रकाश रही है। स्त्री मधुरिमाका धारण करे, रमणीय दीखे, तेजस्विनी हो और प्रभावशालिनी बने।

देवीं उषसं नमसा सुवृक्तिं प्रभरध्वं— दिव्य उषाको नमस्कार करो और उसकी प्रशंसा गाओ। पूर्वोक्त प्रकारकी स्त्रीकी सब लोग प्रशंसा गायें और उसको नमस्कार करें।

९० ऋतावरी दिवः अर्कैः अबोधि— यह सत्यका पालन करनेवाली उषा द्युलोकमें फैले किरणोंसे जाग उठी है। स्त्री सत्यका पालन करे, सरल आचरण करनेवाली हो। उषः–कालमें उठे।

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रेवती रोदसी चित्रं अस्थात्— धनवाली अथवा शोभावाली यह तरुणी (उषा) आकाशके फलक पर सुन्दर रंगोंका चित्र-खींचती है । विविध रंगोंका सुन्दर चित्र निकालती है । आकाश-पृथिवी यह चित्र फलक है जिस-पर चित्र चित्रित किया जाता है । इस फलक पर उषा यह तरुण स्त्री आती है और विविधरंगोंसे सुन्दर चित्र खींचती है । चिता-रती है । तरुण स्त्रीको चित्रकला आनी चाहिये और सुन्दर दृश्य देखकर उनको चित्रित करना चाहिये ।

९१ वृषा, ऋतस्य बुध्ने, उषसां इषण्यन् मही रोदसी आविवेश (ऋ० ३।६१।७)— बलवान् पिता (सूर्य) सत्यके सत्कर्म प्रवर्तक दिनके-प्रारंभमें, उषाओंको प्रेरित करता है और बडे द्यावापृथिवीके अन्दर प्रविष्ट होता है । सूर्य प्रथम इस तरहकी उषाओंको प्रेरित करता है और पीछेसे दिनको भेजता है और स्वयं प्रकट हो जाता है ।

मित्रस्य वरुणस्य मही माया चन्द्रा इव भानुं पुरुत्रा विदधे— मित्र वरुणकी बडी कुशलता यह है कि जिससे उषःकालमें रमणीय प्रकाश चारों ओर फैलता है । यह सब उषाका प्रभाव है ।

यह विश्वामित्र ऋषिका उषाका वर्णन है । इसमें प्रौढ स्त्री जैसा उषाका वर्णन है । यहां सूर्यको पिता, दिनको भाई, रात्री-को बहिन और उषाको पुत्री कहा है । यह सब वर्णन अत्यंत हृदयंगम और बोधप्रद है । स्त्रीके लिये कर्तव्यका बोध इस सूक्तसे मिल सकता है ।

गौतमपुत्र वामदेव ऋषिका
उषा वर्णन

(ऋ० ४।५१।१-११)

(वामदेवो गौतमः । उषाः । त्रिष्टुप् ।)

९२ इदमु त्यत्पुरुतमं पुरस्ताज्ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात् ।
नूनं दिवो दुहितरो विभातीर्गातुं कृणवन्नुषसो जनाय ॥ १ ॥
९३ अस्थुरु चित्रा उषसः पुरस्तान्मिता इव स्वरवोऽध्वरेषु ।
व्यू व्रजस्य तमसो द्वारोच्छन्तीरव्रञ्छुचयः पावकाः ॥ २ ॥
९४ उच्छन्तीरद्य चितयन्त भोजान् राधोदेयायोषसो मघोनीः ।
अचित्रे अन्तः पणयः ससन्त्वबुध्यमानास्तमसो विमध्ये ॥ ३ ॥

---

९२ (इदं उ त्यत् पुरुतमं) यह निश्चयसे वह अत्यंत विशाल और (वयुनावत् ज्योतिः) ज्ञान देकर कर्म करानेवाला तेज (पुरस्तात् तमसः अस्थात्) पूर्व दिशामें अन्धकारमेंसे ऊपर आ रहा है । (नूनं) निःसंदेह ये (विभातीः दिवः दुहितरः उषसः) प्रकाशनेवाली द्युलोककी पुत्री उषाएँ (जनाय गातुं कृण्वन्) लोगोंके लिये मार्ग कर रही हैं ॥ (१)

९३ (चित्राः उषसः पुरस्तात् अस्थुः उ) ये सुन्दर उषायें पूर्व दिशामें ऊपर खडी हो रही हैं । (अध्वरेषु मिताः स्वरवः इव) जिस तरह यज्ञोंमें यूप खडे होते हैं । वे उषाएं (व्रजस्य तमसः द्वारा उच्छन्तीः) गौओंके बाडोंके अन्धकारमय द्वारोंको खोलती हैं और (शुचयः पावकाः अव्रन्) शुद्ध पवित्र प्रकाशसे विश्वको व्यापती हैं ॥ (२)

९४ (अद्य) आज (उच्छन्तीः मघोनीः उषसः) प्रकाशनेवाली धनवाली उषाएँ (भोजान् राधो-देयाय चितयन्त) भोजन देनेवालोंको धन देनेके लिये जगाती हैं । (अचित्रे तमसः विमध्ये अन्तः) एक जैसे अन्धकारके अन्दर (अबुध्यमानाः पणयः ससन्तु) न जागनेवाले कंजूस बनिये सोते रहें ॥ (३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९५ कुवित्स देवीः सनयो नवो वा यामो बभूयादुषसो वो अद्य ।
येना नवग्वे अङ्गिरे दशग्वे सप्तास्ये रेवती रेवदूष ॥ ४ ॥
९६ यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भिरश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः ।
प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाच्चतुष्पाच्चरथाय जीवम् ॥ ५ ॥
९७ क्व स्विदासां कतमा पुराणी यया विधाना विदधुर्ऋभूणाम् ।
शुभं यच्छुभ्रा उषसश्चरान्ति न वि ज्ञायन्ते सदृशीरजुर्याः ॥ ६ ॥
९८ ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुरभिष्टिद्युम्ना ऋतजातसत्याः ।
यास्वीजानः शशमान उक्थैः स्तुवञ्छंसन्द्रविणं सद्य आप ॥ ७ ॥
९९ ता आ चरान्ति समना पुरस्तात्समानतः समना पप्रथानाः ।
ऋतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते ॥ ८ ॥
१०० ता इन्न्वेऽऽव समना समानीरमीतवर्णा उषसश्चरान्ति ।
गूहन्तीरभ्वमसितं रुशद्भिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः ॥ ९ ॥

---

९५ हे (देवीः उषसः) दिव्य उषाओ ! (वः सनयः नवो वा सः यामः) तुम्हारा पुराना अथवा नया वह रथ (अद्य कुवित् बभूयात्) आज बहुत वार चलता रहे । (येन रेवतीः) जिस रथसे तुम धनवाली उषायें (नवग्वे अंगिरे) नौ गौवोंवाले अंगिरसके लिये और (दशग्वे सप्तास्ये) दस गौवोंवाले सप्तास्यके लिये (रेवत् ऊष) धनयुक्त प्रकाशती रह ॥ (४)

९६ हे (देवीः उषसः) दिव्य उषाओ ! (यूयं हि ऋतयुग्भिः अश्वैः) आप सीधे जोते जानेवाले घोडोंसे, (भुवनानि सद्यः परिप्रयाथ) सब भुवनोंमें चारों ओर घूमती हैं और (ससन्तं द्विपात् चतुष्पाद् जीवं) सोनेवाले द्विपाद और चतुष्पाद जीवोंको (चरथाय प्रबोधयन्तीः) घूमनेके लिये जगाती हैं ॥ (५)

९७ (यया ऋभूणां विधाना विदधुः) जिसके साथ ऋभुओंके कार्य हुए वह उषा (आसां पुराणी कतमा क्व स्वित्) इनमें पुराणी कौनसी और कहां है ? (यत् उषसः शुभ्राः शुभं चरन्ति) जब तेजस्वी उषाएं शोभा प्रकट करती है, तब (अजुर्याः सदृशीः न विज्ञायते) नित्य नवीन होनेपर भी सदृश होनेसे कौन नूतन और कौन पुराणी है इसका पता नहीं चलता ॥ (६)

९८ (ताः घ ताः भद्राः) वे निःसंदेह कल्याण करनेवाली (उषसः) उषाएं (पुरा आसुः) पूर्व समयमें हो चुकी हैं । वे (अभिष्टिद्युम्नाः) जाते ही धन देनेवाली और (ऋत-जात-सत्याः) सत्य और सरल होनेमें प्रसिद्ध हैं । (यासु ईजानः) जिन उषाओंमें यज्ञ करनेवाला (उक्थैः शशमानः) स्तोत्रोंसे प्रशंसा करनेवाला (स्तुवन् शंसन् सद्यः द्रविणं आप) स्तवन और प्रशंसा करता हुआ तत्काल ही धन प्राप्त करता है ॥ (७)

९९ (ताः) वे उषाएं (पुरस्तात् समनाः) पूर्व दिशामें समान रीतिसे (आ चरन्ति) चारों ओर फैल रही हैं । (समनाः समानतः पप्रथानाः) वे समान उषाएं समान अन्तरिक्षके प्रदेशसे फैलती हैं । (ऋतस्य सदसः बुधानाः) यज्ञके स्थानको बताती हैं । ये (देवीः उषसः) दिव्य उषाएं (गवां सर्गः न) गौवोंके समूहके समान (जरन्ते) प्रशंसित होती हैं ॥ (८)

१०० (ता इत् नु एव उषसः) वे ही उषाएं (समनाः समानीः) समान एक रंगरूपवाली (अमीतवर्णाः चरन्ति) अनेक रंगोंमें युक्त होकर संचार करती हैं । (अभ्वं असितं गूहन्तीः) विशाल अन्धकारको ढंक देती हैं और (रुशद्भिः तनूभिः) तेजस्वी शरीरोंसे (शुक्राः शुचयः रुचानाः) शुद्ध प्रकाशोंको चमका देती हैं ॥ (९)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०१ रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु देवीः ।
स्योनादा वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ १० ॥
१०२ तद्वो दिवो दुहितरो विभातीरुप ब्रुव उषसो यज्ञकेतुः ।
वयं स्याम यशसो जनेषु तद् द्यौश्च धत्तां पृथिवी च देवी ॥ ११ ॥

(ऋ० ४।५२।१-७)

(वामदेवो गौतमः । उषाः । गायत्री)

१०३ प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः । दिवो अदर्शि दुहिता ॥ १ ॥
१०४ अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी । सखाभूदश्विनोरुषाः ॥ २ ॥
१०५ उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि । उतोषो वस्व ईशिषे ॥ ३ ॥
१०६ यावयद्द्वेषसं त्वा चिकित्वित्सूनृतावरि । प्रति स्तोमैरभुत्स्महि ॥ ४ ॥
१०७ प्रति भद्रा अदृक्षत गवां सर्गा न रश्मयः । ओषा अप्रा उरु ज्रयः ॥ ५ ॥
१०८ आपप्रुषी विभावरि व्यावर्ज्योतिषा तमः । उषो अनु स्वधामव ॥ ६ ॥
१०९ आ द्यां तनोषि रश्मिभिरान्तरिक्षमुरु प्रियम् । उषः शुक्रेण शोचिषा ॥ ७ ॥

---

१०१ हे (दिवः दुहितरः) द्युलोककी पुत्री! आप (विभातीः देवीः) प्रकाशनेवाली देवियां हैं, (अस्मासु प्रजावन्तं रयिं यच्छत) हमें पुत्रपौत्रादि युक्त धन दे दो । (स्योनात् वः प्रतिबुध्यमानाः) सुखसे तुम्हारे द्वारा जागृत होनेवाले हम (सुवीर्यस्य पतयः स्याम) उत्तम वीरताके स्वामी हों ॥ (१०)

१०२ हे (दिवः दुहितरः उषसः) द्युलोककी पुत्री उषाओ ! मैं (यज्ञ केतुः) यज्ञका ध्वज जैसा यज्ञकर्ता (विभातीः वः तत् उपब्रुवे) प्रकाशनेवाली तुमको वह कहता हूं कि (वयं जनेषु यशसः स्याम) हम सब लोगोंमें यशस्वी हों और (तत् द्यौः पृथिवी देवीः च धत्तां) वह हमारी इच्छा द्यौ और पृथिवी देवी सफल करे ॥ (११)

१०३ (स्या सूनरी जनी) वह उत्तम नेतृत्व करनेवाली, फल देनेवाली और (स्वसुः परि व्युच्छन्ती) अपनी बहिन रात्रीके अन्तिम समयमें प्रकाशती हुई यह (दिवः दुहिता प्रति अदर्शि) स्वर्गकन्या दीख रही है ॥ (१)

१०४ (अश्वा इव चित्रा) घोडीके समान सुंदर (अरुषी) तेजस्विनी (गवां माता) किरणोंकी जननी (ऋतावरी) सरल कर्म करनेवाली (उषा अश्विनोः सखा अभूत्) यह उषा अश्विदेवोंकी सखी है ॥ (२)

१०५ हे (उषः) उषा ! (उत अश्विनोः सखा असि) तू अश्विदेवोंकी सखी है, (उत गवां माता असि) और किरणोंकी माता है (उत वस्व ईशिषे) और तू धनकी स्वामिनी है ॥ (३)

१०६ हे (सूनृतावरि) मधुर भाषण करनेवाली उषा ! (यावयत्-द्वेषसं त्वा) शत्रुओंको दूर करनेवाली तू है ऐसी तुझ (चिकित्वत्) ज्ञानवतीको (स्तोमैः प्रति अभुत्स्महि) स्तोत्रोंसे हम जाग्रत करते हैं ॥ (४)

१०७ (भद्राः रश्मयः) कल्याणकारक किरणें (गवां सर्गाः न) गौओंके झुण्डके सदृश (अदृक्षत) दीख रही हैं, यह (उषाः) उषा (उरु ज्रयः आ अप्राः) विशेष तेजको सर्वत्र भर देती है ॥ (५)

१०८ हे (विभावरि उषः) चमकनेवाली उषा ! (आपप्रुषी) तेजसे जगत्को भर देनेवाली तू (ज्योतिषा तमः वि आवः) प्रकाशसे अन्धकारको दूर करती है । (अनु स्वधां अव) पश्चात् तू अपनी धारक शक्तिका संरक्षण कर ॥ (६)

१०९ हे (उषः) उषा ! (रश्मिभिः द्यां आतनोषि) किरणोंसे द्युलोकको भर देती है तथा (शुक्रेण शोचिषा) शुद्ध प्रकाशसे (प्रियं उरु अन्तरिक्षं आ) प्रिय विस्तीर्ण अन्तरिक्षको भी भर देती है ॥ (७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वामदेव ऋषिका उषा वर्णन

वामदेव ऋषि उषाके वर्णनमें कहते हैं—

९१ इदं पुरुतमं वयुनावत् ज्योतिः पुरस्तात् तमसः अस्थात् (४।५१।१)— यह महान् और कर्मोंमें मनुष्योंको प्रवृत्त करनेवाला तेज पूर्व दिशासे अन्धकारमेंसे ऊपर आरहा है देखो !

नूनं विभातीः दिवः दुहितरः उषसः जनाय गातुं कृण्वन्— निःसन्देह ये प्रकाशनेवाली स्वर्गकन्या उषाएं लोगोंके लिये प्रगति करनेका मार्ग बता रही हैं।

वामदेव ऋषिके दो सूक्त यहां दिये हैं। इनमें इस प्रथम (४।५१ वे) सूक्तमें उषाः पद बहुवचनमें हैं। इससे अनेक उषाओंका बोध होता है। अनेक उषाओंका साथ साथ आना किसी अन्य स्थानमें नहीं होता, सिवा उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशके। इसलिये इसका अधिक विचार होना चाहिये। इस सूक्तमें इसके सूचक और बोधक जो वर्णन होंगे, उनका विचार हम क्रमसे करेंगे। जिससे पाठकोंको पता लग जायगा कि सूक्तका आशय क्या है।

९२ चित्राः उषसः पुरस्तात् अस्थुः— ये विलक्षण प्रकाश देनेवाली उषाएं पूर्व दिशासे ऊपर आ रहीं है। जैसे—

अध्वरेषु मिताः स्वरवः इव— जैसे यज्ञमें यज्ञस्तंभ खडे होते हैं, वैसी ये उषाएं प्रकाशके साथ ऊपर आगयी हैं।

व्रजस्य तमसः द्वारा उच्छतीः शुचयः पावकाः अव्रन्— गौओंके वाडोंके अन्धकारके कारण ढंके हुए द्वार ये उषाएं खोलती हैं, और शुद्ध पवित्र प्रकाशसे विश्वको व्यापती हैं। प्रदीर्घ अन्धकारमें गौवें गोशालामें ही रहती हैं। जब उषः-काल होता है तब द्वार खोले जाते हैं, गौवें बाहर आती हैं और चरनेके लिये जाती हैं। यहां गौओंका भाव प्रकाश किरण ऐसा भी है। इस मंत्रमें भी उषाका बहुवचनी प्रयोग है।

९४ अद्य उच्छन्तीः मघोनीः उषसः भोजान् राधो-देयाय चितयन्तः— आज अन्धकारको दूर करने-वाली ऐश्वर्यवाली उषाएं धनी लोगोंको यज्ञके लिये धनका दान करनेके लिये जगाकर प्रेरित करें। उषःकालमें यज्ञ शुरू हो और उसमें धनी लोग अपना धन पर्याप्त प्रमाणमें लगा देवें।

अबुध्यमानाः पणयः आचित्रे तमसः विमध्ये अन्तः ससन्तु— जो न जागनेवाले कंजूस बनिये हैं वे गाढ अन्धकारमें सोते रहें। उनको कभी ज्ञान प्राप्त नहीं होगा और वे अन्धकारमें ठोकरें खाते रहेंगे। जो यज्ञके लिये अपना धन देगें व उन्नतिको प्राप्त करेंगे, संघटित होकर उत्कर्षको प्राप्त करेंगे।

९५ हे दिव्य उषाओ ! तुम्हारा पुराना या नया रथ आज बहुत चले। वह बहुत धन लेकर नवग्व आंगिरस और दशग्व सप्तास्यके लिये धनके साथ प्रकाश देवे।

नौ गौवोंवालेको नवग्व कहते हैं। नौ मास तक यज्ञ करने-वालेको भी नवग्व कहते हैं। इसी तरह दस गौवें पास रखने-वालेको तथा दस महिनेतक यज्ञ करनेवालेको दशग्व कहते हैं। उत्तरीय ध्रुवमें घना अन्धकार दो वा तीन मासका, एक मास अर्थात् तीस उषाएं होकर नौ या दस मास तक प्रकाशमें यज्ञ किया जाता है। इसलिये नौ अथवा दस मास यज्ञ करनेका वर्णन उस स्थानमें सार्थ होता है। वहां छः मास रात्री होती है, पर इसमें ३० दिन उषःकाल और ३० दिन सायं संध्या ऐसे दो मास होते हैं। गाढ अन्धकारके दो तीन मास होते हैं जिनमें न तो उषःकालका प्रकाश रहता है और नाही सायं संध्या रहती है। इस तरह कईयोंके मतसे दस मास और कईयोंके मतसे नौ मास यज्ञ होते हैं। जिनमें प्रकाश दर्शन नहीं होता केवल अन्धकार ही रहता है ऐसे दो मास होते हैं। ऐसा माननेवाले इन दो महिनोंको छोड देते हैं और थोडा प्रकाश दीखने लगा तो यज्ञ शुरू कर देते हैं। दूसरे उषःकाल अच्छी तरह शुरू होनेपर यज्ञ शुरू करते हैं। इन लोगोंकी संमतिसे नौ महिने यज्ञके लिये मिलते हैं। आंगिरस संप्रदाय नौ मासोंका यज्ञ करनेवाला और सप्तास्य संप्रदाय दस महिनोंका यज्ञ करनेवाला है। इस मंत्रमें वर्णित परिस्थिति उत्तरीय ध्रुवकी स्पष्ट दीखती है।

नौ महिनोंका वा दस महिनोंका यज्ञ करनेवाले ये दोनों गाढ अन्धकारको छोडकर शेष प्रकाश शुरू होते ही यज्ञ करते हैं। इसलिये नौ या दस महिनोंका यज्ञ होता है। भारत वर्षमें इस तरहकी परिस्थिति नहीं है। यहां न बहुत उषाएं साथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथ आती हैं और न नौ या दस महिनोंका प्रकाश ही मिलता है। नौ या दस महिनोंका हिसाब ऐसा होता है। ६ महिने सूर्य ऊपर रहनेके, एक मास सूर्योदयके पूर्वका उषःकाल, एक मास सूर्यास्तके पश्चात्का सायंकाल मिलकर आठ महिने हुए। एक या दो महिने उषःकालके पूर्व और सायंकालके पश्चात्के किंचित् प्रकाशको समझ लीजिये। इसके पश्चात्के दो तीन मास गाढ अन्धकारके होते हैं। '**दीर्घतमः**' ऐसा जो वर्णन है वह इस रात्रीका वर्णन है। हमारे देशकी रात्रीका ऐसा 'दीर्घतम' शब्दोंसे नहीं हो सकता। जहां ६ मास सूर्य दर्शन नहीं होता वहीं 'दीर्घतमः' कहा जा सकता है।

९६ हे देवीः उषसः! यूयं हि ऋतयुग्भिः अश्वैः भुवनानि सद्यः परिप्रयाथ। ससन्तं द्विपात् चतुष्पाद् जीवं चरथाय प्रबोधयन्तीः— हे दिव्य उषाओ! तुम उत्तम घोडोंके साथ चलनेवाले रथोंसे सब भुवनोंको व्यापती हो और सोनेवाले द्विपाद् चतुष्पाद् प्राणियोंको घूमनेके लिये जगाती हो। अर्थात् गाढ अन्धकारके समय घरके द्वार बंद रहते हैं, हिंस्र प्राणी घूमते हैं, चोर डाकू घूमते हैं। इसलिये इस घने अन्धकारमें गोशालाके द्वार बंद रहते हैं। इस मंत्रका वर्णन तो हमारे स्थानमें भी सत्य हो सकता है क्योंकि ग्रामको गौवें गोशालामें बंद रहती हैं और सवेरे उषःकालमें गोशालाके द्वार खोले जाते हैं और चरनेके लिये गौवें बाहर छोडी जाती हैं।

९७ अनेक उषाएं आनेपर उनमेंसे पुराणी और नयी पहचानना कठिन होता है, क्योंकि सब उषाएं एक जैसी दीखती हैं। उत्तरीय ध्रुवमें अनेक उषाएं एक साथ क्रमपूर्वक आती हैं, पर उसमें उषः प्रकाशका उदय और अस्त होता है। उदय अधिक प्रकाश और अस्त ऐसा क्रम होता है और प्रति २४ घण्टोंके प्रतिदिनमें प्रकाशका समय बढता जाता है और इस तरह करीब करीब डेढ मास तक होता रहता है।

९८ ताः अभिद्युम्नाः ऋतजातसत्याः भद्राः उषसः पुरा आसुः— वे तेजस्वी सत्ययज्ञप्रवर्तक अनेक उषाएं पूर्व समयमें आचुकी हैं। '**यासु ईजानः स्तुवन् शंसन् सद्यः द्रविणं आप**'— जिन उषाओंमें यज्ञ करनेवाला स्तुति करता हुआ यज्ञ करनेके कारण पर्याप्त धन प्राप्त करता है।

इस मंत्रमें कहा है कि (उषसः पुरा आसुः) अनेक उषाएं पहिले आचुकी हैं। यह कथन इस देशमें भारतमें सार्थ नहीं हो सकता। क्योंकि अनेक उषाओंका पहिले आना और पश्चात् उषाओंका न होना यहां नहीं होता है। यहां तो सवेरे एक ही उषा आती है, पश्चात् दिन आता है। लगातार अनेक उषाएं आतीं रहेंगी ऐसी संभावना यहां नहीं है। इसलिये यह वर्णन उत्तरीय ध्रुवका ही वर्णन है ऐसा प्रतीत होता है।

उषःकाल अनेक आये और (यासु ईजानः) उनमें लोग यज्ञ भी करने लगे। क्योंकि नौ अथवा दस मास क्रमपूर्वक यज्ञ करनेवाले लोग उषःकाल दीखते ही यज्ञ शुरू करते हैं और नौ या दस मासतक यज्ञ करते ही रहते हैं। जिनको 'नवग्व अथवा दशग्व' कहते हैं। जितने दिन सूर्य किरण दीखते हैं उतने दिन ये यज्ञ होते हैं।

९९ ताः समनाः उषसः पुरस्तात् पप्रथानाः ऋतस्य सदसः बुधानाः जरन्ते— वे एक मनसे आनेवाली उषाएं पूर्व दिशासे फैलती हैं और यज्ञके स्थानको बताती है।

यहां उषाओंके विशेषणोंमें '**समनाः समानतः**' ये पद हैं। साथ साथ समान रूपसे आनेवाली यह इनका अर्थ स्पष्ट है।

१०० ताः उषसः अमीतवर्णाः, अभ्वं असितं गूहन्तीः, रुशद्भिः तनूभिः शुक्राः शुचयः रुचानाः चरन्ति— वे ये उषाएं अनेक रंगोंवाली, अन्धकारको ढंकक्र प्रकाशको फैलती, अपने तेजस्वी शरीरोंसे शुद्ध पवित्र और तेजस्वी होकर विश्वमें संचार करती हैं। यह उषःकालका सुंदर वर्णन है।

१०१ हे स्वर्ग कन्याओ! तेजस्वी देवियाँ तुम हमारे लिये पुत्रपौत्रोंको बढानेवाला धन दे दो। अर्थात् हमें ऐसा धन चाहिये कि जो प्राप्त होनेके बाद उत्तम पुत्र पौत्र हमें हों। हम ज्ञानी और सुखी हों और उत्तम वीर्यके कार्य उत्तम रीतिसे सिद्ध करनेवाले हों। धन प्राप्त होनेके बाद हमारे अन्दर आलस्य न आ जाय और हम कार्य सिद्ध करनेमें शिथिल न हों। हम उत्साहसे उत्तम वीरताके कार्य करें।

१०२ हे स्वर्गकन्या उषाओ! तुम प्रकाश फैला रही हो इसलिये मैं तुमसे एक यह प्रार्थना करता हूं कि हम लोग विजयी यशस्वी और कीर्तिमान हों। ऐसा बननेमें द्यु और पृथिवी हमारी सहायता करे॥

१०३ यह स्वर्गीय कन्या उषा (स्वसुः परि व्युच्छन्ती) अपनी बहिन रात्रीके अन्तिम भागमें प्रकाश करती है और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात्रीके अन्धकारको दूर करती है। अपनी बहिनके प्रभावको हटाकर अपना प्रभाव वहां जमा देती है। यह (सू-नरी जनी) उत्तम नेतृत्व करती है और उत्तम संतान उत्पन्न करती है। ऐसी यह स्वर्गीय कन्या आती है ऐसा दीख रहा है।

यहां उषाको प्रौढ स्त्रीके रूपमें वर्णन किया जा रहा है। (सू-नरी) घरका उत्तम नेतृत्व करती है, सब पर उत्तम प्रशासन करती है और (जनी) उत्तम संतान उत्पन्न करती हैं। इतनी यह प्रौढ स्त्री है।

१०४ यह उषा (अरुषी) तेजस्विनी है, यह प्रकाशती है (गवां माता) गौओंका हित करती है, माताके समान गौओंका पालन करती है (अश्वा इव चित्रा) घोडियोंके समान चित्र विचित्र रूपसे सुंदर दीखनेवाली (ऋतावरी) यज्ञको सिद्ध करनेवाली, सत्यका पालन करनेवाली, यह उषा अश्विदेवोंकी मित्रता करनेवाली है। अश्वि देवोंका उदय प्रातःकालमें होता है, उसी समय यह उषा उदयको प्राप्त होती है। इसलिये इसको अश्विदेवोंके साथ मित्रता करनेवाली कहा है।

१०५ हे उषा ! तू अश्विदेवोंकी सखी है, गौओंकी माता है और धनकी स्वामिनी है।

१०६ हे मधुरभाषण करनेवाली उषा ! तू अपने मधुर भाषणसे शत्रुओंको दूर कर, ज्ञानवान होकर सदा जागती रह।

१०७ कल्याणकारी किरण गौवें खुली होनेके समान दीख रहे हैं। तू इन किरणोंसे तेजको सर्वत्र भर दे।

१०८ हे उषा ! तूं सर्वत्र तेजको भर दे। प्रकाशसे अन्धकारको दूर कर और अपनी धारक शक्तिका संरक्षण कर और बढा।

१०९ हे उषा ! तूं किरणोंसे आकाशको भरपूर भर देती है। तेजस्वी प्रकाशसे विस्तीर्ण अन्तरिक्षको भी भर देती है। सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश कर रही है।

इस तरह यह वामदेव ऋषिका उषादर्शन यहां समाप्त होता है।

अत्रिपुत्र सत्यश्रवा ऋषिका उषा वर्णन

(ऋ० ५।७९।१-१०)

(सत्यश्रवा आत्रेयः। उषाः। पङ्क्तिः)

११० महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ १ ॥
१११ या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः।
सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ २ ॥

११० हे (उषः) उषा ! (दिवित्मती) दीप्तियुक्त तू (नः महे राये) हमें बडे धन प्राप्त करनेके लिये (अद्य बोधय) आज जाग्रत कर। (यथा चित् नः अबोधयः) जैसा तूने हमें पहिले जगाया था। हे (सुजाते) उत्तम रीतिसे उत्पन्न (अश्वसूनृते) घोडोंके लिये जिसकी प्रार्थना की जाती है वह उषा ! तू (वाय्ये सत्यश्रवसि) वय्य पुत्र सत्यकीर्तिवाले पर अनुग्रह कर ॥ (१)

१११ हे (दिवः दुहितः) द्युलोककी पुत्री ! (या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छः) तूने उत्तम नेता शुद्ध रथीके लिये पूर्व समयमें प्रकाश किया था (सा) वह तू उषा जो कुलीन और घोडोंके लिये प्रशंसित होती है वह (सहीयसि) बलवान् वय्य पुत्र सत्यश्रवा पर अनुग्रह कर ॥ (२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११२ सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः ।
यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ ३ ॥
११३ अभि ये त्वा विभावरि स्तोमैर्गृणन्ति वह्नयः ।
मघैर्मघोनि सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयः सुजाते अश्वसूनृते ॥ ४ ॥
११४ यच्चिद्धि ते गणा इमे छदयन्ति मघत्तये ।
परि चिद्वष्टयो दधुर्ददतो राधो अह्रयं सुजाते अश्वसूनृते ॥ ५ ॥
११५ ऐषु धा वीरवद्यश उषो मघोनि सूरिषु ।
ये नो राधांस्यह्रया मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनृते ॥ ६ ॥
११६ तेभ्यो द्युम्नं बृहद्यश उषो मघोन्या वह ।
ये नो राधांस्यश्व्या गव्या भजन्त सूरयः सुजाते अश्वसूनृते ॥ ७ ॥
११७ उत नो गोमतीरिष आ वहा दुहितर्दिवः ।
साकं सूर्यस्य रश्मिभिः शुक्रैः शोचद्भिरर्चिभिः सुजाते अश्वसूनृते ॥ ८ ॥

---

११२ हे (दिवः दुहितः) स्वर्गकन्ये ! (आभरद्वसुः) धन लाकर देनेवाली (सा अद्य नः व्युच्छ) वह आज तू हमारे लिये अन्धकारको दूर कर। हे (सुजाते अश्वसूनृते) उत्तम कुलमें उत्पन्न और घोडोंके संबंधसें प्रशंसित होनेवाली (यो) उषा (सहीयसि०) सत्य बलवाले वाय्यपुत्र सत्य कीर्तिवाले पर (व्यौच्छः) प्रकाशित हो ॥

११३ हे (विभावरि) प्रकाशनेवाली उषा ! (ये वह्नयः त्वा) जो तेजस्वी स्तोतागण (त्वा स्तोमैः गृणन्ति) तेरी स्तोत्रोंसे स्तुति करते हैं, हे (मघोनि) भाग्यवाली (सुजाते अश्वसूनृते) उत्तम कुलीन और घोडोंके विषयमें अच्छा बोलनेवाली उषा ! वे स्तोतागण (मघैः सुश्रियः) धनोंसे उत्तम धनवान् (दामन्वंतः सुरातयः) और दानके लिये प्रशंसित अतएव उत्तम धन देनेवाले होते हैं ॥ (४)

११४ हे (सुजाते अश्वसूनृते) कुलीन और घोडोंके लिये प्रशंसित होनेवाली उषा ! (यत् चित् हि इमे गणाः) जो भी कोई ये स्तोतागण (मघत्तये ते छदयन्ति) धन प्राप्तिके लिये तेरी स्तुति करते हैं, वे (चित् वष्टयः परि दधुः) निःसंदेह ऐश्वर्य धारण करते हैं और वे (अ-ह्रयं रायः ददतः) अविनाशी धन देते हैं ॥ (५)

११५ हे (सुजाते अश्वसूनृते) कुलीन घोडोंके लिये प्रशंसित और (मघोनि उषः) धनवाली उषा ! (एषु सूरिषु वीरवत् यशः) इन विद्वानोंमें वीर पुत्रोंसे युक्त धन (आधाः) दे। (ये मघवानः) जो धनी (अ-ह्रया राधांसि) क्षीण न होनेवाले धन (नः अरासत) हमें देते हैं ॥ (६)

११६ हे (मघोनि सुजाते अश्वसूनृते उषः) धनवाली कुलीन और घोडोंके लिये प्रसिद्ध उषा ! (तेभ्यः द्युम्नं बृहद् यशः) उनके लिये बडा यशस्वी धन (आ वह) तू दे (ये सूरयः) जो विद्वान् (गव्या अश्व्या राधांसि) गौवें घोडे आदि धन (नः भजन्त) हमें देते हैं ॥ ७ ॥

११७ हे (सुजाते अश्वसूनृते) कुलीन और घोडोंके लिये प्रशंसित होनेवाली उषा ! हे (दिवः दुहितः) हे स्वर्ग-कन्ये ! (नः गोमतीः इषः आवह) हमारे लिये गौओंसे युक्त धन ले आ। (उत) और (सूर्यस्य शुक्रैः शोचद्भिः अर्चिभिः रश्मिभिः साकं) सूर्यके स्वच्छ, पवित्रता करनेवाले दीप्तिमान किरणोंके साथ इधर आओ ॥ (८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११८ व्युच्छा दुहितर्दिवो मा चिरं तनुथा अपः ।
नेत्त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा सुजाते अश्वसूनृते ॥ ९ ॥
११९ एतावद्वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि ।
या स्तोतृभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनृते ॥ १० ॥

(ऋ० ५।८०।१-६)

(सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः । त्रिष्टुप् ।)

१२० द्युतद्यामानं बृहतीमृतेन ऋतावरीमरुणप्सुं विभातीम् ।
देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रासो मतिभिर्जरन्ते ॥ १ ॥
१२१ एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान्पथः कृण्वती यात्यग्रे ।
बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वोषा ज्योतिर्यच्छत्यग्रे अह्नाम् ॥ २ ॥
१२२ एषा गोभिररुणेभिर्युजानाऽस्रेधन्ती रयिमप्रायु चक्रे ।
पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा वि भाति ॥ ३ ॥
१२३ एषा व्येनी भवति द्विबर्हा आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥ ४ ॥

---

११८ हे (दिवः दुहितः) स्वर्गकन्ये उषा ! (व्युच्छ) प्रकाशित हो । (अपः चिरं मा तनुथाः) हमारे कर्ममें आनेके लिये देरी न कर । हे (सुजाते अश्वसूनृते) कुलीन और घोडोंके लिये प्रसिद्ध उषा ! (यथा रिपुं स्तेनं तपाति) जैसा राजा चोर तथा शत्रुको ताप देता है, वैसा (सूरः अर्चिषा त्वा न इत्) सूर्य अपने तेजसे तुम्हें कष्ट न दे ॥ (९)

११९ हे (विभावरि सुजाते) तेजस्विनी कुलीन (अश्वसूनृते) घोडोंके लिये प्रसिद्ध (उषः) उषा ! (त्वं) तू (एतावत् वा इत्) इतना और (भूयः वा) अधिक भी धन (दातुं अर्हसि) दान देनेके लिये योग्य है, समर्थ है, (या स्तोतृभ्यः उच्छन्ती) जो स्तोताओंके लिये अन्धकार दूर करती हुई (न प्रमीयसे) उनका नाश नहीं करती है ॥ (१०)

१२० (द्युतत्-यामानं बृहतीं) तेजस्वी रथवाली बडी विशाल (ऋतेन ऋतावरीं) सरलताके भावसे आनेवाली (अरुणप्सुं विभातीं) सुंदर रंगवाली चमकती हुई (स्वः आवहन्तीं) सूर्यको लानेवाली (देवीं उषसं) उषा देवीकी (विप्रासः मतिभिः प्रतिजरन्ते) ज्ञानी लोग अपनी बुद्धिसे अच्छी तरह स्तुति करते हैं ॥ (१)

१२१ (दर्शता एषा) यह दर्शनीय उषा (जनं बोधयन्ती) लोगोंको जगाती है, (पथः सुगान् कृण्वती) मार्गोंको सुगम बनाती है, और (अग्रे याति) आगे बढती है । यह (उषा) उषा (बृहद्रथा बृहती) बडे रथमें बैठनेवाली बडी (विश्वं-इन्वा) सबमें व्यापनेवाली (अह्नां अग्रे ज्योतिः यच्छति) दिनोंके प्रारंभमें प्रकाशकी ज्योति देती है ॥ (२)

१२२ (एषा) यह उषा (अरुणेभिः गोभिः युजानाः) लाल रंगवाले बैलोंको जोतनेवाली (अस्रेधन्ती रयिं अप्रायु चक्रे) क्षीण न होनेवाली धनको स्थिर करती है । (सुविताय पथः रदन्ती) उत्तम गमन करनेके लिये मार्गोंपर प्रकाश करती है, यह (पुरुष्टुता विश्ववारा) बहुतों द्वारा प्रशंसित और सबको स्वीकारने योग्य (विभाति) उषा विशेष चमकती है ॥ (३)

१२३ (एषा व्येनी भवति) यह निष्पाप होती है । यह (द्विबर्हा) दोनों ओर बाल रखनेवाली (पुरस्तात् तन्वं आविष्कृण्वाना) पूर्व दिशामें अपने शरीरको प्रकट करती है, (ऋतस्य पन्थां साधु अन्वेति) सत्यके मार्गको ठीक तरह अनुसरती है, (प्रजानती इव दिशः न मिनाति) ज्ञानवती स्त्रीके समान दिशाओंमें भूल नहीं करती ॥ (४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२४ एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात् ।
अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात् ॥ ५ ॥

१२५ एषा प्रतीची दुहिता दिवो नॄन् योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः ।
व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योतिर्युवतिः पूर्वथाकः ॥ ६ ॥

---

१२४ (एषा शुभ्रा न) यह गौरवर्ण स्त्रीके समान (तन्वः विदाना) अपने शरीरावयवोंको बताती हुई (स्नाती ऊर्ध्वा इव) स्नान करके ऊपर आयी हुई स्त्रीके समान (नः दृशये अस्थात्) हम सबके सामने दिखानेके लिये ऊपर उठी है। (द्वेषः तमांसि अपबाधमाना) द्वेष करने योग्य अन्धकारको दूर हटाती हुई (दिवः दुहिता उषाः) द्युलोककी पुत्री उषा (ज्योतिषा आगात्) प्रकाशके साथ आ गयी है ॥ (५)

१२५ (एषा प्रतीची दिवः दुहिता) यह सामने आयी स्वर्ग कन्या उषा (नॄन् भद्रा योषा इव) पुरुषोंके सामने कल्याणकारिणी स्त्रीके समान (अप्सः नि रिणीते) अपने रूपोंको प्रकट करती है। (दाशुषे वार्याणि व्युर्ण्वती) दाताको उत्तम धन देती है। यह (युवतिः ज्योतिः पूर्वथा अकः) तरुणी स्त्री अपना प्रकाश पूर्व कालके समान करती है ॥ (६)

सत्यश्रवा ऋषिका उषा वर्णन

अत्रिगोत्री सत्यश्रवा ऋषिने जो उषाका वर्णन किया वह यह है—

११० हे उषः ! दिवित्मती महे राये नः अद्य बोधय, यथा नः अबोधयः— हे उषा ! तू तेजस्वी होकर बडा ऐश्वर्य प्राप्त करनेके लिये हमें आज जगाओ, जैसा तूने हमें पूर्व कालमें जगाया था।

हे सुजाते अश्वसूनृते— हे उत्तम कुलमें उत्पन्न और अश्वोंके विषयमें उत्तम गुणवर्णन परक भाषण करनेवाली उषा! (**वाय्ये सत्यश्रवसि**) वाय्य सत्यश्रवापर कृपा कर, सत्यश्रवाका हित करनेका कार्य कर। इस सूक्तका द्रष्टा ऋषि सत्यश्रवा है। '**सत्यश्रवाः**' का अर्थ 'जिसने श्रवण मनन सत्य सनातन पद्धतिसे किया है'। '**आत्रेयः सत्यश्रवाः**' इस सूक्तका ऋषि है। इस सूक्तके मंत्रोंमें जो कहा है वह '**वाय्य सत्यश्रवाः**' है। अर्थात् अत्रिकुलोत्पन्न सत्यश्रवा उषाकी प्रार्थना करता है कि हे उषा ! तू वाय्य सत्यश्रवापर कृपा कर और उसका अभ्युदय निश्रेयस् करनेमें सहायक हो।

इस सूक्तके १-३ मंत्रोंके अन्तमें '**सत्यश्रवसि वाय्ये, सुजाते अश्वसूनृते** (ऋ. ५।७९।१-३) यह मंत्रभाग समान रीतिसे आया है। और '**सुजाते अश्वसूनृते**' इतना भाग तो इस सूक्तके दसों मंत्रोंमें अन्तमें है।

'**सु-जाते**'— उत्तम रीतिसे उत्पन्न होनेवाली, उत्तम कुलमें उत्पन्न होनेवाली, उत्तम रीतिसे प्रकट होनेवाली उषा।

'**अश्व-सूनृते**'—घोडोंके लिये जिसकी स्तुति की जाती है, घोडोंके विषयमें जो अच्छा भाषण करती है। घोडोंके कारण जो प्रसिद्ध है।

ये दोनों पद इस सूक्तके प्रत्येक मंत्रमें हैं।

१११ हे दिवः दुहितः ! या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छः— हे स्वर्गकन्ये उषा ! जो तू उत्तम नेता शौचद्रथोंके लिये पूर्व समयमें प्रकाशित हो चुकी थी। '**सु-नीथः शौचद्रथः**'— उत्तम नायक, उत्तम नीतिके साथ चलनेवाला, उत्तम संचालन करनेवाला तेजस्वी रथी वीर। ऐसे वीरोंके लिये उषाने प्रकाश किया था। वह उषा अब '**सहीयसि वाय्ये सत्यश्रवसि**'— बलवान् सत्य पराक्रमी वाय्य सत्यश्रवापर (व्युच्छ) प्रकाशती रहे।

११२ हे स्वर्गकन्ये उषा ! (आ-भरद्-वसुः) धन लानेवाली (अद्य नः व्युच्छ) आज हमारे लिये प्रकाश दे। तथा हे उत्तम कुलमें उत्पन्न और हे अश्वोंके लिये प्रशंसित उषा ! तू बलवान् वाय्य सत्यश्रवाके लिये प्रकाशित होती रह।

११३ हे प्रकाशनेवाली उषा ! जो स्तोता तुम्हारी प्रशंसा गाते हैं, तथा हे भाग्यवाली, उत्तम जन्मी और घोडोंके लिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशंसित उषा ! वे स्तोतागण धनोंसे (मघैः सुश्रियः) धनवान् होते हैं और वे दान देते हैं और दानके लिये अत्यंत प्रशंसित होते हैं।

११४ हे उत्तम कुलीन और घोडोंके लिये प्रशंसित उषा ! जो लोग धन प्राप्तिके लिये तुम्हारी स्तुति करते हैं, वे धनी होते और कभी विनष्ट न होनेवाला दान देते हैं। (अ-हयः रायः ददतः) दान ऐसा देते हैं कि वह सतत लाभ देता रहे। ऐसा दान देना चाहिये, यह बोध यहां मिलता है।

११५ हे उषा ! एषु सूरिषु वीरवत् यशः आधाः— हे उषा ! तू इन ज्ञानियोंको वीर पुत्रोंके साथ रहनेवाला यश और धन दे दो। धन चाहिये और उसके साथ वीरपुत्र भी चाहिये। अपने पुत्र ऐसे हों कि जो अपने धनका संरक्षण कर सकें। (**ये मघवानः अह्रयः राधांसि नः अरासत**)- जो धनी अक्षय धनका दान हमें देते हैं।

११६ ये सूरयः गव्या अश्व्या राधांसि नः भजन्त, तेभ्यः द्युम्नं बृहत् यशः आ वह— जो ज्ञानी गौओं घोडोंसे युक्त धन हमें देते हैं, उनको बडा तेजस्वी और यशस्वी धन दे दो।

११७ हमें गौओंके साथ धन तथा अन्न देदो और सूर्यके प्रकाशके साथ हमें प्रकाश भी दे दो।

११८ हे स्वर्गकन्ये ! हमारे यज्ञ कर्ममें प्रकाशित हो और यहां आनेमें देरी न कर। जिस तरह (यथा रिपुं स्तेनं तपाति) जैसा राजा चोर डाकूको कष्ट देता है वैसा कष्ट तुम्हें न हों। जो शत्रु और चोर होगा उसको कष्ट देना योग्य है। जिससे उसका आचरण सुधरेगा और वह सज्जन बनेगा ऐसा राजप्रबंध द्वारा प्रयत्न करना योग्य है।

११९ हे उषा ! तूं इतना और इससे अधिक धन दे सकती है, स्तोताओंको प्रकाश देती है और उनका नाश कभी नहीं करती।

इस सूक्तमें शब्दालंकार बहुत वार आया है। जो प्रत्येक मंत्रके अन्तिम पादमें दीखता है। वे ही पद पुनरुक्त होनेसे शब्दालंकार होता है। अब इसी आत्रेय सत्यश्रवाका दूसरा सूक्त देखिये—

१२० बडे सुन्दर तेजस्वी रथमें बैठकर उत्तम प्रकाशका फैलाव करती हुई उषा आती है जिसकी स्तुति ज्ञानी करते हैं।

१२१ दर्शता एषा जनं बोधयन्ती— दर्शनीय यह उषा आकर लोगोंको जगाती है।

पथः सुगान् कृण्वती अग्रे याति- मार्गोंको चलनेके लिये सुगम करती है और आगे बढती है। प्रकाशके कारण चलना फिरना सहज और विना कष्टके होता है।

बृहद्रथा बृहती विश्वं-इन्वा अह्नां अग्रे ज्योतिः यच्छति— विशाल रथमें बैठनेवाली यह बडी उषा विश्वमें प्रकाशसे व्यापती हुई दिनोंके प्रारंभमें प्रकाशको देती है।

१२२ यह उषा लाल किरणोंसे प्रकाशती है, क्षीण नहीं होती, परंतु बढती जाती है धनको स्थायी रहनेवाला करती है। मार्गपर प्रकाश करती है और विशेष प्रकाशती है।

१२३ एषा व्येनी भवति— यह उषा निष्पाप होती है। इस तरह स्त्रियोंको निष्कलंक होना चाहिये।

पुरस्तात् तन्वं आविष्कृण्वाना— पूर्व दिशामें अपने शरीरको प्रकट करती है। सामने अपने शरीरावयवोंको दिखाती है। सहजहीसे तरुण स्त्रियां इस तरह चलती हैं और न जानती हुई ऐसे आविर्भाव करती हैं। अवयव ढांक देनेके यत्नसे अपने अवयवोंको प्रकट करती हैं।

ऋतस्य पन्थां साधु अन्वेति— सत्यमार्गसे अच्छी तरह चलती है। इस मंत्रभागके साथ मिलता जुलता अर्थ पूर्व मंत्रभागका करना चाहिये। इसलिये हमने पूर्व मंत्रभागके अर्थमें लिखा है कि सहजहीसे उसके शरीरावयव प्रकट हो जाते हैं। इसमें दोषकी संभावना नहीं है।

१२४ एषा शुभ्रा न तन्वः विदाना स्नाती ऊर्ध्वा इव नः दृशये अस्थात्— यह गौर वर्ण स्त्रीके समान अपने शरीरको सहजहीसे दिखाती हुई स्नान करके ऊपर आयी तरुणीके समान हमारे सन्मुख आगयी है। उषाका उदय हुआ है।

द्वेषः तमांसि अपबाधमाना दिवः दुहिता उषाः ज्योतिषा आगात्— द्वेष करने योग्य अन्धकारको दूर करती हुई यह उषा प्रकाशके साथ आगयी है। प्रकाश रही है।

१२५ यह कल्याण करनेवाली उषा स्वर्गकन्या कल्याण करनेवाली स्त्रीके समान पुरुषोंके सामने अपने विविधरूपोंको प्रकट करती है। दाताको उत्तर धन देती है और प्रकाशसे जगत्को भर देती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बृहस्पतिपुत्र भरद्वाज ऋषिका
उषा वर्णन

(ऋ. ६।६४।१-६)

(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः। उषाः। त्रिष्टुप्)

१२६ उदु श्रिय उषसो रोचमाना अस्थुरपां नोर्मयो रुशन्तः।
कृणोति विश्वा सुपथा सुगान्यभूदु वस्वी दक्षिणा मघोनी ॥ १ ॥

१२७ भद्रा ददृक्ष उर्विया वि भास्युत् ते शोचिर्भानवो द्यामपप्तन्।
आविर्वक्षः कृणुषे शुम्भमानोषो देवि रोचमाना महोभिः ॥ २ ॥

१२८ वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो गावः सुभगामुर्विया प्रथानाम्।
अपेजते शूरो अस्तेव शत्रून् बाधते तमो अजिरो न वोळ्हा ॥ ३ ॥

१२९ सुगोत ते सुपथा पर्वतेष्ववाते अपस्तरसि स्वभानो।
सा न आ वह पृथुयामन्नृष्वे रयिं दिवो दुहितरिषयध्यै ॥ ४ ॥

१३० सा वह योक्षभिरवातोषो वरं वहसि जोषमनु।
त्वं दिवो दुहितर्या ह देवी पूर्वहूतौ मंहना दर्शता भूः ॥ ५ ॥

---

१२६ (रोचमानाः रुशन्तः उषसः) तेजस्वी चमकनेवाली उषाएं (श्रियै) विश्वकी शोभा बढानेके लिये (अपां ऊर्मयः न) पानीकी लहरियोंके समान (उद् अस्थुः) ऊपर आरही हैं। (विश्वा सुपथा सुगानि कृणोति) यह सब मार्ग सुगम करती है। यह (मघोनी वस्वी दक्षिणा अभूत् उ) धनवाली उषा धन देनेवाली और अपने कर्ममें दक्ष रहती है ॥ (१)

१२७ हे उषा ! तू (भद्रा ददृक्षे) कल्याणरूप दीखती है। (उर्विया विभासि) तू विस्तीर्ण रूपमें प्रकाशती है! (ते शोचिः भानवः द्यां उत् अपप्तन्) तुम्हारे पवित्र किरण आकाशसें ऊपर उठे हैं। हे (उषः देवि) उषा देवि ! (महोभिः रोचमाना) किरणोंसे चमकनेवाली और (शुम्भमाना) शोभनेवाली तू (वक्षः आविः कृणुषे) अपनी छाती खुली करती है.॥ (२)

१२८ (अरुणासः रुशन्तः गावः) लाल रंगवाली तेजस्वी किरणें (सुभगां उर्विया प्रथानां सीं) उत्तम भाग्यवती विस्तीर्ण प्रशंसनीय ऐसी इस उषाको (वहन्ती) उठाती हैं। (अस्ता शूर इव) अचूक बाण मारनेवाले शूर पुरुषके समान यह उषा (शत्रून् अप ईजते) शत्रुओंको दूर करती है। (अजिरः वोळ्हा न) शीघ्रगामी घुडसवारके शत्रु दूर करनेके समान यह उषा (तमः बाधते) अन्धकारको दूर भगाती है ॥ (३)

१२९ हे उषा ! (पर्वतेषु उत अवाते) पर्वतोंमें और मार्ग रहित प्रदेशमें (ते सुपथा सुगा) तेरे लिये उत्तम मार्ग सुगम होते हैं। हे (स्वभानो) स्वयं प्रकाशी उषा ! तू (अपः तरसि) अन्तरिक्षमें संचार करती है। हे (पृथुयामन् ऋष्वे) बडे रथमें बैठनेवाली सुंदर (दिवः दुहितः) स्वर्गकन्ये उषा ! (सा नः) वह तू हमारे लिये (इषयध्यै) प्राप्तव्य धन (आ वह) ले आ ॥ (४)

१३० हे (उषः) उषा ! (सा वरं आ वह) वह तू श्रेष्ठ धन मेरे पास ले आ। (या अवाता जोषं अनु) जो तू अप्रतिहत गतिवाली अपनी इच्छानुसार (उक्षभिः वरं वहसि) बैलोंके द्वारा श्रेष्ठ धन लाती है। हे (दिवः दुहितः) स्वर्ग-कन्या उषा ! (या त्वं देवी) जो तू देवी (पूर्वहुतौ मंहना दर्शता भूः) प्रथम हवनके समय पूजनीय और दर्शनीय होती है ॥ (५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३१ उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन्नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥ ६ ॥

(ऋ० ६.६५।१-६)

(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । उषाः । गायत्री)

१३२ एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः क्षितीरुच्छन्ती मानुषीरजीगः ।
या भानुना रुशता राम्यास्वज्ञायि तिरस्तमसश्चिदक्तून् ॥ १ ॥

१३३ वि तद्ययुररुणयुग्भिरश्वैश्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः ।
अग्रं यज्ञस्य बृहतो नयन्तीर्वि ता बाधन्ते तम ऊर्म्यायाः ॥ २ ॥

१३४ श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्तीर्नि दाशुष उषसो मर्त्याय ।
मघोनीर्वीरवत्पत्यमाना अवो धात विधते रत्नमद्य ॥ ३ ॥

१३५ इदा हि वो विधते रत्नमस्तीदा वीराय दाशुष उषासः ।
इदा विप्राय जरते यदुक्था नि ष्म मावते वहथा पुरा चित् ॥ ४ ॥

१३६ इदा हि त उषो अद्रिसानो गोत्रा गवामङ्गिरसो गृणन्ति ।
व्य१र्केण बिभिदुर्ब्रह्मणा च सत्या नृणामभवद्देवहूतिः ॥ ५ ॥

---

१३१ हे उषा ! (ते व्युष्टौ) तेरे प्रकाशित होनेपर (ये पितुभाजः नरः) जो अन्न सेवन करनेवाले मनुष्य हैं, तथा (वयः चित्) पक्षी भी (वसतेः अपप्तन्) अपने रहनेके स्थानसे बाहर पडते हैं । हे (उषः देवि) उषा देवि ! तू (अमा सते दाशुषे मर्त्याय) साथ रहनेवाले दाता मनुष्यके लिये (भूरि वामं वहसि) बहुत धन देती है ॥ (६)

१३२ (एषा स्या दिवोजाः दुहिता) यह वह स्वर्गसें जन्मी कन्या उषा (नः उच्छन्तीः) हमारे लिये अन्धकार दूर करती हुई (मानुषीः क्षितीः अजीगः) मानुषी प्रजाओंको जगाती है । (या रुशता भानुना) जो तेजस्वी प्रकाशसे युक्त होकर (राम्यासु अक्तून्) रात्रीओंके अन्दरके प्रकाशको (तमसः चित् तिरः अज्ञायि) तथा अन्धकारको दूर करती है ऐसा दीखता है ॥ (१)

१३३ (चन्द्ररथाः) चन्द्रके समान शोभावाले रथमें बैठनेवाली और (तद् बृहतः यज्ञस्य अग्रं नयन्तीः) उस विशाल यज्ञके समीप तक पहुंचानेवाली (उषसः) उषाएं (अरुणयुग्भिः अश्वैः) अरुण रंगवाले घोडोंसे (वि ययुः) विशेष वेगसे जा रही हैं । वे (चित्रं भान्ति) विलक्षण तेजसे प्रकाशित हो रही हैं । (ताः ऊर्म्यायाः तमः वि बाधन्ते) वे रात्रीके अन्धकारको दूर करती हैं ॥ (२)

१३४ हे (उषसः) उषाओ ! (दाशुषे मर्त्याय) दाता मनुष्यके लिये (श्रवः वाजं इषं ऊर्जं) कीर्ति बल अन्न और रस (वहन्तीः) ले जानेवाली तुम (मघोनीः पत्यमानाः) धनवाली तथा जानेवाली उषाएं (विधते) सेवा करनेवाले मेरे लिये (वीरवत् रत्नं अवः) वीर पुत्रोंसे युक्त रत्न और अन्न (अद्य नि धात) आज ही दे दो ॥ (३)

१३५ हे (उषासः) उषाओ ! (इदा हि वः विधते) इस समय तुम्हारी सेवा करनेवालेको देनेके लिये तुम्हारे पास (रत्नं अस्ति) रत्न है । (इदा वीराय दाशुषे) इस समय वीरको देनेके लिये तुम्हारे पास धन है। (इदा जरते विप्राय) इस समय स्तुति करनेवाले ज्ञानीको देनेके लिये तुम्हारे पास धन है । (यत् उक्था) जो स्तोत्र हैं उनको गानेवाले (मावते पुराचित्) मुझ जैसेके लिये, जैसे पूर्व समयमें दिये थे वैसे ही इस समय भी धन (नि वहथ स्म) दे दो ॥ (४)

१३६ हे (अद्रिसानो उषः) पर्वतके शिखरपर दीखनेवाली उषा ! (ते इदा हि) तेरी कृपासे इसी समय (अंगिरसः) अंगिरस गोत्री (गवां गोत्रा) गौवोंके झुंडोंको (गृणन्ति) खुला करते हैं । (अर्केण ब्रह्मणा विबिभिदुः) सूर्य किरणोंके साथ गाये स्तोत्रसे अन्धकारोंका नाश हो रहा है । (नृणां देवहूतिः सत्या अभवत्) मनुष्योंकी ईश प्रार्थना अब सत्य हो चुकी है ॥ (५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३७ उच्छा दिवो दुहितः प्रत्नवन्नो भरद्वाजवद्विधते मघोनि ।
सुवीरं रयिं गृणते रिरीह्युरुगायमधि धेहि श्रवो नः ॥ ६ ॥

१३७ हे (दिवः दुहितः) स्वर्गकन्ये उषे ! (प्रत्नवत् नः उच्छ) पूर्व समयके अनुरूप इस समय हमारे लिये अन्धकार दूर कर । हे (मघोनि) धनवती उषा ! (भरद्वाजवत् विधते गृणते) भरद्वाजके समान सेवा करनेवाले और स्तुति करनेवाले मुझे (सुवीरं रयिं रिरीहि) सुपुत्र युक्त धन दे तथा (नः) हमारे लिये (उरुगायं श्रवः अधि धेहि) बहुतों द्वारा प्रशंसनीय अन्न वा यश दे दो ॥ (६)

भरद्वाज ऋषिका उषा वर्णन

भरद्वाज ऋषि कहते हैं—

१२६ अपां ऊर्मयः इव रोचमानाः रुशन्तः उषसः श्रियै उदस्थुः- जैसे जलकी लहरियां उछलती हैं उस तरह यह प्रकाशकी लहरियाँ-उषाएं शोभाके बढानेके लिये नीचेसे ऊपर आरही हैं ।

विश्वा सुपथा सुगा कृणोति- सब मार्ग सुगम करती हैं । प्रकाशसे मार्ग सुगम हो जाते हैं । हमें भी मार्ग सुगम करने चाहिये ।

१२७ हे उषा ! तू कल्याण करनेवाली जैसी दीखती है । तेरे प्रकाश किरण ऊपर आकाशमें फैल रहे हैं । हे उषा देवि ! तू **(महोभिः रोचमाना शुम्भमाना वक्षः आविः कृणोषि)**- किरणोंसे प्रकाशमान और सुशोभित होकर अपनी छातीको प्रकट करती है । अपने अन्तःकरणको प्रकट करती है । अपने अवयवोंको प्रकट करती है ।

१२८ प्रकाशमान किरण विशाल उषाको ऊपर लाते हैं । **(अस्ता शूर इव शत्रून् अप ईजते)**— शस्त्र चलानेमें कुशल शूर पुरुषके समान यह उषा शत्रुओंको दूर भगाती है । इससे उपदेश मिलता है कि तरुण स्त्रीको आत्मरक्षणके लिये शस्त्रास्त्रोंका प्रयोग करनेकी विद्या सीखनी चाहिये ।

अजिरः वोळ्हा न तमः बाधते-शीघ्रगामी घुडसवार अपने शत्रुको भगाता है, उस तरह यह उषा अन्धकार दूर करती है ।

१२९ अवाते पर्वतेषु ते सुपथा सुगा— मार्गरहित पर्वतोंमें भी तेरे लिये मार्ग सुगम हो रहे हैं ।

यह उषा प्रकाशसे अन्तरिक्षमें संचार करती है । बडे रथमें बैठनेवाली यह उषा प्राप्त करने योग्य धनको ले आती है ।

१३० उषा श्रेष्ठ धन लाती हैं, उसका रथ बैलों द्वारा ढोया जाता है । प्रथम हवन करनेके समय उषाका ही सेवन होता है ।

१३१ हे उषा ! तेरा प्रकाश होनेपर मनुष्य, पशु और पक्षी अपने स्थानसे उठते हैं और अन्न ढूंढनेके लिये लग जाते हैं । इस समय दाता मनुष्यके लिये उषा उत्तम धन देती है ।

१३२ यह उषा प्रकाशती है और मनुष्योंको जगाती है यह अपने प्रकाशसे रात्रीको और अन्धकारको दूर करती है ।

१३३ ये सुन्दर रथमें बैठनेवाली उषाएं, यज्ञको सिद्ध करती हैं और अपने प्रकाशसे विलक्षण उत्तम तेजको देती हैं और अन्धकारको दूर करती हैं ।

१३४ हे उषाओ ! तुम दाता मनुष्यके लिये यश अन्न और बल देती हैं तथा यज्ञ करनेवालेके लिये वीर पुत्रोंके साथ रहनेवाला धन, अन्न और संरक्षण देती है ।

१३५ हे उषाओ ! तुम्हारे पास इस समय रत्न है जो उपासकके लिये तुम दे दो । इस दाता वीरके लिये, ज्ञानी उपासकके लिये तुम उत्तम धन दे दो । ऐसाही तुमने पूर्व समयमें स्तोताओंको दिया था । वैसा इस समय भी दे दो ।

१३६ आंगिरस गोत्री ऋषि पर्वत शिखरपर प्रकाश डालनेवाली उषाके गुणगान कर रहे हैं । गाये गये इन स्तोत्रोंके साथ साथ अन्धेरा दूर हो चुका है । स्तोताओंकी प्रार्थना सत्य हो गयी है ।

१३७ हे उषा ! तूं पूर्व समयके समान आज हमारे लिये अन्धेरा दूर कर । भरद्वाजके समान स्तोताके लिये वीर पुत्रोंसे युक्त धन दे । और हमें प्रशंसनीय अन्न धन और बल दे दो ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वसिष्ठ ऋषिका उषा वर्णन

(ऋ० ७।७५) ८ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषसः । त्रिष्टुप् ।

१३८ व्यु१षा आवो दिविजा ऋतेनाऽऽविष्कृण्वाना महिमानमागात् ।
अप द्रुहस्तम आवरजुष्टमङ्गिरस्तमा पथ्या अजीगः ॥ १ ॥
१३९ महे नो अद्य सुविताय बोध्युषो महे सौभगाय प्र यन्धि ।
चित्रं रयिं यशसं धेह्यस्मे देवि मर्तेषु मानुषि श्रवस्युम् ॥ २ ॥

१३८ यह (उषाः दिविजाः वि आवः) उषा अन्तरिक्षमें प्रकट होकर विशेष रीतिसे प्रकाशने लगी है। वह उषा (ऋतेन महिमानं आविष्कृण्वाना) तेजसे अपनी महिमाको प्रकट करती हुई (आ अगात्) आ रही है। वह (द्रुहः अजुष्टं तमः अप आवः) शत्रुओं और अप्रिय अन्धकारको दूर करती है और (अंगिरस्तमा पथ्याः अजीगः) चलनेके मार्गोंको प्रकाशित करती है। (१)

१३९ (अद्य नः महे सुविताय बोधि) आज हमारे बडे सुखके लिये जागो। हे (उषः) उषा देवी ! हमें (महे सौभगाय प्र यंधि) बडे सौभाग्यका प्रदान कर। तथा (चित्रं यशसं रयिं अस्मे धेहि) विशेष श्रेष्ठ यशसे युक्त धन हमें दे। हे (मानुषि देवि) मनुष्योंका हित करनेवाली देवी ! (मर्तेषु श्रवस्युं) मनुष्योंको अन्न तथा यशवाले पुत्रको दो। (२)

१३८ दिविजाः ऋतेन महिमानं आविष्कृण्वानाः आ अगात्– दिव्य भाववाले, सहज स्वभावसे अपनी महिमाको प्रकट करते हुएं आते हैं। जो सहज स्वभावसे महिमाको प्रकट करते हैं वे दिव्य कहे जाते हैं। सहज ही से श्रेष्ठोंकी महिमा प्रकट होती है।

द्रुहः अजुष्टं तमः अप आवः— वह (उषा) दुष्ट, चोर आदिको तथा अप्रिय अन्धकारको दूर करती है। अन्धकारके समय चोर, डाकू, दुष्ट आदिका उपद्रव होता है। प्रकाश आते ही वह उपद्रव दूर होता है।

अंगिरस्तमाः पथ्याः अजीगः— अपने प्रकाशसे उषा लोगोंके चलने फिरनेके मार्गोंको प्रकट करती है। उषः-कालमें लोग उठते हैं और मार्ग दीखनेके कारण चलने फिरने लगते हैं।

उषा दिव्य स्त्री है। दिव्य गुणोंके साथ वह प्रकट हुई है। वह उषा सहज स्वभावसे अपनी महिमाको प्रकट करती है, उस तरह स्त्रियां दिव्य गुण स्वभाववाली हों और उनके सहज स्वभावसे उनकी महिमा प्रकट होती रहे। वे स्त्रियां अपने प्रभावसे द्रोहियों, दुष्टों और अपकारियोंको दूर करें, अज्ञानान्धकारको दूर करें, प्रकाशका मार्ग दिखावें, जिससे लोग जांय और अपने प्राप्तव्य स्थानको प्राप्त करें।

यह मन्त्र मनुष्योंको सर्व साधारणतया उपदेश देता है कि वे मनुष्य दिव्य गुण कर्म स्वभावके द्वारा अपनी महिमाको प्रकट करें, समाजमें कुव्यवहार करनेवाले समाज-द्रोहियोंको दूर करें, समाजसे अज्ञानान्धकारको दूर करें और ज्ञानको चारों ओर फैलावें। सबको ज्ञानवान् बनानेमें अपने कर्तव्यका भाग स्वयं करें और सबको अपना योग्य मार्ग दीखे ऐसा करें। ज्ञानसे परिशुद्ध हुए मार्गसे ही सब मनुष्य जांय। अज्ञानसे द्रोहियोंके मार्गसे कोई न जावे।

यहां उषाके वर्णनके मिषसे स्त्रियों और पुरुषोंके कर्तव्योंका उपदेश किया है।

१३९ महे सुविताय बोधि— विशेष सुविधा, सुखमयी अवस्था उत्पन्न करनेके लिये जागती रहो, जागो और प्रयत्न करो। विशेष सुख प्राप्त करनेके लिये जागना और यत्न करना योग्य है।

महे सौभगाय प्र यन्धि— विशेष सौभाग्य प्राप्त करनेके लिये यत्नवान होना चाहिये। विशेष भाग्य प्राप्त करनेका यत्न करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४० एते त्ये भानवो दर्शतायाश्चित्रा उषसो अमृतास आगुः।
जनयन्तो दैव्यानि व्रतान्यापृणन्तो अन्तरिक्षा व्यस्थुः ॥ ३ ॥
१४१ एषा स्या युजाना पराकात् पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति।
अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी ॥ ४ ॥

१४० (दर्शतायाः उषसः) दर्शनीय ऐसी इस उषाके (त्ये एते) वे ये (चित्राः अमृतासः भानवः) विलक्षण अमर प्रकाश किरणें (आ अगुः) फैल रहीं हैं। वे (दैव्यानि व्रतानि जनयन्तः) दिव्य व्रतोंको निर्माण कर रही हैं और (अन्तरिक्षा आपृणन्तः वि अस्थुः) अन्तरिक्षको भरपूर भर देती हैं और विशेष रीतिसे वहां रहती हैं। (३)

१४१ (एषा स्या) यह वह उषा (पराकात्) दूरसे भी (पञ्च क्षितीः युजाना सद्यः परि जिगाति) पांचो मानवोंको उद्यममें लगाती हुई उनके पास पहुंचती है। (जनानां वयुना अभिपश्यन्ती) लोगोंके कर्मोंको देखती हुई यह (दिवः दुहिता भुवनस्य पत्नी) द्युलोककी पुत्री भुवनोंकी पालना करती है। (४)

चित्रं यशसं रयिं धेहि— विलक्षण श्रेष्ठ यशस्वी धन प्राप्त होना चाहिये। जिससे यशकी हानि होती हो वह धन नहीं चाहिये।

हे मानुषि देवि ! मर्तेषु श्रवस्युं धेहि— हे मानवोंका हित करनेवाली देवी ! तू मनुष्योंको ऐसा पुत्र दे कि जो यशस्वी तथा अन्नवान् हो। अन्न प्राप्त करनेवाला हो।

ऐसा यत्न करना चाहिये कि जिससे मनुष्योंको हरएक प्रकारकी सुविधा होती जाय, सौभाग्य प्राप्त होता रहे, उनको यश और धन मिले तथा ऐसा पुत्र हो कि जो यश, धन और अन्न कमानेवाला हो। अयशस्वी निर्धन और अन्नहीन न हो।

स्त्रियोंकी योग्यता

' मानुषि देवि ' (मानुषी देवी) ये पद यहां स्त्रियोंके विशेष कर्तव्यका बोध कराते हैं। स्त्रियां मानवोंका हित करनेवाली हों। स्त्रियोंमें इतनी योग्यता हो कि जिससे वे मानवोंका हित करनेमें समर्थ हों। वे ऐसा सुपुत्र निर्माण करें कि जो यशस्वी धनवान् और अन्न कमानेवाला हो।

१४० उषासः दर्शतायाः भानवः आ अगुः— सुन्दर उषाके सुंदर किरण फैल रहे हैं। इसी तरह स्त्रियां सुन्दर हों, दर्शनीय हों, सुन्दर लाल, पीले वर्णोंवाले कपडे पहनें और अधिक सुन्दर बनकर अपने सौंदर्यका प्रकाश फैलाएँ। उषाके समान स्त्रियाँ आकर्षक तथा रमणीय हों।

अमृतासः चित्राः भानवः आ अगुः— गतिमान चित्र विचित्र रंगोंवाले किरण उषःकालमें फैल रहे हैं। उषाके समान स्त्रियां चित्रविचित्र रंगोंवाले वस्त्र पहनें, आभूषण धारण करें और त्वरासे तथा स्फूर्तिसे अपने कार्यमें लगें। अपना तेज फैलाएं।

दैव्यानि व्रतानि जनयन्तः— दिव्य व्रतोंका पालन करें। उत्तम व्रतोंका आचरण करें। दिव्यभाव प्रकट करनेवाले कर्म करें। स्त्रियोंको दिव्य व्रतों नियमों और कर्मोंका पालन करना चाहिये। यह उपदेश स्त्रीपुरुषोंको समान है। दिव्य श्रेष्ठ भाव प्रकट होनेके लिये इसकी आवश्यकता है।

अन्तरिक्षा आ पृणन्तः वि तस्थुः— अन्तरिक्षमें अपने तेजको भरपूर भर देती हैं ऐसी उषाएँ हैं। स्त्रियोंको भी उचित है कि वे लोगोंके अन्तःकरणोंमें अपने विषयका पूज्य भाव स्थापन करें और विशेष नियमोंसे विशेष रीतिसे स्थिर रहें, (वि तस्थुः) विशेष स्थान प्राप्त करें और उसी स्थानमें स्थिर रहें, चञ्चल न हों। इधर उधर अयोग्य मार्गसे कदापि न जांय। दिव्य व्रतोंका धारण इसीलिये करना चाहिये कि जिससे उनमें श्रेष्ठता स्थिर रूपसे रहे और चञ्चलता दूर हो। सब लोगोंके अन्तःकरणोंमें अपनी श्रेष्ठताका प्रभाव भरपूर भर दें ताकि कोई उनका अपमान कदापि न कर सके।

१४१ पञ्च क्षितिः युजाना– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद् इनको कार्यमें लगाती है। स्वयं (पराकात्) दूर रहती है, परंतु सब मानवोंको दूरसे ही कार्यमें प्रवृत्त करती है इसी तरह स्वयं पृथक् द्रष्टारूप रहकर सब जनोंको सत्कर्ममें लगाना चाहिये।

सद्यः पञ्च क्षितीः परि जिगाति– तत्काल वह स्वयं सब प्रकारके पांचों मानवोंके पास पहुंचती है और उनको सत्कर्म की प्रेरणा देती है।

जनानां वयुना अभिपश्यन्ती– लोगोंके सब कार्योंको देखती है, सबोंके कर्मोंका निरीक्षण करती है। कौन अच्छा करता है और कौन बुरा करता है इसका निरीक्षण करती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४२ वाजिनीवती सूर्यस्य योषा चित्रामघा राय ईशे वसूनाम् ।
ऋषिष्टुता जरयन्ती मघोन्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना ॥ ५ ॥
१४३ प्रति द्युतानामरुषासो अश्वाश्चित्रा अदृश्रन्नुषसं वहन्तः ।
याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन दधाति रत्नं विधते जनाय ॥ ६ ॥

---

१४२ (वाजिनीवती चित्रामघा) बलवर्धक अन्नसे युक्त तथा विलक्षण धनसे युक्त (सूर्यस्य योषा) सूर्यकी पत्नी (वसूनां रायः ईशे) सब धनोंके ऐश्वर्यकी स्वामिनी है । (ऋषि-स्तुता) ऋषियोंद्वारा प्रशंसित (मघोनी) ऐश्वर्यवती (जरयन्ती) सबकी आयुका नाश करनेवाली (उषाः वह्निभिः गृणाना) उषा अग्नियोंके साथ प्रशंसित होकर (उच्छति) प्रकाशित होती है । (५)

१४३ (द्युतानां उषसं वहन्तः) तेजस्विनी उषाको ले जानेवाले (अरुषासः चित्राः अश्वाः प्रति अदृश्रन्) विलक्षण तेजस्वी घोडे दिखाई देते हैं । वह (शुभ्रा) गौरवर्ण उषा (विश्वपिशा रथेन याति) सब प्रकारसे सुन्दर रथसे जाती है । यह (विधते जनाय रत्नं दधाति) प्रयत्नशील मनुष्योंको रत्न अथवा धन देती है । (६)

दिवः दुहिता भुवनस्य पत्नी— यह दिव्य लोककी पुत्री है और त्रिभुवनका पालन करनेवाली है । यहां भुवनका पालन करनेवाली उषा है ऐसा कहा है । यह उषा द्युलोककी दुहिता है । यह सबकी पालना करती है । पिता द्युलोकके समान तेजस्वी हो यह यहां सूचित होता है । तेजस्वी पिताकी यह पुत्री सुशिक्षासे संपन्न होकर त्रिभुवनके राज्यका पालन करती है।

पुत्रीकी शिक्षा

पुत्रीकी शिक्षा कैसी होनी चाहिये, इसका उत्तर इस मंत्रमें दिया है । प्रथम पुत्रीका पिता द्युलोकके समान तेजस्वी चाहिये । यह आनुवंशिक संस्कार है । पश्चात् वह पुत्री भी स्वयं उषाके समान तेजस्विनी चाहिये, नाना वस्त्रालंकारोंसे सुशोभित होकर, विद्यासे संपन्न होकर जनताके नाना कार्योंमें प्रवृत्त करे, उनके कर्मोंका निरीक्षण करे और सब राष्ट्रका पालन करे । इतनी चतुर तथा कर्तव्यदक्ष पुत्री होनी चाहिये । इस सूक्तका प्रत्येक शब्द और वाक्य कन्याओंकी शिक्षा कैसी होनी चाहिये इसकी सूचना देता है । पाठक प्रथम मंत्रसे इस विषयका उपदेश देखें ।

स्त्रीका अधिकार

१४२ यह उषा (**सूर्यस्य योषा**) सूर्यकी स्त्री है । (**वाजिनीवती चित्रामघा**) अनेक प्रकारके अन्न तथा धन अपने पास रखती है, (**वसूनां रायः ईशे**) धनों और वैभवोंका ईशन करती है । स्वामिनी होकर उन सब ऐश्वर्योंका शासन करती है ।

स्त्री अबला नहीं है ।

ऐसी स्त्रीकी प्रशंसा (ऋषि स्तुता) ऋषि करते हैं । जो स्त्री अपने संपूर्ण ऐश्वर्यका योग्य रीतिसे प्रशासन करती है, उसकी प्रशंसा ऋषि करते हैं ।

स्त्री प्रशासिका है ।

मघोनि वसूनां ईशे— स्वयं अपने पास धन रखती है और सब प्रकारके धनोंपर स्वामित्व करती है । पूर्व मंत्रमें कहा ही है कि यह (भुवनस्य पत्नी) राष्ट्रका, भुवनका पालन करती है । जिस तरह पुरुषको राष्ट्रपति, भुवनपति कहते हैं, उसी तरह शासक स्त्री होनेपर उसको ' राष्ट्रपत्नी, भुवन पत्नी ' कहा जाता है । यहां का ' पत्नी ' पद धर्मपत्नी वाचक नहीं है, प्रत्युत ' पालिका ' का भाव बतानेवाला है ।

उषाः वह्निभिः गृणाना उच्छति— उषा अग्नियोंके साथ प्रशंसित होकर प्रकाशती है । इसी तरह स्त्री अग्निके समान तेजस्वी नेताओंके साथ प्रशासन कार्य करती हुई प्रकाशित होती है । स्वयं सूर्यकी पत्नी उषा अग्नियोंके साथ कार्य करती है । इसी तरह राष्ट्रका शासन करनेवाली रानी अन्यान्य अधिकारियोंके साथ राष्ट्रशासनका कार्य उत्तम रीतिसे करे और अपना तेज फैलाये ।

यहां सूचित किया है कि जैसा अग्नि सूर्यकी प्रभाका घर्षण नहीं कर सकते, उसी तरह यह सम्राज्ञी अन्यान्य कार्यकर्ताओंके साथ रहकर भी किसी तरह दूषित नहीं होती ।

स्त्री रथमें बैठकर जाती है । गोषा नहीं है ।

१४३ **द्युतानां उषसं वहन्तः अरुषासः अश्वाः प्रत्यदृश्रन्**— प्रकाशमान उषाके रथको तेजस्वी घोडे चला रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४४ सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।
रुजद् दृळ्हानि दददुस्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त ॥ ७ ॥
१४५ नू नो गोमद् वीरवद् धेहि रत्नमुषो अश्वावत् पुरुभोजो अस्मे ।
मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥

---

१४४ (सत्या महती यजता देवी) सत्य बडी पूजनीय यह उषा देवी (सत्येभिः महद्भिः यजत्रैः देवेभिः) सत्य महान पूजनीय देवोंके साथ रहकर (दृळ्हानि रुजत्) घने अन्धकारका नाश करती है, (उस्रियाणां ददत्) गौओंके लिये प्रकाश देती है, इस कारण (गावः उषसं प्रति वावशंत) गौवें उषाकी कामना करती हैं । (७)

१४५ हे (उषः) उषा देवि ! (न अस्मे) हमें, प्रत्येकके लिये (गोमद् अश्वावत् वीरवद् रत्नं) गौवों, अश्वों और वीर पुत्रोंसे युक्त धन और (पुरुभोजः धेहि) बहुत भोजन सामग्री दो । (नः बर्हिः पुरुषता निदे मा कः) हमारा यज्ञ मानवोंके समाजमें निन्दाके योग्य न होवे । (यूयं सदा नः स्वस्तिभिः पात) तुम सदा हमें कल्याण करनेके संरक्षक साधनोंसे सुरक्षित रखो । (८)

हैं यह दृश्य दीख रहा है । सूर्यकिरणरूपी घोडे उषाके रथको चलाते हैं । यहां उषा रथमें बैठकर भ्रमण करनेके लिये जाती है । वह घरमें गोषामें नहीं बैठती । वह विश्वमें भ्रमण करती है । स्त्रियां इस तरह भ्रमण करें, राष्ट्रमें ऐसा प्रबंध होना चाहिये जिससे स्त्रियां निर्भय होकर राष्ट्रमें संचार करें । दुष्ट उनका धर्षण करनेमें समर्थ न हों ।

अरुषासः चित्राः अश्वाः प्रत्यदृश्रन्— तेजस्वी घोडे दीखाई देते हैं । रथके घोडे उत्तम तेजस्वी, फूर्तिले और शीघ्रगामी हों ।

ऐसे सुंदर तेजस्वी रथमें बैठकर (**शुभ्रा विश्वपिशा रथेन याति**) गौरवर्ण स्त्री-राष्ट्रका प्रशासन करनेवाली रानी राष्ट्रमें संचार करती है ।

विधते जनाय रत्नं दधाति— विशेष उत्तम कर्म करनेवाले मनुष्यको वह धन देती है । उत्तम कुशल कारीगरको वह धन देती है । राष्ट्रके उत्तम कारीगरोंको इस तरह उत्तेजना मिलनी चाहिये ।

१४४ देवी देवेभिः दृळ्हा रुजत्— देवी देवोंके साथ रहकर सुदृढ शत्रुओंका नाश करती है । यह मंत्र शक्तिका महात्म्य कह रहा है । शक्तिका महत्त्व यह है कि वह सुदृढ शत्रुओंका भी नाश करती है ।

सत्या सत्येभिः दृळ्हा रुजत्— सत्यपालन करनेवाली वीरा सत्यपालक वीरोंके साथ रहकर सुदृढ बने । वह असत्य व्यवहार करनेवालोंका नाश करती है ।

उस्रियाणां ददत्— गौओंको घास आदि देती है। इसलिये (**गावः उषसं वावशंत**) गौवें उषाको चाहती हैं। वैसी गौवें घास पानी समयपर देनेवाली स्त्रीको चाहती है ।

इस सूक्तमें ' दुहिता ' पद है । (दिवः दुहिता) यह उषा द्युलोककी दुहिता है । ' **दुहिता** ' का अर्थ (दोग्धी) गौका दूध निचोडनेवाली है । घरकी पुत्री सवेरे उठे, गौओंको घास पानी आदि देवे, गौओंका प्रेम संपादन करे और गौओंका दूध निकाले । गौओंका दोहन करना यह कार्य घरकी पुत्रीका है, स्त्रीका है ।

१४५ गोमत् अश्वावत् वीरवत् पुरुभोजः रत्नं धेहि जिसके साथ गौवें, घोडे, वीर पुत्र और बहुत भोग सदा रहते हैं ऐसा धन हमें चाहिये । खानेके लिये गौका दूध, दही, मक्खन और घी जितना चाहिये उतना मिले, भ्रमण करने तथा रथ चलानेके लिये उत्तम घोडे हों, भोजनके लिये उत्तम अन्न मिले, पर्याप्त धन हो, इस सबका संरक्षण करनेके लिये वीर हों तथा घरमें वीर पुत्र हों । पुत्रिकाएं भी वीरा हों । यह वैभव हमें चाहिये ।

पुरुषता नः बर्हिः निदे मा कः— मानव समाजमें हमारे कर्मोकी निंदा न हो । हमारे कर्मकी प्रशंसा ही सब करें। ऐसे शुभ कर्म सदा हमसे होते रहें । ' पुरुष-ता ' मानवताकी दृष्टिसे हमारे कर्म श्रेष्ठमें श्रेष्ठ हों । हमारे कर्मोंसे मनवताकी ऊंचाई बढे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ऋ० ७।७६) ७ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषसः । त्रिष्टुप् ।

१४६ उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत् ।
ऋत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुराविरकर्भुवनं विश्वमुषाः ॥ १ ॥
१४७ प्र मे पन्था देवयाना अदृश्रन्नमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः ।
अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात् प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः ॥ २ ॥

१४६ (अमृतं विश्वजन्यं ज्योतिः) अमर और सबके हितकारी तेजका (विश्वानरः सविता देवः उत् अश्रेत्) विश्वके नेता सविता देवने आश्रय किया है । वह (देवानां चक्षुः ऋत्वा अजनिष्ट) देवोंका आंख सूर्य शुभ कर्मके साथ उदय हुआ है । और (उषाः विश्वं भुवनं आविः अकः) उषाने सब भुवनोंको प्रकाशित किया है । (१)

१४७ (अमर्धन्तः वसुभिः इष्कृतासः) हिंसा न करनेवाले और निवासक तेजोंसे सुसंस्कृत हुए (देवयानाः पन्थाः) देवोंके जाने आनेके मार्ग (मे प्र अदृश्रन्) मैंने देखे हैं । मुझे दिखाई दे रहे हैं । (पुरस्तात् उषसः केतुः अभूत् उ) पूर्व दिशामें उषाका ध्वज-प्रकाश-फहरने लगा है । और (प्रतीची) पूर्व दिशामें उषा (हर्म्येभ्यः अधि आ अगात्) बडे प्रासादोंके ऊपर प्रकाशित हो रही है । (२)

१४६ विश्वानरः सविता देवः विश्वजन्यं अमृतं ज्योतिः उत् अश्रेत्— विश्वका नेता, सबको चलानेवाला, प्रेरक देव सर्व जनहितकारी अमर तेजका आश्रय करता है । जो (विश्वा-नरः) सबका नेता, सब जनताको चलानेवाला है, वह (सविता) सबका प्रेरक बने, सबको शुभ कर्मकी प्रेरणा करे, (देवः) प्रकाशमान हो, विजिगीषु हो, कर्तव्य दक्ष हो, और (विश्व-जन्यं) सर्व जनोंके हित करनेवाले अमर तेजका धारण करे ।

सविता सूर्य देवका (ज्योतिः) प्रकाश (विश्व-जन्यं अमृतं) सब प्राणियों, सब वृक्षादिकोंका हित करनेवाला है । तथा मरणको दूर करनेवाला है । सूर्य प्रकाश रोग बीजोंको दूर करता है, आरोग्य बढाता है, अपमृत्युको दूर करता है । सूर्य स्थावर जंगमका आत्मा है (**सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।** ऋ० १।११५।१) ऐसा इसीलिये वेदमें अन्यत्र कहा है । इस तरह सूर्य प्रकाश सर्व जनोंका हितकारी है ।

देवानां चक्षुः ऋत्वा अजनिष्ट— यह सूर्य देव सबका आंख है, सब विश्वका चक्षु है । सूर्यके प्रकाशसे ही सब कुछ प्रकाशित होता है । सूर्यके प्रकाशसे सबके आंख कार्य करते हैं । इसलिये इसको (चक्षुषः चक्षुः । केन उ०) सबकी आंखका आंख कहते हैं । यह (ऋत्वा) कर्मके साथ उदय होता है । अर्थात् सूर्यका उदय होनेपर ही यज्ञ, याग आदि शुभ कर्म किये जाते हैं इसलिये इसको सत्कर्मके साथ जन्मा है ऐसा कहा है । मनुष्यको उचित है कि वह जन्मसे ही सत्कर्म करे और दूसरोंको भी सत्कर्ममें प्रेरित करे ।

उषाः विश्वं भुवनं आविः अकः— उषाने सब भुवनोंको प्रकाशित किया । उषाके प्रकाशसे सब विश्व दिखने लगा है । इसी तरह स्त्रियां भी स्वयं ज्ञान-तेजसे तेजस्विनी बनें और अपने ज्ञानसे सबको ज्ञानवान् बनावें तथा सबको प्रकाशित करनेका श्रेय लें ।

सूर्य और उषा ये दोनों स्वयं तेजस्वी होती हैं और सब विश्वको तेजस्वी बनाती और प्रकाशित करती हैं । मनुष्योंको भी ऐसा ही करना चाहिये । सूर्य मनुष्योंका आदर्श है और उषा सब स्त्रियोंका आदर्श है । अपने आदर्शके समान सबको बनना उचित है ।

१४७ देवयानाः पन्थाः अमर्धन्त– दिव्य मार्ग हिंसासे रहित हुए हैं । उषा आनेके पूर्व चारों ओर अन्धेरा था, इस लिये चोर, डाकू, लुटेरे घातपात करते थे, अब उषा आ गयी, प्रकाश हुआ, इसलिये वे हिंसक भाग गये और सब मार्ग निष्कंटक हुए ।

देवयानाः पन्थाः वसुभिः इष्कृतासः— देवोंके जाने आनेके मार्ग, श्रेष्ठ मार्ग धनोंसे भरपूर हुए हैं । क्योंकि अब प्रकाश हुआ, चोरोंका भय रहा नहीं, इसलिये उद्यमी लोग धन लेकर अपने व्यवहार करनेके लिये जा रहे हैं । अतः उषा आनेके पश्चात् सब मार्ग धन-संपन्न हुए हैं जो उषाके पहिले धनशून्य थे ।

देवयानाः पन्थाः प्र अदृश्रन्– दिव्य मार्ग उषाके प्रकाशसे दीखने लगे हैं । जो उषाके पूर्व अन्धेरेसे व्याप्त थे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४८ तानीदहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।
यतः परि जार इवाचरन्त्युषो ददृक्षे न पुनर्यतीव ॥ ३ ॥

१४८ हे (उषः) उषा देवी ! (तानि इत् बहुलानि अहानि आसन्) वे बहुत दिन थे कि (सूर्यस्य उदि[ता] प्राचीना) जो सूर्यके उदयके पूर्व प्रकाशित होते थे । अर्थात् सूर्य उदयके पूर्व उषा बहुत दिन प्रकाशती रहती है (यतः जारः इव परि आचरन्ती) क्योंकि तू पतिकी सेवा जैसी सती स्त्री करती है, वैसी सेवा करती है, प[र] (पुनः यती इव न) संन्यासिनी स्त्रीके समान पतिसे विमुख कभी तू नहीं होती । (३)

भगवा ध्वज

पुरस्तात् उषसः केतुः अभूत्— पूर्व दिशामें उषाका ध्वज फहरने लगा है । उषाका ध्वज उषःप्रकाश है । यह ध्वज भगवा है, गेरुवा है । उषाका प्रकाश ही यह ध्वज है । इस ध्वजसे पता लगता है कि सूर्य आ रहा है ।

प्रतीची हर्म्येभ्यः अधि आ अगात्— पूर्व दिशासे उगनेवाली उषा बडे बडे प्रासादोंके ऊपर अपना तेज डालती हुई आ रही है । उषाका प्रकाश सबसे प्रथम ऊंचे स्थानोंपर चमकता है, पहाडोंके शिखर, ऊंचे मकानोंके ऊपरके भाग, ऊंचे वृक्षोंके ऊपरके भाग सबसे प्रथम प्रकाशित होते हैं ।

राज-प्रासाद

यहां ' हर्म्य ' शब्द है, यह राजमहलका वाचक है । जो घर पांच पांच सात सात मंजलोंके होते हैं उनका नाम हर्म्य होती है । राजाओं तथा धनिकोंके घर ऐसे बडे होते हैं । और उनके शिखर सबसे प्रथम उषाके प्रकाशसे प्रकाशित होते हैं । जिनका विचार यह है कि वेदके समय झोंपडियां ही रहनेके लिये होती थीं, उनके अशुद्ध मतका निराकरण यह ' हर्म्य ' शब्द कर रहा है और यह शब्द बता रहा है कि उस सभ्यताके समय बडे बडे प्रासाद होते थे जिनमें राजा, राजपुरुष तथा धनी लोग रहते थे ।

सूर्योदयके पूर्व उषाके बहुत दिन

१४८ सूर्यस्य प्राचीना उदिता बहुलानि अहानि आसन्— सूर्यके उदयके पूर्व प्रकाशित हुए बहुत दिन हैं । प्रथम बहुत दिन उषा प्रकाशित होती है और पश्चात् सूर्यका उदय होता है । सूर्य उदय होनेसे पूर्व उषाके कई दिन जाते हैं । ये दिन उषाके न्यूनाधिक प्रकाशसे समझे जाते हैं । (बहुलानि अहानि) बहुत दिन उषा प्रकाश रही है, और पश्चात् सूर्यका उदय हुआ है, ऐसी परिस्थिति भारत वर्षमें कदापि नहीं होती है । उत्तरीय ध्रुवके भागमें तीस दिन तक उषा प्रकाशती है और पश्चात् सूर्यका उदय होता है । यह परिस्थिति वहां है । भारत वर्षका कोई कवि सूर्योदयके पूर्व उषाके बहुत दिन गये ऐ[से] वर्णन नहीं कर सकता, क्योंकि वैसा दृश्य यहां नहीं है । जो कवि भारत वर्ष तथा उत्तरीय ध्रुवकी परिस्थिति स्वयं जान[ता] हो वही अपने काव्यमें ऐसा कह सकता है कि इस स्थानमें [सूर्य] उदयके पूर्व उषा देवी बहुत दीन (बहुलानि अहानि) प्र[का]शित होती है । इस मंत्रका विचार पाठक करें और जाने [कि] सूर्योदयके पूर्व उषाके बहुत दिन प्रकाशित होनेका आशय क्या [है] ।

उषा जारः इव पर्याचरन्ती— उषा जारकी से[वा] करनेके समान सूर्य-पतिकी सेवा करती है । यहां के ' जार' का अर्थ ' पति ' ऐसा सबने किया है, क्योंकि सूर्य उषा[का] पति है । इसमें संदेह नहीं है । यह भी पतित्व आलंकारि[क] है । पर हमारे विचारसे यहांका ' जार ' पद ' जार ' का वाचक है । क्योंकि (१) **' साध्वी स्त्री '** पतिकी से[वा] करती है, (२) **' जारिणी स्त्री '** जारकी सेवा करती और (३) **' यती संन्यासिनी '** विरक्त संसारसे उ[दास] बनी स्त्री पतिसेवासे विमुख होती है । इन तीन स्त्रियोंमें जारि[णी] स्त्री की आतुरता अधिक होती है, तथा वह अधिक तत्परत[ासे] जारकी सेवा करती है । यहां उषा अधिक तत्पर है यह बता[ना] है, इसलिये ' जार ' शब्दका प्रयोग यहां किया है । इसलि[ये] इसका यह अर्थ करना योग्य है । तथापि सब भाष्यकार[ोंने] इसका अर्थ साध्वी स्त्री पतिकी सेवा करती है वैसी उषा है ऐ[सा] अर्थ किया है । हम भी इसका खंडन करना नहीं चाहते ।

यती इव न— ' यती ' का अर्थ संयमशील संन्यासि[नी] है । संसारसे विरक्त हुई स्त्री संसारमें रही तो भी संसारके कार्योंमें तत्पर नहीं रहती । वैसी उषा नहीं है, [उषा] अत्यंत तत्परतासे पति सेवा करती है । सब स्त्रियां तत्पर[तासे] पति सेवा करें यह उपदेश यहां है । कोई स्त्री संन्यासिनी बने, संसारमें रहकर तत्परतासे पति सेवा करे, दक्षतासे संसा[र] कर्म करती रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४९ त इद् देवानां सधमाद आसन्नृतावानः कवयः पूर्व्यासः ।
गूळ्हं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन् त्सत्यमन्त्रा अजनयन्नुषासम् ॥ ४ ॥

१५० समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते ।
ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः ॥ ५ ॥

---

१४९ जो (ऋतावानः पूर्व्यासः कवयः) सत्यके पालनकर्ता प्राचीन ज्ञानी और (सत्यमन्त्राः पितरः) जिनके मन्त्र सिद्ध किये होते थे, जो सबके पिता जैसे पालक थे, (ते इत् देवानां सधमादः आसन्) वे देवोंके साथ बैठकर सोमरसका आस्वाद लेनेवाले थे, जिन्होंने (गूळ्हं ज्योतिः अनु अविंदन्) गुप्त सूर्यकी ज्योतीको प्राप्त किया और जिन्होंने (उषासं अजनयन्) उषाको प्रकट किया ॥ (४)

१५० (समाने ऊर्वे) एक महत्कार्यके अन्दर वे (अधि संगतासः) एक होते हैं, संघटित होते हैं, और (सं जानते) अपना एक विचार करते हैं, तथा (ते मिथः न यतन्ते) वे कभी आपसमें कलह नहीं करते, (ते देवानां व्रतानि न मिनन्ति) वे देवोंके अनुशासनोंका भंग कभी नहीं करते और (अमर्धन्तः) हिंसा न करते हुए (वसुभिः यादमानाः) धनोंके साथ संगत होते हैं ॥ (५)

---

१४९ यह प्राचीन ऋषियोंका वर्णन है। (पूर्व्यासः) पूर्व समयके (कवयः) कवि (ऋतावानः) सत्यका पालन करते थे, वे (सत्य-मन्त्राः) मन्त्रोंका साक्षात्कार करते थे तथा (पितरः) सबके पूर्वज तथा पालक थे, (देवानां सधमादः) देवोंके साथ साथ बैठकर सोमरस पीकर आनंदित होनेवाले थे, अर्थात् देवोंकी पंक्तिमें बैठनेका जिनका अधिकार था ऐसे अंगिरस ऋषि थे। इन ऋषियोंने (गूळ्हं ज्योतिः) अन्धेरेमें गुप्त हुआ सूर्यका प्रकाश फलाने स्थानसे प्रकट होगा, ऐसा ज्योतिर्विद्यासे कहा और वैसा ही हुआ। उनके कहनेके अनुसार उषा प्रकट हुई और पश्चात् सूर्य भी प्रकट हुआ। ये प्राचीन ऋषि अंगिरस थे, अत्रि कुलके भी थे। ज्योतिष विद्यासे वे जान सकते थे कि दीर्घ कालके पश्चात् फलाने दिन प्रथम उषाका प्रादुर्भाव होगा और उसके पश्चात् उस दिन सूर्य प्रकट होगा। जैसा वे कहते थे वैसा ही होता था।

यह मंत्र वसिष्ठ ऋषिका देखा है और इसमें इनको ' पूर्व्यासः पितरः ' कहा है।

यहां उन्नतिके छः नियम बताये हैं, जो वे प्राचीन कालके पूर्वज अंगिरस आदि ज्ञानी पालते थे, वे नियम ये हैं—

१५० समाने ऊर्वे अधि संगतासः– एक महत्कार्य करनेके लिये आपसकी संघटना करना, आपसका विद्वेष हटाना और एक होना, एक अनुशासनमें रहना।

सं जानते— सबका एक विचार, एक संस्कार, एक मत करना, आपसमें मतभेद न रखना,

ते मिथः न यतन्ते– आपसमें विद्वेष बढे ऐसा यत्न कभी न करना, अपना संघटन टूट जाय ऐसा यत्न कभी न करना, परस्परका संघर्ष बढने न देना,

ते देवानां व्रतानि न मिनन्ति– देवोंके अनुशासनोंको वे कभी तोडते नहीं, स्थायी नियमोंको वे कभी तोडते नहीं। अनुशासनोंका उत्तम पालन करना,

अमर्धन्तः– किसीकी हिंसा नहीं करना, दूसरोंको कष्ट न देना, ऐसा व्यवहार करना कि जिससे किसी दूसरेको कष्ट न पहुंचे,

वसुभिः यादमानाः– धनोंको प्राप्त करना, ये छः नियम हैं, इनको जो पालन करेंगे वे निःसंदेह अभ्युदयको प्राप्त कर सकते हैं। ये नियम अभ्युदय चाहनेवालोंको अपने ध्यानमें रखना उचित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

•CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५१ प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवांसः ।
गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छोषः सुजाते प्रथमा जरस्व ॥ ६ ॥
१५२ एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः ।
दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

(ऋ० ७।७७) ६ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषसः । त्रिष्टुप् ।

१५३ उपो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।
अभूदग्निः समिधे मानुषाणामकर्ज्योतिर्बाधमाना तमांसि ॥ १ ॥

---

१५१ हे (सुभगे उषः) उत्तम भाग्यवती उषा देवी ! (उषर्बुधः तुष्टुवांसः वसिष्ठाः) उषःकालमें जागनेवाले, स्तुति करनेकी इच्छा करनेवाले वसिष्ठ लोग (त्वा स्तोमैः ईळते) तुम्हारी स्तुति स्तोत्रोंसे करते हैं । (गवां नेत्री वाजपत्नी) गौओंको प्राप्त करनेवाली और अन्नका संरक्षण करनेवाली होकर (नः उच्छ) हमारे लिये प्रकाशित हो। हे (सुजाते) उत्तम जन्मवाली उषा ! (प्रथमा जरस्व) सब देवोंमें पहिली होकर प्रशंसित हो ॥ (६)

१५२ (एषा उषाः राधसः सूनृतानां नेत्री) यह उषा स्तुति करनेवालेके सद्वचनोंको प्रेरित करनेवाली है । (उच्छन्ती वसिष्ठैः रिभ्यते) यह उषा अन्धकारको दूर करती है और वसिष्ठों द्वारा प्रशंसित होती है । (दीर्घश्रुतं रयिं अस्मे दधाना) बहुत प्रशंसा योग्य धन हमें देती है । (यूयं नः सदा स्वस्तिभिः पात) तुम हमारा सदा उत्तम संरक्षक साधनोंसे संरक्षण करो ॥ (७)

१५३ (युवतिः योषा न) तरुणी स्त्रीके समान यह उषा (उपो रुरुचे) सूर्यके पहिले प्रकाशित हो रही है । यह (विश्वं जीवं चरायै प्रसुवन्ती) सब जीवोंको सर्वत्र संचार करनेके लिये प्रेरित करती है । (अग्निः मानुषाणां समिधे अभूत्) अब उषःकालमें अग्नि मनुष्योंको प्रदीप्त करना योग्य है । वह प्रदीप्त होकर (तमांसि बाधमाना ज्योतिः अकः) अन्धकारको दूर करनेवाली ज्योतिको प्रकट करता है ॥ (१)

---

१५१ उषर्बुधः तुष्टुवांसः वसिष्ठाः स्तोमैः इळते— प्रातःकाल उठकर स्तोत्रोंसे ईश्वरकी स्तुति करनी चाहिये। जो (वसिष्ठाः) निवास करनेवाले हैं, जो एकत्र निवास करते हैं, वे इकट्ठे होकर स्तोत्र पाठ करें और ईश्वरकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करें ।

गवां नेत्री वाज-पत्नी— गौओंको चलानेवाली और अन्नका पालन करनेवाली उषा है। उषःकालमें गौओंको चलाया जाता है और अन्नकी देखभाल की जाती है । उषा स्त्री है। अतः गौओंका संचालन और घरमें आये अन्नका रक्षण करना ये कार्य स्त्रियोंके हैं ऐसा मानना उचित है ।

सुजाते ! प्रथमा जरस्व— हे कुलीन स्त्री ! तू सबसे प्रथम ईश्वरकी स्तुति कर, प्रथम उठकर, प्रथम आगे हो और ईश्वरकी स्तुति कर । स्त्रियां भी स्तुति प्रार्थना करें ।

१५२ उषःकाल इतना रमणीय होता है कि उसको देखकर कवियोंको काव्यगानका स्फुरण होता है। यह उषा अन्धकारको दूर करती है, प्रकाश देती है । इसलिये उषा प्रशंसाके योग्य है । जो एकत्र रहते हैं, एकत्र निवास करते हैं वे मिलकर उषाकी स्तुति करें ।

दीर्घश्रुतं रयिं अस्मे दधाना— अत्यंत प्रशंसित धन हमें देवे । हमें ऐसा धन चाहिये कि जो बहुत प्रशंसाके योग्य है । जिसकी निंदा होती है ऐसा धन हमें नहीं चाहिये ।

१५३ युवतिः योषा न उपो रुरुचे— तरुणी स्त्री वस्त्रालंकारोंसे सुशोभित होकर अपने तरुण पतिके सामने चमकती है, उस तरह यह उषा अपने सूर्य पतिके पहिले उठकर उसके पहिले ही अपना अन्धकार दूर करनेका कार्य करने लगी है। इसी तरह पतिके पूर्व स्त्री उठे और अपना कार्य करे यह स्त्रीके लिये उत्तम आदेश है । स्त्री कभी पति उठनेके पश्चात् भी सोती न रहे ।

विश्वं जीवं चरायै प्रसुवंती— उषा सब जीवोंको विचरनेके लिये प्रेरित करती है, इसी तरह घरकी स्त्री पतिको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५४ विश्वं प्रतीची सप्रथा उदस्थाद् रुशद् वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत्।
हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंदृग् गवां माता नेत्र्यह्नामरोचि ॥ २ ॥
१५५ देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम्।
उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता ॥ ३ ॥

---

१५४ (विश्वं प्रतीची सप्रथाः उदस्थात्) सब जगतके सन्मुख अत्यंत प्रसिद्ध यह उषा उदित हुई है। और वह (रुशत् शुक्रं वासः बिभ्रती अश्वैत्) तेजस्वी शुभ्र वस्त्र पहन कर बढ रही है। वह (हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंदृक्) सुवर्णके समान वर्णवाली तथा सुन्दर दर्शनीय तेजवाली (गवां माता) गौओंकी माताके समान हित करनेवाली और (अह्नां नेत्री) दिनोंका संचलन करनेवाली (अरोचि) प्रकाशित हो रही है ॥ (२)

१५५ (देवानां चक्षुः वहन्ती) देवोंके तेजको धारण करनेवाली (सुभगा) उत्तम भाग्यवाली (सुदृशीकं श्वेतं अश्वं नयन्ती) सुन्दर श्वेत किरणोंको- सूर्यके अश्वोंको चलानेवाली (उषा रश्मिभिः व्यक्ता अदर्शि) उषा किरणोंसे व्यक्त रूपमें दीखने लगी है। यह उषा (चित्रामघा विश्वं अनु प्रभूता) विलक्षण धनवाली संपूर्ण विश्वके सन्मुख बढ रही है ॥ (३)

पूर्व उठे और अपने घरके गौ आदि जीवोंकी उत्तम व्यवस्था करे। आलस्यमें न रहे।

मानुषाणां अग्निः समिन्धे अभूत्— मानवोंके घरोंमें अग्नि प्रज्वलित करना योग्य है। उषःकालमें अग्नि प्रदीप्त करें।

तमांसि बाधमाना ज्योतिः अकः— अन्धकारको दूर करनेवाली ज्योति प्रकाशित करो। दीप जलाकर अथवा अग्नि प्रदीप्त करके उसकी ज्योति जले जिससे घरका अन्धकार दूर हो।

स्त्रीके लिये आदेश

स्त्री पतिके पूर्व उषःकालमें उठे। अपने वस्त्र संभाल कर कार्य करनेके लिये तत्पर हो जाय। गौ आदि पशुओंकी देख भाल करे। अग्नि प्रदीप्त करे और दीप जला कर अथवा अग्निकी ज्वालासे अन्धकारको दूर करे।

१५४ विश्वं प्रतीची सप्रथाः उदस्थात्– सबसे प्रथम यह प्रसिद्ध (उषा स्त्री) उठी है। इस तरह स्त्री सबसे प्रथम उठे।

रुशत् शुक्रं वासः बिभ्रती अश्वैत्— तेजस्वी चमकीला वस्त्र पहन कर कार्य करनेके लिये आगे बढे। स्त्री उठनेके पश्चात् अच्छे वस्त्र पहने और कार्यमें प्रवृत्त हो।

हिरण्यवर्णा सुदृशीक-संदृक्– स्त्री सुवर्णके समान वर्णवाली और सुंदर दर्शनीय बने। स्त्रीको सजकर अपनी सुन्दरता बढानी चाहिये।

गवां माता— स्त्री घरकी गौओंका माताके समान पालन करे।

अह्नां नेत्री अरोचि— दिनमें जो घरके कार्य करने होंगे उनका नेतृत्व करे। प्रकाशित होकर घरका नेतृत्व करे। जैसी उषा अपने विश्वरूप घरका नेतृत्व करती है।

इस मंत्रमें उषाके वर्णनसे स्त्रियोंके कर्तव्य बताये हैं।

१५५ सुभगा देवानां चक्षुः वहन्ती– यह भाग्यवती उषा देवोंके मध्यमें प्रकाशको फैलाती है। इस तरह सौभाग्यवती स्त्री अपने घरमें प्रकाश करे, तेजस्विनी होकर रहे।

सुदृशीकं श्वेतं अश्वं नयन्ती– सुंदर श्वेत अश्वको चलाती है। अश्व संचालनकी विद्या जानती है। इस तरह स्त्री अश्व संचालनकी विद्यामें प्रवीण हो। घोडोंको सुन्दर दर्शनीय स्थितिमें रखे। भगवान् श्रीकृष्ण अश्वविद्यामें निपुण थे और अर्जुनके रथके घोडोंका संचालन करते थे। इसमें कोई मान हानि नहीं है। राजा नल, नकुल ये अश्व विद्यामें निपुण थे। स्त्रियां भी अश्व संचालनमें कुशल हों।

उषा रश्मिभिः व्यक्ता अदर्शि— उषा किरणोंसे प्रकट होकर सुंदर दिखती है। इस तरह स्त्रियां सुशोभित होकर बाहर आ जांय।

चित्रामघा विश्वं अनु प्रभूता— अनेक प्रकारके श्रेष्ठ धनोंसे युक्त होकर विश्वके सन्मुख उषा बढती है। इसी तरह स्त्री भी अनेक वस्त्रों और अलंकारोंसे सजकर, सुशोभित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५६ अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः ।
यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि ॥ ४ ॥

१५७ अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि भाह्युषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।
इषं च नो दधती विश्ववारे गोमदश्वावद् रथवच्च राधः ॥ ५ ॥

१५८ यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।
सास्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

---

१५६ (अन्तिवामा) हमारे समीप धनको लानेवाली तू (अमित्रं दूरे उच्छ) हमारे शत्रुको दूर करके प्रकाशित हो । तथा (उर्वीं गव्यूतिं नः अभयं कृधि) विस्तृत भूमिको हमारे लिये निर्भय बनाओ । (द्वेषः यावय) शत्रुओंको दूर करो, (वसूनि आभर) धनोंको ला दो । हे (मघोनि) धनयुक्त उषा ! (गृणते राधः चोदय) स्तुति करनेवालेके लिये धन भेजो ॥ (४)

१५७ हे (उषः देवि) उषा देवी ! (अस्मे श्रेष्ठेभिः भानुभिः वि भाहि) हमारे हितके लिये श्रेष्ठ किरणोंके साथ प्रकाशित हो । (नः आयुः प्रतिरन्ती) हमारी आयुको बढाओ । हे (विश्ववारे) सबके द्वारा स्वीकार करने योग्य उषा देवी ! (नः इषं च) हमारे लिये अन्न (गोमत् अश्ववत् रथवत् च राधः दधती) गौओं, घोडों और रथोंके साथ रहने वाला धन दे दो ॥ (५)

१५८ हे (दिवः दुहितः सुजाते उषः) द्युलोककी दुहिता रूप उत्तम कुलीन उषा देवि ! (यां त्वा वसिष्ठाः मतिभिः वर्धयन्ति) वसिष्ठ लोग स्तोत्रोंसे तुम्हारी स्तुति गाते हैं । (सा अस्मासु बृहन्तं ऋष्वं रयिं धाः) वह तू हमारे पास बडा तेजस्वी धन धारण कर । (यूयं नः सदा स्वस्तिभिः पात) तुम हमें सदा कल्याण साधक साधनोंसे सुरक्षित रखो ॥ (६)

होकर घरके बाहर आकर विराजे । स्त्रीके वस्त्र मलिन न हों, वह स्त्री आभूषण रहित न हो, जो उसके पास हो उससे जितना अधिक सुशोभित होनेकी संभावना हो उतना सौंदर्य बढावे ।

१५६ धनको पास लाना, शत्रुको दूर करना, प्रदेशको निर्भय करना, द्वेष कर्ताओंको दूर भगाना, धनसे घर भर देना, भक्तोंको धन देना ये मनुष्यके कर्तव्य हैं ।

अन्तिवामा— अपने पास धनको लाना,

अमित्रं दूरे उच्छ— शत्रुको दूर भगा देना,

ऊर्वीं गव्यूतिं न अभयं कृधि— विस्तृत भूप्रदेशको निर्भय करना,

द्वेषः यावय— द्वेष बढानेवालोंको दूर करना,

वसूनि आ भर— धनसे घरको भर देना,

गृणते राधः चोदय— भक्तके लिये धनका प्रदान करना।

ये कार्य उषा करती है, ये कार्य स्त्रियां करें तथा ये कार्य पुरुषोंको भी करना उचित है ।

१५७ **नः आयुः प्रतिरन्ती—** हमारी आयु बढाओ,

गोमत् अश्ववत् रथवत् इषं राधः नः दधती— जिस धनके साथ गौएं, घोडे, रथ, अन्न तथा कार्य सिद्धि रहती है ऐसा धन हमें दे दो ।

१५८ **अस्मासु बृहन्तं ऋष्वं रयिं धाः—** हमें बडा विशाल तेजस्वी धन चाहिये ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ऋ० ७।७८) ५ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। उषसः। त्रिष्टुप्।

१५९ प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन्नूर्ध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते।
उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वाममस्मभ्यं वक्षि ॥ १ ॥
१६० प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मतिभिर्गृणन्तः।
उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिताप देवी ॥ २ ॥
१६१ एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन् पुरस्ताज्ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः।
अजीजनन् त्सूर्यं यज्ञमग्निमपाचीनं तमो अगादजुष्टम् ॥ ३ ॥
१६२ अचेति दिवो दुहिता मघोनी विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम्।
आस्थाद् रथं स्वधया युज्यमानमा यमश्वासः सुयुजो वहन्ति ॥ ४ ॥
१६३ प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्ताऽस्माकासो मघवानो वयं च।
तिल्विलायध्वमुषसो विभातीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

---

१५९ (अस्याः प्रथमाः केतवः प्रति अदृश्रन्) इस उषाके पहिले किरण दीख रहे हैं। (अस्याः अंजयः ऊर्ध्वाः वि श्रयन्ते) इसके गतिशील किरण ऊर्ध्व भागमें आश्रय ले रहे हैं। हे (उषः) उषा देवि! (अर्वाचा बृहता ज्योतिष्मता रथेन) हमारी ओर आनेवाले बडे तेजस्वी रथसे (अस्मभ्यं वामं वक्षि) हमें उत्तम धन दे॥ (१)

१६० (समिद्धः अग्निः सीं प्रति जरते) प्रदीप्त हुआ अग्नि बढ रहा है। (विप्रासः मतिभिः गृणन्तः प्रति जरते) ज्ञानी लोग स्तोत्रोंसे स्तुति गाते हुए अपने कर्ममें बढ रहे हैं। (उषा देवी) उषा देवी (विश्वा तमांसि दुरिता) सब अन्धकारों और पापोंको (ज्योतिषा अपबाधमाना याति) अपने तेजसे दूर करती हुई जाती है॥ (२)

१६१ (एताः त्याः उषसः) ये वे उषायें (विभातीः ज्योतिः यच्छन्तीः) प्रकाशती और तेजको देती हुई (पुरस्तात् प्रति अदृश्रन्) हमारे सामने दीख रही हैं। (सूर्यं अग्निं यज्ञं अजीजनन्) सूर्य, अग्नि और यज्ञको प्रकट किया है। (अजुष्टं तमः अपाचीनं अगात्) अप्रिय अन्धकारको दूर किया है॥ (३)

१६२ (दिवः दुहिता मघोनी अचेति) द्युलोककी पुत्री धनवाली होकर आती है। (विश्वे विभातीं उषसं पश्यन्ति) सब प्रकाशित होनेवाली उषाको देखते हैं। यह उषा (स्वधया युज्यमानं रथं आ अस्थात्) अन्नसे भरे रथपर चढती है। (यं सुयुजः अश्वासः आ वहन्ति) जिसको उत्तम शिक्षित घोडे इष्ट स्थानतक पहुंचाते हैं॥ (४)

१६३ (त्वा अद्य) तुझे आज (अस्माकासः मघवानः सुमनसः) हमारे धनी और बुद्धिमान पुरुष तथा (वयं च) हम सब (प्रतिबुधंत) जानते हैं, तेरा वर्णन करते हैं। हे (उषसः) उषाओ! (विभातीः तिल्विलायध्वं) तुम प्रकाशित होकर जगत्को स्नेहयुक्त करो। (यूयं सदा नः स्वस्तिभिः पात) तुम सब सदा हमको कल्याणपूर्ण साधनोंसे सुरक्षित करो॥ (५)

---

१६१ इस मंत्रमें तथा कई अन्य मंत्रोंमें भी अनेक वचनमें उषा का प्रयोग हुआ है। सूर्य उदयके पूर्व अनेक उषाओंका होना इससे सिद्ध होता है। अनेक उषायें सूर्यको प्रकट करती हैं इसका स्पष्ट अर्थ यह है। प्रथम अनेक दिन उषःकाल ही होता है और पश्चात् सूर्यका उदय होता है।

१६३ विभातीः तिल्विलायध्वं– स्वयं तेजस्वी बनो और विश्वको स्नेहसे भरपूर भर दो। जगत्से द्वेषभावको समूल दूर करो।

❀

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ऋ० ७।७९) ५ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषसः । त्रिष्टुप् ।

१६४ व्यु१षा आवः पथ्या३ जनानां पञ्च क्षितीर्मानुषीर्बोधयन्ती ।
सुसंदृग्भिरुक्षभिर्भानुमश्रेद् वि सूर्यो रोदसी चक्षसावः ॥ १ ॥

१६५ व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून् विशो न युक्ता उषसो यतन्ते ।
सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति सवितेव बाहू ॥ २ ॥

१६६ अभूदुषा इन्द्रतमा मघोन्यजीजनत् सुविताय श्रवांसि ।
वि दिवो देवी दुहिता दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि ॥ ३ ॥

---

१६४ (जनानां पथ्या उषाः वि आवः) लोगोंके लिये हितकारिणी उषा विशेष रीतिसे प्रकट हुई है । वह (मानुषीः पञ्च क्षितीः बोधयन्ती) मानवोंके पांचों लोगोंको जगाती है । वह (सुसंदृग्भिः उक्षभिः भानुं अश्रेत्) सुन्दर गौओंके साथ तेजका आश्रय करती है । (सूर्यः रोदसी चक्षसा वि आवः) सूर्य भी अपने तेजसे द्यावा पृथिवीको भर देता है ॥ (१

१६५ (उषसः अक्तून् दिवः अन्तेषु व्यञ्जते) उषाएं अपने तेजोंको द्युलोकके अन्तिम प्रदेशतक फैलाती हैं । (युक्ताः विशः न यतन्ते) संघटित प्रजाजनोंकी तरह वे उषाएं अन्धकारके नाश करनेके लिये यत्न करती हैं । हे (उषः) उषा देवी ! (ते गावः तमः सं आ वर्तयन्ति) तेरी किरणें अन्धकारका नाश करती हैं । (सूर्यः इव बाहू ज्योतिः यच्छन्ति) सूर्य अपनी बाहुओं किरणोंको जिस तरह फैलाता है, उस तरह उषाएं अपने तेजको फैलाती हैं ॥ (२)

१६६ (इन्द्रतमा मघोनी उषा अभूत्) श्रेष्ठ स्वामिनी ऐश्वर्यवाली उषा प्रकट हुई है । (सुविताय श्रवांसि अजीजनत्) सबके कल्याणके लिये उसने अन्नोंका निर्माण किया है । (दिवः दुहिता देवी) द्युलोककी पुत्री उषा देवी (अंगिरस्तमा) अंगारके समान तेजस्विनी होकर (सुकृते वसूनि वि दधाति) सत्कर्म करनेवालेके लिये धनोंका प्रदान करती है ॥ (३

---

१६४ जनानां पथ्याः- लोगोंके हितके कर्म करने चाहिये।

मानुषी पञ्च क्षितीः बोधयन्ती— मनुष्योंके ज्ञानी, शूर, व्यापारी, कर्मचारी और अन्य लोगोंको अर्थात् सब मानवोंको ज्ञान देना चाहिये ।

भानुं अश्रेत्— प्रकाशका आश्रय करना चाहिये ।

सूर्यः रोदसी चक्षसा वि आवः— सूर्य अपने प्रकाशसे द्यावा पृथिवीको भर देता है । मनुष्य तेजस्वी बने और अपना प्रकाश चारों दिशाओंमें फैला देवे ।

१६५ **उषसः अक्तून् दिवः अन्तेषु व्यञ्जते**— उषाएं अपने प्रकाशको द्युलोकके अन्तिम प्रदेशतक फैलाती हैं । वैसी स्त्रियां अपने राष्ट्रके कोने कोनेतक ज्ञानका प्रकाश फैलाएं ।

युक्ताः विशः न उषासः यतन्ते- संघटित प्रजाजनोंके समान उषायें अन्धकारके नाशके लिये यत्न करती हैं । इसी तरह प्रजाजन संघटित होकर, नाना संस्थाएं स्थापन करके ज्ञानके द्वारा प्रजाओंके अज्ञानको दूर करें ।

ते गावः तमः समावर्तयन्ति— उषाकी किरणें अन्धकारको समेट लेती हैं । और

सूर्यः इव बाहू ज्योतिः यच्छन्ति— जैसे सू[र्य] अपने किरणोंको फैलाता है वैसे उषा अपने प्रकाशको फैलाती है ।

जिस तरह सूर्य और उषा अपने प्रकाशसे जगत्के अन्धकार[का] नाश करते हैं, उस तरह पुरुष और स्त्री आलस्य छोडकर अपने ज्ञान द्वारा लोगोंके अज्ञानको दूर करें । ज्ञानका प्रकाश करें ।

१६६ **इन्द्रतमा मघोनी उषा अभूत्**-उत्तम शासक[को] इन्द्र कहते हैं । यह उषा उत्तम रीतिसे शासन करती है इस[लिये] उसको ' इन्द्र-तमा ' कहा है । उत्तमसे उत्तम शासन प्रबंध करनेवाली उषा प्रकट हुई है । इस तरह स्त्रियां घर[का] शासन प्रबंध उत्तमसे उत्तम रीतिसे करनेवाली हों । नगर[का] शासन करनेकी योग्यता (पुरं—धी) धारण करें । ऐसी स्त्रियां हों । स्त्रियां ' इन्द्र ' ही नहीं, परन्तु ' इन्द्र-तमा ' हों उत्तमसे उत्तम शासन प्रबंध करनेकी शक्ति स्त्रियोंमें हो । स्त्री[शि]क्षा ऐसी होनी चाहिये जिसे स्त्रियां कर्तव्यदक्ष हों और शासन प्रबंध करनेमें अत्यंत प्रवीण हों ।

सुविताय श्रवांसि अजीजनत्— लोगोंके कल्याणके लिये अन्नोंको सिद्ध करें । अन्न-पकानेका कार्य स्त्रियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१६७ तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत् स्तोतृभ्यो अरदो गृणाना ।
यां त्वा जज्ञुर्वृषभस्या रवेण वि दृळहस्य दुरो अद्रेरौर्णोः ॥ ४ ॥
१६८ देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मद्र्यक् सूनृता ईरयन्ती ।
व्युच्छन्ती नः सनये धियो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

(ऋ० ७।८०) ३ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषसः । त्रिष्टुप् ।

१६९ प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा अबुध्रन् ।
विवर्तयन्ती रजसी समन्ते आविष्कृण्वतीं भुवनानि विश्वा ॥ १ ॥

---

१६७ हे (उषः) उषा देवी ! (यावत् राधः स्तोतृभ्यः अरदः) जितना धन तुमने स्तोताओंको पूर्व समयमें दिया था, (तावत् राधः गृणाना अस्मभ्यं रास्व) उतना धन प्रशंसित होकर हमें दे दो । (वृषभस्य रवेण यां त्वा जज्ञुः) बैलके शब्दसे तुम्हें सब जानते हैं, उषाके उदयमें बैल तथा गौवें शब्द करती हैं जिससे पता लगता है कि उषःकाल हुआ है और (दृळहस्य अद्रेः दुरः वि और्णोः) सुदृढ पर्वतके कीलेका द्वार खोल दिया है और गौओंको बाहर निकाला है ॥ (४)

१६८ (देवंदेवं राधसे चोदयन्ती) प्रत्येक सत्कर्म कर्ताको ऐश्वर्य प्राप्तिके लिये प्रेरित करती है, (अस्मद्र्यक् सूनृताः ईरयन्ती) हमारे सन्मुख सत्यभाषणको प्रेरित करती है । (व्युच्छन्ती नः सनये धियः धाः) अन्धकारको दूर करती हुई हमें धन देनेकी बुद्धिका धारण करं । (यूयं नः सदा स्वस्तिभिः पात) तुम हमें सदा कल्याणमय साधनोंसे सुरक्षित रख ॥ (५)

१६९ (विप्रासः वसिष्ठाः) ज्ञानी वसिष्ठ गोत्रके ऋषि (प्रथमाः स्तोमेभिः) सबसे प्रथम स्तोत्रोंसे और (गीर्भिः) वाणियोंसे (उषसं प्रति अबुध्रन्) उषाको जगाते हैं । उषाके समय जागते हैं । यह उषा (समन्ते रजसी विवर्तयन्ती) समान अन्तवाली, द्यावा पृथिवीको घुमानेवाली, (विश्वा भुवनानि आविः कृण्वन्ती) सब भुवनोंको प्रकाशित करती है ॥ (१)

अधीन हो । उनकी निग्रानीमें अन्नोंकी सिद्धता हो ।

सुकृते वसूनि वि दधाति— उषा सत्कर्म करनेवालेके लिये धन देती है । कर्म करनेवालेके कामको स्त्री देखे और उसके कर्मके अनुसार उसे धन देवे । कर्मचारीसे काम लेवे और उसको योग्य धन देवे । शासन प्रबंधका यह एक कार्य है।

१६७ उषःकाल होते ही गायें और बैल शब्द करने लगते हैं। तब गोशालाका सुदृढ द्वार खोला जाता है और गौवें तथा बैल बाहर निकाले जाते हैं । चरनेके लिये उनको खुला छोडा जाता है । ' सुदृढ कीलेका द्वार ' (दृळहस्य अद्रेः दुरः) ये शब्द बता रहे हैं कि गोशालाएं कैसी सुदृढ हुआ करती हैं ।

१६८ देवंदेवं राधसे चोदयन्ती— प्रत्येक सत्कर्म कर्ताको सिद्धि प्राप्त करनेके मार्गसे जानेके लिये प्रेरित करो ।

सूनृता ईरयन्ती— उत्तम सत्य भाषण स्वयं करो और दूसरोंको भी उत्तम सत्य भाषण करनेकी प्रेरणा करो ।

सनये धियः धाः— दान देनेके लिये अपनी बुद्धिको प्रेरित करो ।

प्रत्येक कर्मकर्ता धन प्राप्त करनेके लिये, सिद्धि प्राप्त होनेतक प्रयत्न करे । सत्य तथा सरल भाषण करें और दान देनेकी बुद्धिको अपने अन्तःकरणमें रखे । यह मानवधर्म है ।

१६९ प्रथमाः विप्रासः वसिष्ठाः '— ऐसा वसिष्ठोंका वर्णन यहां है । वसिष्ठ गोत्री विप्र पहिले थे । अन्य ऋषियोंके पूर्व समयके ये ज्ञानी थे । सबसे प्राचीन ऋषि ये थे । ये उषःकालमें उठते और उषाके स्तोत्र गाते थे ।

' समन्ते रजसी विवर्तयन्ती '— द्युलोक और पृथिवी लोक, इनका आपसमें (सं-अन्ते) अन्त भाग जोडा है, एक दूसरेके संबंध जुडा है ऐसा दीखता है । ये दोनों लोगोंको (विवर्तयन्ती) घुमानेवाली उषा है । ये दोनों लोग समान रीतिसे जैसे भ्रमण हो रहे हैं ऐसा दीखनेवाला इस भूमंड-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१७० एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गूढ्वी तमो ज्योतिषोषा अबोधि ।
अग्र एति युवतिरह्रयाणा प्राचिकितत् सूर्यं यज्ञमग्निम् ॥ २ ॥
१७१ अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

ऋ. ७।४१।७; अथर्व. ३।१६।७; वा. य. ३४।४०; तै. ब्रा. २।८।९।९

---

१७० (एषा स्या उषा नव्यं आयुः दधाना) यह वह उषा नवीन तारुण्यकी आयु धारण करती है, (गूढ्वी तमः ज्योतिषा) और गाढ अन्धकारको अपने तेजसे निवारण करती हुई (अबोधि) जागती है । (अग्रे) प्रारंभमें (अह्रयाणा युवतिः एति) लज्जा न करनेवाली तरुण स्त्रीके समान यह सूर्यके पूर्व चलने लगती है । तथा (सूर्यं अग्निं यज्ञं अचिकितत्) सूर्य, अग्नि और यज्ञको बतलाती है ॥ (२)

१७१ (अश्वावतीः गोमतीः वीरवतीः) घोडे, गौवें और वीर पुरुष-वीरपुत्र जिसके साथ है ऐसी (भद्राः उषासः नः सदं उच्छन्तु) कल्याण करनेवाली उषाएं हमारे घरको प्रकाशित करें । ये उषायें (घृतं दुहानाः) घी अथवा जल दुहकर देनेवाली और (विश्वतः प्रपीताः) सब ओरसे परिपुष्ट हुई हों । (यूयं नः सदा स्वस्तिभिः पात) तुम हमें सदा कल्याणमय साधनोंसे सुरक्षित रखो ॥ (३)

लपर एक ही स्थान है और वह है उत्तरीय ध्रुव प्रदेश । इस प्रदेशमें रहनेवाला मनुष्य देख सकता है कि भूमि और द्युलोक परस्पर लगे हैं और वे (विवर्तयन्ती) वर्तुल गतिसे घूम रहे हैं । प्रदक्षिणा कर रहे हैं । अपने चारों ओर इनका भ्रमण हो रहा है । उषा इन लोगोंको घुमा रही है यह आलंकारिक वर्णन है ।

१७० एषा नव्यं आयुः दधाना उषा ज्योतिषा गूढ्वी तमः अबोधि- यह तरुण आयुवाली उषा अपने तेजसे अन्धकार दूर करती हुई पतिके पूर्व जाग उठी है । इसी तरह स्त्री पतिके पूर्व उठे, अपने कर्तव्य कर्मको करे, प्रकाश करके अन्धकारको दूर करे ।

अह्रयमाणा युवतिः अग्रे एति अग्निं यज्ञं अचिकितत्— लज्जा न करनेवाली तरुण स्त्री पतिके पहिले उठती है और अग्नि प्रदीप्त करके यज्ञको करती है ।

पतिके पूर्व स्त्री उठे, अपने कर्तव्य कर्म करे, जिससे पतिका प्रेम ऐसी तरुणीपर जमता है । परंतु जो सुस्त स्त्री होती है, वह पतिके लिये उतनी प्रिय नहीं होती । स्त्री पहिले उठे ऐसा कहनेका तात्पर्य यह नहीं है कि पति बहुत देरी करके उठे । ' उषर्बुध् ' उषःकालमें उठनेवाले पुरुषोंका वर्णन अन्यान्य मंत्रोंमें किया ही है ।

१७१ उषःकालमें घोडे, गौवें और वीर पुत्र घरसे बाहर आवें तो घर इनसे शोभावाला होता है । गौके दूधका घी पर्याप्त तैयार होता है । कल दोहे दूधका रात्रीमें दही बनाकर सवेरे मक्खन निकाल कर उसका घी बनाना । इस घीका नाम ' हैयंगवीन ' है । यह घी सवेरे ही तैयार होता है इसलिये ऐसे घीको उषा देती है ऐसा कहा है ।

इस मंत्रमें ' उषासः ' अनेक उषाएं ऐसा कहा है । सूर्योदयके पहिले इस तरह वैभव संपन्न अनेक उषाएं आती हैं और पश्चात् सूर्य देव, उषाके पति देव आते हैं । (उषासः नः सदं उच्छन्तु) ऐसी भाग्ययुक्त उषाएं हमारे घरको उज्ज्वल बनावें । सूर्योदयके पूर्व अनेक उषाएं आयें और वे हमारे घरको तेजस्वी बनावें ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ऋ० ७।८१) ६ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषसः । प्रगाथः=(विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

१७२ प्रत्यु अदर्श्यायत्यु१च्छन्ती दुहिता दिवः ।
अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥ १ ॥
१७३ उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचाँ उद्यन्नक्षत्रमार्चिवत् ।
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि ॥ २ ॥
१७४ प्रति त्वा दुहितर्दिव उषो जीरा अभुत्स्महि ।
या वहसि पुरु स्पार्हं वनन्वति रत्नं न दाशुषे मयः ॥ ३ ॥
१७५ उच्छन्ती या कृणोषि मंहना महि प्रख्यै देवि स्वर्दृशे ।
तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः ॥ ४ ॥

---

१७२ (आयती उच्छन्ती दिवः दुहिता) आनेवाली अन्धकारको दूर करनेवाली द्युलोककी दुहिता उषा (प्रति अदर्शि उ) दिखाई देती है । (महि तमः अप उ व्ययति) बडे अन्धकारको दूर करती है । और (सूनरी चक्षसे ज्योतिः कृणोति) उत्तम नेतृत्व करनेवाली यह उषा देखनेके लिये प्रकाशको करती है । फैलाती है ॥ (१)

१७३ (सूर्यः उस्रियाः सचा उत् सृजते) सूर्य किरणोंको साथ साथ ऊपर फेंकता है । तथा (उद्यन् नक्षत्रं अर्चिवत्) सूर्य उदय होनेके पहले नक्षत्रोंको तेजस्वी बनाता है । हे उषा देवी ! (तव इत् सूर्यस्य च व्युषि) तेरे तथा सूर्यके प्रकाशित होनेपर (भक्तेन संगमेमहि) अन्नके साथ मिलेंगे, अन्नको प्राप्त होंगे ॥ (२)

१७४ हे (दिवः दुहितः उषः) द्युलोककी पुत्री उषा देवी ! (जीराः त्वा प्रति अभुत्स्महि) हम शीघ्र कर्म करनेवाले तुझे जगावेंगे । हे (वनन्वति) धनवाली उषा ! (या पुरु स्पार्हं वहसि) जो तू बहुत स्पृहणीय धनको लाती है और (दाशुषे मयः रत्नं न) दाताके लिये सुख और धन देनेके समान तू सबको सुख और धन देती है ॥ (३)

१७५ हे (महि देवि) महति उषा देवते ! तू (उच्छन्ती मंहना) अन्धकार दूर करती और अपने महत्वको प्रकट करती है, (या स्वः दृशे प्रख्यै कृणोषि) और जो तू विश्वके दर्शन और प्रबोधनके लिये प्रकाश करती हैं । (तस्याः ते रत्नभाजः ईमहे) इस तरह तुझ रत्नोंका सेवन करनेवालीसे हम प्रार्थना करते है कि (वयं मातुः सूनवः न स्याम) हम माताके जैसे पुत्र होते हैं वैसे हम तेरे पुत्र बनें ॥ (४)

---

१७२ द्युलोककी पुत्री उषा आती है, लोगोंको मार्ग दिखानेके लिये अन्धकार दूर करती है और प्रकाशको फैलाती है । इसी तरह घरकी गृहिणी अपने घरमें प्रकाश करे और अन्धेरा दूर करे । और घरका प्रबंध उत्तम करे ।

१७३ सूर्य जबतक पृथ्वीके नीचे रहता है, तबतक वह अपने किरणोंको ऊपर फेंकता है जिससे चन्द्रादि प्रकाशित होते हैं । यहां ' नक्षत्र ' शब्दका अर्थ चन्द्र, बुध, शुक्र, आदि ग्रह ही हैं । क्योंकि नक्षत्रका स्वयं प्रकाश है और वहांतक हमारे सूर्यका प्रकाश पहुंच नहीं सकता । ' सूर्यरश्मिः चन्द्रमाः । ' वा० य० १८ । ४० ऐसे मंत्रोंमें सूर्यके रश्मि चन्द्रमाको प्रकाशित करते हैं ऐसा कहा है । इन मंत्रोंके साथ इस मन्त्रका विचार करनेसे यहांका ' नक्षत्र ' पद चन्द्रादि ग्रहोंका वाचक दीखता है । सूर्य तथा उषाका उदय होनेपर चावल पकाते हैं, उसका हवन होता है और फिर वह अन्न सब खाते हैं ।

१७४ हम सब प्रभात समयमें उठते हैं, (जीराः) अपने कर्तव्य कर्म अतिशीघ्र तथा अत्यंत उत्तम रीतिसे करते हैं इसलिये हम स्पृहणीय धन तथा उत्तम सुख प्राप्त करते हैं । जो इस तरह प्रातः उठकर अपने कर्तव्य करेगा वह भी उत्तम धन प्राप्त करेगा ।

१७५ उषा प्रकाशती है, उससे सब लोग जागते हैं और मार्ग देखते हैं । यह उषा रत्नोंवाली माता जैसी है । उसके हम पुत्र जैसे हों और वह हमारी माता जैसी हो । माता जैसी पुत्रोंको प्रेमसे अन्न धन देती है वैसी उषा हमें अन्न धन और सुख देवे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१७६ तच्चित्रं राध आ भरोषो यद् दीर्घश्रुत्तमम् ।
यत् ते दिवो दुहितर्मर्तभोजनं तद् रास्व भुनजामहै ॥ ५ ॥
१७७ श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं वाजाँ अस्मभ्यं गोमतः ।
चोदयित्री मघोनः सूनृतावत्युषा उच्छदप स्रिधः ॥ ६ ॥

---

१७६ हे उषा देवी ! (यत् दीर्घश्रुत्तमं चित्रं राधः) जो अत्यंत यशस्वी विलक्षण धन है (तत् आ भर) वह हमें भर दो । हे (दिवः दुहितः) द्युलोककी पुत्री उषा देवी ! (यत् ते मर्तभोजन) जो तुम्हारे पास मनुष्योंके योग्य भोजन है (तत् रास्व) वह भोजन हमें दो, हम (भुनजामहै) भोजन करेंगे ॥ (५)

१७७ हे उषा देवी ! (सूरिभ्यः अस्मभ्यं अमृतं वसुत्वनं श्रवः) हम ज्ञानियोंके लिये अमर धन और यश तथा (गोमतः वाजान्) गौओंसे युक्त अन्न दे दो । (मघोनः चोदयित्री सूनृतावती उषाः) धनवानोंको यज्ञ करनेकी प्रेरणा करनेवाली और सत्य भाषणकी प्रेरणा करनेवाली उषा (स्रिधः अप उच्छत्) शत्रुओंका नाश करती है ॥ (६)

---

१७६ हमें यशस्वी धन और मानवोंके योग्य अन्न मिले ।

१७७ ज्ञानियोंको अमर धन युक्त यश मिले, उनको गौवें मिलें, अन्न पर्याप्त प्रमाणमें प्राप्त हों, उससे वे यज्ञ करें, सत्य व्यवहारको बढा देवें और मानवताके शत्रुओंका नाश करें और सज्जनोंकी उन्नति करें ।

आंगिरस कुलोत्पन्न संवर्त ऋषिका
उषा वर्णन

(ऋ० १०।१७२।१-२)

(संवर्त आंगिरसः । उषाः । द्विपदा विराट् ।)

१७८ आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः ॥ १ ॥
आ याहि वस्व्या धिया मंहिष्ठो जारयन्मखः सुदानुभिः ॥ २ ॥ (१)
१७९ पितुभृतो न तन्तुमित्सुदानवः प्रतिदध्मो यजामसि ॥ ३ ॥
उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयाति वर्तनिं सुजातता ॥ ४ ॥ +(१

+ साम० ४५१; अथर्व० १९।१२।१

---

१७८ हे उषा ! (वनसा सह आ याहि) धनके साथ आओ । (यत् ऊधभिः) जो दुग्धाशयसे पुष्ट हैं वे (गावः वर्तनिं सचन्त) गौवें रथकी सेवा कर रहीं हैं । बैल उषाके रथको जोते गये हैं ॥ (१)

हे उषा ! (वस्व्या धिया आयाहि) प्रशंसनीय अनुग्रह बुद्धिके साथ आओ । (सुदानुभिः मंहिष्ठः) दाताओं द्वारा महनीय प्रशंसनीय और (जारयन्मखः) यज्ञमें स्तवन करनेका यह समय है । इस समय तू यहां आओ ॥ (२)

१७९ (पितुभृतः न) अन्नसे भरण करनेवालोंके समान (सुदानवः) उत्तम दान देनेवाले हम (तन्तुं इत् प्रतिदध्मः) लंबे उषःकालकी स्तुति करते हैं । (यजामसि) और उसका यजन भी करते हैं ॥ (३)

(उषाः स्वसुः तमः) उषा अपनी रात्री रूपी बहिनका अन्धकार (अप संवर्तयति) दूर हटा देती है । और (सुजातता वर्तनिं) सुप्रजा उत्पन्न करनेके मार्गको पहुंचाती है ॥ (४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उ षा सा न क्ता

मेधातिथिः काण्वः
(ऋ० १ । १३ । ७ उषासानक्ता)

१८० नक्तोषासा सुपेशसाऽस्मिन् यज्ञ उपह्वये ।
इदं नो बर्हिरासदे ॥ ७ ॥

दीर्घतमा औचथ्यः
(ऋ० १ । १४२ । ७ नक्तोषासा । अनुष्टुप्)

१८१ आ भन्दमाने उपाके नक्तोषासा सुपेशसा ।
यह्वी ऋतस्य मातरा सीदतां बर्हिरासुमत् ॥ ७ ॥

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः
(ऋ० १ । १८८ । ६ उषासौ । गायत्री)

१८२ सुरुक्मे हि सुपेशसाऽधि श्रिया विराजतः ।
उषासावेह सीदताम् ॥ ६ ॥

ये उषा, उषासानक्ता अथवा नक्तोषासा देवताके ११ मंत्र हैं । ये आप्रीसूक्तोंमेंसे क्रमपूर्वक लिये हैं । आप्री सूक्तमें अनेक देवताएं होती हैं उनमें प्रायः छठी देवता उषासानक्ता एक देवता है । इस देवताके ये ११ मंत्र हैं । इनमें ' उषा ' होनेके कारण ये मंत्र यहां लिये हैं—

१८० (अस्मिन् यज्ञे) इस यज्ञमें (सुपेशसा नक्त-उषासा) सुन्दर रात्री और उषाको (उपह्वये) मैं बुलाता हूं । (नः इदं बर्हिः आसदे) हमारे इस आसनपर वे आकर बैठें । (७)

स्त्री (सु-पेशसा) उत्तम सुंदर रूपवाली हो । अपने रूपको सजाकर वह अधिक सुंदर दिखाई दे । अपना सौंदर्य कदापि न बिगाडे । यहां ' **नक्ता-उषासा** ' रात्री और उषा दोनोंको सुन्दर बननेका उपदेश है । रात्री काली स्त्री है और उषा गोरी सुंदर रंगवाली है । दोनों स्त्रियां जहांतक बढाना संभव है वहांतक अपना सौंदर्य बढावें । ये यज्ञमें जांय और आसनपर बैठें ।

१८१ (भन्दमाने उपाके) प्रशंसित समीपस्थित (सुपेशसा) सुन्दर (ऋतस्य यह्वी मातरा) यज्ञकी बडी माताएं (उषासा नक्ता) उषा और रात्री (सुमत्) उत्तम रीतिसे (बर्हिः आ सीदतां) इस आसनपर आकर बैठें । (७)

(नक्ता उषासा) रात्री और उषा, काली और गोरी स्त्री (सुपेशसा) अपना रूप सुंदर बनावे (ऋतस्य मातरा) सत्य यज्ञ शुभकर्मको करनेवाली है (भन्दमाने यह्वी) प्रशंसनीय और बडी ये दोनों स्त्रियें (उपाके) साथ रहें, आपसमें न झगडें, मिलकर रहें (सुमत्) शुभमतिके साथ मिलजुल कर आयें और आसनोंपर बैठें । आपसमें न झगडें । आपसमें न झगडनेका उपदेश यहां है ।

१८२ (सुरुक्मे) सुंदर अलंकार धारण करनेवाली (सुपेशसा) सुरूपवाली (उषासौ) उषा और रात्री (श्रिया अधि विराजतः) अपनी शोभासे शोभती है वे (इह आ सीदतां) यहां आकर बैठें । (६)

स्त्रियां (सु-रुक्मे) सुन्दर अलंकार धारण करें, (सु-पेशसा) अधिक सुंदर रूपवाली बनें, (श्रिया अधि विराजतः) अपनी शोभाको अधिक तेजस्वी बनायें । अपनी सुंदरता बढानेके साधन उपयोगमें लावें, अलंकार, वस्त्र, रंग आदिसे अपना सौंदर्य बढावे । ये उषा और रात्री यहां यज्ञस्थानमें आकर आसनपर विराजें ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गृत्समदः शौनकः ।
(ऋ० २ । ३ । ६ उषासानक्ता । त्रिष्टुप्)

१८३ साध्वपांसि सनता न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते ।
तन्तुं ततं संवयन्ती समीची यज्ञस्य पेशः सुदुघे पयस्वती ॥ ६ ॥

विश्वामित्रो गाथिनः ।
(३ । ४ । ६ उषासौ । त्रिष्टुप्)

१८४ आ भन्दमाने उषसा उपाके उत स्मयेते तन्वा ३ विरूपे ।
यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषदिन्द्रो मरुत्वाँ उत वा महोभिः ॥ ६ ॥

वसुश्रुत आत्रेयः
(ऋ० ५ । ५ । ६ दोषा उषाः । गायत्री)

१८५ सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्य मातरा ।
दोषामुषासमीमहे ॥ ६ ॥

---

१८३ (नः अपांसि साधु सनता) हमारे कर्मोंको उत्तम रीतिसे करनेवाली (उक्षिते) जलसिंचन करनेवाली (वय्येव रण्विते) कपडा बुननेवालीके समान प्रशंसित (ततं तन्तुं समीची संवयन्ती) फैले हुए यज्ञके तन्तुको अच्छी तरह समेटनेवाली (सुदुघे पयस्वती) उत्तम दूध देनेवाली गौओंके समान (उषासा नक्ता) उषा और रात्री (यज्ञस्य पेशः) यज्ञकी सुंदरता बढानेवाली हैं । (६)

यहां कपडा बुननेवालीकी उपमा उषाको दी है । और वह फैले हुए धागेको समेटती है ऐसा भी कहा है । उषा घरकी तरुणी है वह सूत कांतती, ताना वाना करती और कपडा बुनती है । स्त्री यह काम करे यह उपदेश यहां है । स्त्री सूत कांते और कपडा बुने ।

१८४ (उपाके) साथ मिलकर रहनेवाली परंतु (उत तन्वा विरूपे) शरीरसे विभिन्न रूपवाली (भन्दमाने उषसा) प्रशंसनीय उषा और रात्री (स्मयेते) हंस रही है । (यथा) जिस तरह (नः) हमारे लिये मित्र वरुण (मरुत्वान् इन्द्रः) मरुतोंके साथ इन्द्र अपने महोभिः (जुजोष) अपने सामर्थ्योंके साथ आकर प्रकाशते हैं । (६)

रात्री और उषा स्वरूपसे परस्पर विरुद्ध रूपवाली हैं तथापि वे मिलकर आनन्द प्रसन्न रीतिसे रहती हैं, इसलिये उनकी प्रशंसा होती है । इस तरह न्यूनाधिक योग्यतावाली स्त्रियां आपसमें ईर्ष्या द्वेष न करती हुई परस्पर प्रेमसे रहें । यह बोध यहां मिलता है ।

१८५ (सुप्रतीके वयोवृधा) सुन्दर और आयुको बढानेवाली (यह्वी ऋतस्य मातरा) बडी यज्ञकी माताएं (दोषां उषासं) रात्री और उषाकी हम (ईमहे) स्तुति करते हैं । (६)

उत्तम आदर्श सौंदर्यवाली, आयुको बढानेवाली स्त्री हो घरवालोंको योग्य समय योग्य भोजन खान पान आदि देनेवाली स्त्री होगी तो घरवालोंकी आयु बढ सकती है । (ऋतस्य मातरा) सरलताकी, यज्ञकी ये माताएं हैं । सरल व्यवहार करती हैं जिसमें कपट नहीं होता ऐसा आचरण करती है । रात्री अंधेरेके कारण दोषोंसे युक्त है और उषाके साथ प्रकाश होनेके कारण उसमें दोष नहीं है । तथापि ये दोनों मिलजुलकर रहती हैं । यह बोध इस मंत्रसे मिलता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः

(ऋ० ७ । २ । ६ उषासानक्ता । त्रिष्टुप्)

१८६ उत योषणे दि॒व्ये मही न उषासानक्ता सुदुघेव धेनुः ।
बर्हिषदा पुरुहूते मघोनी आ यज्ञिये सुविताय श्रयेताम् ॥ ६ ॥

(ऋ० ८ । १०१ । १३) जमदग्निर्भार्गवः । उषा । बृहती

१८७ इयं या नीच्यर्किणी रूपा रोहिण्या कृता ।
चित्रेव प्रत्यदर्श्यायत्य१न्तर्दशसु बाहुषु ॥ १३ ॥

काश्यपोऽसितो देवलो वा

(ऋ० ९ । ५ । ६ नक्तोषासा । गायत्री)

१८८ सुशिल्पे बृहती मही पवमानो वृषण्यति ।
नक्तोषासा न दर्शते ॥ ६ ॥

---

१८६ (योषणे दिव्ये मही) तरुण दिव्य विशाल (बर्हिषदा पुरुहूता) आसनपर बैठनेवाली, बहुतोंद्वारा प्रशंसित (मघोनी यज्ञिये) धनयुक्त और पूज्य (उषासा नक्ता) उषा और रात्री (नः सुविताय)हमारे कल्याणके लिये (सुदुघा धेनुः इव) उत्तम दूध देनेवाली गौकी तरह (आश्रयेतां) हमें आश्रय देती रहें। (६)

स्त्री ऐसी हो कि जिसको सभामें बैठनेके लिये (बर्हिषदा) आसन मिले । उसकी सभामें मान्यता हो । स्त्रीके पास अपना धन (मघोनी) हो । ' युष्-सेवने ' धातुसे ' योषणा ' शब्द बनता है। घरके बाल बच्चे आदिकी यथायोग्य सेवा करनेवाली अतएव उनकी आयु बढानेवाली स्त्री है। इसलिये इसका विशेष महत्त्व है।

१८७ (इयं या नीची) यह नीचेसे आनेवाली (अर्किणी रूपा रोहिणी) पूजनीय रूपवाली तथा बढनेवाली (कृता)की हुई उषा है (या) जो (दशसु बाहुषु अन्तः) दसों दिशाओंमें (आयती चित्रा इव) आनेवाली गौके समान (प्रत्यदर्शि) दीख रही है। (१३)

स्त्री (नीची) नीचे देखकर चलनेवाली हो, (अर्किणी रूपा) तेजस्वी तथा सुरूपवाली हो, (रोहिणी) बढनेवाली हृष्टपुष्ट हो, (कृता) कर्म करनेवाली हो, (चित्रा इव प्रत्यदर्शि) चित्रविचित्र रंगकी गौके समान सुंदर दीखे । (आयती) चलने घूमनेवाली अर्थात् आलसमें न रहनेवाली हो ।

उषाके वर्णनसे यहां स्त्री कैसी हो वह बताया है ।

१८८ (सुशिल्पे बृहती) सुंदर शिल्पवाली विशाल और (मही) बडी (नक्तोषासा) रात्री और उषाको (दर्शते न) दर्शनीय होनेके समान (पवमानो वृषण्यति) सोम चाहता है। (६)

(सुशिल्पे) उत्तम कुशलताके कार्य करनेवाली स्त्री हो। शिल्पमें चित्रकला, तथा अन्य कलाएं आती हैं। स्त्री इन कलाओंको करनेवाली हो । (दर्शते) सुन्दर दर्शनीय रूपवाली हो। उनका रंग, रूप, वस्त्र, प्रावरण, अलंकार, रहन सहन आकर्षक हो। ' नक्तां ' का अर्थ जो लज्जाशील है, बुरा कर्म करनेके लिये जो लज्जित होती है। (नजति इति नक्ता) जो मर्यादामें रहनेवाली है।

❀

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुमित्रो वाध्र्यश्वः

(ऋ० १० । ७० । ६ उषासानक्ता । त्रिष्टुप्)

१८९ देवी दिवो दुहितरा सुशिल्पे उषासानक्ता सदतां नि योनौ ।
आ वां देवास उशती उशन्तं उरौ सीदन्तु सुभगे उपस्थे ॥ ६ ॥

जमदग्निर्भार्गवः ।

(ऋ० १० । ११० । ६ उषासानक्ता । त्रिष्टुप्)

१९० आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधिश्रियं शुक्रपिशं दधाने ॥ ६ ॥

---

१८९ (देवी सुशिल्पे) दिव्य सुंदर शिल्पवाली (दिवो दुहितरा) स्वर्गकन्या (उषासानक्ता) उषा और रात्री (योनौ नि सदतां) यज्ञस्थानमें आकर बैठें। (उशती सुभगे उरौ) इच्छा करनेवाली भाग्यवाली बडी देवीयो ! (उशन्तः देवासः) इच्छा करनेवाले देव (वां उपस्थे आसीदन्तु) आपके समीप आकर बैठें। (६)

शिल्पकला जाननेवाली स्वर्गकन्या जैसी सुन्दर दर्शनीय और (सु-भगे) उत्तम धनवाली, भाग्यवाली स्त्री हो। वह अपना और अपने घरके कुटुंबियोंका अभ्युदय चाहनेवाली हो। घरमें ' देवी ' जैसी सत्कार होने योग्य हो। स्त्री ऐसी हो।

१९० (दिव्ये योषणे) दिव्य तरुणी (सुरुक्मे बृहती) उत्तम अलंकार धारण करनेवाली बडी (शुक्रपिशं अधिश्रियं दधाने) सुन्दर रूप धारण करनेवाली (उपाके सुष्वयन्ती) पास सुखसे रहनेवाली (यजते) पूजनीय (उषासानक्ता योनौ नि सदतां) उषा और रात्री घरमें आकर बैठें। (६)

दिव्य स्त्रियां उत्तम अलंकार धारण करें, अत्यंत सुन्दर रंग रूप वस्त्रालंकार धारण करके अपना सौंदर्य बढावें, घरमें तथा समाजमें आदरका स्थान प्राप्त करें और आदरणीय स्थानपर बैठें।

ऋग्वेदमें उषाके मंत्र

ऋ० १ । ३२ । ४ (हिरण्यस्तूप आंगिरसः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

१९१ यदिन्द्राहन् प्रथमजामहीनामान्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः ।
आत् सूर्यं जनयन् द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से ॥ ४ ॥

वेदोंमें उषा देवताके जो सूक्त हैं वे क्रमांक १ से १७९ तक दिये हैं। इनमें ऋग्वेद अथर्ववेदके, सूक्त तथा मंत्र सब आगये हैं। इनके अतिरिक्त उषाका वर्णन करनेवाले मंत्र चारों वेदोंमें अनेक हैं। वे अग्न्यादि अन्यान्य देवताओंके सूक्तोंमें आये हैं। इनमें भी उषाका वर्णन विशेष महत्त्वका है। ये मंत्र एक दूसरेके साथ प्रायः संबंध नहीं रखते, तथापि इनमें आनेवाला वर्णन महत्त्वका है, इसलिये क्रमसे ये मंत्र यहां दिये हैं—

उषाका उत्पन्नकर्ता इन्द्र

१९१ (अहीनां प्रथमजां) अही राक्षसोंमें जो मुख्य था उसको, हे इन्द्र! तूने (यत् अहन्) जब मारा, और (मायिनां मायाः प्र अमिनाः) उन कपटियोंके कपटजालोंको नष्ट किया, और (द्यां उषासं सूर्यं जनयन्) द्यौ उषा और सूर्यको प्रकट किया (तादित्ना शत्रुं न किल विवित्से) तब तुम्हें कोई शत्रु मिला नहीं। (४)

यहां इन्द्रने द्युलोक, उषा और सूर्यको उत्पन्न किया ऐसा कहा है। उषाका जनकत्व इस तरह इन्द्रके पास आता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १। ३४। ३ (हिरण्यस्तूप आंगिरसः। अश्विनौ। जगती)

१९२ समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम्।
त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम् ॥ ३ ॥

ऋ० १। ३४। १०

१९३ आ नासत्या गच्छतं हूयते हविर्मध्वः पिबतं मधुपेभिरासाभिः।
युवोर्हि पूर्वं सवितोषसो रथमृताय चित्रं घृतवन्तमिष्यति ॥ १० ॥

ऋ० १। ४४। १ (प्रस्कण्वः काण्वः। अग्निः।)

१९४ अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥ १ ॥

ऋ० १। ४४। २ (सतो बृहती:)

१९५ जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्ने रथीरध्वराणाम्।
सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यमस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ २ ॥

तीनवार अन्नसेवन

१९२ (अवद्य-गोहना अश्विना) दोष दूर करनेवाले अश्विदेवो ! (समाने अहन् त्रिः) एक दिनमें तीनवार और (अद्य त्रिः) आज भी तीन वार (यज्ञं मधुना मिमिक्षतम्) हमारे यज्ञमें मधुर रसका सिंचन करो। (वाजवतीः इषः त्रिः) बल बढानेवाला अन्न (दोषा उषसः च) रात्रीमें और उषःकालमें (अस्मभ्यं युवं त्रिः पिन्वतं) हमें तुम तीन वार दे दो। (३)

यहां दिनमें अर्थात् रात्री और दिनमें मिलकर तीन वार अन्नका सेवन करनेका उल्लेख है। जो निर्बल मनुष्य हैं वह उषःकालमें, दिनमें मध्य समयमें और रात्रीमें ऐसा तीन वार बल बढानेवाले पौष्टिक अन्नका सेवन करे और वैद्य इस तरह उसका बल बढावे।

उषाके पूर्व अश्विदेव

१९३ हे (नासत्या) सत्य पालक अश्विदेवो ! (आ गच्छतं) तुम आओ। (हविः हूयते) हविका हवन किया जाता है। (मधुपेभिः आसभिः मध्वः पिबतं) मधुर रस पीनेवाले मुखोंसे मधुर रसका पान करो। (सविता) सूर्य देव (चित्रं घृतवन्तं) रमणीय और घृतवाले (युवोः रथं) तुम्हारे रथको (उषसः पूर्वं इष्यति) उषाके पहिले प्रेषित करे। (१०)

उषाके पहिले अश्विदेवोंका उदय होता है। इसका उल्लेख इस मंत्रमें है।

१९४ हे अमर (विवस्वत्) बसानेवाले अग्ने ! तू (उषसः चित्रं राधः) उषाका सुंदर धन है। (जातवेदः) हे वेदको फैलानेवाले ! तू आज (उषः-बुधः देवान्) उषःकालमें जागनेवाले देवोंको (दाशुषे आवह) दाताके पास ले आ। (१)

यहां अग्निको उषाका धन कहा है। और दिव्य लोक उषःकालमें जागते हैं ऐसा भी कहा है। उषःकाल ऐसा उत्तम पवित्र समय है।

१९५ हे अग्ने ! तू (हव्य-वाहनः) हविष्यान्नोंको उठाकर ले जानेवाला तथा (अध्वराणां रथीः) अहिंसामय यज्ञोंका संरक्षक रथी वीर और (जुष्टः दूतः असि) प्रशंसनीय दूत है। तू (अश्विभ्यां उषसा सजूः) अश्विदेव और उषाके साथ आकर (अस्मे) हमारेमें (बृहत् श्रवः सुवीर्यं धेहि) बडा यश और उत्तम वीरताकी स्थापना कर। (२)

हमें (बृहत् श्रवः) बडा प्रभावी अन्न और यश चाहिये तथा (सुवीर्यं) उत्तम पराक्रम करनेका सामर्थ्य चाहिये। वह हमारे अन्दर स्थिर रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १।४४।८

१९६ सवितारमुषसमश्विना भगमग्निं व्युषिष्टु क्षपः ।
कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर ॥ ८ ॥

ऋ० १।४४।१०

१९७ अग्ने पूर्वा अनूषसो विभावसो दीदेथ विश्वदर्शतः ।
असि ग्रामेष्वविता पुरोहितोऽसि यज्ञेषु मानुषः ॥ १० ॥

ऋ० १।४४।१४

१९८ शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः सुदानवोऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
पिबतु सोमं वरुणो धृतव्रतो ऽश्विभ्यामुषसा सजूः ॥ १४ ॥

ऋ० १।४६।१ (प्रस्कण्वः काण्वः। अश्विनौ। गायत्री)

१९९ एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः ।
स्तुषे वामाश्विना बृहत् ॥ १ ॥

ज्ञानी याजक अग्नि प्रदीप्त करते हैं

१९६ हे (स्वध्वर) उत्तम यज्ञ करनेवाले अग्ने ! सविता, उषा, अश्विदेव, भगको लेकर अग्नि (व्युष्टिषु क्षपः) प्रातःकालमें तथा रात्रीमें यहां आवे । (सुतसोमाः कण्वासः) सोमरस निकाल कर ज्ञानी लोग या कण्वगोत्री लोग (त्वा हव्यवाहं इन्धते) हव्योंके वहन करनेवाले तुझ अग्निको प्रदीप्त कर रहे हैं । (८)

यहां उषःकालमें याजक अग्निको प्रदीप्त कर रहे हैं ऐसा कहा है।

१९७ हे (विश्वदर्शत: विभावसो अग्ने) विश्वमें दर्शनीय तेजस्वी अग्नि ! तू (उषसः पूर्वः अनुदीदेथ) उषाके पूर्व उसके पीछे पीछे आकर प्रकाशता है । तू (ग्रामेषु पुरोहितः अविता असि) तू गावोंमें अग्रगामी नेता रक्षक है और (यज्ञेषु मानुषः असि) यज्ञोंमें मानवोंका नेता है। (१०)

उषाके पीछे पीछे आनेवाला अग्नि है । अर्थात् उषःकालमें यज्ञाग्नि प्रदीप्त किया जाता है ।

१९८ (सुदानवः अग्निजिह्वाः ऋतावृधः) उत्तम दान देनेवाले, अग्निके समान तेजस्वी भाषण करनेवाले और सत्य मार्गको वढानेवाले मरुत इस स्तोत्रको (शृण्वन्तु) सुनें । (धृतव्रतः वरुणः) व्रतका पालन करनेवाला वरुण अश्विदेव और उषाके साथ (सोमं पिबतु) सोमरस पीये । (१४)

यहां मरुत् वीर उषाके साथ सोमरस पीते हैं ऐसा कहा है।

पहिली उषा

१९९ (एषा अपूर्व्या) यह अपूर्व-अद्वितीय- (दिवः प्रिया उषा) द्युलोककी प्रिय उषा (व्युच्छति) प्रकाश रही है । इसलिये हे अश्विदेवो ! (वां बृहत् स्तुषे) तुम दोनोंकी मैं विशेष स्तुति गाता हूं ॥ (१)

यहां उषाको द्युलोककी या सूर्यकी प्रिय कन्या कहा है। कन्या शब्द यहां नहीं है वह हमने अन्य मंत्रसे लिया है।

(अपूर्व्या उषा) जो पूर्व समयमें कभी नहीं आयी थी वह उषा यह है अर्थात् यही पाहिली उषा है । जहां प्रतिदिन उषा आती है वहां ऐसा कहा नहीं जा सकता । पर जहां सालमें बडे अन्धकारके पश्चात् प्रथम उषा प्रकाशती हो वहांही ऐसा वर्णन होना संभव है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १। ४६। १४

२०० युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत्।
ऋता वनथो अक्तुभिः ॥ १४ ॥

ऋ० १। ५६। ४ (सव्य आंगिरसः। इन्द्रः। जगती)

२०१ देवी यदि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः।
यो धृष्णुना शवसा बाधते तम इयर्ति रेणुं बृहदर्हरिष्वणिः ॥ ४ ॥

ऋ० १। ५७। ३; अथर्व २०। १५। ३

२०२ अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे।
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ॥ ३ ॥

ऋ० १। ६२। ५ (नोधा गौतमः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्)

२०३ गृणानो अंगिरोभिर्दस्म वि वरुषसा सूर्येण गोभिरन्धः।
वि भूम्या अप्रथय इन्द्र सानु दिवो रज उपरमस्तभायः ॥ ५ ॥

---

२०० (परिज्मनोः युवोः श्रियं) भ्रमण करनेवाले तुम दोनोंकी शोभाके अनुकूल (उषा अनु उपाचरत्) उषा अनुसरती है। (अक्तुभिः ऋता वनथः) तुम रात्रीयोंमें यज्ञमें आकर सेवा लेते हो। (१४)

अश्विदेव प्रथम उदयको प्राप्त होते हैं और पश्चात् उषा उनके प्रकाशको अनुसरती है। उनके पीछे पीछे आती है। अश्विदेव मध्य रात्रीके उपरान्त उदय होते हैं इसलिये उनकी स्तुति उसी समय होती है।

इस मंत्रमें उषाका उदय अश्विदेवोंके पीछे होता है ऐसा कहा है।

उषाके पश्चात् सूर्योदय

२०१ (उषसं सूर्यः न) उषाके साथ सूर्य रहता है उस तरह (तविषी देवी) शक्ति देवी (त्वा वृधा) तेरे द्वारा बढाई हुई (इन्द्रं सिषक्ति) इन्द्रके सहायार्थ जाती है और (ऊतयः) रक्षण करती है। (यः धृष्णुना शवसां तमः बाधते) वह इन्द्र अपने शत्रु नाशक बलसे अन्धकारका नाश करता है (रेणुं इयर्ति) धूलीको उडाता है और (अर्हरिष्वनिः) शत्रुको रुलाकर भगा देता है। (४)

इस मंत्रमें उषाके पीछेसे सूर्य आता है इतनाही उषाका संबंध बताया है।

२०२ हे (शुभ्रे उषः) गौरवर्ण उषा देवि ! (अस्मै भीमाय पनीयसे) इस महाबलवान और प्रशंसनीय इंद्रके लिये (अध्वरे न) इस यज्ञमें इसी समय (नमसा सं आभर) नमस्कारके साथ हवि अर्पण कर। (यस्य धाम इन्द्रियं नाम) जिसका धाम इन्द्रकी शक्तिसे प्रसिद्ध है और जिसने (श्रवसे ज्योतिः अकारि) यश बढानेके लिये तेज प्रकट किया है, (अयसे हरितो न) शीघ्र गमन करनेके लिये जैसे घोडे होते हैं उस तरह यह इसकी ज्योति है जो यश बढाती है। (३)

यहां उषा इन्द्रको अर्पण करनेके लिये हवि तैयार करती है। उषा शीघ्र उठकर आती है, घरमें अन्न पकानेकी तैयारी करती है, वैसी स्त्री अपने घरमें करे। यह बोध यहां मिलता है।

२०३ हे (दस्म) दर्शनीय सुंदर इन्द्र ! (अंगिरोभिः गृणानः) अंगिराओंके द्वारा प्रशंसित होकर उषा, सूर्य और किरणोंके द्वारा (अन्धः वि वः) अन्धकारको दूर कर। हे इन्द्र ! (भूम्याः वि अप्रथयः) भूमिको विस्तृत किया और (दिवः सानु रजः उपरे अस्तभायः) द्युलोकके उच्चभागमें अन्तरिक्ष लोकको तुमने स्तब्ध किया है। (५)

यहां उषाके प्रकाशसे अन्धकार दूर करनेका वर्णन है। भूमिको विस्तृत करनेका तात्पर्य उच्च नीच भागको समतल कृषि योग्य बनाना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १।६२।८

२०४ सनाद् दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती स्वेभिरेवैः।
कृष्णेभिरक्तोषा रुशद्भिर्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या ॥ ८ ॥

ऋ० १।६९।१ (पराशरः शाक्त्यः। अग्निः। द्विपदा विराट्)

२०५ शुक्रः शुशुक्वाँ, उषो न जारः पप्रा समीची, दिवो न ज्योतिः।
परि प्रजातः क्रत्वा बभूथ भुवो देवानां, पिता पुत्रः सन् ॥ १ ॥

ऋ० १।६९।५

२०६ उषो न जारो, विभावोस्रः संज्ञातरूपश्चिकेतदस्मै।
त्मना वहन्तो, दुरो व्यृण्वन् नवन्त विश्वे, स्व१र्दृशीके ॥ १० ॥

ऋ० १।७१।१

२०७ उप प्रजिन्वन्नुशतीरुशन्तं पतिं न नित्यं जनयः सनीळाः।
स्वसारः श्यावीमरुषीमजुष्रन् चित्रमुच्छन्तीमुषसं न गावः ॥ १ ॥

रात्री और उषाका परिभ्रमण

२०४ (विरूपे पुनर्भुवा युवती) विरुद्ध रूपवाली पुनः पुनः होनेवाली दो स्त्रियां (स्वेभिः एवैः) अपने सामर्थ्योंसे (सनात् दिवं भूमा परि चरतः) सदासे द्युलोक और भूलोकके चारों ओर भ्रमण करती हैं। (कृष्णेभिः अक्ता) काले रंगोंसे रात्री और (रुशद्भिः वपुर्भिः उषा) तेजस्वी प्रकाशमय शरीरोंसे उषा (अन्या अन्या परि आ चरतः) एकके पीछे दूसरी घूम रही है। (८)

यहां उषा और रात्रीका भूमिके चारों ओर भ्रमण होनेका वर्णन है। द्युलोकके भी चारों ओर यह भ्रमण है। उत्तरीय ध्रुवस्थानमें देखनेवाला अपने चारों ओर इस तरह उषाका भ्रमण हो रहा है ऐसा देख सकता है, क्योंकि वहां अपने चारों ओरही उषा, सूर्य, नक्षत्र घूमते हैं। हमारे यहां ये ऊपर चढकर नीचे उतरते हैं।

स्त्री जारसे संबंध न करे।

२०५ (शुक्रः उषः जारः न) तेजस्विनी उषाको जीर्ण करनेवाला जैसा सूर्य है उस तरह (शुशुक्वान्) प्रकाशमान (दिवः ज्योतिः न) द्युलोककी ज्योतिके समान सूर्य (समीची पप्रा) समान रूपसे परस्पर मिलनेवाले द्युलोक और भूलोकको भरपूर भर देता है। (प्रजातः) उत्पन्न होते ही (क्रत्वा परि बभूथ) अपने प्रयत्नसे चारों ओर प्रकाशसे फैला है। यह (पुत्रः सन्) पुत्र होता हुआ (देवानां पिता भुवः) देवोंका पालन कर्ता हुआ है। (१)

सूर्य उषाका जार है। 'जार' शब्दका अर्थ यहां आयु[ष्य] नाश करनेवाला है। सूर्य आनेसे उषाका नाशही होता है इ[स] लिये यह उषाका जार है। जारसे आयुक्षीण होती है इसलि[ये] जारसे संबंध करना नहीं चाहिये यह बोध यहां मिलता है।

२०६ (उषः न जारः विभावा) उषाके जार सूर्यके समा[न] विशेष प्रकाशमान (उस्रः संज्ञातरूपः) सबका निवासक औ[र] सबके सामने दिखाई देनेवाला अग्नि (अस्मै चिकेतत्) इ[स] यज्ञकर्ताको जाने, इसके विषयमें शुभ भाव धारण क[रे] (त्मना वहन्तः) स्वयं हवि लेनेवाला, (दुरः व्यृण्वन्) द्वारोंको खोलता है (विश्वे दृशीके स्वः नवन्त) संपूर्ण दर्शनी[य] आकाशमें किरण पहुंचते हैं। चारों ओर प्रकाश हो रहा है।(...)

उषाका जार सूर्य है। इसका बोध पूर्व मंत्रमें बताया है। जारसे कोई स्त्री संबंध न रखे।

२०७ (सनीळाः उशन्तीः जनयः) एक घरमें रहनेवा[ली] कामुक स्त्रियां जैसी (उशन्तं नित्यं पतिं न) कामी पति[की] नित्य (उप प्रजिन्वन्) सेवा करती है, और (श्यावीं अरु[षीं] उच्छन्तीं उषसं) काली रात्री जो तेजस्वी बनकर उषा[के] रूपमें प्रकाशित होती है उसकी (गावः न) किरणें जैसी से[वा] करती हैं, उस तरह (स्वसारः चित्रं) ज्वालारूप बहिनें वि[चित्र] विचित्र रंगवाले अग्निकी सेवा करती है। (१)

यहां उषाकी सेवा किरणें करती है, पतिकी सेवा कामु[क] स्त्रियां करती है और अग्निकी सेवा ज्वालाएं अथवा अंगुलि[यां] करती हैं यह सादृश्य बताया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १। ७३। ७

२०८ त्वे अग्ने सुमतिं भिक्षमाणा दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियासः।
नक्ता च चक्रुरुषसा विरूपे कृष्णं च वर्णमरुणं च सं धुः ॥ ७ ॥

ऋ० १। ७९। १ (गोतमो राहूगणः। अग्निः। त्रिष्टुप्)

२०९ हिरण्यकेशो रजसो विसारेऽहिर्धुनिर्वात इव ध्रजीमान्।
शुचिभ्राजा उषसो नवेदा यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः ॥ १ ॥

ऋ० १। ७९। ६

२१० क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः।
स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति ॥ ६ ॥ (वा. य. १५। ३७)

ऋ० १। ९४। ५ (कुत्स आंगिरसः। अग्निः। जगती)

२११ विशां गोपा अस्य चरन्ति जन्तवो द्विपच्च यदुत चतुष्पदक्तुभिः।
चित्रः प्रकेत उषसो महाँ अस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ५ ॥

मिलाप करनेवाली उषा

२०८ हे अग्ने ! (सुमतिं भिक्षमाणाः यज्ञियासः) सुमतिकी इच्छा करनेवाले याजक (दिवित्वे श्रवः दधिरे) दिव्य तेजसे युक्त ऐसे तेरे अन्दर अन्नकी आहुतियां समर्पण करते हैं। उन्होंने (नक्ता उषसा विरूपे चक्रुः) रात्री और उषाको विरुद्ध रूपवाली बनाया है और (कृष्णं अरुणं वर्णं च संदधुः) काला और अरुण वर्णका संयोग किया है। (७)

रात्री काली और उषा गौर वर्णवाली है। ये इनके परस्पर विरुद्ध रंग हैं। पर उषःकालमें काला और अरुण रंग एक स्थानपर मिलता है। अर्थात् उषा परस्पर विरुद्ध अवस्था-वालोंका मिलाप करनेवाली है।

२०९ (हिरण्यकेशः अहिः) सुनहरी किरणवाला आक्रमण करके शत्रुका हनन करनेवाला (धुनिः) शत्रुको हिलानेवाला (वातः इव ध्रजीमान्) वायुके समान गतिमान विद्युत् अग्नि (रजसः विसारे) अन्तरिक्षके ऊपरसे जलका विसर्जन होनेके स्थानमें अर्थात् वृष्टीके स्थानमें रहता है। उसको (शुचि-भ्राजाः यशस्वतीः) शुद्ध तेजवाली यशस्विनी (अपस्युवः सत्याः न) कर्ममें कुशल सदा सत्यमार्गसे जानेवाली (उषसः) उषाएं (न वेदाः) जानती नहीं। (१)

विद्युत् अग्निको उषाएं जानती नहीं। पर वह अग्नि सब जानता है। उषाएं तेजस्विनी, यशस्विनी, कर्ममें कुशल और सत्यमार्ग प्रवर्तक हैं। ये उषाएं यज्ञाग्निको तो जानती हैं, पर विद्युदग्निको नहीं जानती, जो विद्युदग्नि अन्तरिक्षमें रहता है।

२१० हे (तिग्मजम्भ राजन् अग्ने) तीक्ष्ण जबडेवाले राजन् अग्ने (वस्तोः उत उषसः) दिनके समय, तथा उषःकालके समय (क्षपः) शत्रुका नाश कर (उत त्मना) और अपनी शक्तिसे (सः रक्षसः प्रतिदह) वह तू राक्षसोंका नाश कर। (६)

२११ हे अग्ने ! तू (विशां गोपाः) प्रजाजनोंका रक्षण कर्ता है। (अस्य अक्तुभिः) इसके प्रकाश किरणोंसे (द्विपत् यत् उत चतुष्पद जन्तवः चरन्ति) द्विपाद और चतुष्पाद प्राणी चलते हैं। (उषसः महान् चित्रः प्रकेतः असि) उषाका बडा विलक्षण ध्वज जैसा तू है। हे अग्ने ! (वयं तव सख्ये मा रिषाम) हम तेरी मित्रतामें विनष्ट नहीं होंगे। (५)

यहां अग्निको उषाका बडा ध्वज कहा है। अग्निका प्रज्वलित होना और उषाका आना एक समय होता है, इसलिये अग्निको उषाका ध्वज कहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १। ११५। २; अथर्व० २०। १०७। १५

२१२ सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात् ।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम् ॥ २ ॥

ऋ० १। ११८। ११ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। अश्विनौ। त्रिष्टुप्)

२१३ आ श्येनस्य जवसा नूतनेनास्मे यातं नासत्या सजोषाः ।
हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया उषसो व्युष्टौ ॥ ११ ॥

ऋ० १। १२१। ६ (इन्द्रो विश्वेदेवा वा। त्रिष्टुप्)

२१४ अध प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु प्र रोच्यस्या उषसो न सूरः ।
इन्दुर्येभिराष्ट स्वेदुहव्यैः स्रुवेण सिञ्चञ्जरणाभि धाम ॥ ६ ॥

ऋ० १। १३१। ६ (परुच्छेपो दैवोदासिः। इन्द्रः। अत्यष्टिः)

२१५ उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्य१र्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः
स्वर्षाता हवीमभिः। यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिञ्चिकेतसि ।
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः ॥ ६ ॥

---

११२ (मर्यः योषां न) पुरुष स्त्रीके पीछे जाता है उस तरह (सूर्यः) सूर्य (रोचमानां उषसं देवीं) तेजस्वी उषा देवीके (पश्चात् अभ्येति) पीछे पीछेसे जाता है। (देवयन्तः नरः) देवत्वकी प्राप्तिकी इच्छा करनेवाले लोग (यत्र) जहां (युगानि) योग्य कर्मोंको (प्रति वितन्वते) करते रहते हैं। (भद्राय भद्रं) कल्याणमय फल प्राप्त करनेके लिये कल्याणकारक कर्म करते हैं। (२)

उषाके पीछेसे सूर्य आता है। इसकी उपमा तरुणी स्त्रीके पीछेसे जानेवाले तरुण पुरुषकी दी है। यहां 'युग' का अर्थ स्त्रीपुरुषका जोडा ऐसा भी होना संभव है। देवत्व प्राप्ति करनेवाले स्त्रीपुरुष जोडा अर्थात् विवाह करते हैं और कल्याण प्राप्त करनेके लिये उत्तम कर्म करते हैं।

२१३ हे नासत्या! (श्येनस्य नूतनेन जवसा) श्येन पक्षीके नये वेगसे (सजोषाः) तुम दोनों मिलकर (अस्मे आ यातं) हमारे पास आओ। हे (अश्विना) अश्विदेवो! (रातहव्यः) हव्य तैयार करके (शश्वत्तमाया उषसः व्युष्टौ) शाश्वत् आनेवाली उषाका प्रकाश होनेपर (वां हवे हि) आपको मैं बुलाता हूं। (११)

यहां उषाका प्रकाश होनेके बाद अश्विदेवोंकी स्तुति होती है ऐसा कहा है।

२१४ (अध प्रजज्ञे) अब वह इन्द्र प्रकट हुआ है। वह (तरणिः ममत्तु) सबका तारक हमें आनन्द देवे। यह अ... (प्र रोचि) प्रकाशित हुआ है (अस्याः उषसः सूरः न) इ... उषाके साथ जैसा सूर्य प्रकाशता है। (जरणा इन्दुः) प्रशं... सनीय सोमरसका (धाम स्रुवेण अभिसिंचन्) यज्ञस्थानप... स्रुवासे हवन होनेपर (येभिः स्वेदुहव्यैः आष्ट) इन हवनों... बाद उसका प्राशन हम करते हैं। (६)

यहां उषाके साथ सूर्यका प्रकाशका वर्णन किया है। सोमर... हवन करके प्राशन करते हैं यह भी यहां कहा है।

२१५ (अस्या उषसः नः जुषेत) इस उषाके बाद व... इन्द्र हमारे स्तोत्रका सेवन करे। (हवीमभिः अर्कस्य हविष... बोधि) हवन करनेवालोंने किये स्तुति युक्त इस हविको... जान। (स्वर्षाता हवीमभिः) उत्तम सुख देनेवाला तू हव... करनेवालोंने किये इस हवनको तुम जान लो। हे (वज्रि... इन्द्र) वज्रधारी इन्द्र! (मृधः हन्तवे) शत्रुओंका वध कर... (वृषा चिकेतति ; अपने सामर्थ्यसे तू सब जानता है... इसलिये (अस्य नवीयसः वेधसः मे मन्म) इस नवीन कवि... मेरा यह स्तोत्र है उसका तू (श्रुधि) श्रवण कर। (६)

उषःकालमें स्तोत्रपाठ किया जाता है, उसका ... वर्णन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १। १३४। ३ (परुच्छेपो दैवोदासिः। वायुः। अत्यष्टिः)

२१६ वायुर्युङ्क्ते रोहिता वायुररुणा वायू रथे अजिरा धुरि वोळ्हवे
वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे।
प्र बोधया पुरंधिं जार आ ससतीमिव।
प्र चक्षय रोदसी वासयोषसः श्रवसे वासयोषसः ॥ ३ ॥

ऋ० १। १३४। ४ (अत्यष्टिः)

२१७ तुभ्यमुषासः शुचयः परावति भद्रा वस्त्रा तन्वते दंसु रश्मिषु
चित्रा नव्येषु रश्मिषु।
तुभ्यं धेनुः सबर्दुघा विश्वा वसूनि दोहते।
अजनयो मरुतो वक्षणाभ्यो दिव आ वक्षणाभ्यः ॥ ४ ॥

ऋ० १। १३७। २ (मित्रावरुणौ। अतिशक्करी)

२१८ इम आ यातमिन्दवः सोमासो दध्याशिरः सुतासो दध्याशिरः।
उत वामुषसो बुधि साकं सूर्यस्य रश्मिभिः।
सुतो मित्राय वरुणाय पीतये चारुर्ऋताय पीतये ॥ २ ॥

---

२१६ (वायुः रोहिता युंक्ते) वायु लाल घोडे जोतता है। (वायुः अरुणा) वायु अरुण रंगके जोतता है, (वायुः रथे अजिरा) वायु अपने रथको तरुण घोडे जोतता है (धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरिवोळ्हवे) धुरामें जोतनेके लिये रथको अच्छी तरह ओढनेवाले घोडे जोतता है, धुरामें जोतता है। (प्रबोधय) तू भक्तको जगाओ (जारः ससतीं पुरंधिं आ) जार जिस तरह सोनेवाली अपनी प्रेयसी स्त्रीको जगाता है उस तरह तुम जगा दो। (रोदसी प्रचक्षय) द्यावापृथिवीको प्रकाशित कर (श्रवसे उषसः वासय, उषसः वासय) अन्न तथा यशके लिये उषाको प्रकट कर, उषाओंको रहने दो। (३)

यहां उषाओंको प्रकाशित करनेके लिये वायुकी प्रार्थना है। यहां अनेक उषाओंका उल्लेख है।

२१७ हे वायो! (शुचयः उषासः तुभ्यं) शुद्ध उषाएं तेरे लिये (परावति भद्रा वस्त्रा तन्वते) दूर आकाशमें उत्तम वस्त्रोंको फैलाती हैं। (दंसु रश्मिषु नव्येषु रश्मिषु चित्रा) दर्शनीय सुंदर किरणोंमें, नवीन किरणोंमें ये विलक्षण वस्त्र फैलाती है। (सबर्दुघा धेनुः) उत्तम दूध देनेवाली गौ (तुभ्यं विश्वा वसूनि दोहते) तुम्हारे लिये सब धनोंका दोहन करती है। (वक्षणाभ्यः मरुतः अजनयः) नदियोंके लिये मरुतोंको उत्पन्न किया। (वक्षणाभ्यः दिव आ) नदियोंके लिये द्युलोकसे उत्पन्न किया है। (४)

उषाएं सुंदर रंगीन वस्त्र आकाशमें फैलाती हैं ऐसा यह सुंदर वर्णन है।

२१८ हे (इन्दवः) सोमके रसो! (इमे सोमासः आयातं) ये सोमरस इधर आजांय। ये (सुतासः) निचोडे हुए सोमरस (दध्याशिरः) दहीके साथ मिलाये हैं। हे (उषासः) उषाओ! (उत वां) और तुम (सूर्यस्य रश्मिभिः साकं) सूर्यके किरणोंके साथ (बुधि) जानो कि यह सोमरस मित्र और वरुणके (पीतये) पीनेके लिये (सुतः) निकाला है, यह (ऋताय पीतये चारुः) यज्ञके समय पीनेके लिये उत्तम है। (२)

उषा सूर्य प्रकाशके साथ जिस समय प्रकाशती है उस समय सोमरस छानकर दहीके साथ मिलाकर तैयार रखे जाते हैं।

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १। १५१। ५ (दीर्घतमा औचथ्यः। मित्रावरुणौ। जगती)

२१९ मही अत्र महिना वारमृण्वथोऽरेणवस्तुज आ सद्मन् धेनवः।
स्वरन्ति ता उपरताति सूर्यमा निम्रुच उषसस्तक्ववीरिव ॥ ५ ॥

ऋ० १। १५७। १ (अश्विनौ। जगती)

२२० अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्युषाश्चन्द्रा मह्यावो अर्चिषा।
आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद् देवः सविता जगत् पृथक् ॥१॥

ऋ० १। १७९। १ (लोपामुद्रा। रतिः। त्रिष्टुप्)

२२१ पूर्वीरहं शरदः शश्रमाणा दोषा वस्तोरुषसो जरयन्तीः।
मिनाति श्रियं जरिमा तनूनामप्यु नु पत्नीर्वृषणो जगम्युः ॥ १ ॥

ऋ० १। १८०। १ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ। त्रिष्टुप्)

२२२ युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद् वां पर्यर्णांसि दीयत्।
हिरण्यया वां पवयः प्रुषायन् मध्वः पिबन्ता उषसः सचेथे ॥ १ ॥

---

२१९ (अत्र) यहां (मही) पृथ्वीके ऊपर (महिना वारं ऋण्वथः) तुम अपने महत्वसे स्वीकार करने योग्य धन देते हो। (अरेणवः तुजः धेनवः सद्मन आ) निर्मल त्वरासे जानेवाली गौवें घरके पास आ रही हैं। (उपर-ताति सूर्यं) ऊपरके आकाशमें सूर्यको (निम्रुचः उषसः) अस्तमानके तथा उषाके समय (तक्ववीः इव) हिंसक पक्षी शब्द करते हैं उस तरह (ता स्वरन्ति) वे शब्द करती हैं। (५)

उषःकालमें स्वर करती हुई गौवें आती हैं। उसका यह उत्तम वर्णन है।

२२० (अग्निः अबोधि) अग्नि जाग्रत हुआ है, (ज्मः सूर्यः उदेति) गतिमान सूर्यका उदय हो रहा है। (चन्द्रा मही उषाः) आनन्ददायक बडी उषा (अर्चिषा वि आवः) तेजके साथ प्रकाशित हो रही है। (अश्विना यातवे रथं आयुक्षत) अश्विदेवोंने जानेके लिये अपना रथ जोडा है, (सविता देवः पृथक् जगत् प्रासावीत्) सूर्यदेवने पृथक् पृथक् प्राणियोंको कर्ममें प्रवृत्त किया है। (१)

यहां आल्हाददायक उषा अपने महत्त्वके साथ और अपूर्व प्रकाशके साथ प्रकाशित हुई है ऐसा रमणीय वर्णन है। यह मंत्र प्रातः कालका उत्तम काव्यमय वर्णन कर रहा है।

२२१, दोषावस्तोः जरयन्तीः उषसः) रात्रीमें और दिनमें और वृद्धावस्था लानेवाले उषःकालमें भी (अहं शश्रमाणा) मैं परिश्रम कर रही थी और (पूर्वीः शरदः) पहिले वर्ष इस तरह चले गये। अब (जरिमा तनूनां श्रियं मिनाति) यह वृद्धावस्था शरीरकी शोभाका नाश कर रही है। (अपि ऊ नु) तथापि (वृषणः पत्नीः जगम्युः) बलवान् पुरुष स्त्रियोंके पास जाते ही हैं। (१)

यह उषःकालमें भी परिश्रम करनेवाली स्त्रीका वर्णन है। यह स्त्री अब वृद्ध हुई है और वह अपना अनुभव बोल रही है। ऐसा यह अलंकार है।

२२२ (यत् वां रथः) जब तुम दोनोंका रथ (अर्णांसि परि दीयत्) अन्तरिक्षके समुद्रमें संचार करने लगता है तब (युवोः अश्वाः) तुम दोनोंके घोडे (रजांसि सुयमासः) अन्तरिक्षमें नियमपूर्वक चलते हैं। (वां हिरण्ययाः पवयः) तब आपके सुवर्णमय पहियोंके आरे (प्रुषायन्) गीले होने लगते हैं। (उषसः) उषःकालमें (मध्वः पिबन्तः सचेथे) मीठे सोमरस पीते हुए तुम दोनों इकट्ठे होकर जाते हो। (१)

उषःकालमें मीठा सोमरस पीये और मिलकर किसी कार्यके लिये बाहर जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १ । १८३ । २

२२३ सुवृद् रथो वर्तते यन्नभि क्षां यत् तिष्ठथः क्रतुमन्तानु पृक्षे ।
वपुर्वपुष्या सचतामियं गीर्दिवो दुहित्रोषसा सचेथे ॥ २ ॥

ऋ० १ । १८४ । १

२२४ ता वामद्य तावपरं हुवेमोच्छन्त्यामुषसि वह्निरुक्थैः ।
नासत्या कुह चित् सन्तावर्यो दिवो नपाता सुदास्तराय ॥ १ ॥

ऋ० २ । २ । ७ (गृत्समद (आंगिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अग्निः । जगती)

२२५ दा नो अग्ने बृहतो दाः सहस्रिणो दुरो न वाजं श्रुत्या अपा वृधि ।
प्राची द्यावापृथिवी ब्रह्मणा कृधि स्व१र्ण शुक्रमुषसो वि दिद्युतः ॥५॥

ऋ० २ । २ । ८

२२६ स इधान उषसो राम्या अनु स्व१र्ण दीदेदरुषेण भानुना ।
होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो राजा विशामतिथिश्चारुरायवे ॥ ८ ॥

---

२२३ (क्रतुमन्तः) कार्यमें तत्पर हुए तुम दोनों (पृक्षे अनु) हविष्यान्नके पीछे जानेके लिये (यत् तिष्ठथः) जहां ठहरते हो वह (क्षां यन्) पृथ्वीपर घूमनेवाला तुम्हारा (सुवृत् रथः) सुन्दर रथ (अभिवर्तते) यज्ञभूमिके पास जाता है । (वपुष्या इयं गीः) सुंदर रसमयी यह वाणी (वपुः सचतां) तुम्हारी रसमयी वृत्तीको प्राप्त हो जाय, अर्थात् तुम्हें आनन्द देवे। (दिवः दुहित्रा उषसा) स्वर्गकन्या उषासे तुम दोनों (सचेथे) युक्त होते हैं । (२)

उषाके साथ अश्विदेव रहते हैं । अश्विदेव आते हैं पश्चात् उषा आती है

२२४ हे (दिवः न-पाता) द्युलोकको न गिरानेवाले (नासत्या) सत्यपालक अश्विदेवो ! (अद्य ता वां) आज उन तुम दोनोंको (अपरं) दूसरे दिन भी (तौ हुवेम) तुम दोनोंको ही हम बुलाते हैं । (उच्छन्त्यां उषसि) अन्धकार दूर करनेवाले उषःकालमें (उक्थैः वह्निः) स्तोत्रोंसे अग्नि प्रदीप्त किया जाता है । (कुहचित् सन्तौ) तुम कहीं भी रहो, पर (सु-दास्तराय) उत्तम दानीके पास इधर आओ । ऐसी (अर्यः) प्रगतिशील मानवकी प्रार्थना है ।(१)

उषःकालमें स्तोत्रोंसे अग्नि प्रदीप्त करनेका उल्लेख यहां इस मंत्रमें है ।

बल बढानेवाली उषाएं

२२५ हे अग्ने ! (नः बृहतः दाः) हमें बडा धन दे दो। (सहस्रिणः दाः) हमें हजारों प्रकारके धन दे दो। (श्रुत्या वाजं) यशके साथ बल (दुरः न अपावृधि) दरवाजे खोलकर देनेके समान दे दो। (द्यावापृथिवी ब्रह्मणा प्राची कृधि) द्यु और पृथिवी ज्ञानसे हमारे लिये मंगलकारी करो । (स्वः न) सूर्यके समान (उषसः शुक्रं वि दिद्युतः) उषायें शुभ्रकिरण हमारे ऊपर प्रकाशित करें । (७)

उषाएं हमारे लिये प्रकाश, वीर्य, बल देनेवाली हों । 'शुक्र' का अर्थ ' शुद्ध, वीर्य, बल और प्रकाश है । '

२२६ (राम्या अनु इधानः सः) रात्रीके अनुसार प्रदीप्त होता हुआ वह अग्नि (उषसः) उषःकालमें (अरुषेण भानुना) लाल रंगके प्रकाशसे (स्वः नं) सूर्यके समान (दीदेः) प्रकाशता रहे । (होत्राभिः स्वध्वरः अग्निः) हवनोंसे उत्तम रीतिसे आहुति दिया हुआ यह अग्नि (मनुषः) मनुष्योंके यज्ञोंमें (विशां राजा) प्रजाओंका शासक तथा (आयवे चारुः अतिथिः) मनुष्योंके लिये उत्तम अतिथि जैसा होवे (८)

उषःकालमें लालरंगके प्रकाशसे प्रदीप्त होनेवाले अग्निका वर्णन यहां है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० २ । ८ । ३

२२७ य उ श्रिया दमेष्वा दोषोषसि प्रशस्यते ।
यस्य व्रतं न मीयते ॥ ३ ॥

ऋ० २ । १२ । ७ (इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

२२८ यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ॥ ७ ॥

ऋ० २ । १५ । ६

२२९ सोदञ्चं सिन्धुमरिणान्महित्वा वज्रेणान उषसः सं पिपेष ।
अजवसो जविनीभिर्विवृश्चन् त्सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ६ ॥

ऋ० २ । २० । ५

२३० सो अंगिरसामुचथा जुजुष्वान् ब्रह्मा तूतोदिन्द्रो गातुमिष्णन् ।
मुष्णन्नुषसः सूर्येण स्तवानश्नस्य चिच्छिश्नथत् पूर्व्याणि ॥ ५ ॥

ऋ० २ । २१ । ४ (जगती)

२३१ अनानुदो वृषभो दोधतो वधो गम्भीर ऋष्वो असमष्टकाव्यः ।
रध्रचोदः श्नथनो वीळितस्पृथुरिन्द्रः सुयज्ञ उषसः स्वर्जनत् ॥ ४ ॥

---

२२७ (यः उ दमेषु) जो अग्नि हमारे घरोंमें (दोषा उषसि) रात्रीमें और उषः कालमें उसकी (श्रिया आ प्रशस्यते) शोभाके कारण प्रशंसित होता है, (यस्य व्रतं न मीयते) जिसके नियमोंका कोई उल्लंघन नहीं कर सकता । (३)

उषः कालमें अग्निके गुण गाये जाते हैं ।

उषाका उत्पन्न कर्ता इन्द्र

२२८ (यस्य प्रदिशि) जिसके आदेशमें घोडे, गायें, ग्राम और (विश्वे रथासः) सब रथ हैं। (यः सूर्यं यः उषसं जजान) जिसने सूर्यको और उषाको उत्पन्न किया है, (यः अपां नेता) जो जलोंका प्रवाह चलाता है, हे (जनासः) लोगो ! (सः इन्द्रः) वही इन्द्र है। (७)

इन्द्रने उषाको उत्पन्न किया ऐसा यहां कहा है ।

उषाका रथ तोडनेवाला इन्द्र

२२९ (सः महित्वा सिन्धुं उदञ्चं अरिणात्) उसने अपने सामर्थ्यसे नदिको उलटी दिशासे प्रवाहित किया । (उषसः अनः वज्रेण सं पिपेष) उषाके रथको वज्रके प्रहारसे तोड दिया । (अजवसः जवनीभिः विवृश्चन्) वेगहीनोंको वेगवानोंमें बदल दिया । वेगहीनोंको वेगवान सेनाओंके साथ लडवाया और शत्रुको परास्त किया । (सोमस्य मदे ताः इन्द्रः चकार) सोमके उत्साहमें इन्द्रने ये पराक्रम किये । (६)

उषाके रथको इन्द्रने तोडा । वह बात ४ । ३० । ८; १ ... १३८ । ५ में और स्पष्ट रीतिसे लिखी है ।

२३० (सः अंगिरसां उचथा जुजुष्वान्) वह अंगि... स्तोत्र सुनता रहा । (इन्द्रः गातुं इष्णन् ब्रह्म तूतोद) इ... मार्ग ढूंढनेकी इच्छासे स्तोत्रका संवर्धन किया । अर्थात् इ... उसने मार्ग प्राप्त किया । (सूर्येण उषसः मुष्णन्) ... प्रकाशसे इन्द्रने उषाओंके प्रकाशको छीन लिया । और (अ... पूर्व्याणि चित् शिश्नथत्) अश्न असुरके पहिले बलोंको भी ... कर दिया । (५)

यहां सूर्य प्रकाशसे उषाको नष्ट करनेका वृत्त है । प्रति... यही होता है ।

२३१ (अन्-आनु-दः) अनुपम दानी (वृष... बलवान् (दोधतः वधः) शत्रुओंका नाश करनेवाला, गं... (ऋष्वः) महान् (असमष्टकाव्यः) अतर्क्य ज्ञान... (रध्र-चोदः) वीरोंका उत्साह बढानेवाला, (श्नथनः) दु... घातक (वीळितः) सुदृढ (पृथुः) बडा (सुयज्ञः) ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० २।२८।२ (कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा । वरुणः । त्रिष्टुप्)

२३२ तव व्रते सुभगासः स्याम स्वाध्यो वरुण तुष्टुवांसः ।
उपायन उषसां गोमतीनामग्नयो न जरमाणा अनु द्यून ॥ २ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १ । ८ । ३

२२७ य उ श्रिया दमेष्वा दोषोषसि प्रशस्यते ।
यस्य व्रतं न मीयते ॥ ३ ॥

ऋ० ७ । १२ । ७ (छन्दः । त्रिष्टुप्)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० २।२८।२ (कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा । वरुणः । त्रिष्टुप्)

२३२ तव व्रते सुभगासः स्याम स्वाध्यो वरुण तुष्टुवांसः ।
उपायन उषसां गोमतीनामग्नयो न जरमाणा अनु द्यून् ॥ २ ॥

ऋ० २।२८।९

२३३ पर ऋणा सावीरध मत्कृतानि माहं राजन्नन्यकृतेन भोजम् ।
अव्युष्टा इन्नु भूयसीरुषास आ नो जीवान् वरुण तासु शाधि ॥ ९ ॥

ऋ० २।३४।१२ (गृत्समद (आंगिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । मरुत् । जगती)

२३४ ते दशग्वाः प्रथमा यज्ञमूहिरे ते नो हिन्वन्तूषसो व्युष्टिषु ।
उषा न रामीररुणैरपोर्णुते महो ज्योतिषा शुचता गोअर्णसा ॥ १२ ॥

ऋ० ३।५।१ (गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

२३५ प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानोऽबोधि विप्रः पदवीः कवीनाम् ।
पृथुपाजा देवयद्भिः समिद्धोऽप द्वारा तमसो वह्निरावः ॥ १ ॥

यज्ञ करनेवाला ऐसा इन्द्र (उषसः स्वः जनत्) उषाओंका प्रकाश फैलाता है । (४)

उषा, सूर्य और प्रकाशका फैलानेवाला इन्द्र है ।

२३२ हे वरुण ! (तुष्टुवांसः) तेरे गुण गानेवाले तथा (स्वाध्यः) विचार पूर्वक कार्य करनेवाले हम (तव व्रते सुभगासः स्याम) तेरे कार्य करनेमें तत्पर रहनेसे उत्तम भाग्यसंपन्न बनेंगे । (अनु द्यून् जरमाणाः अग्नयः न) प्रतिदिन स्तुति किये जानेवाले अग्नि (गोमतीनां उषसां उपायने) गौवों वाली उषाओंके समीप जैसे बढते हैं वैसे हम बढें । (२)

उषःकालमें गौवें घूमने लगती हैं और उस समय अग्नि भी प्रदीप्त होते हैं ।

आनेवाली बहुत उषाएँ

२३३ (ऋणा परा सावीः) ऋण दूर कर (अध मत्कृतानि) और मेरे किये हुए ऋण हैं उनको भी दूर कर । हे राजन् ! (अहं अन्यकृतेन मा भोजं) मैं दूसरेका किया हुआ न भोगूं । क्योंकि अभी (भूयसीः उषासः अव्युष्टा इत्नु) बहुतसी उषायें आनेवाली हैं उनमें हे वरुण ! (नः जीवान् तासु आ शाधि) हम जीवेंगे, उनमें हमें सुशिक्षा दे दो । (९)

आनेवाली उषाओंका उल्लेख यहां है ।

२३४ (ते दशग्वाः प्रथमाः यज्ञं ऊहिरे) उन दशग्व अर्थात् दस महिने यज्ञ करनेवालोंने प्रथम यज्ञका अनुष्ठान किया । (ते उषसः व्युष्टिषु नः हिन्वन्तु) वे उषःकालका प्रकाश होनेपर हमें प्रेरणा करें । (उषा न रामीः अरुणैः अपोर्णुते) जिस तरह उषा रात्रीको अपने अरुण वर्णके प्रकाशसे दूर करती है, उस तरह (महः शुचता ज्योतिषा गो-अर्णसा) बडे शुद्ध ज्योतिके प्रकाशके समुद्रसे अन्धकार दूर होता है। (१२)

इस मंत्रमें दो वार उषा पद है । प्रथम उषा लोगोंको सत्कर्ममें प्रेरित करती और दूसरी वारकी उषा रात्रीको दूर करती है ।

२३५ (उषसः चेकितानः) उषाओंको जाननेवाला (अग्निः प्रति अबोधि) अग्नि जाग उठा है, यह (कवीनां पदवीः विप्रः) यह ज्ञानियोंके मार्गसे जानेवाला विशेष ज्ञानी है । (पृथु-पाजाः देवयद्भिः समिद्धः) बहुत प्रकाशमान् देव बननेकी इच्छावालोंने प्रदीप्त किया हुआ (वह्निः) अग्नि । तमसः द्वारा अप आवः) अन्धकारके द्वार खोल देता है जिससे अन्धकार दूर होता है । (१)

उषाओंको अग्नि जानता है ऐसा यहां कहा है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ३।५।२

२३६ प्रेद्वग्निर्वावृधे स्तोमेभिर्गीर्भिः स्तोतॄणां नमस्य उक्थैः।
पूर्वीर्ऋतस्य संदृशश्चकानः सं दूतो अद्यौदुषसो विरोके ॥ २ ॥

ऋ० ३।६।७

२३७ दिवश्चिदा ते रुचयन्त रोका उषो विभातीरनु भासि पूर्वीः।
अपो यदग्न उशधग्वनेषु होतुर्मन्द्रस्य पनयन्त देवाः ॥ ७ ॥

ऋ० ३।७।१०

२३८ पृक्षप्रयजो द्रविणः सुवाचः सुकेतव उषसो रेवदूषुः।
उतो चिदग्ने महिना पृथिव्याः कृतं चिदेनः सं महे दशस्य ॥ १० ॥

ऋ० ३।१४।३

२३९ द्रवतां त उषसा वाजयन्ती अग्ने वातस्य पथ्याभिरच्छ।
यत् सीमञ्जन्ति पूर्व्यं हविर्भिरा वन्धुरेव तस्थतुर्दुरोणे ॥ ३ ॥

ऋ० ३।१५।२ (कात्य उत्कीलः। अग्निः। त्रिष्टुप्)

२४० त्वं नो अस्या उषसो व्युष्टौ त्वं सूर उदिते बोधि गोपाः।
जन्मेव नित्यं तनयं जुषस्व स्तोमं मे अग्ने तन्वा सुजात ॥ २ ॥

---

२३६ (स्तोमेभिः गीर्भिः) स्तोत्रों और वर्णनोंसे और (स्तोतॄणां उक्थैः नमस्यः) स्तोताओंके गानोंसे नमस्कार किया जाने योग्य अग्नि (प्रवावृधे) बढ रहा है। (ऋतस्य पूर्वीः संदृशः चकानः) सूर्यके पहिले आनेवाले प्रकाशकी इच्छा करनेवाला (दूतः) दूत अग्नि (उषसः विरोके सं अद्यौत्) उषाके सामने प्रकाशता है। (२)

यहां उषाके साथ अग्नि भी प्रकाशता है ऐसा कहा है।

२३७ (ते रोकाः दिवः चित् आरुचयन्तः) तेरे प्रकाश द्युलोकके सूर्य प्रकाशसे भी अधिक चमकते हैं। जब तू (पूर्वीः विभातीः उषः अनुभासि) पहिली तेजस्वी उषाओंके पीछेसे प्रकाशता है। (अग्ने) हे अग्ने ! (यत् वनेषु अपः उशधक्) जब वनोंमें तू जलोंको भी और गीले वृक्षोंको भी इच्छाके अनुसार जला देता है तब (देवाः मन्द्रस्य होतुः पनयन्त) देव प्रशंसनीय होता अग्निकी किरणोंकी प्रशंसा करते हैं। (७)

यहां उषःकालमें उषाके प्रकाशके पश्चात् सूर्य प्रकाशका आना वर्णन किया है।

२३८ हे (द्रविणः) धनवान् अग्ने ! (पृक्षप्रयजः) हवि जिनके लिये दिया जाता है, (सुवाचः सुकेतवः) उत्तम भाषण जिसमें होते हैं और उत्तम ध्वज जिनके लिये फहर रहे हैं ऐसी (उषसः रेवत् ऊषुः) उषायें धनके साथ प्रकाश रही हैं। हे (महे) बडे अग्ने ! (पृथिव्याः महिना) पृथिवीकी महिमासे (उत उ एनः कृतं चित्) जो हमने पाप किया हो उसको (संदशस्य) उत्तम रीतिसे दूर कर। (१०)

यहांके उषाके वर्णनमें हवन हो रहे हैं, मंत्र बोले जा रहे हैं, ध्वज फहर रहे हैं ऐसी उषाएं हैं। ऐसा वर्णन देखने योग्य है।

२३९ हे अग्ने ! (वाजयन्ती उषसा) अन्नवाली उषा और रात्री (ते द्रवतां) तेरे पास आवें। (वातस्य पथ्याभिः अच्छ) वायुके मार्गसे शीघ्र पहुंचो। (यत् सीं पूर्व्यं हविर्भिः अञ्जन्ति) इस पुराण पुरुषका हविसे सत्कार करते हैं। ये दोनों (दुरोणे बन्धुरा इव आ तस्थतुः) घरमें रथके दो बैठकोंपर बैठते हैं वैसे आकर बैठें। (३)

यहां उषा और रात्री दोनोंका वर्णन उषासे ही हुआ है। अर्थात् यह रात्री प्रभात कालकी उषाके साथ रहनेवाली है।

२४० (अस्याः उषसः व्युष्टौ त्वं नः) इस उषाके प्रकाशित होनेपर तू हमारा होकर रह। (उदिते सूरे त्वं गोपाः बोधि) सूर्यका उदय होनेपर तू हमारा रक्षक है, यह समझ लो (तन्वा सुजात अग्ने) हे शरीरसे उत्तम उत्पन्न हुए अग्ने ! (जन्म इव नित्यं तनयं) जन्मे हुए बालकके समान (मे स्तोमं जुषस्व) मेरे स्तोत्रका स्वीकार कर। (२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० । ३ । १७ । ३ (कतो वैश्वामित्रः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

२४१ त्रीण्यायूंषि तव जातवेदास्तिस्र आजानीरुषसस्ते अग्ने ।
ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वानथा भव यजमानाय शं योः ॥ ३ ॥

ऋ० ३ । २० । १ (गाथी कौशिकः । विश्वे देवाः । त्रिष्टुप्)

२४२ अग्निमुषसमश्विना दधिक्रां व्युष्टिषु हवते वह्निरुक्थैः ।
सुज्योतिषो नः शृण्वन्तु देवाः सजोषसो अध्वरं वावशानाः ॥ १ ॥

ऋ० ३ । २० । ५

२४३ दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं बृहस्पतिं सवितारं च देवम् ।
अश्विना मित्रावरुणा भगं च वसून् रुद्राँ आदित्याँ इह हुवे ॥ ५ ॥

ऋ० ३ । ३० । १३ (गाथिनो विश्वामित्रः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

२४४ दिदृक्षन्त उषसो यामन्नक्तोर्विवस्वत्या महि चित्रमनीकम् ।
विश्वे जानन्ति महिना यदागादिन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ॥ १३ ॥

ऋ० ३ । ३१ । ४ (कुशिक ऐषीरथिः, गाथिनो विश्वामित्रो वा । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

२४५ अभि जैत्रीरसचन्त स्पृधानं महि ज्योतिस्तमसो निरजानन् ।
तं जानतीः प्रत्युदायन्नुषासः पतिर्गवामभवदेक इन्द्रः ॥ ४ ॥

उषाकी उत्पत्ति होते ही अग्नि प्रदीप्त करते हैं । इसलिये अग्निसे कहा है कि तू उषःकालमें हमारा संरक्षक होकर रह ।

तीन उषाएँ

२४१ हे (जातवेदः) वेद जिससे हुए ऐसे अग्ने ! (तव त्रीणि आयूंषि) तेरे तीन आयुष्य अर्थात् जीवन हैं । हे अग्ने ! (ते आजानीः तिस्रः उषसः) तेरी माताएं तीन उषाएं हैं । हे विद्वान् । (ताभिः देवानां अवः यक्षि) उनसे देवोंको हवि पहुंचाओ । तथा (अथ यजमानस्य शं योः भव) यजमानको कल्याण और सुख देनेवाला हो । (३)

यहां उषाएं तीन हैं ऐसा कहा है । प्रारंभ, मध्य और सूर्योदयकी ऐसे उषाके ३ भेद होते हैं ।

२४२ (व्युष्टिषु उक्थैः वह्निः) उषःकालमें स्तोत्रोंसे हवन करनेवाला अग्नि, उषा, अश्विनौ और दधिक्राकी स्तुति गाता है । (अध्वरं वावशानाः) हिंसारहित यज्ञकी इच्छा करनेवाले (सजोषसः) एक मतसे रहनेवाले (सुज्योतिषः देवाः) तेजस्वी देव (नः शृण्वन्तु) हमारी बात सुनें । (१)

इसमें कहा है कि उषाके स्तोत्र प्रातःकालमें गाये जाते हैं ।

२४३ दधिक्रा अग्नि उषा देवी, बृहस्पति, सविता देव, अश्विनौ, मित्रावरुण, भग, वसू, रुद्र और आदित्य इन देवताओंके उद्देश्यसे मैं यहां प्रार्थना करता हूं । (५)

यहां प्रार्थनाके देवोंमें उषाका नाम है ।

२४४ (विश्वे) सब लोग (विवस्वत्या अक्तोः उषसः यामन्) जानेवाली रात्रीके अन्तमें उषाके समयमें (महि चित्रं अनीकं दिदृक्षन्तः) बडा विलक्षण सूर्यका तेज देखते हैं । (महिना जानन्ति) वे महत्त्वपूर्ण कर्मोंको जानते हैं कि (यत् आगात्) अब उषःकाल आगया है । (इन्द्रस्य कर्म पुरूणि सुकृता) अब ये इन्द्रके ही उत्तम कर्म हैं । (१३)

उषाको उत्पन्न करना इन्द्रका महत् कर्म है ।

२४५ (जैत्रीः स्पृधानं अभि असचन्त) विजय प्राप्त करनेवाले वीर स्पर्धा करनेवाले स्वामीके पास आते हैं । (तमसः महि ज्योतिः निरजानन्) अन्धकारसे बडा तेज बाहर आया है । (तं जानतीः उषासः प्रत्युदायन्) उसको जाननेवाली उषायें उसके संमुख गयीं । तब (इन्द्रः गवां एकः पतिः अभवत्) इन्द्र गौओंका अथवा किरणोंका एक ही स्वामी हुआ । (४)

उषाएं सूर्यके संमुख जाती हैं और उसका स्वागत करती है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ३।३१।१५ (कुशिक ऐषीरथिः, गाथिनो विश्वामित्रो वा। इन्द्रः। त्रिष्टुप्)

२४६ महि क्षेत्रं पुरुश्चन्द्रं विविद्वानादित् सखिभ्यश्चरथं समैरत् ।
इन्द्रो नृभिरजनद् दीद्यानः साकं सूर्यमुषसं गातुमग्निम् ॥ १५ ॥

ऋ० ३।३२।८ (गाथिनो विश्वामित्रः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्)

२४७ इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे ।
दाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां जजान सूर्यमुषसं सुदंसाः ॥ ८ ॥

ऋ० ३।४४।२

२४८ हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्यं हर्यन्नरोचयः ।
विद्वांश्चिकित्वान् हर्यश्व वर्धस इन्द्र विश्वा अभि श्रियः ॥ २ ॥

ऋ० ३।५५।१ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा। विश्वे देवाः। त्रिष्टुप्)

२४९ उषसः पूर्वा अध यद् व्यूषुर्महद् वि जज्ञे अक्षरं पदे गोः ।
व्रता देवानामुप नु प्रभूषन् महद् देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १ ॥

ऋ० ३।५८।१ (गाथिनो विश्वामित्रः। अश्विनौ। त्रिष्टुप्)

२५० धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहानाऽन्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः ।
आ द्योतनिं वहति शुभ्रयामोषसः स्तोमो अश्विनावजीगः ॥ १ ॥

---

२४६ इन्द्रने (पुरुश्चन्द्रं महि क्षेत्रं विविद्वान्) बहुत सुवर्णवाला एक बडा क्षेत्र है ऐसा जान लिया और (आदित्) तत्काल ही (सखिभ्यः चरथं समैरत्) अपने मित्रोंको वहां जानेके लिये प्रेरणा की। इन्द्रने (नृभिः साकं दीद्यानः) अपने वीरोंके साथ सूर्य, उषा, पृथ्वीका मार्ग और अग्निको (अजनत्) निर्माण किया। वहां जानेके लिये मार्ग किया। (१५)

२४७ (विश्वे देवाः) सब देव (इन्द्रस्य पुरूणि सुकृता कर्म) इन्द्रके बहुत उत्तम किये कर्म तथा (व्रतानि) व्रतोंको (न मिनन्ति) विनष्ट नहीं कर सकते, (यः पृथिवीं उत इमां द्यां दाधार) जिसने पृथिवीका और इस द्युलोकका धारण किया है और (सुदंसाः) उत्तम कर्म करनेवाले इन्द्रने (सूर्यं उषसं जजान) सूर्य और उषाको निर्माण किया। (८)

इन्द्रने उषाको निर्माण किया है।

उषाका सत्कार करनेवाला इन्द्र

२४८ हे (हर्यश्व इन्द्र) हरिद्रंगके घोडोंवाले इन्द्र! (हर्यन्) प्रेम करनेवाले तूने (उषसं अर्चयः) उषाकी पूजा की और हे (हर्यन्) प्रेम करनेवाले इन्द्र! (सूर्यं अरोचयः) तूने सूर्यका तेज बढाया। (विद्वान् चिकित्वान्) ज्ञानी और विचारी ऐसा तू (विश्वाः श्रियः अभिवर्धसे) सब संपत्तियों बढाता है। (२)

इन्द्र उषाका सत्कार करता है।

अनेक उषाएं

२४९ (यत् पूर्वाः उषसः व्यूषुः) जब पहिली उषा प्रकाशित हो चुकी तब (गोः पदे महत् अक्षरं वि जज्ञे) भूमि स्थानसे एक बडा अविनाशी तेज प्रकट हुआ। (देवानां व्रताः उप प्रभूषन्) उसने देवोंके व्रतोंको उत्तम रीतिसे प्रभावि किया, (देवानां एकं महत् असुरत्वं) वह देवोंमें एक ही ब शक्तिशाली तत्त्व है (१)

उषाके पश्चात् सूर्यरूपी तेज प्रकट होनेका यह वर्णन है इस वर्णनमें सूर्यके उदयके पूर्व अनेक उषाओंका आना वर्णन कि है। यह उत्तरीय ध्रुवके स्थानमें ही होता है।

२५० (प्रत्नस्य धेनुः काम्यं दुहाना) पुराण पुरुषकी इच्छित वस्तु देती है। (दक्षिणायाः पुत्रः अन्तः चरति) दक्षिण दिशाका पुत्र सूर्य द्यावापृथिवीमें घूमता है। (शु यामा द्योतनिं आवहति) शुभ्र रथवाली उषा प्रकाशको ला है। (उषसः स्तोमः अश्विनौ अजीगः) उषाके स्तोत्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ४ । १ । ५ (वामदेवो गौतमः । अग्नीवरुणौ । त्रिष्टुप्)

२५१ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि ॥ ५ ॥ वा. य. ३।१४

ऋ० ४ । १ । १३

२५२ अस्माकमत्र पितरो मनुष्या अभि प्र सेदुर्ऋतमाशुषाणाः ।
अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तरुदुस्रा आजन्नुषसो हुवानाः ॥ १३ ॥

ऋ० ४ । १ । १७

२५३ नेशत् तमो दुधितं रोचत द्यौरुद् देव्या उषसो भानुरर्त ।
आ सूर्यो बृहतस्तिष्ठदज्राँ ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ॥ १७ ॥

ऋ० ४ । २ । ८

२५४ यस्त्वा दोषा य उषसि प्रशंसात् प्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान् ।
अश्वो न स्वे दम आ हेम्यावान् तमंहसः पीपरो दाश्वांसम् ॥ ८ ॥

अश्विदेवोंको जगाया है । (९)

पुराण पुरुष द्युलोक है, उसकी धेनु उषा है । वह इष्ट सुख देती है । दक्षिण दिशाका पुत्र सूर्य है क्योंकि अनेक उषाओंके आनेपर उत्तरी ध्रुवमें प्रथम सूर्य दर्शन वहां दक्षिण दिशामें ही होता है । उषा इस तेजका प्रथम धारण करती है ।

२५१ हे अग्ने ! (सः त्वं नः अवमः ऊती भव) वह तू हमारे पास रहकर संरक्षण करनेवाला हो । (अस्याः उषसः व्युष्टौ नेदिष्ठः) इस उषाके प्रकाशित होनेपर हमारे पास रह । (रराणः वरुणं नः अव यक्ष्व) आनंदित होकर वरुणका हमारे लिये यजन द्वारा संतोष कर । (मृळीकं वीहि) यह सुखदायी हव्यका सेवन कर । (नः सुहवः एधि) हमारी प्रार्थना सुननेवाला होकर पास आ जावो । (५)

उषःकालमें अग्नि संरक्षक होकर रहे ।

२५२ (ऋतं आशुषाणाः) सत्यका पालन करनेवाले (अस्माकं मनुष्याः पितरः) हमारे मनुष्य देहधारी पितर (अत्र अभिप्रसेदुः) यहां बैठे थे । (उषसः हुवानाः) उषाओंकी प्रार्थना करनेवाले वे (अश्म-व्रजाः) पत्थरोंकी गोशालामें (सुदुघाः उस्राः) उत्तम दूध देनेवाली गौओंको (अन्तः वव्रे) अन्दर ही प्राप्त किया और (आजन्) उनको घरपर लाया । (१३)

उषाओंके स्तोत्र गानेवाले स्तोता गण यहां कहे हैं ।

२५३ (दुधितं तमः नेशत्) घोर अन्धकार दूर हुआ । (द्यौः रोचत्) द्युलोक प्रकाशित हुआ । (देव्या उषसः भानुः उत् अर्त) दिव्य उषाका प्रकाश ऊपर आया है । (सूर्यः बृहतः अज्रां आ तिष्ठत) सूर्य विशाल पर्वतोंपर प्रकाश रूपसे आ रहा है । वह (मर्तेषु ऋजु वृजिना च पश्यन्) मानवोंमें सरल और कुटिल कौन है इसको देखता है । (१७)

दिव्य उषाका प्रकाश हुआ यह वर्णन यहां है ।

२५४ (यः त्वा दोषा) जो तेरी रात्रीके समय (यः उषसि) जो उषःकालमें (प्रशंसात्) प्रशंसा करता है तथा जो (हविष्मान वा त्वा प्रियं कृणवते) अन्नका अर्पण करनेवाला तुझे प्रिय लगनेवाला कार्य करता है, (तं दाश्वांसं अंहसः आ पीपरः) उस दाताको पापसे तू पार ले जाता है (हेम्यावान् अश्वः स्वे दमे) सुवर्ण भूषणवाला घोडा जैसा अपने स्थानमें बैठनेवालेको पार कर देता है । (८)

उषःकालमें अग्निकी प्रशंसा की जाती है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ४ । २ । १५

२५५ अधा मातुरुषसः सप्त विप्रा जायेमहि प्रथमा वेधसो नॄन् ।
दिवस्पुत्रा अंगिरसो भवेमाऽद्रिं रुजेम धनिनं शुचन्तः ॥ १५ ॥

ऋ० ४ । २ । १९

२५६ अकर्म ते स्वपसो अभूम ऋतमवस्रन्नुषसो विभातीः ।
अनूनमग्निं पुरुधा सुश्चन्द्रं देवस्य मर्मृजतश्चारु चक्षुः ॥ १९ ॥

ऋ० ४ । ३ । ११

२५७ ऋतेनाद्रिं व्यसन् भिदन्तः समंगिरसो नवन्त गोभिः ।
शुनं नरः परि षदन्नुषासमाविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ॥ ११ ॥

ऋ० ४ । ५ । १३

२५८ का मर्यादा वयुना कद्ध वाममच्छा गमेम रघवो न वाजम् ।
कदा नो देवीरमृतस्य पत्नीः सूरो वर्णेन ततनन्नुषासः ॥ १३ ॥

ऋ० ४ । १२ । २

२५९ इध्मं यस्ते जभरच्छश्रमाणो महो अग्ने अनीकमा सपर्यन् ।
स इधानः प्रति दोषामुषासं पुष्यन् रयिं सचते घ्नन्नमित्रान् ॥ २ ॥

उषाके सात पुत्र

२५५ (अध मातुः उषसः सप्त विप्राः जायेमहि) अब उषा मातासे हम सात ज्ञानी पुत्र उत्पन्न होते हैं। (प्रथमाः वेधसः नॄन्) प्रथम हुए हम ज्ञानी लोगोंकी सेवाके लिये लगते हैं। (अंगिरसः दिवः पुत्राः भवेम) हम अंगिरस सूर्यके पुत्र हुए हैं और (शुचन्तः धनिनं अद्रिं रुजेम) हम तेजस्वी बनकर धनयुक्त पर्वतको फोडकर धन प्राप्त करेंगे। (१५)

उषा माता है और उसके सात ज्ञानी पुत्र हैं जो लोगोंकी सेवा करनेके लिये उत्पन्न होते हैं।

२५६ (ते अकर्म) तेरा कार्य हमने किया है। (स्वपसः अभूम) इससे हम उत्तम कर्म करनेवाले होगये हैं। (विभातीः उषसः ऋतं अवस्रन्) तेजस्वी उषाओंने यज्ञकर्म चलाया है। (देवस्य मर्मृजतः चारुः चक्षुः) शोधक देवके सुंदर नेत्ररूपी (सुश्चन्द्रं अग्निं) तेजस्वी अग्निको (पुरुधा अनूनं) बहुत प्रकारसे बढाया है। (१९)

उषा आते ही यज्ञ शुरू होते हैं।

२५७ (अंगिरसः ऋतेन अद्रिं भिदन्तः व्यसन्) अंगिरस सत्ययज्ञसे पर्वतको तोड रहे थे। तब उन्होंने (गोभिः संनवन्त) गौओंको प्राप्त किया। (नरः शुनं उषासं परिषदन्) उन मनुष्योंने सुखदायी उषःकालमें सभा करके (अग्नौ जाते) अग्नि प्रज्वलित होनेपर (स्वः आविः अभवत्) सूर्यको प्रकट किया। (११)

मनुष्य उषःकालमें यज्ञमंडपमें जमा होते हैं और अग्निको प्रदीप्त करते हैं।

२५८ (का मर्यादा) कौनसी मर्यादा है ? (कत् ह वयुना) कौनसे कर्म करने हैं ? (रघवः वाजं न) शीघ्रगामी घोडे युद्धमें जाते हैं वैसे हम (वामं अच्छा गमेम) धन प्राप्त करनेके लिये शीघ्र जांय। (अमृतस्य पत्नीः देवीः उषासः) अमरदेवकी पत्नीयां देवी उषाएं (कदा नः सूरः वर्णेन ततनन्) कब हमें सूर्यके प्रकाशसे प्रकाशित करेंगे ? हमारे यशको कब फैलायेंगी ? (१३)

उषायें सूर्यके प्रकाशको फैलाती हैं।

२५९ (यः शश्रमाणः ते इध्मं जभरत्) जो कोई श्रम करके तेरे लिये समिधा देता है ? हे (महः अग्ने) बडे अग्ने ! (अनीकं आ सपर्यन्) तेरे प्रकाशका सत्कार जो कोई करता है ? (सः इधानः प्रति दोषां उषासं पुष्यन्) वह तुझे प्रदीप्त करनेवाला रात्री और उषःकालमें पुष्ट होता जाता है और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ४ । १३ । १; अथर्व १८ । १ । २८

२६० प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यद् विभातीनां सुमना रत्नधेयम् ।
यातमश्विना सुकृतो दुरोणमुत् सूर्यो ज्योतिषा देव एति ॥ १ ॥

ऋ० ४ । १४ । ३

२६१ आवहन्त्यरुणीर्ज्योतिषागान्मही चित्रा रश्मिभिश्चेकिताना ।
प्रबोधयन्ती सुविताय देव्युषा ईयते सुयुजा रथेन ॥ ३ ॥

ऋ० ४ । १४ । ४

२६२ आ वां वहिष्ठा इह ते वहन्तु रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ ।
इमे हि वां मधुपेयाय सोमा अस्मिन् यज्ञे वृषणा मादयेथाम् ॥ ४ ॥

ऋ० ४ । १९ । ८ (इन्द्रः ।)

२६३ पूर्वीरुषसः शरदश्च गूर्ता वृत्रं जघन्वाँ असृजद् वि सिन्धून् ।
परिष्ठिता अतृणद् बद्बधानाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या ॥ ८ ॥

(अमित्रान् घ्नन्) शत्रुओंको मारता है और (रयिं सचते) धन प्राप्त करता है । (२)

उषःकालमें उठकर अग्निको प्रदीप्त करनेवाला धन प्राप्त करता है ।

२६० (सुमनाः अग्निः) उत्तम मनवाला अग्नि (विभातीनां उषसां अग्रं) तेजस्वी उषाओंके पूर्व ही (रत्नधेयं प्रत्यख्यत्) रत्न देनेका अपना रूप प्रकट करता है । हे (अश्विना) अश्विदेवों ! (सुकृतः दुरोणं यातं) सत्कर्म करनेवालेके घरको जाओ, क्योंकि (सूर्यः देवः ज्योतिषा उत् एति) सूर्यदेव अपने प्रकाशके साथ उदयको प्राप्त हो रहा है । (१)

उषाके पूर्व अग्नि प्रदीप्त होता है ।

२६१ (अरुणी मही चित्रा) लाल रंगवाली बडी विलक्षण (रश्मिभिः चेकिताना) किरणोंसे स्पष्ट दीखनेवाली (ज्योतिषा आवहन्ती आगात्) तेजके साथ उषा आरही है । यह (उषा देवी सुविताय बोधयन्ती) उषादेवी सुख प्राप्तिके लिये सबको जगाती है और (सुयुजा रथेन ईयते) उत्तम जोडे हुए रथसे चल रही है । (३)

यह सब उषाका ही वर्णन है ।

२६२ (ते वहिष्ठाः अश्वासः रथाः) वे बलवान तथा वेगवान घोडे और रथ (उषसः व्युष्टौ) उषाके प्रकाशित होनेपर (वां इह आवहन्तु) आप दोनोंको यहां ले आवें । (इमे सोमाः हि वां मधुपेयाय) ये सोमरस आपके मधुरपानके लिये ही तैयार किये हैं । हे (वृषणा) बलवान् अश्विदेवो ! (अस्मिन् यज्ञे मादयेथां) इस यज्ञमें प्रसन्न हो जाओ । (४)

उषाके प्रकाशित होनेपर अश्विदेव आते हैं ।

२६३ (पूर्वीः उषसः शरदः च गूर्ताः) पूर्वकी बहुत उषाएँ और रमणीय शरदतुओंमें (वृत्रं जघन्वान्) वृत्रको इन्द्रने मारा और (सिन्धून् वि असृजत्) नदियोंको बहने दिया । तथा वृत्रने (बद्बधानाः परिष्ठिताः सीराः) प्रतिबंधित की अतः स्थिर हुई नदियां इन्द्रने (पृथिव्याः स्रवितवे) पृथिवीके ऊपर प्रवाहित होनेके योग्य बना दीं । (८)

वृत्रको मारनेके पूर्व कई उषःकाल गये यह वृत्तं यहां है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ४ । २३ । ५.

२६४ कथा कदस्या उषसो व्युष्टौ देवो मर्तस्य सख्यं जुजोष ।
कथा कदस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन् कामं सुयुजं ततस्रे ॥ ५ ॥

ऋ० ४ । २३ । ७

२६५ द्रुहं जिघांसन् ध्वरसमनिन्द्रां तेतिक्ते तिग्मा तुजसे अनीका ।
ऋणा चिद् यत्र ऋणया न उग्रो दूरे अज्ञाता उषसो बबाधे ॥ ७ ॥

ऋ० ४ । ३० । ८

२६६ एतद्घेदुत वीर्यं इन्द्र चकर्थ पौंस्यम् । स्त्रियं यद्दुर्हणायुवं वधीर्दुहितरं दिवः ॥ ८ ॥

ऋ० ४ । ३० । ९ (इन्द्रोषसौ । गायत्री)

२६७ दिवश्चिद् घा दुहितरं महान् महीयमानाम् । उषासमिन्द्र सं पिणक् ॥ ९ ॥

ऋ० ४ । ३० । १०-११

२६८ अपोषा अनसः सरत् संपिष्टादह बिभ्युषी । नि यत् सीं शिश्नथद् वृषा ॥ १० ॥
२६९ एतदस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्या । ससार सीं परावतः ॥ ११ ॥

---

२६४ (अस्याः उषसः व्युष्टौ) इस उषाका प्रकाश होनेपर इन्द्रने (मर्तस्य सख्यं) मनुष्यके साथ मित्रत्व (कथा कद् जुजोष) कब और कैसा स्वीकार किया ? (कथा कद् अस्य सखिभ्यः सख्यं) कब और कैसी इसकी मित्रोंके साथ मित्रता होती है (ये अस्मिन् सुयुजं कामं ततस्रे) जो इसमें योग्य भक्ति रखते हैं ? (५)

इन्द्रका द्वेष करनेवाली स्त्रीका वध

२६५ इन्द्र (द्रुहं ध्वरसं अनिन्द्रां जिघांसन्) द्रोही घातक इन्द्रका द्वेष करनेवाली शत्रुस्त्रीका नाश करनेकी इच्छासे (तुजसे तिग्मा अनीका तेतिक्ते) उसका वध करनेके लिये तीक्ष्ण शस्त्रोंको भी अधिक तीक्ष्ण करता है । (यत्र ऋणा नः चित्) जहां हमारे ऋण हमें बाधा करते हैं, वहां (उग्रः ऋणयाः) उग्र ऋणको दूर करनेवाला इन्द्र (अज्ञाताः उषसः दूरे बबाधे) अज्ञात उषाओंको दूर ही रखता है । हमारे ऊपर वे दिन नहीं आते कि जिसमें ऋणके कष्ट हमें दुःख दे सकें । (७)

उषाका रथतोड दिया

२६६ ' दुष्ट विचार करनेवाली स्वर्गकन्या स्त्रीका इन्द्रने वध किया । यह इन्द्रने बडा पराक्रमका कार्य किया । ' (८)

मं. १० । १३८ । ५ देखो इसमें भी उषाका रथ तोडनेका वर्णन है ।

२६७ हे इन्द्र ! (दिवः दुहितरं चित् घ) स्वर्गकन्या उषाको भी वह (महीयमानां उषासं) बडी घमण्ड करने लगी इसलिये उस उषाको (महान्) तू महान् है इसलिये (सं पिणक्) चूर्णित किया, नष्ट किया । (९)

इन्द्रने बहुत घमण्ड करनेके कारण उषाका नाश किया । इसलिये बडेकी पुत्री होनेपर भी इन्द्र किसीके अपराधकी क्षमा नहीं करता यह इसका तात्पर्य है ।

२६८ (वृषा यत् सीं नि शिश्नथत) बलवान् इन्द्रने जब इसके रथको तोडा, तब (उषाः अनसः संपिष्टात्) उषा उस टूटे रथसे (अह बिभ्युषी) घबरायी और (अप सरत्) दूर होगई । (१०)

२६९ (अस्याः एतत् सुसंपिष्टं अनः) इसका वह चूर्णित हुआ रथ (विपाश्याः शये) विपाशा नदीके तीरपर पडा है और (सीं परावतः ससार) वह उषा वहांसे दूर चली गयी । (११)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ४ । ३९ । १ (दधिक्राः । त्रिष्टुप्)

२७० आशुं दधिक्रां तमु नु ष्टवाम दिवस्पृथिव्या उत चर्किराम ।
उच्छन्तीर्मामुषसः सूदयन्त्वति विश्वानि दुरितानि पर्षन् ॥ १ ॥

ऋ० ४ । ३९ । ३

२७१ यो अश्वस्य दधिक्राव्णो अकारीत् समिद्धे अग्ना उषसो व्युष्टौ ।
अनागसं तमदितिः कृणोतु स मित्रेण वरुणेना सजोषाः ॥ ३ ॥

ऋ० ४ । ४० । १

२७२ दधिक्राव्ण इदु नु चर्किराम विश्वा इन्मामुषसः सूदयन्तु ।
अपामग्नेरुषसः सूर्यस्य बृहस्पतेरांगिरसस्य जिष्णोः ॥ १ ॥

ऋ० ४ । ४० । २

२७३ सत्वा भरिषो गविषो दुवन्यसच्छ्रवस्यादिष उषसस्तुरण्यसत् ।
सत्यो द्रवो द्रवरः पतंगरो दधिक्रावेषमूर्जं स्वर्जनत् ॥ २ ॥

ऋ० ४ । ४५ । २ (अश्विनौ । जगती)

२७४ उद् वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु ।
अपोर्णुवन्तस्तम आ परीवृतं स्व१र्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः ॥ २ ॥

---

२७० (तं आशुं दधिक्रां उ नु स्तवाम) शीघ्र चलनेवाले उस घोडेकी हम स्तुति करते हैं (उत दिवः पृथिव्याः चर्किराम) और द्यु और पृथिवीका भी हम उसमें नाम लेंगे। (उच्छन्तीः उषसः मां सूदयन्तु) प्रकाशनेवाली उषायें मुझे उत्साहित करें और (विश्वानि दुरितानि अति पर्षत्) सब पापोंसे हमें बचावे। (१)

२७१ (यः समिद्धे अग्नौ) जो अग्नि प्रदीप्त होनेपर (उषसः व्युष्टौ) उषाके प्रकाशनेपर (अश्वस्य दधिक्राव्णः अकारीत्) दधिक्रा अश्वकी स्तुति करता है, (तं अदितिः अनागसं कृणोतु) उसे अदिति निष्पाप करे- तथा (वरुणेन मित्रेण सजोषाः) वरुण और मित्र मिलकर उसको निष्पाप बनावें। (३)

२७२ (दधिक्राव्ण इत् उ नु चर्किराम) दधिक्रा अश्वकी हम प्रशंसा गाते हैं, (विश्वाः उषसः मां इत् सूदयन्तु) सब उषाएं मुझे उत्साहित करें। हम आप्, अग्नि, उषा, सूर्य व जयशाली आंगिरस बृहस्पतिकी स्तुति गाते हैं। (१)

२७३ (सत्वा) बलवान् (भरिषः) पोषण करनेवाला, (गविषः) गौओंकी इच्छा करनेवाला, (दुवन्यसत्) उपासकोंमें रहनेवाला, (श्रवस्यात्) यशकी इच्छा करनेवाला, (तुरण्यसत्) त्वरा करनेवाला (उषसः इषः) उषःकालमें अन्न चाहनेवाला, (सत्यः) सत्यनिष्ठ, (द्रवः द्रवरः) वेगवान् और अधिक वेगवाला (पतंगरः) कूदते हुए जाननेवाला (दधिक्रावा) दधिक्रावा घोडा हमारे लिये (इषं ऊर्जं स्वः जनत्) अन्न, बल और सुख देवे। (२)

यह उत्तम घोडेका वर्णन है।

२७४ (वां मधुमन्तः पृक्षासः उत् ईरते) तुम्हारे मीठासभरे अन्न ऊपर आरहे हैं (उषसः व्युष्टिषु अश्वासः रथाः) उषाके प्रकाशित होनेपर घोडे और रथ बाहर आरहे हैं। (परीवृतं तमः अप आ ऊर्णुवन्तः) घेरे अन्धकारको दूर करके (स्वः न रजः शुक्रं आ तन्वन्त) सूर्यके समान अन्तरिक्षमें प्रकाश फैलाते हैं। (२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ४।५५।९ (विश्वेदेवाः गायत्री)

२७५ उषो मघोन्या वह सूनृते वार्या पुरु । अस्मभ्यं वाजिनीवति ॥ ९ ॥

ऋ० ५।१।१ (बुधगविष्ठिरावात्रेयौ । अग्निः । त्रिष्टुप्)

२७६ अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ।
यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ ॥ १ ॥

वा. य. १५।२४; अथर्व० १३।२।४६

ऋ० ५।१।४

२७७ अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति ।
यदीं सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नाम् ॥ ४ ॥

ऋ० ५।२८।१ (विश्ववारात्रेयी । अग्निः । त्रिष्टुप्)

२७८ समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत् प्रत्यङ्ङुषसमुर्विया वि भाति ।
एति प्राची विश्ववारा नमोभिर्देवाँ ईळाना हविषा घृताची ॥ १॥

ऋ० ५।३७।१ (भौमोऽत्रिः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

२७९ सं भानुना यतते सूर्यस्याऽऽजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चाः ।
तस्मा अमृध्रा उषसो व्युच्छान् य इन्द्राय सुनवामेत्याह ॥ १ ॥

---

२७५ हे (वाजिनीवति सूनृते मघोनि उषः) अन्नवाली, उत्तम भाषण करनेवाली धनवाली उषा ! (असंभ्यं वार्या पुरु आ वह) हमारे लिये स्वीकारने योग्य बहुत धन ले आओ ।(९)

उषाका सत्कार

२७६ (धेनुं इव) दूध देनेवाली गौके सामने जैसे जाते हैं उस तरह (आयतीं उषासं प्रति) आनेवाली उषाके सामने जानेके लिये (जनानां समिधा) लोगोंकी समिधाओंसे (अग्निः अबोधि) अग्नि जाग उठा है (यह्वाः इव वयां प्र उज्जिहानाः) बडे वृक्ष जैसे शाखाओंको ऊपर प्रेरित करते हैं उस तरह इस अग्निकी (भानवः नाकं अच्छ प्र सिस्रते) ज्वालाएँ स्वर्गकी ओर अच्छी तरह जा रही हैं ।(१)

यहां उषाके सन्मुख अग्नि जाता है और सन्मानपूर्वक उषाको लाता है ऐसा कहा है । स्त्रीका भी इतना संमान होना चाहिये, यह बोध यहां मिलता है ।

२७७ (देवयतः मनांसि) देवत्वको प्राप्त करनेवालोंके मन (अच्छ अग्निं) अग्निके पास जाते हैं (सूर्ये चक्षूंषि संचरन्ति इव) सूर्यमें जैसे आंख लगते हैं । (यत् ईं विरूपे उषसा सुवाते) जब इसको विरुद्ध रूपवाली रात्री और उषाएं उत्पन्न करती हैं तब (अह्नां अग्रे श्वेतः वाजी जायते) दिनोंके प्रारंभमें श्वेत घोडा अर्थात् अग्नि उत्पन्न होता है ।(४) उषःकालमें अग्नि प्रदीप्त करते हैं, वह सूर्योदयकालमें बढता है । रात्री और उषा ये दोनों विरुद्ध रंगरूपवाली स्त्रियां अग्निको उत्पन्न करती है ।

२७८ (समिद्धः अग्निः) प्रज्वलित हुआ अग्नि (शोचिः दिवि अश्रेत्) अपने तेजको आकाशमें भेजता है । (उषसं प्रत्यङ् उर्विया विभाति) वह उषाकी ओर बडे तेजके साथ प्रकाशता है । (घृताची हविषा देवान् ईळाना) घृतकी आहुति और हवि अर्पण करती हुई देवोंकी स्तुति करनेवाली (विश्ववारा नमोभिः) सब प्रकारका वरणीय धन लानेवाली अन्नों और नमस्कारोंके साथ (प्राची एति) पूर्व दिशाकी ओर अग्निके सामने जाती है । (१)

अग्नि उषाका संमान करनेके लिये प्रकाशता है। ऐसा यहां कहा है ।

२७९ (सूर्यस्य भानुना सं यतते) सूर्यके प्रकाशसे अग्नि अपना संबंध जोडता है । यह अग्नि (आ जुह्वानः घृतपृष्ठः स्वञ्चाः) प्रार्थनापूर्वक घीकी आहुति देनेसे प्रज्वलित हो उठा है । (यः इन्द्राय सुनवाम इति आह) जो इन्द्रके लिये सोमरस तैयार करूंगा ऐसा कहता है (तस्मै अमृध्राः उषसः व्युच्छन्) उसके लिये कष्टरहित उषाएं प्रकाशती रहें । (१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ५।४५।१ (सदापृण आत्रेयः । विश्वेदेवाः । त्रिष्टुप्)

२८० विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थैरायत्या उषसो अर्चिनो गुः ।
अपावृत व्रजिनीरुत् स्वर्गाद् वि दुरो मानुषीर्देव आवः ॥ १ ॥

ऋ० ५।५१।८ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वेदेवाः । उष्णिक्)

२८१ सजूर्विश्वेभिर्देवेभिरश्विभ्यामुषसा सजूः । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण ॥ ८ ॥

ऋ० ५।५९।८ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः । त्रिष्टुप्)

२८२ मिमातु द्यौरदितिर्वीतये नः सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम् ।
आचुच्यवुर्दिव्यं कोशमेत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः ॥ ८ ॥

ऋ० ५।६२।८ (श्रुतविदात्रेयः । मित्रावरुणौ । त्रिष्टुप्)

२८३ हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टावयःस्थूणमुदिता सूर्यस्य ।
आ रोहथो वरुण मित्र गर्तमतश्चक्षाथे अदितिं दितिं च ॥ ८ ॥

ऋ० ५।७५।९ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ । पंक्तिः)

२८४ अभूदुषा रुशत्पशुराग्निरधाय्यृत्वियः ।
अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्रावमर्त्यो माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ९ ॥

---

२८० (विदा) ज्ञानपूर्वक (दिवः अद्रिं विष्यन्) द्युलोकसे वज्रको इन्द्रने फेंक दिया, (उक्थैः आयत्याः उषसः आर्चिनः गुः) स्तोत्रोंके साथ आनेवाली उषाओंके किरण बाहर आने लगे। (व्रजिनीः अपावृत) रात्री चली गयी, (स्वः उत् गात्) सूर्य ऊपर आगया है और (मानुषीः दुरः देवः वि आवः) मनुष्योंके घरोंके द्वार देवने खोल दिये हैं। मनुष्योंके व्यवहार शुरू हुए। (१)

२८१ हे (अग्ने) अग्ने ! (विश्वेभिः देवेभिः सजूः) सब देवोंके साथ (अश्विभ्यां उषसा सजूः) अश्विदेव और उषाके साथ एक मतसे (अत्रिवत् आ याहि) अत्रिके समान आओ और (सुते रण) सोम रसमें आनन्द प्राप्त करो। (८)

२८२ (अदितिः द्यौः) अमर्याद द्यौ (नः वीतये मिमातु) हमारे हविके-लिये वृष्टि करे, (दानुचित्राः उषसः सं यतन्तां) जलदानसे चित्रविचित्र उषाएं वृष्टिके लिये यत्न करें। हे ऋषे! (गृणाना रुद्रस्य एते मरुतः) स्तुति किये गये रुद्रके पुत्र ये मरुत् (दिव्यं कोशं आ चुच्युवुः) दिव्य कोशको मेघसे वृष्टिको-गिरा दें। (८)

२८३ (उषसः व्युष्टौ) उषाका प्रकाश होनेपर, (सूर्यस्य उदिता) सूर्यका उदय होनेपर (अयः स्थूणं हिरण्यरूपं) लोहोंके स्तंभोंपर सुनहरा रूप दिया है ऐसे (गर्तं) रथपर, हे मित्र और वरुण ! तुम दोनों (आ रोहथः) चढो और (अतः) वहांसे (अदितिं दितिं च चक्षाथे) अमर्याद और समर्याद विश्वको देखो। (८)

उषा आनेके बाद सूर्योदय होनेपर मित्र और वरुण रथपर चढते हैं।

२८४ (रुशत्पशुः उषा अभूत्) पशुओंको प्रकाशित करनेवाली उषा आगयी है। (ऋत्वियः अग्निः अधायि) ऋतुके अनुसार यजन करनेवाला अग्नि स्थापित हुआ है। (वां वृषण्वसू अमर्त्यः रथः अयोजि) आपका बल और धन लानेवाला अमर रथ जोडा गया है। हे (माध्वी दस्रा) शत्रुका नाश करनेवाले मीठास युक्त अश्विदेवो ! (मम हवं श्रुतं) मेरी प्रार्थना सुनो। (९)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ५।७६।१ (भौमोऽत्रिः। अश्विनौ। त्रिष्टुप्)

२८५ आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद् विप्राणां देवया वाचो अस्थुः।
अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ ॥ १ ॥

ऋ० ५।८१।२ (श्यावाश्व आत्रेयः। सविता। जगती)

२८६ विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे।
वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो वि राजति ॥ २ ॥ वा.य.१२।३

ऋ० ६।१५।५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजो वीतहव्य आंगिरसो वा। अग्निः। जगती)

२८७ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच उषसो न भानुना।
तूर्वन् न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः ॥ ५ ॥
वा० य० १७। १०

ऋ० ६।१७।५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्)

२८८ येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानोऽवासयोऽप दृळ्हानि दर्द्रत्।
महामद्रिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदसस्परि स्वात् ॥ ५ ॥

ऋ० ६।२८।१ (गावः। त्रिष्टुप्)

२८९ आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन् त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥ १॥ अथर्व. ४।२१।१

---

२८५ (उषसां अनीकं अग्निः) उषाओंका तेज जैसा यह अग्नि (आ भाति) प्रकाश रहा है, (विप्राणां देवया वाचः) ज्ञानियोंकी दिव्य वाणियां। (उत् अस्थुः) शुरू हुई हैं। हे (अश्विना) अश्विदेवो ! (पीपिवांसं घर्मं अच्छ) पीने योग्य इस सोमरसके पास (रथ्या अर्वाञ्चा इह नूनं आ यातं) रथसे यहां समीप आओ। (१)

२८६ (कविः विश्वा रूपाणि) ज्ञानी सविता सब रूपोंको (प्रति मुञ्चते) निर्माण करता है। (द्विपदे चतुष्पदे भद्रं प्रासावीत्) द्विपादों और चतुष्पादोंका कल्याण करता है। (वरेण्यः सविता नाकं वि अख्यत्) श्रेष्ठ सविता द्युलोकको प्रकाशित करता है। (उषसः अनु प्रयाणं वि राजति) उषाओंके पश्चात् आकर विराजता है। (२)

२८७ (पावकया चितयन्त्या कृपा) पवित्र करनेवाली और बुद्धि बढानेवाली कान्तिसे (यः क्षामन् रुरुचे) जो पृथ्वीपर प्रकाशित होता है, (भानुना उषसः न) जिस तरह प्रकाशसे उषाएं प्रकाशती हैं। (एतशस्य रणे तूर्वन् न यामन्) एतशके युद्धमें शत्रुका नाश करते हुए चढाई करनेवाला वीर (ततृषाणः अजरः न यः आघृणे) तृषासे पीडित और तरुण जैसे उस अग्निको तू प्रकाशित कर। (५)

२८८ (मन्दसानः) आनंदित होकर (येभिः सूर्यं उषसं अवासयः) जिन शक्तियोंसे सूर्य और उषाको तूने प्रकाशित किया और (दृळ्हानि अप दर्द्रत्) सुदृढ कीलोंको तोड दिया। हे इन्द्र ! (गाः परि महां अद्रिं सन्तं) गौओंके चारों ओर जो बडा कीला था, वह (अच्युतं) न हिलनेवाला होनेपर भी (स्वात् सदसः परि नुत्थाः) उसको अपने जडसे ही तुमने उखाड दिया। (५)

२८९ (गावः आ अग्मन्) गौवें आगयीं, (उत भद्रं अक्रन्) और उन्होंने कल्याण किया है। ये गौवें (गोष्ठे सीदन्तु) गोशालामें बैठें और (अस्मे रणयन्तु) हमें आनंदित करें। ये गौवें (इह पुरुरूपाः प्रजावतीः स्युः) यहां अनेक रंगरूपवाली और बछडोंसे युक्त हों और (इन्द्राय पूर्वीः उषसः दुहानाः) इन्द्रके लिये उषाके पूर्व दूध देती रहें। (१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ६ । ३० । ५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

२९० त्वमपो वि दुरो विषूचीरिन्द्र दृळ्हमरुजः पर्वतस्य ।
राजाभवो जगतश्चर्षणीनां साकं सूर्यं जनयन् द्यामुषासम् ॥ ५ ॥

ऋ० ६ । ३८ । ४

२९१ वर्धाद् यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद् ब्रह्म गिर उक्था च मन्म ।
वर्धाहैनमुषसो यामन्नक्तोर्वर्धान् मासाः शरदो द्याव इन्द्रम् ॥ ४ ॥

ऋ० ६ । ३९ । ३

२९२ अयं द्योतयदद्युतो व्य१क्तून् दोषा वस्तोः शरद इन्दुरिन्द्र ।
इमं केतुमदधुर्नू चिदह्नां शुचिजन्मन उषसश्चकार ॥ ३ ॥

ऋ० ६ । ४७ । ५ (गर्गो भारद्वाजः । सोमः । त्रिष्टुप्]

२९३ अयं विदच्चित्रदृशीकमर्णः शुक्रसद्मनामुषसामनीके ।
अयं महान् महता स्कंभनेनोद् द्यामस्तभ्नाद् वृषभो मरुत्वान् ॥ ५ ॥

ऋ० ६ । ५० । ८ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः । त्रिष्टुप्)

२९४ आ नो देवः सविता त्रायमाणो हिरण्यपाणिर्यजतो जगम्यात् ।
यो दत्रवाँ उषसो न प्रतीकं व्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि ॥ ८ ॥

---

२९० हे इन्द्र ! (त्वं दुरः वि) तूने द्वार खोलकर (अपः विषूचीः) जल प्रवाहोंको बहाया । तथा (पर्वतस्य दृळ्हं अरुजः) पर्वतका जो सुदृढ भाग था वह तुमने तोड दिया, (द्यां उषासं सूर्यं साकं जनयन्) द्योः उषा और सूर्यको साथ साथ प्रकट किया और (जगतः चर्षणीनां राजा अभवः) चलनेवालों और प्रजाजनोंका तू राजा हुआ है । (५)

२९१ (यं इन्द्रं यज्ञः उत सोमः वर्धात्) जिस इन्द्रको यज्ञ और सोम बढाता है तथा (ब्रह्म गिरः उक्था मन्म च वर्धात्) ज्ञान, स्तुति, साम और मंत्र जिसको बढाते हैं । (उषसः अह एनं वर्ध) उषाएं इसको बढाती हैं (अक्तोः यामन् वर्धान्) रात्रीका गमन जिसको बढाता है तथा (इन्द्रं द्यावः मासाः शरदः) इस इन्द्रको दिन, महिने और वर्ष बढाते हैं । (४)

२९२ (अयं अद्युतः अक्तून् वि द्योतयत्) इसने अंधकारमय रात्रीको भी प्रकाशित किया । हे इन्द्र ! इस (इन्दुः) सोमने (दोषा वस्तोः शरदः) रात्रीको और दिनको सालभर प्रकाशित किया । (इमं अह्नां केतु अदधुः) इस दिनके ध्वजको धारण किया और (उषसः शुचि जन्मन् चकार) उषाओंको शुद्ध प्रकाशमय किया । (३)

२९३ (शुक्रसद्मनां उषसां अनीके) शुद्ध उषाओंके समीपसे (चित्रदृशीकं अर्णः) विलक्षण सुंदर तेजवाला सूर्य (अयं विदत्) इस सोमने जान लिया है । (अयं महान् महता) इस बडे महान (मरुत्वान् वृषभः) मरुत वीरोंके साथ रहनेवाले बलवान वृष्टिकर्ताने (स्कंभवेन द्यां उत् अस्तभ्नात्) आधार देकर द्युलोकको ऊपर सुस्थिर किया है । (५)

२९४ (त्रायमाणः हिरण्यपाणिः) रक्षक सुवर्णके भूषण हाथोंपर धारण करनेवाला (यजतः) पूज्य (सविता देवः) सूर्य देव (नः आ जगम्यात्) हमारे पास आजाय । (यः दत्रवां उषसः न प्रतीकं) जो दाता उषाका सर्वस्व जैसा है वह (दाशुषे वार्याणि व्यूर्णुते) दाताको स्वीकार करने योग्य धन देता है । (८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ६।५२।४

२९५ अवन्तु मामुषसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः पिन्वमानाः ।
अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासोऽवन्तु मा पितरो देवहूतौ ॥ ४ ॥

ऋ० ६।६०।२ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी । त्रिष्टुप्)

२९६ ता योधिष्टमभि गा इन्द्र नूनमपः स्वरुषसो अग्न ऊळ्हाः ।
दिशः स्वरुषस इन्द्र चित्रा अपो गा अग्ने युवसे नियुत्वान् ॥ २ ॥

ऋ० ६।७२।२ (इन्द्रासोमौ । त्रिष्टुप्)

२९७ इन्द्रासोमा वासयथ उषासमुत् सूर्यं नयथो ज्योतिषा सह ।
उप द्यां स्कम्भथुः स्कंभनेनाप्रथतं पृथिवीं मातरं वि ॥ २ ॥

ऋ० ७।३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

२९८ तमिद् दोषा तमुषसि यविष्ठमग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः ।
निशिशाना अतिथिमस्य योनौ दीदाय शोचिराहुतस्य वृष्णः ॥ ५ ॥

ऋ० ७।५।५

२९९ त्वामग्ने हरितो वावशाना गिरः सचन्ते धुनयो घृताचीः ।
पतिं कृष्टीनां रथ्यं रयीणां वैश्वानरमुषसां केतुमह्नाम् ॥ ५ ॥

---

२९५ (जायमानाः उषसः मां अवन्तु) प्रकट होनेवाली उषायें मेरी रक्षा करें । (पिन्वमानाः सिन्धवः मा अवन्तु) भरपूर भरी नदियां मेरा संरक्षण करें । (ध्रुवासः पर्वतासः मा अवन्तु) स्थिर पर्वत मेरा संरक्षण करें । (देवहूतौ पितरः मा अवन्तु) देवयज्ञमें पितर मेरा संरक्षण करें । (४)

२९६ हे इन्द्र और अग्ने (गाः अपः स्वः उषसः ऊळ्हाः) गौवें, जलप्रवाह, सूर्य उषाएं जो राक्षसोंके द्वारा चुरायीं थी उनके लिये (ता अभियोधिष्टं) तुमनें युद्ध किया । (दिशः स्वः उपसः) दिशाएं सूर्यने उषाको प्राप्त किया । हे इन्द्र ! हे अग्ने ! (चित्राः अपः गाः) विलक्षण जलप्रवाह और गौवें तुम इस अपने रथको (नियुत्वान् युवसे) घोडे जोतकर प्राप्त करता है । (२)

२९७ हे इन्द्र और सोम ! तुम दोनोंने (उषासं वासयथः) उषाको प्रकाशसे बसाया । (ज्योतिषा सह सूर्यं उत् नयथः) प्रकाशके साथ सूर्यको तुमने ऊपर चढाया । (द्यां स्कंभनेन उप स्कम्भथुः) द्युलोकको आधार देकर स्थिर किया और (पृथिवीं मातरं वि अप्रथतं) पृथिवी माताको विस्तृत किया । (२)

२९८ (यविष्ठं अतिथिं तं इत् अग्निं) अत्यंत तरुण अतिथिके समान पूज्य इस अग्निको (दोषा उषसि) रात्रीमें तथा उषःकालमें (अस्य योनौ तं निशिशाना नरः) इसके स्थानमें उसको प्रदीप्त करनेवाले लोग (अत्यं न) घोडेके समान (तं मर्जयन्त) उसको शुद्ध करते हैं, उसकी सेवा करते हैं । (आहुतस्य वृष्णः शोचिः दीदाय) हवन किये गये इस बलवान अग्निकी ज्वाला अधिक तेजस्वी होती है । (५)

२९९ हे अग्ने ! (कृष्टीनां पतिं , कृषि करनेवाली प्रजाके स्वामी, (रयीणां रथ्यं) धनोंके संचालक, (उषसां अह्नां केतुं) उषाओंके समेत दिनोंके ध्वजके समान, (वैश्वानरं त्वां) तुझ वैश्वानरको (वावशाना हरितः) चाहनेवाले घोडे (सचन्ते) सेवा करते हैं । तथा (घृताचीः धुनयः गिरः सचन्ते) घृतमिश्रित हवीके अर्पणसे पापको धोनेवाली स्तुतियां भी तेरी सेवा करते हैं । (५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ७।६।५

३०० यो देह्योऽ३ अनमयद् वधस्नैर्यो अर्यपत्नीरुषसश्चकार ।
स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः ॥ ५ ॥

ऋ० ७।८।१

३०१ इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
नरो हव्येभिरीळते सबाध आग्निरग्र उषसामशोचि ॥ १ ॥

ऋ० ७।९।१

३०२ अबोधि जार उषसामुपस्थाद्धोता मन्द्रः कवितमः पावकः ।
दधाति केतुमुभयस्य जन्तोर्हव्या देवेषु द्रविणं सुकृत्सु ॥ ॥ १ ॥

ऋ० ७।९।३

३०३ अमूरः कविरदितिर्विवस्वान् त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः ।
चित्रभानुरुषसां भात्यग्रेऽपां गर्भः प्रस्व1 आ विवेश ॥ ३ ॥

ऋ० ७।१०।१

३०४ उषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद् दविद्युतद् दीद्यच्छोशुचानः ।
वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः ॥ १ ॥

आर्य पत्नी उषा

३०० (यः देह्यः वधस्नैः अनमयत्) जो आसुरी घातकोंको अपने आयुधोंसे विनम्र करता है (यः उषसः अर्यपत्नीः चकार) जो सूर्यपत्नी उषाको निर्माण करता है, (सः यह्वः अग्निः) उस महान् अग्निने (सहोभिः विशः निरुध्य) अपने सामर्थ्योंसे प्राजाका निरोध करके (नहुषः बलिहृतः चक्रे) प्रजाको कर देनेवाली बना दिया ।(५)

यहां 'अर्यपत्नीः उषसः' ये पद है। आर्योंकी पत्नियां उषा जैसी हों। 'अर्य' नाम यहां सूर्यका है। जैसी सूर्यकी पत्नी उषा है वैसी आर्यकी पत्नी उषा जैसी हो ।

३०१ (राजा अर्यः अग्निः नमोभिः सं इन्धे) यह श्रेष्ठ राजा अग्नि अन्नोंके हवनसे प्रकाशित हो रहा है। (यस्य प्रतीकं घृतेन आहुतं) जिसका रूप घीसे बढाया जाता है। (नरः सबाधः हव्येभिः ईळते) मनुष्य मिलकर हवनों द्वारा इसको पूजते हैं। वह (अग्निः उषसां अग्रे आ अशोचि) अग्नि उषाओंके सामने प्रकाशित हो रहा है। (१)

३०२ (जारः होता मन्द्रः) वयोवृद्ध, देवोंको बुलानेवाला, आनन्द देनेवाला, (कवितमः पावकः) अत्यंत ज्ञानी और पवित्रता करनेवाला अग्नि (उषसां उपस्थात् अबोधि) उषाओंके समीप जाग उठा है। यह (उभयस्य जन्तोः केतुं दधाति) दोनों प्रकारके प्राणियोंको ज्ञान देता है, (देवेषु हव्यं) देवोंको हवनीय द्रव्य और (सुकृत्सु द्रविणं) पुण्य कर्म करनेवालोंको धन देता है। (१)

३०३ (यः अमूरः कविः) जो अमूढ ज्ञानी, (अदितिः विवस्वान्) अदीन तेजस्वी, (सुसंसत् मित्रः अतिथिः) उत्तम साथी मित्र और पूज्य (नः शिवः) हमारे लिये शुभकारी, (चित्रभानुः) विशेष तेजस्वी (उषसां अग्रे भाति) उषाओंके अग्रभागमें प्रकाशता है। (सः अपां गर्भः) वह जालोंका, उत्पादक (प्रस्वः आविवेश) ओषधियोंके अन्दर प्रविष्ट होकर रहता है। (३)

३०४ (उषः न जारः) उषाके नाश करनेवाले सूर्यके समान (पृथु पाजः अश्रेत्) बहुत तेज यह अग्नि धारण करता है। (दविद्युतत् दीद्यत् शोशुचानः) अत्यंत चमकनेवाला तेजस्वी और प्रकाशमान (वृषा हरिः शुचिः) बलवान दुःखका हरण करनेवाला पवित्र अग्नि (धियः हिन्वानः) बुद्धि और कर्मोंको प्रेरित करता है और (भासा आभाति) अपने तेजसे प्रकाशता है। तथा (उशतीः अजीगः) सुखकी इच्छा करनेवालोंको जगाता है। (१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ७।१०।२

३०५ स्व१र्ण वस्तोरुषसामरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म ।
अग्निर्जन्मानि देव आ वि विद्वान् द्रवद् दूतो देवयावा वनिष्ठः ॥ २ ॥

ऋ० ७।१८।२० (इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

३०६ न त इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वा उषसो न नूत्नाः ।
देवकं चिन्मान्यमानं जघन्थाऽव त्मना बृहतः शम्बरं भेत् ॥ २० ॥

ऋ० ७।३३।७ (वसिष्ठपुत्राः इन्द्रो वा । त्रिष्टुप्)

३०७ त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेतस्तिस्रः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः ।
त्रयो घर्मास उषसं सचन्ते सर्वाँ इत् ताँ अनु विदुर्वसिष्ठाः ॥ ७ ॥

ऋ० ७।३५।१० (विश्वेदेवाः । त्रिष्टुप्)

३०८ शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः ॥ १० ॥

ऋ० ७।३९।२; अथर्व. १९।१०।१०

३०९ प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्पतीव बीरिट इयाते ।
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् ॥ २ ॥ वा. य.३३।४४

---

३०५ (अग्निः वस्तोः) अग्नि दिनके समय (उषसां अग्रे) उषाओंके आगे (स्वः न अरोचि) सूर्यके समान प्रकाशता है। (उशिजः न यज्ञं तन्वानाः) सुखकी इच्छा करनेवाले जैसे यज्ञ करते हैं और (मन्म) मननीय स्तोत्र पढते हैं। (विद्वान् दूतः देवयावा वनिष्ठः) वैसा विद्वान् दूत देवोंके पास जानेवाला (अग्निः देवः वि आ द्रवत्) अनेक प्रकारसे देवोंके सहायतार्थ गमन करता है। (२)

३०६ हे इन्द्र ! (ते पूर्वाः सुमतयः न संचक्षे) तेरी पुरातंन समयसे चली आयी शुभ कृपाएं अवर्णनीय हैं। तथा (रायः) धन भी (उषसः न) उषाओंके समान अवर्णनीय हैं तथा (नूत्नाः न) नूतन कृपाएं भी अवर्णनीय ही हैं। (मान्यमानं देवकं चित् जघन्थ) घमंडी देवशत्रुका तुमने वध किया और (त्मना बृहतः शंबरं अव भेत्) स्वयं ही बडे वज्रसे शंबर नामक असुरका नाश किया। (२०)

३०७ (भुवनेषु त्रयः रेतः कृण्वन्ति) इन भुवनोंमें तीन देव वीर्य निर्माण करते हैं। (ज्योतिरग्राः आर्याः तिस्रः प्रजाः) ज्योति जिनके अग्रभागमें रहती है ऐसे आर्य तीन प्रकारके प्रजाके रूपमें रहते हैं। (त्रयः घर्मासः उषसं सचन्ते) तीन प्रकारके यज्ञ उषाका सेवन करते हैं (वसिष्ठाः तान् सर्वान् इत् अनु विदुः) वसिष्ठ इन सबको जानते हैं। (७)

३०८ (त्रायमाणः सविता देवः) संरक्षक सूर्य देव (नः शं) हमारा कल्याण करे। (विभातीः उषसः) तेजस्वी उषाएं (नः शं भवन्तु) हमारा कल्याण करें (पर्जन्यः प्रजाभ्यः) पर्जन्य प्रजाजनोंके लिये (नः शं भवतु) तथा हमारे लिये कल्याण करनेवाला हो तथा (क्षेत्रस्य शंभुः पतिः नः शं अस्तु) क्षेत्रका सुखदायी स्वामी हमारे लिये सुख देनेवाला होवे। (१०)

३०९ (एषां सुप्रयाः बर्हिः) इनका अन्नसे भरपूर भरा बर्हि यज्ञमें (प्र ववृजे) प्रयुक्त होता रहे। (विश्पती इव) प्रजाओंके दोनों पालक (नियुत्वान्) अश्वोंसे युक्त वायु और पूषा ये दो देव (विशां स्वस्तये) प्रजाजनोंके कल्याणके लिये (अक्तोः उषसः) रात्रीमें और उषःकालसे प्रारंभ होनेवाले दिनमें (पूर्वहूतौ) प्रथम करनेकी प्रार्थनामें (बिरीठे आ इयाते) यज्ञस्थानमें आ जावें। (२).

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ७।४१।६ (भगः। त्रिष्टुप्)

३१० समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय ।
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु ॥ ६ ॥
अथर्व. ३।१६।६; वा. य. ३४।३९

ऋ० ७।४१।७ (उषसः। त्रिष्टुप्)

३११ अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥
अथर्व. ३।१६।७; वा. य. ३४।४०

ऋ० ७।४४।१ (दधिक्रादयः। जगती)

३१२ दधिक्रां वः प्रथममश्विनोषसमग्निं समिद्धं भगमूतये हुवे ।
इन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिमादित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः॥ १ ॥

ऋ० ७।४४।३ (दधिक्राः। त्रिष्टुप्)

३१३ दधिक्रावाणं बुबुधानो अग्निमुप ब्रुव उषसं सूर्यं गाम् ।
ब्रध्नं मंश्चतोर्वरुणस्य बभ्रुं ते विश्वास्मद् दुरिता यावयन्तु ॥ ३ ॥

ऋ० ७।४४।४ (दधिक्राः। त्रिष्टुप्)

३१४ दधिक्रावा प्रथमो वाज्यर्वाऽग्रे रथानां भवति प्रजानन् ।
संविदान उषसा सूर्येणाऽऽदित्येभिर्वसुभिरंगिरोभिः ॥ ४ ॥

---

३१० (शुचये पदाय) शुद्ध स्थानमें बैठनेके लिये (दधिक्रावा इव) श्वेत घोडेकी तरह (उषसः अध्वराय सं नमन्त) उषाएं यज्ञके लिये आ जांय। (वाजिनः अश्वाः रथं इव) वेगवान् घोडे रथको खीचते हैं, उस तरह (वसुविदं भगं नः अर्वाचीनं) धनवान भगको हमारे समीप (आ वहन्तु) ले आवें। (६)

३११ (भद्राः उषासः) कल्याण करनेवाली उषाएँ (अश्वावतीः गोमतीः) अश्वों और गौओंसे युक्त (वीरवतीः) वीरोंसे युक्त तथा (घृतं दुहानाः) घीका दोहन करनेवाली और (विश्वतः प्रपीताः) सब गुणोंसे युक्त होकर (नः सदं उच्छन्तु) हमारे घरोंको प्रकाशित करती रहें। (यूयं०) तुम सदा हमें कल्याणोंके साथ सुरक्षित रखो। (८)

३१२ (वः ऊतये प्रथमं दधिक्रां हुवे) आप सबकी सुरक्षाके लिये मैं सबसे प्रथम दधिक्रा नामक घोडेकी प्रशंसा गाता हूं। इसके पश्चात् अश्विदेव, उषा, प्रदीप्त अग्नि और भगकी प्रार्थना तुम सबकी सुरक्षाके लिये करता हूं। तथा इन्द्र, विष्णु, पूषा आदि देवोंके गुणोंका गान करता हूं। (१)

३१३ (दधिक्रावाणं बुबुधानः) दधिक्रावाको संबोधित करके मैं अग्निका उषा और सूर्यका गुणवर्णन करता हूं। (मंश्चतोः वरुणस्य ब्रध्नं बभ्रुं) घमण्डी शत्रुओंका विनाश करनेवाले वरुणके बडे तथा भूरे रंगके घोडेका मैं स्तवन करता हूं। (ते अस्मत् विश्वा दुरिता यावयन्तु) वे हमसे सब पापोंको दूर ले जावें। (३)

३१४ (प्रथमः वाजी अर्वा दधिक्रावा) सबसे मुख्य वेगवान् शीघ्रगामी दधिक्रावा अश्व (प्रजानन् रथानां अग्रे भवति) जानता हुआ रथके अग्रभागमें स्वयं ही जाकर रहता है और वह उषा, सूर्य आदि देवोंके साथ (सं विदानः) मिलकर रहता है (४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ७।६३।३ (सूर्यः । त्रिष्टुप्)

३१५ विभ्राजमान उषसामुपस्थाद्रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः ।
एष मे देवः सविता चच्छन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम ॥ ३ ॥

ऋ० ७।६७।२ (अश्विनौ । त्रिष्टुप्)

३१६ अशोच्यग्निः समिधानो अस्मे उपो अदृश्रन् तमसश्चिदन्ताः ।
अचेति केतुरुषसः पुरस्ताच्छ्रिये दिवो दुहितुर्जायमानः ॥ २ ॥

ऋ० ७।६८।९ (अश्विनौ । त्रिष्टुप्)

३१७ एष स्य कारुर्जरते सूक्तैरग्रे बुधान उषसां सुमन्मा ।
इषा तं वर्धदघ्न्या पयोभिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ९ ॥

ऋ० ७।६९।५

३१८ यो ह स्य वां रथिरा वस्त उस्रा रथो युजानः परियाति वर्तिः ।
तेन नः शं योरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन् ॥ ५ ॥

ऋ० ७।७१।१

३१९ अप स्वसुरुषसो नग्जिहीते रिणक्ति कृष्णीररुषाय पन्थाम् ।
अश्वामघा गोमघा वां हुवेम दिवा नक्तं शरुमस्मद्युयोतम् ॥ १ ॥

---

३१५ यह (विभ्राजमानः उषसां उपस्थात्) विशेष प्रकाशता हुआ सूर्य उषाओंके सामने (रेभैः अनुमद्यमानः उदेति) स्तोत्रपाठोंसे आनंदित होता हुआ उदयको प्राप्त होता है। (एषः देवः सविता चच्छन्द) यह सवितादेव मेरी कामनाकी पूर्ति करता है। (यः समानं धाम न प्रमिनाति) जो समान तेजस्वी स्थानको संकुचित नहीं करता। (३)

३१६ (अस्मे समिधानो अग्निः अशोचि) हमारे लिये प्रज्वलित हुआ अग्नि जगमगा रहा है। (तमसः अन्ताः चित् उप अदृश्रन्) अन्धकारके अन्तभाग दीखने लगे हैं। (दिवः दुहितः उषसः पुरस्तात्) स्वर्गकन्या उषाके सामने (जायमानः केतुः) प्रकट होनेवाला यह ध्वजरूपी केतु अर्थात् सूर्य (श्रिये अचेति) शोभा करनेके लिये प्रकट हो रहा है। (२)

३१७ (एषः स्यः सुमन्मा कारुः) यह वह उत्तम मननशील कारीगर कवि (उषसां अग्रे बुधानः) उषःकालके पहिले जाग्रत होकर (सूक्तैः जरते) स्तोत्रोंसे स्तुति करता है। (अघ्न्या पयोभि इषा तं वर्धत्) गौ दूधसे और अन्नसे उसको पुष्ट करती है। (यूयं०) आप अपने कल्याण करनेके सब साधनोंसे हमारा रक्षण करो। (९)

३१८ हे (रथिराः) रथमें बैठनेवालो ! (यः वां स्यः रथः) जो आपका वह रथ (युजानः वर्तिः परियातिः) घोडोंके साथ जोतनेपर सीधा घरको पहुंचता है। (तेन) उस रथसे हे अश्विदेवो ! (उषसः व्युष्टौ) उषाओंके प्रकाशित होनेपर (अस्मिन् यज्ञे) इस यज्ञमें (नः शं योः नि वहतं) हमारे लिये शान्ति और दुःखकी निवृत्ति ले आओ। (५)

३१९ (नक्) रात्री (स्वसुः उषसः अपजिहीते) अपनी बहिन उषासे दूर हटती है, (अरुषाय) सूर्यके लिये (कृष्णीः पन्थां रिणक्ति) रात्री मार्ग खुला कर देती है। (अश्वामघा गोमघा) घोडों और गौओंका वैभव पास रखनेवाले हम (वां हुवेम) आपको बुलाते हैं। तुम (दिवा नक्तं) दिन रात (शरुं असत् युयोतं) शत्रुको हमसे दूर करो। (१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ७।७२।३

३२० उदु स्तोमासो अश्विनोरबुध्रञ्जामि ब्रह्माण्युषसश्च देवीः ।
आविवासन् रोदसी धिष्ण्येमे अच्छा विप्रो नासत्या विवक्ति ॥ ३ ॥

ऋ० ७।७२।४

३२१ वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।
ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् बृहदग्नयः समिधा जरन्ते ॥ ४ ॥

ऋ० ७।८५।१ (इन्द्रावरुणौ । त्रिष्टुप्)

३२२ पुनीषे वामरक्षसं मनीषां सोममिन्द्राय वरुणाय जुह्वत् ।
घृतप्रतीकामुषसं न देवीं ता नो यामन्नुरुष्यतामभीके ॥ १ ॥

ऋ० ७।८८।४ (वरुणः । त्रिष्टुप्)

३२३ वसिष्ठं ह वरुणो नाव्याधादृषिं चकार स्वपा महोभिः ।
स्तोतारं विप्रः सुदिनत्वे अह्नां यान्नु द्यावस्ततनन् यादुषासः ॥ ४ ॥

ऋ० ७।९०।४ (वायुः । त्रिष्टुप्)

३२४ उच्छन्नुषसः सुदिना अरिप्रा उरु ज्योतिर्विविदुर्दीध्यानाः ।
गव्यं चिदूर्वमुशिजो वि वव्रुस्तेषामनु प्रदिवः सस्रुरापः ॥ ४ ॥

---

३२० (अश्विनोः स्तोमासः) अश्विदेवोंके स्तोत्र (देवीः उषसः) तेजस्वी उषाओंके (जामि ब्रह्माणि) बन्धुवत् स्तोत्रोंको भी (उत अबुध्रन्) जाग्रत कर चुके हैं। (इमे धिष्ण्ये रोदसी) इन बुद्धिमान् द्यु और पृथ्वीकी (आविवासन् विप्रः) परिचर्या करता हुआ ज्ञानी (नासत्या अच्छ विवक्ति) सत्य पालक अश्विदेवोंका उत्तम वर्णन करता है। (३)

३२१ हे अश्विदेवो! (उषासः वि उच्छन्ति चेत्) जब उषाएं अन्धेरा हटाती हैं तब (वां ब्रह्माणि कारवः प्रभरन्ते) आपके स्तोत्रोंको स्तोता गाते हैं। (देवः सविता ऊर्ध्वं भानुं अश्रेत्) सविता देव उच्चस्थानमें रहकर प्रकाशका आश्रय करता है। तब (समिधा अग्नयः बृहत् जरन्ते) समिधासे अग्नि बडे प्रशंसित अर्थात् प्रदीप्त होते हैं। (४)

३२२ (वां अरक्षसं मनीषां पुनीषे) आप दोनोंकी राक्षस भाव रहित बुद्धिको मैं पवित्र समझता हूं। इन्द्र व वरुणके लिये सोमका हवन करते हैं। (देवीं उषसं न घृतप्रतीकां) उषा देवीकी तरह यह स्तुति घीके समान तेजस्वी है। (ता) वे दोनों इन्द्र और वरुण (अभीके यामन् नः उरुष्यतां) युद्ध उपस्थित होनेपर हमारी सुरक्षा करें। (१)

३२३ (वसिष्ठं ह वरुणः नावि आ अधात्) वसिष्ठको वरुणने नौकापर चढाया, और (सु-अपाः महोभिः ऋषिं चकार) उत्तम कर्म करनेवाला ऋषिको अपने सामर्थ्योंसे बनाया। (विप्रः स्तोतारं अह्नां सुदिनत्वे यात्) ज्ञानी वरुण स्तोत्रपाठक वसिष्ठके पास उत्तम दिनमें गया और उसके यशको (उषासः ततन्) उषाओंने फैला दिया। (४)

३२४ उनके लिये (अरिप्राः सुदिनाः उषसः उच्छन्) निष्पाप दिनोंकी उषाएं प्रकाशित हो गयी हैं। वे दिन (दीध्यानाः उरु ज्योतिः विविदुः) प्रकाशित होकर विशेष ज्योतिको प्राप्त हुए। उन्होंने (उशिजः गव्यं ऊर्वं वि वव्रुः) इच्छा करके गौओंके समूहको प्राप्त किया (तेषां प्रदिवः आपः अनुसस्रुः) उनके लिये द्युलोकसे आये जलप्रवाह प्रवाहित होने लगे हैं। (४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७।९१।१ (वायुः । त्रिष्टुप्)

३२५ कुविदङ्ग नमसा ये वृधासः पुरा देवा अनवद्यास आसन् ।
ते वायवे मनवे बाधितायाऽवासयन्नुषसं सूर्येण ॥ १ ॥

ऋ० ७।९९।४ (इन्द्राविष्णू। त्रिष्टुप्)

३२६ उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम् ।
दासस्य चिद् वृषशिप्रस्य माया जघ्नथुर्नरा पृतनाज्येषु ॥ ४ ॥

ऋ० ८।५।२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ । गायत्री)

३२७ नृवद् दस्रा मनोयुजा रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् ॥ २ ॥

ऋ० ८।९।१७ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ । अनुष्टुप्)

३२८ प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि ।
प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत् ॥ १७ ॥ अथर्व २०।१४२।२

ऋ० ८।९।१८

३२९ यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।
आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम् ॥ १८ ॥ अथर्व २०।१४२।३

ऋ०।८।१९।३१ (सोभरिः काण्वः । अग्निः । प्रगाथः)

३३० तव द्रप्सो नीलवान् वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे ।
त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि ॥ ३१ ॥

---

३२५ (पुरा ये वृधासः देवाः) प्राचीन समयके वृद्ध स्तोतागण (कुवित् अंग नमसा) बहुत वार प्रिय स्तोत्रके कारण (अनवद्यासः आसन्) प्रशंसित हुए थे (बाधिताय मनवे) दुःखी मानवके सुखके लिये वे (वायवे) वायुकी और (सूर्येण उषसं अवासयन्) सूर्यके साथ उषाकी स्तुति करते रहे। (१)

३२६ (यज्ञाय उरुं लोकं चक्रथुः) यज्ञके लिये उन्होंने विस्तृत स्थान बनाया है। सूर्य और उषाको तथा अग्निको (जनयन्ता) तुम दोनों प्रकट करते हो। हे (नरा) नेता लोगो ! (वृषशिप्रस्य दासस्य चित्) बलवान् और सुरक्षित् शत्रुकी (मायाः पृतनाज्येषु जघ्नथुः) कुटिल योजनाओंको युद्धोंमें तुमने विनष्ट किया। (४)

३२७ हे (पृथु-पाजसा दस्रा अश्विना) विशेष सुन्दर शत्रु-नाशक अश्विदेवो ! (मनो युजा रथेन) मनकी इच्छासे जुड जानेवाले रथसे (नृवत् उषसं सचेथे) वीरके समान उषाके पास पहुंचो (२)

३२८ हे देवि ! (सूनृते महि) उत्तम भाषण करनेवाली बडी (उषः) उषा ! (अश्विना प्रबोधय) अश्विदेवोंको जगाओ। हे (यज्ञ होतर्) यज्ञमें हवन करनेवाले ! (आनुषक् मदाय) सतत हर्ष उत्पन्न करनेके लिये (बृहत् श्रवः) बडा अन्न भी दे दो। (१७)

३२९ हे उषा ! (यत् भानुना यासि) जब तू प्रकाशके साथ जाती है और (सूर्येण संरोचसे) सूर्यके साथ प्रकाशती है, उसी समय (अश्विनोः अयं रथः) अश्विदेवोंका यह रथ (नृपाय्यं वर्तिः आयाति) मानवोंके पालन करने योग्य घरके पास पहुंचता है। (१८)

३३० हे (सिष्णो) सिंचित होनेवाले अग्ने ! (तव द्रप्सः) तेरे लिये रखा यह सोमरस (नीलवान्) नीले रंगका है (वाशः ऋत्वियः) तेरे लिये यह प्रिय है और ऋतुके अनुकूल है। (इन्धानः आददे) तुझे प्रदीप्त करनेवाला इसको लेता है। (त्वं महीनां उषसां प्रियः असि) तू बडी उषाओंका प्रिय है और तू (क्षपः) रात्रीके समय (वस्तुषु राजसि) वस्तुओंमें प्रकाश करता है। (३१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ८ । २२ । १४ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ । सतोबृहती)

३३१ ताविद् दोषा ता उषसि शुभस्पती ता यामन् रुद्रवर्तनी ।
मा नो मर्ताय रिपवे वाजिनीवसू परो रुद्रावति ख्यतम् ॥ १४ ॥

ऋ० ८ । २७ । २ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः । प्रगाथः)

३३२ आ पशुं गासि पृथिवीं वनस्पतीनुषासा नक्तमोषधीः ।
विश्वे च नो वसवो विश्ववेदसो धीनां भूत प्रावितारः ॥ २ ॥

ऋ० ८ । ३५ । १ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ । त्रिष्टुप्)

३३३ अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुनाऽऽदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ १ ॥

ऋ० ८ । ४१ । ३ (नाभाकः काण्वः । वरुणः । महापंक्तिः)

३३४ स क्षपः परि षस्वजे न्यु१स्रो मायया दधे स विश्वं परि दर्शतः ।
तस्य वेनीरनु व्रतमुषस्तिस्रो अवर्धयन् नभन्तामन्यके समे ॥ ३ ॥

ऋ० ८ । ४३ । ५ (विरूप आंगिरसः । अग्निः । गायत्री)

३३५ एते त्ये वृथगग्नयः इद्धासः समदृक्षत । उषसामिव केतवः ॥ ५ ॥

ऋ० ८ । ४७ । १६ (त्रित आप्त्यः । आदित्योषसः । महापंक्तिः)

३३६ तदन्नाय तदपसे तं भागमुपसेदुषे ।
त्रिताय च द्विताय चोषो दुष्ष्वप्न्यं वहानेहसो व ऊतयः सुऊतयो
व ऊतयः ॥ १६ ॥

---

३३१ (तौ शुभस्पती) उन दो शुभकर्ता अश्विदेवोंको (दोषा इत्) रात्रीके समयपर और (तौ उषसि) उनको उषःकालमें भी हम बुलाते हैं और (ता रुद्रवर्तनी) उन दोनों रुद्रके मार्गसे जानेवाले अश्विदेवोंको (यामन्) यात्रा करते समय हम बुलाते हैं। हे (वाजिनीवसू रुद्रौ) बलरूप धनसे युक्त और शत्रुको रुलानेवाले वीरो ! (नः रिपवे मर्ताय) हमें शत्रुरूप मनुष्यको (मा परः अतिख्यतं) कभी न कह दो । शत्रुको हमारा पता न लगे ॥ (१४)

३३२ पशु पृथिवी वनस्पती और औषधीकी (उषासा नक्तं) सबेरे और शामको (आ गासि) तू स्तुति गाओ। (विश्ववेदसः विश्वे वसवः) सर्व धनवाले सब वसु (नः धीनां अवितारः प्रभूत्) हमारी बुद्धियोंके संरक्षक होवो । (२)

३३३ हे अश्विदेवो ! तुम अग्नि इन्द्र वरुण विष्णु आदित्यों वसुओं और रुद्रोंके संघोंसे (सचा भुवा) संयुक्त होकर (उषसा सूर्येण सजोषसा) उषा और सूर्यसे मिलकर (सोमं पिबतं) सोमको पीओ । (१)

३३४ (सः क्षपः परिषस्वजे) उसने रात्रीयोंको घेरा है, (उस्रः मायया निदधे) उषःकालको अपने सामर्थ्यसे धारण किया है। (दर्शतः सः विश्वं परि दधे) दर्शनीय वरुणने विश्वका भी धारण किया है । (वेनीः तिस्रः उषः) उसकी प्रिय तीनों उषाएं (तस्य व्रतं अनु अवर्धयन्) उसके नियमको बढाती हैं। (अन्यके समे नभन्तां) दूसरे सब शत्रु मर जांय । (३)

३३५ (एते त्ये अग्नयः) ये वे अग्नि (वृथग् इद्धासः) प्रत्येक प्रदीप्त होनेपर (उषसां केतवः इव) उषाओंके ध्वजोंके समान (समदृक्षत) दीख रहे हैं। (५)

३३६ (तत् अन्नाय) उसी अन्नका सेवन करनेवाले, (तत् अपसे) उसी कर्मको करनेवाले (तं भाग उपसेदुषे) उसी भागका सेवन करनेवाले त्रित और द्वितके हितके लिये हे (उषः) उषा ! तू (दुःस्वप्न्यं वह) दुष्ट स्वप्नके कारणको दूर कर । क्योंकि (वः ऊतयः अनेहसः) तुम्हारे संरक्षण निष्पाप हैं तथा (वः ऊतयः सुऊतमः) तुम्हारे संरक्षण उत्तम हैं । (१६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ८। ४७। १८ (त्रित आप्त्यः। आदित्योषसः। महापंक्तिः)

३३७ अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम्।
उषो यस्माद् दुष्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छत्वनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १८ ॥

ऋ० ८। ७३। १६ (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा। अश्विनौ। गायत्री)

३३८ अरुणप्सुरुषा अभूदकर्ज्योतिर्ऋतावरी। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १६ ॥

ऋ० ८। ९६। १ (तिरश्चीरांगिरसो, द्युतानो वा मारुतः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्)

३३९ अस्मा उषास आतिरन्त याममिन्द्राय नक्तमूर्म्याः सुवाचः।
अस्मा आपो मातरः सप्त तस्थुर्नृभ्यस्तराय सिन्धवः सुपाराः ॥ १ ॥

ऋ० ९। १०। ५ (काश्यपोऽसितो देवलो वा। पवमानः सोमः। गायत्री)

३४० आपानासो विवस्वतो जनन्त उषसो भगम्।
सूरा अण्वं वि तन्वते ॥ ५ ॥

ऋ० ९। ४१। ५ (मेध्यातिथिः काण्वः। पवमानः सोमः। गायत्री)

३४१ स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण।
उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ ५ ॥

ऋ० ९। ७१। ७ (ऋषभो वैश्वामित्रः। पवमानः। जगती)

३४२ परा व्यक्तो अरुषो दिवः कविर्वृषा त्रिपृष्ठो अनविष्ट गा अभि।
सहस्रणीतिर्यतिः परायती रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति ॥ ७ ॥

---

३३७ (अद्य अजैष्म) आज हमें विजय मिला है (असनाम) लाभ प्राप्त हुआ है (वयं अनागसः अभूम) हम निष्पाप हो गये हैं। हे उषा ! (यस्मात् दुष्वप्न्यात् अभैष्म) जिस दुष्ट स्वप्नसे हम डर रहे थे (तत् उच्छतु) वह दूर हो, (वः ऊतयः अनेहसः) तुम्हारे संरक्षण निष्पाप है, (वः ऊतयः सुऊतयः) आपके संरक्षण उत्तम हैं। (१८)

३३८ (उषा अरुणप्सुः अभूत्) उषा लाल रंगवाली हो गयी है। (ऋतावरी ज्योतिः अकः) सत्यनिष्ठ उस उषाने प्रकाश किया है (वां अवः अन्ति सत् भूतु) तुम्हारा संरक्षण समीपके साधनोंसे होवे। (१६)

३३९ (उषासः अस्मै यामं आतिरन्त) उषाओंने इस इन्द्रके लिये अपनी गतिको रोक लिया, (इन्द्राय ऊर्म्याः नक्तं सुवाचः) इन्द्रके लिये रात्रीयां उत्तर रात्रीमें उत्तम स्तोत्र पाठ करती हैं। (अस्मै सप्तमातरः आपः तस्थुः) इस इन्द्रके लिये सात बडे जलप्रवाह स्थिर हुए तथा (नृभ्यः तराय सिन्धवः सुपाराः) वीरोंके पार होनेके लिए नदियां सहज पार होने योग्य बन गयी। (१)

३४० (विवस्वतः आपानासः) इन्द्रके सोमपानके समय (उषसः भगं जनन्त) उषाएं सूर्यको उत्पन्न करती है। (सूराः अण्वं वि तन्वते) प्रसरणशील सोमरसके प्रवाह 'सूक्ष्म शब्द करते हैं। (५)

३४१ हे (विचर्षणे) प्रगतिशील ! (सः पवस्व) वह तू अब प्रवाहित हो। (मही रोदसी आपृण) बडे आकाश और पृथिवीको भरपूर भर दो (उषाः रश्मिभिः सूर्यः न) उषाएं किरणोंके साथ सूर्यको जैसी उत्पन्न करती है, वैसा प्रकाश भर दो। (५)

३४२ (परा व्यक्तः) दूरसे दीखनेवाला (अरुषः) लाल रंगवाला (दिवः कविः वृषा) दिव्य कवि और बलवान (त्रिपृष्ठ) तीन स्थानोंमें रहनेवाला (गाः अभि अनविष्ट) सोमरस गौवोंके दूधमें मिश्रित हुआ है। (सहस्रणीतिः यति) हजारों मार्गोंसे जानेवाला परंतु पात्रमें जानेवाला (परायतिः रेभः न) दूरतक पहुंचनेवाला स्तोताके समान (पूर्वीः उषसः विराजति) पहिली उषाओंके समय विराजता है। (७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ९ । ७५ । ३ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः । जगती)

३४३ अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभिर्येमानः कोश आ हिरण्यये ।
अभीमृतस्य दोहना अनूषताऽधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति ॥ ३ ॥

ऋ० ९ । ८३ । ३ (पवित्र आंगिरसः । पवमानः सोमः । जगती)

३४४ अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा बिभर्ति भुवनानि वाजयुः ।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ॥ ३ ॥

ऋ० ९ । ८४ । २ (वाच्यः प्रजापतिः । पवमानः सोमः । जगती)

३४५ आ यस्तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति ।
कृण्वन् त्संचृतं विचृतमभिष्टय इन्दुः सिषक्त्युषसं न सूर्यः ॥ २ ॥

ऋ० ९ । ८६ । १९ (सिकता निवावरी । पवमानः सोमः । जगती)

१४६ वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नः प्रतरीतोषसो दिवः ।
क्राणा सिन्धूनां कलशाँ अवीवशदिन्द्रस्य हार्द्याविशन् मनीषिभिः॥१९॥

ऋ० ९ । ८६ । २१ (पृश्नयोऽजाः । पवमानः सोमः । जगती)

३४७ अयं पुनान उषसो वि रोचयदयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत् ।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥ २१ ॥

---

३४३ (द्युतानः कलशान् अव अचिक्रदन्) तेजस्वी सोम कलशोंमें शब्द करता हुआ पहुंच गया, (नृभिः येमानः हिरण्यये कोशे आ) मनुष्यों द्वारा निचोडा हुआ सोम सुवर्ण पात्रमें रखा है, (ऋतस्य दोहना ईं अभि अनूषत) यज्ञके समय गौका दोहन करते हैं और (त्रिपृष्ठे अधि) तीन स्थानोंमें विराजनेवाला सोम (उषसः विराजति) उषाओंके समय प्रकाशता है । (३)

३४४ (अग्रियः पृश्निः उषसः अरूरुचत्) अनेक रंगोंके धुरीणने उषाओंको प्रकाशित किया (वाजयुः वृषा भुवनानि बिभर्ति) बलवान् समर्थ वीरने भुवनोंका धारण करता है। (मायाविनः अस्य मायया ममिरे) माया जाननेवाले इसकी कुशलतासे उत्पन्न हुए । (नृचक्षसः पितरः गर्भं आदधुः) मनुष्योंका निरीक्षण करनेवाले पितरोंने गर्भका धारण किया है। (३)

३४५ (यः अमर्त्यः भुवनानि आतस्थौ) जो अमर सोम सब भुवनोंमें रहा है । (यः सोमः तानि विश्वानि परि अर्षति) वही सोम उन सब भुवनोंके चारों ओर रहता है। (संचृतं विचृतं अभिष्टयः कृण्वन्) उसका संयोग और वियोग इष्ट प्राप्तिके लिये करता हुआ (इन्दुः) यह सोम (उषसं न सूर्यः सिषक्ति) सूर्यके समान उषाके पीछे चलता है । (२)

३४६ (मतीनां वृषा) मतियोंका बल बढानेवाला, (विचक्षणः) विशेष सूक्ष्म दृष्टीसे देखनेवाला, (अह्नः उषसः दिवः प्रतरिता) दिन उषा और प्रकाशको बढानेवाला सोम प्रवाहित हुआ । (सिन्धूनां क्राणा) नदियोंको उत्पन्न करनेवाला सोम (कलशान् अवीवशन्) कलशोंमें प्रविष्ट हुआ । (मनीषिभिः इन्द्रस्य हार्दि आविशन्) मननशील लोकोंके स्तोत्रोंके साथ इन्द्रके हृदयमें सोम प्रविष्ट हुआ । (१९)

३४७ (अयं पुनानः उषसः विरोचयत्) यह पवित्र होनेवाला सोम उषाओंको प्रकाशीत करता है । (अयं सिन्धुभ्यः लोककृत् अभवत् उ) यह सोम नदियोंके लिये पर्याप्त स्थान देनेवाला हुआ है । (अयं त्रिःसप्त आशिरं दुदुहानः) यह सोम इक्कीस प्रकार पात्रोंमें दूधके साथ मिलाया जाता है, (मत्सरः सोमः हृदे चारु पवते) आनंद देनेवाला सोम हृदयको आनन्द देनेके लिये प्रवाहित होता है । (२१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० ९।९०।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । पवमानः सोमः । त्रिष्टुप्)

३४८ उरु गव्यूतिरभयानि कृण्वन् त्समीचीने आ पवस्वा पुरंधी ।
अपः सिषासन्नुषसः स्व१र्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ॥ ४ ॥

ऋ० १०।१।१- (त्रित आप्त्यः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

३४९ अग्रेबृहन्नुषसा मूर्ध्वो अस्थान्निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषागात् ।
अग्निर्भानुना रुशता स्वंग आ जातो विश्वा सद्मान्यप्राः ॥ १ ॥वा. य. १२। १३

ऋ० १०।६।३

३५० ईशे यो विश्वस्या देववीतेरीशे विश्वायुरुषसो व्युष्टौ ।
आ यस्मिन् मना हवींष्यग्नावरिष्टरथः स्कभ्नाति शूषैः ॥ ३ ॥

ऋ० १०।११।३ - (आंगिर्हविर्धानः । अग्निः । जगती)

३५१ सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वत्युषा उवास मनवे स्वर्वती ।
यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुमग्निं होतारं विदथाय जीजनन् ॥ ३ ॥

ऋ० १०।२९।२- (ऐन्द्रो वसुक्रः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

३५२ प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।
अनु त्रिशोकः शतमावहन्नॄन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान् ॥ २ ॥

---

३४८ (उरु गव्यूतिः अभयानि कृण्वन्) विस्तीर्ण गोचर भूमि करके स्थानोंको निर्भय किया, (समीचीने पुरंधी आपवस्व) अब परस्पर संलग्न हुए विशेष बुद्धिमान द्यावा पृथिवीके लिये सोम प्रवाहित होवे । (अपः उषसः स्वः गाः सिषासन्) उदक, उषा, दिव्य लोक और प्रकाश इसको आधीन करके (अस्मभ्यं महः वाजान् संचिक्रदः) हमारे लिये विशेष बल लाकर तूने इसकी घोषणा की । (४)

३४९ (उषसां अग्रे) उषाओंके आनेके पूर्व (बृहत् ऊर्ध्वः अस्थात्) बडा ऊंचा होकर यह अग्नि ठहरा है । (तमसः निर्जगन्वान्) अन्धकारसे बाहर आकर (ज्योतिषा आ अगात्) प्रकाशसे प्रकट हो गया है । (रुशता भानुना स्वंगः अग्निः) तेजस्वी प्रकाशसे सुन्दर अंगवाला अग्नि (जातः विश्वा सद्मानि आ अप्राः) उत्पन्न होते ही सब स्थानोंको भरपूर भर देता है । (१)

३५० (यः विश्वस्याः देववीतेः ईशे) जो सब प्रकारकी देव-पूजाओंका स्वामी है, (विश्वायुः उषसः व्युष्टौ ईशे) जो पूर्णायु उषाओंके प्रकाशनेपर स्वामित्व करता है, (यस्मिन् अग्नौ) जिस अग्निमें (मना हवींषि) मननीय स्तोत्र और हविका (शूषैः अरिष्टरथः आस्कभ्नाति) शत्रुओंसे अप्रतिहत रथवाला याजक सुरक्षित रखता है । (३)

३५१ (सो चित् नु) वही (भद्रा क्षुमती यशस्वती) कल्याणकारिणी स्तुति योग्य यशस्विनी (स्वर्वती उषा) सूर्य लानेवाली उषा (मनवे उवास) मनुष्यका हित करनेके लिये उदयको प्राप्त हुई है । (यत् ईं उशन्तं क्रतुं होतारं अग्निं) जब इस यज्ञकी इच्छा करनेवाले देवोंको बुलानेवाले अग्निको याजक (विदथाय जीजनन्) यज्ञ करनेके लिये उत्पन्न करते हैं । (३)

३५२ (ते अस्याः उषसः) इस उषाके और (अपरस्याः) और दूसरी उषाके समयमें (नृणां नृतमस्य नृतौ प्र स्याम) मानवोंका अत्यंत हित करनेवाले उस इन्द्रके युद्धके नृत्यमें हम रहेंगे । (यः रथः ससवान् असत्) जो दातृत्व करनेवाला तुम्हारा रथ है वह (त्रिशोकः) तेजस्वी तीन शिखरोंवाला रथ (कुत्सेन) कुत्सके साथ (शतं नॄन् अनु आवहन्), सैंकडों मनुष्योंको पार ले गया था (२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १० । ३१ । ५ – (कवष ऐलूषः । विश्वेदेवाः । त्रिष्टुप्)

३५३ इयं सा भूया उषसामिव क्षा यद्ध क्षुमन्तः शवसा समायन् ।
अस्य स्तुतिं जरितुर्भिक्षमाणा आ नः शग्मास उप यन्तु वाजाः ॥ ५ ॥

ऋ० १० । ३१ । ७

३५४ किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।
संतस्थाने अजरे इतऊती अहानि पूर्वीरुषसो जरन्त ॥ ७ ॥

ऋ० १० । ३५ । २– (लुशो धानाकः । विश्वेदेवाः । जगती)

३५५ दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे मातॄन् त्सिन्धून् पर्वताञ्छर्यणावतः ।
अनागास्त्वं सूर्यमुषासमीमहे भद्रं सोमः सुवानो अद्या कृणोतु नः ॥२॥

ऋ० १० । ३५ । १

३५६ अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तो अग्नयो ज्योतिर्भरन्त उषसो व्युष्टिषु ।
मही द्यावापृथिवी चेततामपोऽद्या देवानामव आ वृणीमहे ॥ १ ॥

ऋ० १० । ३५ । ३

३५७ द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां सुविताय मातरा ।
उषा उच्छन्त्यप बाधतामघं स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ३ ॥

---

३५३ (इयं सा क्षा) यद् (भूमी उषसां इव भूयाः) उषाओंके समान प्रिय हो । (यत ह क्षुमन्तः शवसा समायन्) जहां अन्न लेकर बलवान् लोग इकट्ठे होते हैं । (अस्य जरितुः स्तुतिं भिक्षमाणाः) इस स्तोताकी स्तुतिमें हम अपना भाग रखते हैं (नः शग्मासः वाजाः उप आयन्तु) इसलिये हमारे पास कल्याणकारी धन आजाएं । (५)

३५४ (किं स्वित् वनं) कौनसा वह वन है, (कः च सः वृक्षः आस) और कौनसा वह वृक्ष था कि (यतः द्यावा पृथिवी निष्टतक्षुः) जहांसे ये द्यावा पृथिवी तैयार किये गये हैं ? ये (इतऊती अजरे संतस्थाने) स्वयं रक्षित जरारहित और सुस्थिर रहनेवाले हैं । (अहानि उषसः पूर्वीः जरन्त) दिन और उषा पहिलेसे जिसने उत्पन्न की उसकी स्तुति गाते हैं। (७)

३५५ (दिवः पृथिव्योः अवः आवृणीमहे) द्यु और पृथिवीसे संरक्षण हम चाहते हैं, (सिन्धून् मातॄन्) सिन्धु माताएं (शर्यणावतः पर्वतान्) शर्यणावत्के पर्वत इन सबसे हम संरक्षण प्राप्त करना चाहते हैं । (उषासं सूर्यं अनागास्त्वं ईमहे) उषा और सूर्यसे हम निष्पापत्व चाहते हैं । (सुवानः सोमः) निचोड कर तैयार किया सोम (अद्य नः भद्रं कृणोतु) आज हमारा कल्याण करे । (२)

३५६ (त्ये इन्द्रवन्तः अग्नयः अबुध्रं) वे इन्द्रके साथ रहनेवाले अग्नि जाग उठे हैं, (उषसः व्युष्टिषु ज्योतिः भरंतः) वे उषाका प्रकाश होनेपर तेज भर देते हैं । (मही द्यावापृथिवी अपः चेततां) बडी द्यावापृथिवी कर्मोंकी प्रवृत्ती बढावें (अद्य देवानां अवः आ वृणीमहे) आज हम देवोंसे संरक्षण प्राप्त करना चाहते हैं । (१)

३५७ (अद्य द्यावापृथिवी) आज द्यु और पृथिवी ये दोनों (मही मातरा) बडी माताएं (अनागसः न) निष्पाप ऐसे हमारा (सुविताय त्रायेतां) कल्याण करनेके लिये हमारा संरक्षण करें । (उच्छन्ती उषा) प्रकाशनेवाली उषा (अघं अप बाधतां) पापको दूर करे (समिधानं अग्निं स्वति ईमहे) प्रदीप्त अग्निको हमारा कल्याण करनेके लिये प्रार्थना करते हैं । (३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १० । ३५ । ५

३५८ प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभिर्ज्योतिर्भरन्तीरुषसो व्युष्टिषु ।
भद्रा नो अद्य श्रवसे व्युच्छत स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ५ ॥

ऋ० १० । ३५ । ६

३५९ अनमीवा उषस आ चरन्तु न उदग्नयो जिहतां ज्योतिषा बृहत् ।
आयुक्षातामश्विना तूतुजिं रथं स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ६ ॥

ऋ० १० । ३९ । १ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ । जगती)

३६० यो वां परिज्मा सुवृदश्विना रथो दोषामुषासो हव्यो हविष्मता ।
शश्वत्तमासस्तमु वामिदं वयं पितुर्न नाम सुहवं हवामहे ॥ १ ॥

ऋ० १० । ४१ । १ (सुहस्त्यो घौषेयः । अश्विनौ । जगती)

३६१ समानमु त्यं पुरुहूतमुक्थ्यं१ रथं त्रिचक्रं सवना गनिग्मतम् ।
परिज्मानं विदथ्यं सुवृक्तिभिर्वयं व्युष्टा उषसो हवामहे ॥ १ ॥

ऋ० १० । ४५ । ५ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

३६२ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः ।
वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा वि भात्यग्र उषसामिधानः ॥५॥ वा. य. १२ । २१

---

३५८ (याः सूर्यस्य रश्मिभिः प्र सिस्रते) जो उषाएं सूर्यके किरणोंके साथ चलती हैं तथा जो (उषसः व्युष्टिषु) उषाओंके प्रकाशित होनेपर (ज्योतिः भरंतीः) तेजको भर देती हैं । ये (भद्राः) कल्याण करनेवाली उषाएं (अद्य नः श्रवसे व्युच्छत्) आज हमारा कल्याण करनेके लिये प्रकाशती रहें । (समिधानं अग्निं स्वस्ति ईमहे) प्रदीप्त अग्निकी अपने कल्याणके लिये हम प्रार्थना करते हैं । (५)

३५९ (अनमीवा उषसः आ चरन्तु) रोगरहित उषाएं हमारे पास आवें । (अग्नयः बृहत् ज्योतिषा नः उत् जिहतां) तीनों अग्नि बडे ज्योतिके साथ हमारे सामने प्रदीप्त हों । (अश्विना तूतुजिं रथं आयुक्षातां) अश्वि देव शीघ्रगामी रथको जोडकर तैयार करें । हम (समिधानं अग्निं स्वस्ति ईमहे) प्रदीप्त अग्निकी कल्याणके लिये प्रार्थना करते हैं । (६)

३६० हे (अश्विना) अश्वि देवो ! (यः वां सुवृत् परिज्मा रथः) जो आपका उत्तम भ्रमण करनेवाला पृथ्वीपर चारों ओर घूमनेवाला रथ है जो (दोषां उषासः हविष्मता हव्यः) रात्रीमें और उषःकालमें याजकके द्वारा बुलाने योग्य है । (वयं शश्वत्तमासः) हम शाश्वत रहनेवाले (वां इदं तं सुहवं नाम) आपके इस प्रार्थनीय नामको (पितुः न) जैसा पिताका नाम लेते हैं उस तरह (हवामहे) लेते हैं । (१)

३६१ (त्यं पुरुहूतं उक्थ्यं त्रिचक्रं समानं रथं) उस अनेकों द्वारा प्रशंसित तीन चक्रवाले दोनोंके एक ही रथको (सवना गनिग्मतं) हमारे सोम सवनमें ले आइये । (परिज्मानं विदथ्यं) चारों ओर घूमनेवाले यज्ञमें जाने योग्य उस रथको (वयं) हम (उषसः व्युष्टौ) उषाके प्रकाशित होनेपर (सुवृक्तिभिः हवामहे) उत्तम स्तोत्रोंके गानके साथ बुलाते हैं । (१)

३६२ (श्रीणां उदारः) संपत्तियोंका उगम स्थान, (रयीणां धरुणः) धनोंका आधार (मनीषाणां प्रार्पणः) ज्ञानीजनोंको संतोष देनेवाला, (सोम-गोपाः) सोमका रक्षक, (वसुः) वैभवका निधि, (सहसः सूनुः) सामर्थ्यका उद्गम (अप्सु राजा) जलोंमें विराजमान, (इधानः) प्रदीप्त होनेपर (उषसां अग्रे) उषाओंके सामने (विभाति) प्रकाशता है । (५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १०।५२।४ (बृहदुक्थो वामदेव्यः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्)

३६३ यदुष औच्छः प्रथमा विभानामजनयो येन पुष्टस्य पुष्टम्।
यत् ते जामित्वमवरं परस्या महन्महत्या असुरत्वमेकम् ॥ ४ ॥

ऋ० १०।५८।८ (बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः। मन आवर्तनम्। अनुष्टुप्)

३६४ यत् ते सूर्यं यदुषसं मनो जगाम दूरकम्।
तत् त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ८ ॥

ऋ० १०।६४।३ (गयः प्लातः। विश्वेदेवाः। जगती)

३६५ नरा वा शंसं पूषणमगोह्यमग्निं देवेद्धमभ्यर्चसे गिरा।
सूर्यामासा चन्द्रमसा यमं दिवि त्रितं वातमुषसमक्तुमश्विना ॥ ३ ॥

ऋ० १०।६५।१० (वसुकर्णो वासुक्रः। विश्वेदेवा जगती)

३६६ त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते दैव्या होतारा उषसं स्वस्तये।
बृहस्पतिं वृत्रखादं सुमेधसमिन्द्रियं सोमं धनसा उ ईमहे ॥ १० ॥

ऋ० १०।६७।५ (अयास्य आंगिरसः। बृहस्पतिः। त्रिष्टुप्)
अथर्व २०।९१।५

३६७ विभिद्या पुरं शयथेमपाचीं निस्त्रीणि साकमुदधेरकृन्तत्।
बृहस्पतिरुषसं सूर्यं गामर्कं विवेद स्तनयन्निव द्यौः ॥ ५ ॥

---

३६३ हे (उषः) उषा! (विभानां प्रथमा) तेजस्वी ताराओंमें पहिली (यत् औच्छः) जब तू प्रकाशने लगी, तब (येन पुष्टस्य पुष्टं अजनयः) उससे तुमने पुष्टको भी पुष्ट बनाया। (ते यत् अवरं जामित्वं) तेरा बंधुभाव हीनसे भी हीनके साथ रहता है, इस तरह (परस्याः महत्याः) परमश्रेष्ठ ऐसे तुम्हारा (एकं महत् असुरत्वं) एक बडा सामर्थ्य है। (४)

३६४ (यत् ते मनः) जो तेरा मन (यत् सूर्यं यत् उषसं) सूर्य और उषाके पास (दूरकं जगाम) दूरतक गया हो (ते तत् आवर्तयामसि) तेरे उस मनको मैं वापस खींच लेता हूं (इह क्षयाय जीवसे) यहां उसका निवास हो और उसका जीवन हो। (८)

३६५ नराशंस, (अगोह्यं पूषणं) प्रकट पूषा, (देवेद्धं अग्निं) विबुधों द्वारा प्रदीप्त अग्नि इनकी (गिरा अर्चसे) वाणी द्वारा पूजा करता हूं। सूर्य, चन्द्रमा, द्युलोकमें रहनेवाला यम, त्रित, वायु, उषा, रात्री और अश्विदेव इनकी भी मैं प्रशंसा करता हूं। (३)

३६६ त्वष्टा, वायु, ऋभु, (यः ओहते) जो सोचता है, दिव्य होता, उषा, (वृत्रखादं सुमेधसं बृहस्पतिं) वृत्रनाशक उत्तम बुद्धिमान बृहस्पति, (इन्द्रियं सोमं) इन्द्रको प्रिय सोम इन सबकी (धनसा स्वस्तये) धन प्राप्तिके लिये और कल्याणके लिये (ईमहे) स्तुति करते हैं। (१०)

३६७ (पुरं विभिद्य) शत्रु नगरका नाश किया, (अपाचीं ई शयथ) पीछे भागनेवाले इस शत्रुका नाश करके सुलाया, और (उदधेः त्रीणि साकं निः अकृन्तत्) समुद्रसे तीनोंको साथ साथ बाहर निकाल दिया। इस बृहस्पतिने उषा सूर्य और किरणोंको, अथवा गौओंको, इन तीनोंको बाहर निकाला, (अर्कं विवेद) स्तोत्रका ज्ञान प्राप्त किया (स्तनयन् इव द्यौः) जिस तरह गर्जना करनेवाली द्यौ होती है वैसा यह स्तोत्र-पाठ होने लगा। (५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १०। ७३। ६ (गौरिवीतिः शाक्त्यः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

३६८ सनामाना चिद्ध्वसयो न्यस्मा अवाहन्निन्द्र उषसो यथानः ।
ऋष्वैरगच्छः सखिभिर्निकामैः साकं प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ ॥ ६ ॥

ऋ० १०। ७८। ७ (स्यूमरश्मिर्भार्गवः । मरुतः । जगती)

३६९ उषसां न केतवोऽध्वरश्रियः शुभंयवो नाञ्जिभिर्व्यश्वितन् ।
सिन्धवो न ययिनो भ्राजदृष्टयः परावतो न योजनानि ममिरे ॥ ७ ॥

ऋ० १०। ८५। १९ (सावित्री सूर्या ऋषिका । चन्द्रमाः । अनुष्टुप्)
अथर्व. ७। ८६।२; ७। ८१। २; १४। १। २४

३७० नवोनवो भवति जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम् ।
भागं देवेभ्यो वि दधात्यायन् प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥ १९ ॥

ऋ० १०। ८८। १२ (आंगिरसो मूर्धन्वान् वामदेव्यो वा । सूर्य --
वैश्वानरोऽग्निः । त्रिष्टुप्)

३७१ विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन् ।
आ यस्ततानोषसो विभातीरपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन् ॥ १२ ॥

ऋ० १०। ८८। १८

३७२ कत्यग्नयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्यु स्विदापः ।
नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विद्मने कम् ॥ १८ ॥

---

३६८ (यथा इन्द्रः उषसः अनः अवाहन्) जैसा इन्द्रने उषाका रथ तोड दिया, वैसा (अस्मै स-नामाना चित् ध्वसयः) इस भक्त का हित करनेके लिये समान नामवाले दोनों शत्रुओंका इसने नाश किया। (ऋष्वैः निकामैः सखिभिः अगच्छः) महान शत्रुनाशकी इच्छावाले मित्रवीरोंके साथ शत्रुपर तुमने आक्रमण किया, (प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ) स्थिर हुए शत्रुओंका हृदयके बलसे नाश किया। (६)

३६९ (उषसां केतवः न) उषाओंके ध्वज जैसे ये मरुत् वीर (अध्वर-श्रियः) यज्ञका वैभव बढानेके लिये जानेवाले जैसी (अञ्जिभिः नः) अलंकारोंसे अपनी शोभा बढाते हैं उस तरह (शुभंयवः व्यश्वितन्) सुशोभित रहनेवाले वीर स्वयं चमकते हैं। (सिन्धवः न ययिनः) नदियोंके समान वेगवान् (भ्राजत्-ऋष्टयः) चमकनेवाले भाले लेकर ये वीर (परावतः न योजनानि ममिरे) दूरसे आकर कई योजनोंका आक्रमण करते हैं ! (७)

३७० (जायमानः नवः नवः भवति) उत्पन्न होते ही जो नया नया सा होता है, (अह्नां केतुः) दिनोंका ध्वज जैसा यह (उषसां अग्रं एति) उषाओंके आगे जाता है। (आयन् देवेभ्यः भागं वि दधाति) यह आकर देवोंके लिये हविर्भाग देता है ऐसा यह (चन्द्रमाः दीर्घं आयुः प्रतिरते) चन्द्रमा हमारी आयु दीर्घ करता है। (१९)

३७१ (विश्वस्मै भुवनाय) सब भुवनोंके हितके लिये (वैश्वानरं अग्निं) सबके नेता अग्निको (देवाः अह्नां केतुं) अकृण्वन्) देवोंने दिनोंका ध्वज जैसा बनाया। तब (-यः विभातीः उषसः आततान) उसने तेजस्वी उषाओंको आकाशमें फैलाया और (अर्चिषा तमः यन्) प्रकाशसे अन्धकारको दूर करके (अपः ऊर्णोति) जलोंको प्रवाहित किया। (१२)

३७२ (अग्नयः कति) अग्नि कितने हैं ? (सूर्यासः कति) सूर्य कितने हैं ? (उषासः कति) उषायें कितनी हैं ! (आपः स्वित् कति उ) जलप्रवाह कितने हैं ? (हे पितरः उपस्पिजं वः न वदामि) हे पितरो ! उपहास करनेके लिये आपसे यह मैं नहीं पूछ रहा। हे (कवयः) ज्ञानिओ ! (कं विद्मने वः पृच्छामि) ज्ञान प्राप्त करनेके लिये यह मैं आपसे पूछ रहा हूं। (१८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १० । ८८ । १९

३७३ यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपर्ण्यो३ वसते मातरिश्वः ।
तावद्दधात्युप यज्ञमायन् ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन् ॥ १९ ॥

ऋ० १० । ८९ । १२ (रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

३७४ प्र शोशुचत्या उषसो न केतुरसिन्वा ते वर्ततामिन्द्र हेतिः ।
अश्मेव विध्य दिव आ सृजानस्तपिष्ठेन हेषसा द्रोघमित्रान् ॥ १२ ॥

ऋ० १० । ९१ । ४ (अरुणो वैतहव्यः । अग्निः । जगती)

३७५ प्रजानन्नग्ने तव योनिमृत्वियमिळायास्पदे घृतवन्तमासदः ।
आ ते चिकित्र उषसामिवेतयोऽरेपसः सूर्यस्येव रश्मयः ॥ ४ ॥

ऋ० १० । ९१ । ५

३७६ तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतश्चित्राश्चिकित्र उषसां न केतवः ।
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे अन्नमास्ये ॥ ५ ॥

ऋ० १० । ९२ । २ (शार्यातो मानवः । विश्वेदेवाः । जगती)

३७७ इममञ्जस्पामुभये अकृण्वत धर्माणमग्निं विदथस्य साधनम् ।
अक्तुं न यह्वमुषसः पुरोहितं तनूनपातमरुषस्य निंसते ॥ २ ॥

---

३७३ हे (मातरिश्वः) वायु ! (यावन् मात्रं सुपर्ण्यः उषसः) जिस प्रमाणसे उत्तम पंखवाली उषाएँ (प्रतीकं न वसते) अपने आदर्श सूर्यका जैसा तेज धारण करती हैं, (यज्ञं आयन् ब्राह्मणः) यज्ञमें आनेवाला ज्ञानी ब्राह्मण (होतुः अवरः निषीदन्) होताके नीचे बैठकर (तावत् उप दधाति) उतना उतना प्राप्त करता है । (१९)

३७४ (शोशुचत्या उषसः केतुः न) तेजस्वी उषाओंके ध्वजके समान, हे इन्द्र ! (ते असिन्वा हेतिः प्रवर्ततां) वैसा तेजस्वी प्रहार करनेवाला शस्त्र शत्रुपर चले । (दिवः आ सृजानः अश्मा इव) आकाशसे गिरनेवाले विद्युत्के समान (तपिष्ठेन हेषसा द्रोघमित्रान्) तपे शस्त्रसे द्रोह ही जिनका मित्र है ऐसे शत्रुओंका नाश कर । (१२)

३७५ हे (प्रजानन्) ज्ञानी अग्ने ! तू (इळायाः पदे घृतवन्तं ऋत्वियं योनिं आसदः) इळाके घृतयुक्त तथा कालके अनुरूप स्थानपर बैठा है । (सूर्यस्य रश्मयः इव) सूर्यके किरणोंके समान और (उषसां एतयः इव) उषाओंकी गतिके समान (अ-रेपसः) निष्कलंक (ते आ चिकित्रे) तेरे रूप दीख रहे हैं । (४)

३७६ हे अग्ने ! (तव श्रियः) तेरी शोभाएं (वर्षस्य विद्युतः इव) वर्षाकालकी बिजुलियोंके समान तथा (उषसां केतवः न) उषाओंके ध्वजोंके समान (चित्राः चिकित्रे) विलक्षण दीखती हैं । (यत् अभिसृष्टः) जब खुला होकर (ओषधीः वनानि च) औषधियों और वनोंको (स्वयं आस्ये अन्नं) स्वयं अपने मुखमें अन्नके समान (परिचिनुषे) डालता है । (५)

३७७ (उभये) दोनों देव और मानव (इमं अंजस्पां) इस त्वरासे रक्षा करनेवाले (धर्माणं अग्निं) धर्मरूप अग्निको (विदथस्य साधनं) यज्ञका साधन (अकृण्वत) करते रहे । (उषसः पुरोहितं) उषाके अग्रभागमें रहनेवाले (अरुषस्य तनू-न-पातं) लाल किरणोंके शरीरको न गिरानेवाले (अक्तुं यह्वं न) घृतसे लिप्त महान सूर्यको जिस तरह (निंसते) स्पर्श करते हैं । (२)

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १० । ९५ । २ (ऐलः पुरूरवाः । उर्वशी ऋषिका, पुरूरवा देवता । त्रिष्टुप्)

३७८ किमेता वाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिषमुषसामग्रियेव ।
पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वात इवाहमस्मि ॥ २ ॥

ऋ० १० । ९५ । ४

३७९ सा वसु दधती श्वशुराय वय उषो यदि वष्ट्यन्तिगृहात् ।
अस्तं ननक्षे यस्मिञ्चाकन् दिवा नक्तं श्नथिता वैतसेन ॥ ४ ॥

ऋ० १० । १११ । ७ (वैरूपोऽष्टादंष्ट्रः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

३८० सचन्त यदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो रामविन्दन् ।
आ यन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो नकिरद्धा नु वेद ॥ ७ ॥

ऋ० १० । १२२ । ७ (चित्रमहा वासिष्ठः । अग्निः । जगती)

३८१ त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना अयजन्त मानुषाः ।
त्वां देवा महयाय्याय वावृधुराज्यमग्ने निमृजन्तो अध्वरे ॥ ७ ॥

ऋ० १० । १२७ । ३ (कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी । रात्रिः । गायत्री)

३८२ निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती । अपेदु हासते तमः ॥ ३ ॥

ऋ० १० । १२७ । ७

३८३ उप मा पेपिशत् तमः कृष्णं व्यक्तमास्थित । उष ऋणेव यातय ॥ ७ ॥

---

३७८ (एता वाचा किं कृणवा) इस भाषणसे क्या लाभ होगा ? (उषसां अग्रिया इव) उषाओंमेंसे पहिली उषाके समान (अहं तव प्राक्रमिषं) मैंने तुझे छोड दिया है । हे पुरूरवः ! (पुनः अस्तं परा इहि) फिर अपने घरको जा । (अहं वातः इव) मैं वायुके समान (दुरापना अस्मि) स्वाधीन रखनेके लिए कठिन हूं । (२)

३७९ हे उषा ! (सा श्वशुराय वसुवयः दधती) वह स्त्री अपने श्वसुरके लिये हृष्टपुष्ट करनेवाला अन्न देती है । (यदि वष्टि) यदि वह पतिको चाहती है तब वह (अन्ति-गृहात् अस्तं ननक्षे) समीपके घरसे पतिके स्थानको जाती है । (यस्मिन् चाकन्) जहां इच्छा करती हुई (दिवा नक्तं वैतसेन श्नथिता) दिनमें और रात्रीमें आलिंगनसे उसे प्राप्त करती है । (४)

उषा अपने श्वशुरकी सेवा उत्तम रीतिसे करती है और अपनी पतिको भी संतुष्ट रखती है । इस तरह हरएक स्त्री करे।

३८० (यत् उषसः सूर्येण सचन्त) जब उषाएं सूर्यके साथ मिलती हैं तब (अस्य केतवः चित्रां रां अविन्दन्) इसके किरण विलक्षण शोभाको प्राप्त करते हैं । (यत् दिवः नक्षत्रं न आ ददृशे) जिस समय द्यु लोकका नक्षत्र सूर्य नहीं दीखता है, तब (पुनः यतः न किः अद्धा नु वेद) पुनः जानेवाले सूर्यके किरणको कोई ठीक तरह जान नहीं सकता । (७)

३८१ (अस्याः उषसः व्युष्टिषु) इस उषाके प्रकाशने पर (त्वां इत् दूतं कृण्वाना मानुषाः अयजन्त) तुझे दूत करनेवाले मनुष्य तुम्हारे लिये यज्ञ करते हैं । (देवाः त्वां महयाय्याय वावृधुः) देवोंने तुझे महत्त्व बढानेके लिये बढाया है । हे अग्ने ! (अध्वरे आज्यं निमृजन्तः) यज्ञमें घी की आहुती वे डालते हैं । (७)

३८२ (आयती देवी) आनेवाली रात्री देवीने (स्वसारं उषसं निः उ अस्कृत) अपनी बहिन उषाके लिये मार्ग किया और (तमः अप इत् उ हासते) अन्धकार दूर हुआ । (३)

३८३ (कृष्णं तमः व्यक्तं) काला अन्धकार स्पष्टतासे (पेपिशत् मा उप अस्थित) चिपकता हुआ मेरे पास आ रहा है । हे उषा ! (ऋणा इव यातय) ऋणोंको दूर करनेके समान उसको दूर कर । (७)

उषा ऋणको दूर करती है । अन्धकार ही ऋण है । उषा उसको दूर करती है । इसी तरह घरकी स्त्री बहुत व्यय न करती हुई धन बचावे और ऋणको दूर करे ।

RājGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ० १० । १३४ । १ (मान्धाता यौवनाश्वः । इन्द्रः । महापंक्तिः)

२८४ उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव ।
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनां देवी
जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ १ ॥

ऋ० १० । १३८ । १ (अंग औरवः । इन्द्रः । जगती)

३८५ तव त्य इन्द्र सख्येषु वह्नय ऋतं मन्वाना व्यदर्दिरुर्वलम् ।
यत्रा दशस्यन्नुषसो रिणन्नपः कुत्साय मन्मन्नह्यश्च दंसयः ॥ ॥ १ ॥

ऋ० १० । १३८ । ५

३८६ अयुद्धसेनो विभ्वा विभिन्दता दाशद्वृत्रहा तुज्यानि तेजते ।
इन्द्रस्य वज्रादबिभेदभिश्नथः प्राक्रामच्छुन्ध्यूरजहादुषा अनः ॥ ५ ॥

ऋ० १० । १७२ । ४ (संवर्त आंगिरसः । उषाः । द्विपदा विराट्)

३८७ उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ॥ ४ ॥ अथर्व. १९ । १२ । १

यजु० ३ । १०

३८८ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ १० ॥

---

३८४ हे इन्द्र ! (उषा इव) उषाके समान (यत्) जब (उभे रोदसी आपप्राथ) दोनों द्यावापृथिवीको तुमने प्रकाशसे भर दिया तब (महीनां महान्तं) बडोंसे बडा और (चर्षणीनां सम्राजं) मानवोंके सम्राट् ऐसे (त्वा) तुझे (जनित्री देवी अजीजनत्) माता देवीने उत्पन्न किया इसलिये (जनित्री भद्रा अजीजनत्) वह जननी कल्याण करनेवाली करके प्रसिद्ध हुई । (१)

३८५ हे इन्द्र ! (तव सख्येषु) तेरी मित्रतामें रहकर (त्ये वह्नयः) उन कार्यकर्ताओंने (ऋतं मन्वानाः) सत्यधर्मका पालन करते हुए (वलं व्यदर्दिरुः) बलके टुकडे किये । (यत्र) वहीं (उषसः दशस्यन्) उषाका प्रकाश करके (कुत्साय अपः रिणन्) कुत्सके लिये जलप्रवाहको खुला करके तुमने (मन्मन्) मननपूर्वक (अह्यः च दंसयः) शत्रुओंका नाश किया । (१)

३८६ (अयुद्धसेनः) इन्द्रके साथ कोई सेना युद्ध नहीं कर सकती (विभ्वा) वह विशेष प्रभावी है (विभिन्दता वृत्रहा) वह शत्रुका नाशक है और वृत्रका घात करनेवाला है (तेजते तुज्यानि दाशत्) प्रकाश चाहनेवालेको प्रकाश देता है । (इन्द्रस्य अभिश्नथः वज्रात्) इन्द्रके घातक वज्रसे (अबिभेत्) सब शत्रु भयभीत होते हैं । (शुन्ध्यूः प्राक्रामत्) सूर्य ऊपर आया है और (उषा अनः अजहात्) उषाने अपना रथ छोड दिया है । (५)

ऋ० ४।३०।८ में भी उषाका रथ तोडनेका वर्णन है ।

३८७ (उषा) उषा (स्वसुः तमः अप संवर्तयति) अपनी बहिन रात्रीका अन्धकार दूर करती है और (सुजातता वर्तनिं) अपने सौजन्यसे प्रकाशका मार्ग खुला करती है । (४)

३८८ (देवेन सवित्रा सजूः) प्रेरक सविता देवके साथ (इन्द्रवत्या उषसा सजूः) तथा इन्द्रके साथ आनेवाली उषा, और देवताके साथ समान प्रीति करनेवाला (सूर्यः जुषाणः) सूर्य हमारे ऊपर वैसीही प्रीति करे । (वेतु स्वाहा) हमारी आहुति भक्षण करे । यह हमारा अर्पण है । (१०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यजु० १० । १६

३८९ हिरण्यरूपा उषसो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च ।
आ रोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च
मित्रोऽसि वरुणोऽसि ॥ १६ ॥

यजु० ११ । १७

३९० अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन्वहानि प्रथमो जातवेदाः ।
अनु सूर्यस्य पुरुत्रा च रश्मीननु द्यावापृथिवी आ ततन्थ ॥ १७ ॥

यजु० ११ । ७४

३९१ सजूरुषा अरुणीभिः ॥ ७४ ॥

यजु० १३ । २८

३९२ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ २८ ॥

ऋ० १ । ९० । ७

यजु० २० । २३

३९३ समावववर्ति पृथिवी समुषाः समुसूर्यः । समु विश्वमिदं जगत् ॥
वैश्वानरज्योतिः भूयासं विभून् कामान् व्यश्नवै । ॥ २३ ॥

यजु० २० । ३६

३९४ समिद्ध इन्द्र उषसामनीके पुरोरुचा पूर्वकृद्वावृधानः ।
त्रिभिर्देवैस्त्रिंशता वज्रबाहुर्जघान वृत्रं वि दुरो ववार ॥ ३६ ॥

---

३८९ हे (वरुण मित्र) शत्रु निवारक [दक्षिणबाहो व] मित्ररूप [वामबाहो] । (गर्तं आरोहतं) तुम दोनों यजमान पर चढकर कार्य करो । (हिरण्यरूपा) तुम सुवर्णके समान तेजस्वी हो, (उषसः विरोके) उषाका प्रकाश होनेपर अपने कार्यमें प्रवृत्त होनेवाले (उभौ इन्द्रा) तुम दोनों इन्द्रके समान सामर्थ्यवान हो । तुम्हारी सहायतार्थ (सूर्यः च उदिथः) सूर्यका उदय हुआ है । (ततः दितिं अदितिं च चक्षाथां) पश्चात् शत्रुसेनाका नाश और अपनी सेना सुरक्षित है यह देख लो । तुम मित्र हो और तुम शत्रुनिवारण करनेवाला हो । (१६)

३९० (अग्निः उषसां अग्रं अनु अख्यत्) अग्नि उषःकालका प्रारंभ प्रकाशसे करता है । (जातवेदाः प्रथमः अहानि अनु) सर्व ज्ञानी अग्नि प्रथम दिवसके प्रकाशको करता है । (सूर्यस्य रश्मीन् पुरुत्रा च अनु) सूर्यके किरणोंको बहुत प्रकारसे प्रकाशित करता है । (द्यावा पृथिवी अनु आ ततन्थ) उसने द्यावा-पृथिवीको क्रम पूर्वकव्याप्त किया है । (१७)

३९१ उषा अरुण वर्णकी गौओंके साथ आती है । (७४)

३९२ (नक्तं उषसः मधु) रात्री और उषा हमारे लिये मधुर हों । (पार्थिवं रजः मधुमत्) पृथ्वी और रजोलोक हमारे लिये मधुर हो । (नः पिता द्यौः मधु अस्तु) हमारा पिता द्युलोक हमारे लिये मधुर हो । (२८)

३९३ पृथिवी उषा और सूर्य (सं आववर्ति) वारंवार भ्रमण करते हैं (इदं विश्वं जगत् सं) यह सब जगत् भ्रमण कर रहा है । (वैश्वानरज्योतिः भूयासं) मैं सर्व नेताकी ज्योतिरूप बनूं और (विभून् कामान् व्यश्नवै) व्यापक संकल्पोंको मैं पूर्ण करूंगा । (२३)

३९४ (इन्द्रः समिद्धः उषसां अनीके) इन्द्र तेजस्वी होकर उषःकालमें (पुरोरुचा पूर्वकृत् वावृधानः) आगे बढनेवाली कान्तिके साथ पूर्व दिशाको तेजस्वी करके बढनेवाले (त्रिंशता त्रिभिः देवैः) तैतीस देवोंके साथ रहनेवाले (वज्रबाहुः) वज्रधारी इन्द्रने (वृत्रं जघान) वृत्रको मारा और (दुरः वि ववार) द्वारोंको खोल दिया । (३६)

RājGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यजु० २० । ४१

३९५ उषासानक्ता बृहती बृहन्तं पयस्वती सुदुघे शूरमिन्द्रम् ।
तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे ॥ ४१ ॥ ऋ० १०।३६।१

यजु० २० । ६१

३९६ उषासानक्तमश्विना दिवेन्द्रꣳ सायमिन्द्रियैः ।
सञ्जानाने सुपेशसा समञ्जाते सरस्वत्या ॥ ६१ ॥

यजु० २१ । १७

३९७ उषे यह्वी सुपेशसा विश्वे देवा अमर्त्याः ।
त्रिष्टुप्छन्द इहेन्द्रियं पष्ठवाड्गौर्वयो दधुः ॥ १७ ॥

यजु० २१ । ३५

३९८ होता यक्षत्सुपेशसोषे नक्तं दिवा । ॥ ३५ ॥

यजु० २१ । ५०

३९९ देवी उषासावश्विना सुत्रामेन्द्रे सरस्वती ।
बलं न वाचमास्य उषाभ्यां दधुरिन्द्रियं ॥ ५० ॥

यजु० २४ । ४

४०० कृष्णाञ्जिरलपाञ्जिर्महाञ्जिस्त उषस्याः ॥ ४ ॥

यजु० २७ । ४५

४०१ संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि ।
उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां
मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ताꣳ संवत्सरस्ते कल्पताम् ।
प्रेत्या एत्यै सं चाञ्च प्र च सारय ॥ ४५ ॥

---

३९५ (उषासा नक्ता) उषा और रात्री ये दोनों (बृहती) बडी विशाल देवतायें हैं, ये दोनों (सुदुघे पयस्वती) उत्तम दूध देनेवाली दुधारू गौवें जैसी (बृहन्तं शूरं इन्द्रं), बडे शूर इन्द्रके लिये यज्ञ करती हैं ये (सुरुक्मे) दोनों तेजस्वी देवता (देवानां देवं यजतः) देवोंके देवके लिये यज्ञ करती हैं। (पेशसा ततं तन्तुं संवयन्ती) जैसी दो बुननेवाली स्त्रियाँ सुन्दर फैले हुए धागोंका वस्त्र बुनती हैं । (४१)

३९६ हे अश्विदेवो ! उषा और रात्री ये दोनों (दिवा इन्द्रं सायं इंद्रियैः) दिनके समय इन्द्रके साथ और सायंकाल इन्द्रकी शक्तियोंके साथ संयुक्त करती हैं । (संजानाने) ये सब जानती हैं (सुपेशसा) सुंदर है और (सरस्वत्या समंजाते) विद्याके साथ रहनेवाली हैं । (६१)

३९७ (यह्वी सुपेशसा उषे) बडी सुंदर रात्री और उषा, (अमर्त्याः विश्वेदेवाः) अमर सब देव त्रिष्टुप् छन्द, (पष्ठवाट् गौः) भारवाहक बैल, ये पांच (इह) इस इन्द्रमें (इंद्रियं, वयः दधुः) वीर्य और बल धारण करते हैं। (१७)

३९८ (सुपेशसा उषे नक्तं दिवा) सुंदर उषा, रात्री तथा दिन इनमें होता यज्ञ करे । (३५)

३९९ देवी उषा और रात्री, अश्विदेव, (सुत्रामा सरस्वती) संरक्षक सरस्वती इन्द्रमें बल और मुखमें उत्तम वाणीकी स्थापना करें । (५०)

४०० कृष्णाञ्जि, अल्पाञ्जि तथा महाञ्जि इनकी देवता उषा है । (४)

४०१ तू संवत्सर, उषा, अहोरात्र, अर्धमास, मास, ऋतु है । ये तुम्हारा बल बढावें । संचलन आगमन, आकुंचन प्रसरण करो और अपना प्रभाव बढाओ । (४५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यजु० २८। ६

४०२ होता यक्षदुषे० ॥ ६ ॥

यजु० २७। १७

४०३ ते अस्य योषणे दिव्ये न योना उषासानक्ता ।
इमं यज्ञमवतामध्वरं नः ॥ १७ ॥

यजु० २८। १४

४०४ देवी उषासानक्तेन्द्रं यज्ञे प्रयत्यह्वेताम् ॥ १४ ॥

यजु० २८। ३७

४०५ देवी उषासानक्ता देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम् ।
अनुष्टुभा छन्दसेन्द्रियं बलमिन्द्रे वयो दधत् ॥ ३७ ॥

यजु० २९। ६

४०६ अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि संविदाने ।
उषासा वाᳬं सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्य योनाविह सादयामि ॥ ६ ॥

यजु० २९। ३१

४०७ आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियᳬं शुक्रपिशं दधाने ॥ ३१ ॥

अथर्व० ५। १२। ६; ऋ० १०। ११०। ६

यजु० २९। ३७

४०८ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥ ३७ ॥

ऋ० १। ६। ३

यजु० ३४। ३३

४०९ उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।
येन तोकं च तनयं च धामहे ॥ ३३ ॥

---

४०२ होता उषाके लिये यज्ञ करे। (६)

४०३ (ते अस्य दिव्ये योषणे) वे इस अग्निकी दिव्य स्त्रियां, वे उषा और रात्री हैं। ये हमारे यज्ञकी रक्षा करें। (१७)

४०४ उषा और रात्री ये दो देवियाँ यज्ञमें इन्द्रको बुलाती हैं। (१४)

४०५ (देवी उषासानक्ता) उषा और रात्री ये दोनों इन्द्रका बल बढाती हैं। अनुष्टुप् छन्दके मंत्रोंसे इन्द्रमें सामर्थ्य बढाते हैं। (३७)

४०६ मित्र और वरुण मध्यमें संचार करते हैं। यह यज्ञका मुख है। उषा और रात्री ये सुवर्णके समान तेजस्वी, उत्तम है यज्ञके स्थानमें मैं इनको रखता हूं। (६)

४०७ उषा व रात्री यज्ञस्थानमें रहें। ये पवित्र, दिव्य, विशाल, तेजस्वी सुवर्णके समान कान्तिवाली हैं। (३१)

४०८ हे अग्ने! तू (अकेतवे केतुं कृण्वन्) अज्ञानीको ज्ञान देता है, (अपेशसे पेशः) रूपरहितको रूप देता है। हे मानवो! (उषाद्भिः सं अजायथाः) यह अग्नि उषाओंके साथ प्रकट होता है। (३७)

४०९ हे (वाजिनीवति उषः) अन्नवाली उषा! (अस्मभ्यं तत् चित्रं आभर) हमारे लिये वह उत्तम धन भरपूर भर दे कि जिससे (येन तोकं तनयं च धामहे) हम बालबच्चोंका उत्तम संवर्धन कर सकेंगे। (३३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथर्व० ३।७।७— (भृग्वंगिराः । यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप्)

४१० अपवासे नक्षत्राणामपवास उषसामुत ।
अपास्मत् सर्वं दुर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छतु ॥ ७ ॥

अथर्व० ४।४।२— (अथर्वा । सूर्यः । अनुष्टुप्)

४११ उदुषा उदु सूर्य उदिदं मामकं वचः ।
उदेजतु प्रजापतिर्वृषा शुष्मेण वाजिना ॥ २ ॥

अथर्व० ५।२७।८— (ब्रह्मा । अग्निः । संस्तारपंक्तिः)

४१२ उरुव्यचसाऽग्नेर्धाम्ना पत्यमाने ।
आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्तेमं यज्ञमवतामध्वरं नः ॥ ८ ॥

अथर्व० ६।३।३— (अथर्वा । अश्विनौ, उषासानक्ता, अपां नपात्, त्वष्टा । जगती)

४१३ पातां नो देवाश्विना शुभस्पती उषासानक्तोत न उरुष्यताम् ।
अपां नपादभिह्रुती गयस्य चिद् देव त्वष्टर्वर्धय सर्वतातये ॥ ३ ॥

अथर्व० ७।२३।१— (ब्रह्मा । ब्रध्नः । त्रिपदा अनुष्टुप्)

४१४ ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयन् ।
अरेपसः सचेतसः स्वसरे मन्युमत्तमाश्चिते गोः ॥ २ ॥

अथर्व० ७।७२।१— (शन्तातिः । सुखम् । पथ्यापंक्तिः)

४१५ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः ।
अहानि शं भवन्तु नः रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युऽच्छतु ॥ १ ॥

---

४१० (नक्षत्राणां अपवासे) नक्षत्रोंके चले जाने और (उषसां अपवासे) उषाओंके चले जानेपर (सर्वं दुर्भूतं अस्मत् अप उच्छतु) सब दुष्ट दुरवस्था हमसे दूर हो और (क्षेत्रियं अप उच्छतु) क्षेत्रिय रोग हमसे दूर हो। (७)

दुर्भूतं— जो भी बुरा होना है वह हमसे दूर हो । हमारे पास कोई बुरी स्थिति न आवे ।

४११ उषा, सूर्य और यह मेरा वचन, (वृषा प्रजापतिः) तथा बलवान प्रजापति (शुष्मेण वाजिना) बल और सामर्थ्यके साथ (उत् एजतु) ऊपर होनेकी प्रेरणा करे। (२)

४१२ (अग्नेः उरुव्यचसा) अग्निके विशाल तेजसे चमकनेवाले (धाम्ना पत्यमाने) स्थानसे चलनेवाली (सुष्वयन्ती यजते) सुन्दर दीखनेवाली पूजनीय (उपाके उषासा नक्ता) समीपस्थित उषा और रात्री (नः अध्वरं यज्ञं अवतां) हमारे हिंसारहित यज्ञकी सुरक्षा करें। (८)

४१३ (शुभस्पती अश्विना देवा) कल्याण करनेवाले अश्विदेव (नः पातां) हमारा संरक्षण करें। (उत उषासानक्ता) और उषा और रात्री (नः उरुष्यतां) हमारा रक्षण करें। (अपां न पात्) जलोंको न गिरानेवाला देव (गयस्य अभिह्रुती) हमारे घरकी हानीसे हमें बचावे । हे (त्वष्टः देव) त्वष्टा देव! (सर्वतातये वर्धय) हमारी सर्व प्रकारकी पूर्णताके लिये हमें बढाओ। (३)

४१४ (ब्रध्नः समीचीः) सूर्यने सीधी चलनेवाली (अरेपसः सचेतसः) निर्दोष और समान विचारवाली (मन्युमत्तमाः) उत्तम रीतिसे चमकनेवाली (उषसः) उषाओंको (गोः चिते स्वसरे) पृथ्वीके दूरके भागमें (समैरयन्) प्रेरित किया। (२)

४१५ (वातः नः शं वातु) वायु हमारे लिये सुखदायी होकर बहे। (सूर्यः नः शंतपतु) सूर्य हमारे लिये सुखदायी होकर तपे। (अहानि नः शं भवन्तु) दिन हमारे लिये सुखदायी हों। (रात्री नः शं प्रतिधीयतां) रात्री हमारे लिये सुखकारक हो, (उषा नः शं व्युच्छन्तु) उषा हमारे लिये कल्याणकारक होकर प्रकाशती रहे। (१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(अथर्व० ७।७७।६— (अथर्वा । घर्मः, अश्विनौ । जगती)

४१६ उप द्रव पयसा गोधुगोषमा घर्मे सिञ्च पय उस्रियायाः ।
वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुषसो वि राजति ॥ ६ ॥

अथर्व० ७।८७।४— (शौनकः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

४१७ अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन्वहानि प्रथमो जातवेदाः ।
अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीननु द्यावापृथिवी आ विवेश ॥ ४ ॥

अथर्व० १८।१।२६

अथर्व० ७।८७।५— (शौनकः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

४१८ प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यत् प्रत्यहानि प्रथमो जातवेदाः ।
प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन् प्रति द्यावापृथिवी आ ततान ॥ ५ ॥

अथर्व० १८।१।२७

अथर्व ८।९।१२ (अथर्वा । कश्यपः, सर्वे ऋषयः, छंदांसि च; विराट् जगती)

४१९ छन्दः पक्षे उषसा पेपिशाने समानं योनिमनु सं चरेते ।
सूर्यपत्नी सं चरतः प्रजानती केतुमती अजरे भूरिरेतसा ॥ १२ ॥

अथर्व० ९।१०।१— (ब्रह्मा । अतिथिः, विद्या । साम्नी उष्णिक्)

४२० तस्मा उषा हिंक्रुणोति सविता प्र स्तौति ॥ १ ॥

---

४१६ हे (गोधुक्) गौका दोहन करनेवाले ! (पयसा ओषं उप आ द्रव) दूधके साथ जलदी आ। (उस्रियायाः पयः घर्मे सिञ्च) गौका दूध गर्म करनेके लिये पात्रमें डाल। (वरेण्यः सविता) श्रेष्ठ सविताने (नाकं वि अख्यत्) आकाशको प्रकाशित किया है, (उषसः अनु प्रयाणं विराजति) उषाके चले जानेके पीछे वह प्रकाशता है। (६)

४१७ (अग्निः उषसां अग्रं अनु अख्यत्) अग्नि उषाओंके अग्र भागके समय प्रज्वलित हुआ है। (प्रथमः जातवेदाः अहानि अनु) पहिला जातवेद अग्नि दिनोंके अग्रभागमें चमका है। (सूर्यः उषसः अनु) वह सूर्य उषाओंके पश्चात् (रश्मीन् अनु) किरणोंके साथ (द्यावा पृथिवी आ विवेश) द्यावा पृथिवीके अन्दर प्रविष्ट हुआ है। (४)

४१८ अग्नि उषाओंके अग्रभागमें प्रकाशित हुआ। पहिला जातवेद अग्नि दिनोंके प्रारंभमें चमकने लगा। (पुरुधा सूर्यस्य रश्मीन् प्रति) अनेक प्रकारसे सूर्यके किरणोंके साथ चमका है और (द्यावापृथिवी प्रति आ ततन्थ) द्यावा पृथिवीके अन्दर प्रकाशसे फैला है। (५)

४१९ (छन्दः पक्षे उषसा) छन्द जिनके पंख हैं ऐसी दो उषाएं (पेपिशाने) अपने आपको बहुत सजाती हुई (समानं योनिं) एकही घरकी ओर (अनु सं चरेते) घूमती हैं। (सूर्यपत्नी सं चरतः) सूर्यकी दोनों पत्नियां मिलकर घूम रहीं हैं। ये (प्रजानती केतुमती) ज्ञानवाली झंडेवाली, (अजरे भूरि रेतसा) जीर्ण न होनेवाली और बहुत शक्तिवाली हैं। (१२)

छन्द अर्थात् वेद जिसके साथ पढे जाते हैं वे उषाएं दो हैं। एक प्रारंभकी और दूसरी अधिक प्रकाशवाली ये दोनों अग्निस्थानके चारों ओर प्रकाशती है। ये ही सूर्यकी पत्नियां हैं। ये ज्ञान देती है, प्रकाश रूप ध्वजवाली, कभी जरायुक्त न होनेवाली और बहुत वृष्टिके रेतरूप जल तथा वीर्यवाली है।

४२० उसके लिये उषा हिंकार करती है। सविता प्रस्ताव प्रस्तुत करता है। (१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथर्व० १०। १। ३२— (प्रत्यंगिरसः। कृत्यादूषणम्। द्व्यनुष्टुब्गर्भा पंचपदातिजगती)

४२१ यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि रात्रिं जहात्युषसश्च केतून्।
एवाहं सर्वं दुर्भूतं कर्त्रं कृत्याकृता कृतं हस्तीव रजो दुरितं जहामि ॥ ३२ ॥

अथर्व० १०। २। १६— (नारायणः। पार्ष्णिसूक्तम्, पुरुषः, ब्रह्मप्रकाशनम्। अनुष्टुप्)

४२२ केनापो अन्वतनुत केनाहरकरोद् रुचे।
उषसं केनान्वैन्द्ध केन सायंभवं ददे ॥ १६ ॥

अथर्व० १०। ७। ३१— (अथर्वा। स्कम्भः आत्मा वा। मध्येज्योतिर्जगती)

४२३ नाम नाम्ना जोहवीति पुरा सूर्यात् पुरोषसः।
यदजः प्रथमं संबभूव स ह तत् स्वराज्यमियाय
यस्मान्नान्यत् परमस्तिभूतम् ॥ ३१ ॥

अथर्व० १०। ८। ३०— (कुत्सः। आत्मा। भुरिक्)

४२४ एषा सनत्नी सनमेव जातैषा पुराणी परि सर्वं बभूव।
मही देव्यु१षसो विभाती सैकेनैकेन मिषता वि चष्टे ॥ ३० ॥

अथर्व० ११। ८। ७— (शन्तातिः। चन्द्रमाः, मन्त्रोक्ताः। अनुष्टुप्)

४२५ मुञ्चन्तु मा शपथ्याऽदहोरात्रे अथो उषाः।
सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति ॥ ७ ॥

---

४२१ (यथा सूर्यः तमसः परि मुच्यते) जैसा सूर्य अन्धकारसे मुक्त होता है, (रात्रिं उषसः च केतून् जहाति) रात्री और उषाके झंडोंको त्यागता है। (हस्ती दुरितं रजः जहाति इव) जैसा हाथी दुःखदायी धूलीको फेंकता है (एव अहं) उस तरह मैं (सर्वं दुर्भूतं) सब दुःखदायी (कृत्याकृता कृतं) घातपात करनेवालेने किया सब दूर करता हूं। (३२)

४२२ (केन आपः अन्वतनुत) किसने जलोंको फैलाया है, (केन अहः रुचे अहः अकरोत्) किसने दिनको प्रकाशनेके लिये बनाया है (केन उषसं अन्वैन्द्ध) किसने उषाको प्रकाशित किया (केन सायं भवं ददे) किसने सायंकालको बना दिया। (१६)

४२३ (सूर्यात् पुरा उषसः पुरा) सूर्योदयके पूर्व और उषःकालके पूर्व (नाम नाम्ना जोहवीति) जो ईश्वरका नाम उसके यशके साथ लेता है, जो भजन करता है, और (यत् अजः प्रथमं संबभूव) जो समाज हलचल करके पहिले संघटित होता है (स ह तत् स्वराज्यं इयाय) वह निःसंदेह उस स्वराज्यको प्राप्त होता है कि (यस्मात् अन्यत् परं नास्ति) जिससे दूसरा कोई राज्यशासन श्रेष्ठ नहीं है। (३१)

१ सूर्योदय और उषःकालके पूर्व ईश्वरका भजन कर।

२ हलचल करके समाजको प्रथम संघटित कर।

३ स्वराज्यशासन सबसे श्रेष्ठ शासन है, उसको अपने देशमें प्रस्थापित करो।

४२४ (एषा सनत्नी) यह सनातन रहनेवाली है (सनं एव जाता) सदा बनी रहती है, (एषा पुराणी) यह पुरातन है (सर्वं परि बभूव) इसने सबको घेर रखा है। (उषसः मही देवी) उषाकी यह बडी देवता (विभाती) चमकती हुई (सा एकेन एकेन मिषता) वह एक एकके आंख मूंझनेके साथ सबको (वि चष्टे) देखती है। (३०)

यह उषाकी प्रभाका वर्णन है। यह प्रभा उषाके साथ रहती है और सर्वत्र प्रकाश फैलाती है।

४२५ अहोरात्र और उषा (मा शपथ्यात् मुञ्चन्तु) मुझे शापसे छुडावें। (यं चन्द्रमा इति आहुः) जिसको चन्द्रमा कहते हैं वह सोमदेव (मा मुञ्चतु) मुझे छुडावे। (७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथर्व० १४ । २ । ३१— (सूर्या सावित्री । आत्मा । जगती)

४२६. आ रोह तल्पं सुमनस्यमानेह प्रजां जनय पत्ये अस्मै ।
इन्द्राणीव सुबुधा बुध्यमाना ज्योतिरग्राः उषसः प्रति जागरासि ॥ ३१ ॥

अथर्व० १४ । २ । ४३— (सूर्या सावित्री । आत्मा । त्रिष्टुब्गर्भा पंक्तिः)

४२७ स्योनाद्योनेरधि बुध्यमानौ हसामुदौ महसा मोदमानौ ।
सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ तराथो जीवावुषसो विभातिः ॥ ४३ ॥

अथर्व० १४ । २ । ४४— (सूर्या सावित्री । आत्मा । प्रस्तारपंक्तिः)

४२८ नवं वसानः सुरभिः सुवासा उदागां जीव उषसो विभातीः ।
आण्डात् पतत्रीवामुक्षि विश्वस्मादेनसस्परि ॥ ४४ ॥

अथर्व० १५ । २ । १३— (अथर्वा । अध्यात्मं, व्रात्यः । द्विपदाऽऽर्ची गायत्री)

४२९ उषाः पुंश्चली मन्त्रो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं ।
रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिर्मणिः ॥ १३ ॥

अथर्व० १६ । ४ । ६— (ब्रह्मा । आदित्यः । आर्ची उष्णिक्)

४३० स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च सर्व आपः सर्वगणो अशीय ॥ ६ ॥

---

४२६ (तल्पं सुमनस्यमाना आरोह) शय्यापर प्रसन्न चित्तसे चढ, (इह अस्मै पत्ये प्रजां जनय) यहां इस पतिके लिये प्रजा उत्पन्न कर। (इन्द्राणी इव सुबुधा बुध्यमाना) इन्द्रकी पत्नीकी तरह अच्छी तरह जागती हुई (ज्योतिः उग्रा उषसः प्रति जागरासि) ज्योतिको अग्रभागमें रखनेवाली उषाकी तरह जागती रह। (३१)

स्त्री उषःकालमें उठे और अपने कार्य करे।

४२७ (स्योनात् योनेः अधि बुध्यमानौ) सुखमयी शय्यासे जागकर उठनेवाले (हसामुदौ महसा मोदमानौ) हंसी और आनन्दसे भरे और प्रसन्नतासे प्रसन्न हुए (सु गू सुपुत्रौ) उत्तम गौओंवाले, उत्तम पुत्रवाले (सु॰ गृहौ) उत्तम घरमें रहनेवाले (जीवौ) आरोग्यसंपन्न स्त्री पुरुष (विभातीः उषसः तराथः) चमकनेवाली उषाओंमें आनंदित रहकर दीर्घजीवी बनें। (४३)

पतिपत्नी आनंदसे एक शय्यापर सोयें, उषःकालमें जागें, सदा आनंद प्रसन्न रहे, गौवें और बालबच्चोंका उत्तम पालन करें और दीर्घजीवी हों।

४२८ (नवं वसानः) नये वस्त्रको पहनते हुए (सुरभिः सुवासाः) उत्तम सुगंध युक्त और उत्तम वस्त्रोंका धारण करनेवाला मैं (जीवः) उत्तम जविनके ओजसे संपन्न होकर (विभातीः उषसः उदागां) चमकनेवाली उषाओंके समय उदयको प्राप्त हुआ हूं। (आण्डात् पतत्रीः इव) अण्डेसे पक्षी मुक्त होता है उस तरह (विश्वस्मात् एनसः परि अमुक्षि) सब पापसे मुक्त हुआ हूं। (४४)

नये वस्त्र धारण करो, सुगंध शरीरको लगाओ, उषःकालमें उत्साहसे उठकर कार्यारंभ करो और सब पापाचारसे मुक्त व्यवहार करो।

४२९ उषा (पुंश्चली) पुरुषके पास जानेवाली स्त्री है, (मन्त्रः मागधः) मन्त्र स्तुति पाठक-देवताकी स्तुति करता है, (विज्ञानं वासः) विज्ञान ही मनुष्यके लिये उत्तम वस्त्र है, (अहः उष्णीषं) दिन शिरोवस्त्र है, (रात्री केशाः) रात्री बाल है, (हरितौ प्रवर्तौ) दो घोडे दो कुंडल हैं, (कल्मलिः मणिः) प्रकाश मणिभूषण है। (१३)

व्रताचरण करनेवाले पुरुषका यह वर्णन है, यहां व्रती सूर्य है, उसके पास उषा जाती है उसकी सेवा करनेके लिये। अन्य वर्णन व्रतीका है। वह मंत्रवान है, विज्ञानवान है, काले बालवाला है। इ०

४३० हे जलो ! (अद्य स्वस्ति) आज मेरा कल्याण हो, मैं (उषसः दोषसः च) सवेरे और सायंकालको (सर्वगणः सर्वः) सब समूहके साथ संपूर्ण उन्नत होकर उत्तम सुखको (अशीय) प्राप्त होऊं। (६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथर्व० १६ । ६ । २— (यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । उषा । प्राजापत्याऽनुष्टुप्)

४३१ उषो यस्माद् दुष्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छतु ॥ २ ॥

अथर्व० १६ । ६ । ५— (यमः । दुःष्वप्ननाशनं, उषा । साम्नी पंक्तिः)

४३२ उषा देवी वाचा संविदाना, वाग् देव्यु१षसा संविदाना ॥ ५ ॥

अथर्व० १६ । ६ । ६— (यमः । दुष्वप्ननाशनं, उषा । निचृदार्षी बृहती)

४३३ उषस्पतिर्वाचस्पतिना संविदानो वाचस्पतिरुषस्पतिना संविदानः ॥ ६ ॥

अथर्व० १७ । १ । ३०— (ब्रह्मा । आदित्यः । जगती)

४३४ अग्निर्मा गोप्ता परि पातु विश्वत उद्यन्त्सूर्यो नुदतां मृत्युपाशान् ।
व्युच्छन्तीरुषसः पर्वता ध्रुवाः सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम् ॥ ३० ॥

अथर्व० १८ । १ । २०— (अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः । जगती)

४३५ सो चिन्नु भद्रा क्षुमती उशस्वत्युषा उवास मनवे स्वऽर्वती ।
यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुमग्निं होतारं विदथाय जीजनन् ॥ २० ॥

अथर्व० १८ । ३ । २४— (अथर्वा । यमः । त्रिष्टुप्)

४३६ अकर्म ते स्वपसो अभूम ऋतमवस्रन्नुषसो विभातीः ।
विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ॥ २४ ॥

अथर्व० १८ । ४ । ५८— (अथर्वा । जगती)

४३७ वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सूरो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः ।
प्राणः सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्दिमाविशन्मनीषया ॥ ५८ ॥

---

४३१ हे उषा ! (यस्मात् दुष्वप्न्यात् अभैष्म) जिस दुष्टस्वप्नसे हम डरते हैं (तत् अप उच्छतु) वह भय हमसे दूर हो । (२)

४३२ उषा देवी वाणीके साथ मिली और वाणी देवी उषाके साथ मिली है । दोनों एक रूप हुए हैं । (५)

४३३ उषाका पति वाणीके पतिके साथ मिला और वाणीका पति उषाके पतिके साथ मिला है । दोनों साथ साथ रहे हैं । (६)

४३४ (गोप्ता अग्निः) रक्षक अग्नि (मा विश्वतः परिपातु) मेरी चारों ओर संरक्षण करे । (उद्यन् सूर्यः मृत्युपाशान् नुदतां) उदयको आता हुआ सूर्य मृत्युके पाशोंको दूर करें । (व्युच्छन्तीः उषसः) चमकनेवाली उषाएं, (ध्रुवाः पर्वताः) सुस्थिर रहनेवाले पर्वत (सहस्रं प्राणाः) हजारों प्राण (मयि आयतन्तां) मुझमें आकर रहें । अर्थात् इनके गुण मुझे प्राप्त हों ३० मेरी सुरक्षा हो, मुझसे मृत्यु दूर चला जावे, उषाका तेज पर्वतोंका स्थैर्य, प्राणकी शक्ति मुझमें घर करके रहे ।

४३५ (सा उ चित् नु भद्रा) वह कल्याण करनेवाली, (क्षुमती यशस्वती) अन्नसे परिपूर्ण, यशस्विनी, (स्वर्वती उषा) प्रकाशमय उषा (मनवे उवास) मनुष्यके अभ्युदयके लिये प्रकाश रही है । (यत् ईं उशतां उशन्तं) इसी समय इच्छा करनेवालोंकी इच्छा पूर्ण करनेवाले (क्रतुं होतारं अग्निं) यज्ञ करनेवाले विबुधोंको बुलानेवाले अग्निको (विदथाय जीजनन्) यज्ञके लिये याजकोंने उत्पन्न किया है । (२०)

४३६ (ते अकर्म) तेरे लिये हमने कर्म किये हैं । (स्वपसः अभूम) उत्तम कर्म करनेवाले हम हो गये हैं । (विभातीः उषसः ऋतं अवस्रन्) चमकनेवाली उषाएं यज्ञके स्थानपर प्रकाश रही हैं । (यत् देवाः अवन्ति तत् विश्वं भद्रं) जिसका देव संरक्षण करते हैं वह सब कल्याणकारी ही है । (सुवीराः विदथे बृहत् वदेम) उत्तम वीरोंवाले होकर हम संमेलनमें विशेष उन्नति करनेके भाषण करेंगे । (२४)

४३७ (मतीनां वृषा) शुभ बुद्धि देनेवाला, (विचक्षणः) ज्ञानी (अह्नां सूरः) दिनोंमें प्रकाशनेवाला सूर्य, (उषसां दिवः प्रतरीता) उषाओं और द्युका तारक, (सिन्धूनां प्राणः) नदियोंका प्राण जैसा सोमरस (कलशान् अचिक्रदत्) कलशोंमें शब्द करता हुआ प्रवेश करता है । यह सोमरस (इन्द्रस्य हार्दिं मनीषया आविशत्) इन्द्रके हृदयमें बुद्धि पूर्वक प्रविष्ट हुआ है । (५८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथर्व० १९।४८।२-- (गोपथः। रात्रिः। त्रिपदा विराडनुष्टुप्)

४३८ रात्रि मातरुषसे नः परि देहि।
उषा नो अह्ने परि ददात्वहस्तुभ्यं विभावरि ॥ २ ॥

अथर्व० १९।४९।६--(गोपथः, भरद्वाजश्च। रात्रिः। आस्तारपंक्तिः)

४३९ स्तोमस्य नो विभावरि रात्रि राजेव जोषसे।
आसाम सर्ववीरा भवाम सर्ववेदसो व्युच्छन्तीरनूषसः ॥ ६ ॥

अथर्व० १९।५०।७— (गोपथः। रात्रिः। अनुष्टुप्)

४४० उषसे नः परि देहि सर्वान् रात्र्यनागसः।
उषा नो अह्ने आ भजादहस्तुभ्यं विभावरि ॥ ७ ॥

अथर्व० २०।१६।९— (अयास्यः। बृहस्पतिः। त्रिष्टुप्)

४४१ सोषामविन्दत् स स्व१:सो अग्निं सो अर्केण वि बबाधे तमांसि।
बृहस्पतिर्गोवपुषो वलस्य निर्मज्जानं न पर्वणो जभार ॥ ९ ॥ ऋ० १०।६८।९

अथर्व० २०।२६।६— (मधुच्छन्दाः। इन्द्रः। गायत्री)

४४२ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥ ६ ॥

अथर्व० २०।४७।१२; २०।६९।११ ऋ० १।६।३;

---

४३८ हे रात्रि माता! (नः उषसे परिदेहि) हमें तू उषाके पास पहुंचाओ। उषा (नः अह्ने परिददातु) हमें दिनके सुपुर्द करे। हे (विभावरि) हे रात्री! (अहः तुभ्यं) दिन हमें तेरे सुपुर्द करे। (२)

इस तरह मैं मृत्युसे दूर हो जाऊं।

४३९ हे (विभावरि रात्रि) प्रकाशवाली रात्री! तू (नः स्तोमस्य राजा इव जोषसे) हमारे स्तोत्रका तू राजाके समान प्रेमसे सेवन करती है। (व्युच्छन्तीः उषसः) प्रकाशनेवाली उषाओंमें हम (सर्ववीराः आसाम) सर्व वीरोंसे युक्त होकर रहें (सर्ववेदसः भवाम) सब प्रकारके धनोंसे युक्त होकर रहें। (६)

४४० हे रात्री! (नः अनागसः सर्वान् उषसे परिदेहि) हम निष्पाप बने सबको उषाके पास पहुंचा दो। (उषा नः अह्ने आ भजात्) उषा हमें दिनके पास दे देवे। हे (विभावरि) रात्री! (अहः तुभ्यं) दिन तुम्हारे पास पहुंचावे। (७)

इस तरह हम दीर्घायु होजांय। इसी अर्थवाला मंत्र इससे पूर्व अ० १९।४८।२ क्रमांक ४३८ में है। इसी ऋषिके ये दोनों मंत्र हैं।

४४१ (सः उषां अविन्दत्) उसने उषाको प्राप्त किया, (सः स्वः, सः अग्निं) उसने दिव्य ज्योतिको और उसने अग्निको पाया। (सः अर्केण तमांसि वि बबाधे) उसने किरणोंसे अन्धकारको मार भगाया। (बृहस्पतिः गो वपुषः वलस्य) बृहस्पतिने गौके जैसे शरीरवाले वल राक्षसको मारकर (पर्वणः मज्जानं न निर्जभार) जोडसे उखाडनेके समान उसके शरीरसे चर्बीको निकाल दिया। अर्थात् पूर्ण रीतिसे मारकर, उसके जोड तोड दिये जिनसे चर्बी गिरने लगी। (९)

बृहस्पति ज्ञानका स्वामी है और वह भी इतना युद्ध करनेमें प्रवीण था। ज्ञानीको भी स्वसंरक्षण करना चाहिये।

४४२ हे (मर्याः) मनुष्यो! (अकेतवे केतुं कृण्वन्) अज्ञानीको ज्ञान देनेके लिये और (अपेशसे पेशः) रूपहीनको सौंदर्य देनेके लिये (उषद्भिः सं अजायथाः) उषाओंके साथ तूं प्रकट होता है। (६)

मनुष्य अज्ञानीको ज्ञान देवे, जो रूपहीन हो उसको अच्छी तरह सजाकर सुन्दर बनावे और स्वयं अच्छी तरह प्रकाशित होवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथर्व० २०। ३४। ७- (गृत्समदः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

४४३ यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ॥ ७ ॥ ऋ० २।१२।७

अथर्व० २०। ७२। ३— (परुच्छेपः । इन्द्रः । अत्यष्टिः)

४४४ उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्य१र्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः
स्वर्षाता हवीमभिः ।
यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिञ्चिकेतसि ।
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः ॥ ३ ॥ ऋ० १। १३१। ६

अथर्व० २०। ७६। २-- (वसुक्रः । इन्द्रः । त्रिष्टुप्)

४४५ प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।
अनु त्रिशोकः शतमावहन्नॄन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान् ॥२॥ ऋ० १०।२९।२

४४३ (यस्य अश्वासः प्रदिशि) जिसके घोडे दिशा उपदिशाओंमें संचार करते हैं, (यस्य गावः) जिसकी गौवें, (यस्य ग्रामाः) जिसके ग्राम या सेनाके संघ तथा (यस्य विश्वे रथासः) जिसके सब रथ चारों ओर घूम रहे हैं। (यः सूर्यं उषसं जजान) जिसने सूर्यको और उषाको निर्माण किया है (यः अपां नेता) जो जलोंको चलानेवाला है, हे (जनासः) लोगो ! (सः इन्द्रः) वह इन्द्र है । (७)

४४४ (अस्याः उषसः) इस उषाके समय वह प्रभु (नः जुषेत) हमारी प्यार करे । हमारी (अर्कस्य बोधि) स्तुति को वह जानें । (हवीमभिः हविषः) हमारी प्रार्थनाओंके साथ हविष्यान्नका (हवीमभिः स्वर्षाता) और हमारे बुलावोंके साथ स्वर्गको जीतनेवाला हो । हे (वज्रिन् इन्द्र) वज्रधारी इन्द्र ! (यत् वृषा मृधः हन्तवे चिकेतसि) जब हिंसक शत्रुओंको अपने बलसे मारनेकी इच्छा करता है तब (अस्य नवीयसः वेधसः मन्म श्रुधि) इस नये ऋषिके यह स्तोत्र सुन (नवीयसः) नये ऋषिका स्तोत्र सुन । (३)

४४५ (अस्याः अपरस्याः उषसः नृतौ) इस और अगली उषाके नाचके समय, (नृणां नृतमस्य ते प्रस्याम) वीरोंके अन्दर अत्यन्त श्रेष्ठ वीर ऐसे तेरे साथ हम रहेंगे । (त्रिशोकः) तीन ज्योतिवाला (यः रथः कुत्सेन शतं नॄन् अनु आवहन्) जो रथ कुत्सके साथ सौ वीरोंको उठाकर लानेवाला (ससवान्) और विजय करनेवाला (असत्) होता है । (२)

॥ उषाके मन्त्र समाप्त ॥

विभिन्न देवताओंके मंत्रोंमें उषाका वर्णन

१ उषाः	२०२	१२ मित्रावरुणौ	३	२३ इन्द्राविष्णू	१
२ अग्निः	५३	१३ मरुतः	३	२४ मनः	१
३ इन्द्रः	४८	१४ सूर्यः	३	२५ बृहस्पतिः	१
४ अश्विनौ	२८	१५ आदित्योषसः	२	२६ चन्द्रमाः	१
५ विश्वेदेवाः	२२	१६ पुरूरवाः	२	२७ यक्ष्मनाशनं	१
६ उषासानक्ता,	१५	१७ रात्री	२	२८ ब्रध्नः	१
७ अग्नीवरुणौ	१३	१८ सविता	१	२९ अतिथिः	१
८ सोमः पवमानः	१०	१९ गावः	१	३० कृत्यादूषणं	१
९ दधिकाः	७	२० इन्द्राग्नी	१	३१ पुरुषः	१
१० वायुः	४	२१ इन्द्रासोमौ	१	३२ आत्मा	७
११ वरुणः	४	२२ भगः	१	३३ यमः	१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उषा देवताके मन्त्रोंके ऋषि

ऋषिः	मंत्रसंख्या
१ वसिष्ठः	७१
२ वामदेवः	४३
३ कक्षीवान्	२८
४ प्रस्कण्वः	२७
५ कुत्सः	२३
६ भरद्वाजः	२०
७ गोतमः	१७
८ विश्वामित्रः	१७
९ सत्यश्रवाः	१६
	२६२
१० अथर्वा	९
११ गृत्समदः	९
१२ परुच्छेपः	५
१३ ब्रह्मा	५
१४ लुशः	५
१५ कुशिकः	४
१६ चितः	४
१७ पराशरः	४
१८ अगस्त्यः	३
१९ गोपथः	३
२० दीर्घतमाः	३
२१ मूर्धन्वान्	३
२२ यमः	३
२३ शुनःशेपः	३
२४ श्यावाश्वः	३
२५ सूर्या	३
२६ हिरण्यस्तूपः	३
	७२
२७ अंगः	२
२८ अत्रिः	२
२९ अयास्यः	२
३० अरुणः	२

ऋषि	मंत्रसंख्या
३१ असितः (देवलो वा)	२
३२ ऋजिश्वा	२
३३ कवषः	२
३४ कूर्मः	२
३५ गाथी	२
३६ जमदग्निः	२
३७ नोधा	२
३८ पुरूरवाः	२
३९ प्रजापतिः	२
४० बुधगविष्ठिरौ	२
४१ वसुक्रः	२
४२ शन्तातिः	२
४३ शशकर्णः	२
४४ शौनकः	२
४५ संवर्तः	(४) २
४६ सव्यः	२
४७ सोभरिः	२
४८ स्यूमरश्मिः	२
	४४
४९ अगस्त्यः	१
५० अवस्युः	१
५१ अष्टादंष्ट्रः	१
५२ ऋषभः	१
५३ कतः	१
५४ कविः	१
५५ काव्यः	१
५६ गयः	१
५७ गर्गः	१
५८ गोपवनः	१
५९ गौरीवीतिः	१
६० घोषा	१
६१ चित्रमहाः	१
६२ तिरश्चिः	१

ऋषिः	मंत्रसंख्या
६३ नारायणः	१
६४ नाभाकः	१
६५ पवित्रः	१
६६ पृश्नयः	१
६७ प्रत्यंगिराः	१
६८ बन्ध्वादयः	१
६९ बृहदुक्थः	१
७० ब्रह्मातिथिः	१
७१ भृग्वंगिराः	१
७२ मधुच्छन्दाः	१
७३ मनुः	१
७४ मान्धाता	१
७५ मेधातिथिः	१
७६ मेध्यातिथिः	१
७७ रेणुः	१
७८ लोपामुद्रा	१
७९ वत्सप्रिः	१
८० वसुकर्णः	१
८१ वसुश्रुतः	१
८२ विरूपः	१
८३ विश्ववारा	१
८४ शार्यातिः	१
८५ श्रुतवित्	१
८६ सदापृणः	१
८७ सिकता	१
८८ सुमित्रः	१
८९ सुहस्त्यः	१
९० स्वस्तिः	१
९१ हविर्धानः	१
	४३
९२ यजुर्मन्त्रा (प्राजापत्याः)	२२
	(४४५) ४४३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उषाका वर्णन

वेदके मंत्रोंमें उषा देवताका वर्णन विशेष महत्त्वका स्थान रखता है। करीब करीब ९२ ऋषियोंके मंत्रोंमें उषाका वर्णन आया है और ३२ देवताओंके मंत्रोंमें उषाका निर्देश न्यूनाधिक प्रमाणमें आया है। जो सूक्त उषा देवताके स्वतंत्र हैं वे भी यहां प्रथम दिये हैं।

यहां कुल मंत्र उषा देवताके साथ संबंध रखनेवाले ४४५ हैं, इसमें २०२ मंत्र उषाका साक्षात् वर्णन करनेवाले हैं, इनमें भी १७९ 'उषा' देवताके हैं, ११ मंत्र 'उषासा-नक्ता' के हैं और २५५ मंत्र अग्नि, इन्द्र आदि अन्य देवताओंके सूक्तोंमें उषाका निर्देश आया है, ऐसे हैं। वास्तवमें ये २५५ मंत्र उषा देवताके नहीं हैं। अन्यान्य देवताओंके हैं, पर इनमें उषाके सहचारी देवगण कहे हैं और इनमेंसे कई मंत्रोंमें उषाका महत्त्वपूर्ण वर्णन भी है। इस कारण ये मंत्र यहां संग्रहित किये हैं।

वेदके देवतावाचक नाम, तथा विशेषण सार्थ होते हैं। इसलिये जिन नामों, विशेषणों और गुणदर्शक पदोंसे जिसका निर्देश होता है, उसका स्वरूप उन नामों, पदों और विशेषणों से प्रकट होता है। इसलिये प्रथम हम इन नामों, विशेषणों और पदोंका मनन करेंगे और उनसे प्रकट होनेवाला उषाका स्वरूप जाननेका यत्न करेंगे। देखिये इन नामोंसे उषाका कौनसा स्वरूप प्रकट होता है– यहां नामोंके साथ जो अंक दिये हैं, वे यहां के क्रमांक हैं, उस क्रमांकमें वह मंत्र मिलेगा —

उषा कन्या है

उषाका कन्या रूप निम्नलिखित शब्दोंद्वारा प्रकट हुआ है– **कन्या** (६८); **दिवः दुहिता** (३) द्युलोककी पुत्री, द्यु पिता है और पृथिवी माता है। इस तरह द्यावा-पृथिवीकी पुत्री यह उषा है। द्युपिता भी वर्णनके योग्य है और मातृभूमि भी प्रशंसाके योग्य है। ऐसे श्रेष्ठ मातापिताओंकी यह कन्या है। इसलिये इसको '**दिवि-जा**' (१३८) स्वर्गकन्या कहते हैं। यह स्वर्गीय कन्या है। जो श्रेष्ठ होता है उसको 'स्वर्गीय' कहते हैं। उषा ऐसी श्रेष्ठ कन्या है इसलिये इसको स्वर्गीय कन्या कहा है। यह श्रेष्ठ कुलमें उत्पन्न हुई है इसलिये इसको '**सुजाता**' (६१) कहते हैं। यह श्रेष्ठ कुलमें उत्पन्न हुई है। इस कारण इसको '**अर्या**' (५९), **श्रेष्ठतमा** (५०), **अपूर्व्या** (११९), कहते हैं। यह उषा श्रेष्ठ है, सबसे श्रेष्ठ है, यह अपूर्व है, ऐसी दूसरी कोई पुत्री नहीं है, इसलिये इसको अपूर्व कहा है। यह निष्पाप है इस कारण इसको '**अनवद्या**' (६६) कहा है। यह पवित्र, यज्ञिय और पापरहित है, इसी कारण इसकी प्रशंसा होती है।

उत्तम बहिन

उषा उत्तम बहिन है '**भगस्य स्वसा**' (६३) भगकी सहोदरी और '**वरुणस्य जामिः**' (६३) वरुणकी बहिन है। उषा '**रात्रीकी बहिन**' है ऐसा वर्णन ३१९ वे मंत्रमें है। भाग्यका देव भग है, उसकी यह उषा बहिन है। वरुण देव सबका वरणीय देव है, सबको वह प्रिय है। जल सबका जीवन है, उसका वह अधिपति है, इसकी यह बहिन है। इस तरह उषाके ये भाई विश्वमें बडे स्थानोंपर हैं। ऐसे विशाल सामर्थ्यवान देवोंकी यह उषा बहिन है। कन्याको देखनेके समय जैसा उसके पिता और माता का विचार करना होता है, उसी तरह उसके भाइयोंका भी विचार करना चाहिये। यह बात यहां बताई है।

तरुणी उषा

'**नीची**' (१८७) यह उषा नीचे मुख करके चलती है। स्त्रीको उद्धत पुरुष जैसा ऊपरमुख करके चलना योग्य नहीं है। नम्रभाव उसके चाल चलनमें टपकना चाहिये। यह स्त्रियोंकी मर्यादा है। '**युवतिः**' (४५) यह उषा अब तरुणी होगयी है, उपवर अर्थात् विवाहके योग्य हुई है। यह '**जाया**' (७८), **जनी** (१०३), **योषा** (८); **योषणा** (१८६), **पत्नी** (८८) यह उषा अब पत्नी हुई है, संतान उत्पन्न करने योग्य बडा होगई। सुसंतान इसमें अब उत्पन्न हो सकेंगे। यह पतिके घरका पालन कर सकेगी। ये सब लक्षण तरुणी स्त्रीके हैं। ऐसी उत्तम तरुणी किसके साथ ब्याही जाय, यह प्रश्न पिताके सामने उत्पन्न होता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। इसका उत्तर '**अमृतस्य पत्नी**' (२७८) युद्धमें अमर रहनेवाले वीरकी यह पत्नी है। वीर युद्ध करे और शत्रुका पूर्ण पराभव भी करे परंतु युद्धमें न मरे, ऐसे वीरकी पत्नी हो। अत्यंत शूरके लिये ही यह संभव हो सकता है। ऐसी उत्तम कन्याके लिये ऐसा उत्तम वीर ही वर ढूंढना चाहिये। उषाका पिता उषाके लिये उत्तम वर देखता है और यह उषा अब '**अर्य-पत्नी**' (३००) आर्यकी पत्नी बनती है। अब यह श्रेष्ठ वीरकी सुयोग्य पत्नी होती है, अर्थात् अब यह उषा '**आजानी**' (२४१) उत्तम संतान उत्पन्न करने वाली माता बनने योग्य प्रौढ हुई है। अब यह '**माता**' (२५५) हो चुकी है और इसको सात पुत्र भी हुए हैं। '**मातुः उषसः सप्त पुत्राः**' (२५५) उषा माताके सात पुत्र भी हुए हैं। यहां तक कन्याकी तरुणी, तरुणीकी विवाहिता, विवाहिता होके पुत्रवती माता यह उषा बनी है। उषाके वर्णन करनेवाले मंत्रोंमें पुत्रीकी इतनी उच्चसे उच्च अवस्थाओंका वर्णन है।

जो भी वेदमंत्रका वर्णन होगा, वह मानवी जीवनमें ढालनेके लिये ही है। इसलिये उषाके वर्णनमें मनुष्य की कन्या कैसी हो, तरुणी कैसी रहे, पत्नी होकर क्या कार्य करे, माता बननेपर क्या करे ये सब उपदेश मनुष्योंको मिल सकते हैं। इनका वर्णन विस्तारसे आगे आजायगा, यहां केवल नामोंसे इन विषयोंकी सूचना ही यहां हुई है।

उषाके मंत्रोंमें आया उषाका वर्णन मानवी जीवनमें ढालनेके लिये है, इसकी सूचना देनेवाले उषाके विशेषण '**मानुषी देवी**' (१३९) और '**मर्त्यत्रा**' (६१) ये हैं। अर्थात् यह उषा देवताका वर्णन यह उषा मनुष्योंकी पुत्री है ऐसा बतानेके लिये है, अर्थात् उषाका वर्णन देख कर मनुष्य जानें कि अपनी पुत्री ऐसी होनी चाहिये।

प्रशंसनीय उषा

यह उषा प्रशंसनीय गुणोंसे युक्त है, ऐसा बतानेवाले उसके ये विशेषण हैं— '**ऋषिस्तुता**' (१४२) ऋषियों द्वारा प्रशंसित, '**पुरुस्तुता**' (१२२) अनेकों द्वारा प्रशंसित, '**पुरुहूता**' (१८६) बहुतों द्वारा प्रशंसायोग्य, '**स्तोम्या**' (८४) वर्णन करने योग्य, '**विश्व-वारा**' (५७) सबकी वरणीय, सबके लिये आदरणीय '**विश्व-मिन्वा**' (१२१), '**सुहवा**' (७१), '**कण्वप्रिया**' (१) ये सब विशेषण उषा प्रशंसाके योग्य है, यह भाव बता रहे हैं। आर्योंकी कन्या ऐसी ही प्रशंसनीय गुणोंवाली होनी चाहिये। '**यज्ञिया**' (१८६) पूजनीय होनी चाहिये। इसको देखकर सब लोग उसकी प्रशंसा करें, ऐसी आर्यकन्या होनी चाहिये। आदरणीय गुण कन्यामें बढने योग्य सुशिक्षा कन्याओंको आर्य घरोंमें मिलनी चाहिये यह बोध यहां मिलता है।

स्त्री वीरा हो

उषा वीरपत्नी होनेके पश्चात् वह '**वीरवती**' (१७१), '**सर्ववीरा**' (५६) वीर पुत्रोंको उत्पन्न करनेवाली भी है। वीरभावोंसे स्वयं युक्त होकर, पुत्रोंमें वीरभाव बढानेवाली स्त्री होनी चाहिये। वह '**यावयत्-द्वेषाः**' (१०६) शत्रुओंको दूर करनेवाली स्त्री हो। शत्रुओंको दूर करके अपने घरका संरक्षण करनेमें समर्थ स्त्री हो। '**इन्द्रतमा**' (१६६), इन्द्र शत्रुको दूर करनेका कार्य करता है, उस कार्यमें यह स्त्री अत्यंत प्रवीण होनी चाहिये। इन्द्रके शत्रुको दूर करनेके कार्यमें स्त्री प्रवीण होनी चाहिये। तथा '**दक्षिणा**' (१२६) सब कर्तव्यों में दक्ष रहनी चाहिये, दाक्षिण्य युक्त होनी चाहिये। ऐसी स्त्री उषा है। सब आर्यस्त्रियाँ ऐसी ही हों।

कर्ममें कुशल

स्त्री कर्ममें कुशल हो। '**अपस्युः**' (२०९) कर्म उत्तम रीतिसे करनेवाली हो और आलसी न हो। '**सु शिल्पा**' (१८८) उत्तम शिल्प जाननेवाली, कला कौशलके कार्य करने वाली स्त्री हो, वह सदा कुशलतासे प्रत्येक कर्म करती रहे। '**मही माया**' (१४१) बडी कुशलतासे तथा प्रवीणतासे कार्य करनेवाली स्त्री हो। 'माया' शब्दका यहां अर्थ कर्म कौशल है। अर्थात् 'मही माया' का अर्थ बडे कौशल्यपूर्ण कार्य करनेवाली है।

यह उषा '**कृता**' (१८७) कर्म करके कृतकृत्य होनेवाली अर्थात् निपुण है। यह '**चरसे बोधयन्ती**' (३२) लोगोंको कार्यमें प्रवृत्त करनेके लिये जगाती है। यह सबसे पूर्व स्वयं जागती है और दूसरोंको कार्य करनेके लिये जगाती है। यह स्त्री '**जनानां वयुना अभि पश्यन्ती**' (१४१) लोगोंके कार्य देखती है। कर्मचारियोंके कामोंका निरीक्षण करती है। यह स्त्री '**पञ्च क्षितीः युञ्जाना**' (१६१) पांचों प्रकारके मानवोंको अपने अपने कर्ममें लगाती है, ज्ञानीको ज्ञान प्रसारमें, वीरको शत्रु दूर करनेके कार्यमें, व्यापारीको व्यापारमें, कृषी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलको खेतीमें, शिल्पीको शिल्पकारीमें यह प्रवृत्त करती है और उनके कर्मोंका निरीक्षण करती है।

यशस्विनी उषा

यह उषा '**यशस्वती**' (२०९) उत्तम कर्म करनेके कारण यशस्विनी है, यश प्राप्त करती है। प्रत्येक कर्ममें यश कमाती है, '**उशती**' (१८९) उत्तम कार्य करनेकी इच्छा करती है। अधूरा कार्य कभी नहीं छोडती। सब कार्य यश प्राप्त होनेतक करती है।

यह उषा '**ऋतपा**' (५०) सत्यका पालन करती है, '**ऋतेजाः**' (५०) सत्य पालनके लिये ही इसका जन्म है, '**ऋतावरी**' (९०) सत्यका पालन करके उत्तम व्यवहार करनेवाली तथा '**ऋत-जात-सत्या**' (९८) सरलतासे अर्थात् सहज ही से सत्य व्यवहार करनेमें दक्ष रहनेवाली यह है। इस कारण यह यशस्विनी होती है।

गौ का रक्षण

उषा गौओंका रक्षण करनेवाली है, वह '**गवां माता**' (१०५) गौओंकी माता जैसी हितकारिणी है, गौओंकी देख-भाल अच्छी तरह करती है, माताके समान गौओंका प्रतिपाल करती है। '**घृतं दुहाना**' (१७१) घीको बनाती है, गौओं का दोहन करके उसके दहीसे मक्खन निकाल कर उसको तपाकर घी बनाती है। यह उषा '**घृत-प्रतीका**' (३२२) घीके समान तेजस्विनी है। यह उषा '**गवां नेत्री**' (१५१) गौओंको चलानेवाली है, योग्य मार्गसे गोचर भूमिमें ले जाती हैं और उनको घास आदि देकर उनका पालन करती है, अतः इस उषाको '**गोमती**' (५) गौओंवाली कहते हैं। उषा गौओंवाली है, क्योंकि उषःकालमें गौवें घरसे बाहर आती हैं और चरनेके लिये ग्रामके बाहर जाती हैं। यह उषःकालमें ही होता है। इस तरह उषा गौओंवाली है।

पुत्रीका नाम '**दुहिता**' अर्थात् गौओंका दोहन करनेवाली है। और गौका रक्षण करना उनका इस तरह कर्तव्य है। गौको चराना, घास देना, पानी पिलाना, पालन करना, दूध निकालना, घी तैयार करना, आदि सब काम घरमें स्त्री करे यह यहां सूचित किया है।

घोडोंकी पालना

'**अश्वा**' '**अश्वावती**' (५) घोडोंका पालन करनेवाली, '**अश्व-सूनृता**' (११०) घोडोंका उत्तम वर्णन करनेवाली, घोडोंको सिखानेवाली यह उषा है। उषःकालमें घोडोंपर बैठकर लोग बाहर जाते हैं। इस तरह उषा का संबंध घोडोंके साथ रहता है। इसलिये घरकी स्त्री घरके घोडोंकी भी उत्तम देख भाल करे, ऐसा यहां सूचित किया है।

रथपर बैठनेवाली

उषा '**बृहद्रथा**' (१२१) बडे रथपर बैठती है। इसका रथ '**चन्द्ररथा**' (८६) चन्द्रके समान अत्यंत तेजस्वी है, चांदीका रथ है, चांदीके समान तेजस्वी है। '**चन्द्रा**' (९१) चांदीके रथपर, चन्द्रके समान तेजस्वी रथपर बैठनेवाली तथा '**शुभ्र-यामा**' (२५०) शुभ्र अर्थात् श्वेत रंगके रथपर, चांदीके रथपर बैठकर जानेवाली उषा है इस कारण इसको '**शुचि भ्राजा**' (२०९) पवित्र तेजवाली कहा जाता है। क्योंकि यह स्वयं तेजस्विनी है और चांदीके रथपर यह बैठती है, इसलिये इसका तेज अधिक फैलता है। इस तरह स्त्री रथ पर बैठे और रथ चलावे। उषा अपना रथ अपने पास रखती है और उसको चलाती है, रथपर बैठकर बाहर भ्रमण करनेके लिये जाती है। इस प्रकार स्त्री रथपर आरूढ होकर भ्रमण करे।

उषाका दातृत्व

उषा '**दास्वती**' (४) दान देनेवाली है, वह '**सनुत्री**' (६०) सहायता करनेवाली है और '**वनन्वती**' (१७४) दूसरोंकी सहायता करनेके लिये जो अपने पास है उसका अर्पण करनेवाली है। इस तरह स्त्री दान देवे, दीनोंकी सहायता करे।

विदुषी

यह उषा देवी विदुषी है इसलिये इसके ये नाम हैं— '**जानती**' (२४९) सब जाननेवाली, '**प्रजानती**' (७४) विशेष जानने वाली, '**चकिताना**' (५३) ज्ञानके प्रकाशसे प्रकाशनेवाली, '**चिकित्सन्ती**' (५९) विज्ञानपूर्वक प्रयत्न करनेवाली है, इस कारण वह '**पुरंधीः**' (६१) बहुत बुद्धिमती है, नगरका धारण करनेमें समर्थ है। अनेक सूक्ष्म बुद्धियोंसे युक्त है। वह इस तरह उत्तम ज्ञानवाली है और वह अपना ज्ञान '**बोधयन्ती**' (३१) दूसरोंको देती है और '**प्रबोधयन्ती**' (४६) दूसरोंको विशेष ज्ञानसंपन्न करती है। स्वयं ज्ञानसंपन्न होना और दूसरोंको ज्ञानसंपन्न करना चाहिये, यह बोध यहां मिलता है। अपनी तरुणियाँ ऐसी हों।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह उषा स्वयं ज्ञानवती बनकर दूसरोंको ज्ञान देती है, इस लिये उसकी 'रण्विता' (१८३) प्रशंसा होती है इसकी प्रशंसा होनेके विषयमें इससे पूर्व 'प्रशंसनीय उषा' नामक शीर्षकके नीचे १२२ पृष्ठ पर जो वर्णन दिया है वह भी पाठक यहां देखें। इतनी विदुषी होनेके कारण वह 'चोदयित्री' (१७७) सबको सत्कर्म करनेकी प्रेरणा करती है।

निर्दोष

यह उषा निर्दोष है, इसमें कोई दोष नहीं। यह 'स्नाती' (१२४) प्रतिदिन स्नान करती है, स्वच्छ होती है। 'मातृ-मृष्टा' (६९) इसकी माता भी देखती है कि यह प्रतिदिन शुद्ध होती और स्नान करती है वा नहीं। माता स्वयं इस तरुणीको स्नान कराती और इसका सब अंग स्वच्छ तथा मलहीन करती है। इसलिये यह सर्वदा स्वच्छ रहती है। यह तरुणी स्वयं शुद्ध होती है और माता भी उसको अधिक स्वच्छ करती है, इस कारण यह सदा निर्दोष रहती है।

स्नान होनेके पश्चात् यह 'शुक्रवासाः' (४५); 'शुक्रं वासः बिभ्रती' (१५४), 'शुभ्रा' (१२४) 'शुक्रा' (६७), 'श्वितीची' (६७) शुद्ध श्वेत वस्त्र पहनती है। यह 'श्वेत्या' (४०) श्वेत वस्त्र पहनती है, श्वेत ही उत्तरीय पहनती है, 'शुक्रपिशं दधानाः' (१९०) इसका शुद्ध श्वेत गौर वर्ण बहुत ही सुन्दर दीखता है। जो वस्त्र यह तरुणी पहनती है वे 'सुवासाः' (७८) उत्तम सुन्दर और स्वच्छ धोये होते हैं। इस तरह यह सज-कर बाहर आती है।

इस कारण इसको 'विभातीनां प्रथमा' (५३) 'विभानां प्रथमा' (३६४) तेजस्वियोंमें पहिली है ऐसा कहा जाता है। तथा 'शुची' 'पावका' (९३) पवित्र, 'व्येनी' [वि+एनी], (१२३) निष्पाप, 'भद्रा' (१६) कल्याण करनेवाली, 'सुमंगली' (५०) उत्तम मंगल भाव युक्त, 'प्रिया' (१९९) सबको प्रिय, इस स्त्रीमें सौंदर्य और शुचितासे उत्पन्न हुआ प्रेम है 'यजता' (१४४) पवित्र और पूज्य है। पवित्र है। यह स्वयं शुद्ध रहती है इतना ही नहीं, परंतु यह अपना घर भी पवित्र रखती है। स्वच्छ करती है। झाडू देकर अपना रहनेका स्थान साफ और स्वच्छ करती है इसलिये उसको 'शुक्र सद्मा' (२९३) अपना घर शुद्ध रखनेवाली कहते हैं। इस पदसे सूचित होता है कि स्त्री अपना घर शुद्ध करे और पवित्र रखे। यह उसका कर्तव्य ही है। 'अ-रिप्रा' (३२४) स्वच्छ, निर्दोष, शुद्ध मलीनता रहित तरुणी होनी चाहिये।

सौन्दर्य

तरुणी सुन्दर होनी चाहिये और उसको अपनी वेषभूषा ऐसी धारण करनी चाहिये, कि जिससे उसका सौंदर्य अधिक दीखे। उषा ऐसी ही है इसलिये उसके वर्णनमें 'दर्शता' (१४०) सुन्दर, दर्शनीय, 'रूपा' (१८७) सुरूपवती, सुन्दर रूपवाली; 'रण्व-संदृक्' (८९) रमणीय दर्श-नीय रूपवाली, सुन्दर प्रशंसनीय रूपवाली, 'शुंभमाना' (३३) शोभायमाना, 'सुप्रतीका' (१८१) सुन्दर तेजस्वी रूपवाली, 'सुदृशीक संदृक्' (१५४) सुन्दर रूपवाली तरुणियोंमें सबसे उत्कृष्ट ऐसी यह उषा है। तरुणी ऐसी होनी चाहिये।

'देवी' (६) यह प्रकाशमान है, तेजस्विनी है, 'द्योतना, (६२) 'दिवित्मती' (११०) तेजस्विनी है, 'भास्वती' (३०), 'विभावरी' (१), 'अर्जुनी' (२२), 'अरुषी' (२), विभाती (५५) रुशती, (४०), रोचना (८९), अर्कीणी (१८७), रुचाना (१००) 'अभिश्रिघुम्ना,' (९८), सुसंकाशा (६९), सुरुक्मा (१८२), उच्छन्ती (७२), रोचमाना (१२६), व्युच्छती (१२), विभाती (५५), अरुणप्सुः (२०) सुंदर देहकान्ति जिसकी है। 'दिव्या' (१८६), 'सुदंससा' (८८) सुन्दर रूपवाली, सुन्दर रूपवती, आदर्श रूप जिसका है। 'रोहिणी' (१८७) बढनेवाली, अर्थात् कृश, हीन दीन दुर्बल, रोगी आदि नहीं, परंतु हृष्टपुष्ट आरोग्य संपन्न रहकर बढनेवाली यह है। 'तविषी' (२०१) बलवती है, निर्बल नहीं है। 'स्स्म-यमाना' (६८) स्मित करनेवाली, 'हस्रा' (७८) हंसनेवाली, हंसनेवाले मुखसे युक्त, हास्यमुख जिसका होता है, ऐसी तरुणी हो।

'नृतूः' (२६) नाचनेवाली, अर्थात् नृत्य कर्ममें प्रवीण हो। स्त्रियोंके लिये नृत्य एक उत्तम कला है, उसमें प्रवीणता प्राप्त करनी चाहिये।

दो वेणीवाली

उषा 'द्वि-बर्हा' (१२३) दो वेणीवाली है। यह अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालोंकी दो वेणियां करती है और प्रायः पीठपर ये वेणियां छोडी जाती हैं। जैसी आजकलकी कुमारिकायें दोनों वेणियां पीठपर खुली छोडती हैं, उस तरह उषा भी दो वेणियां पीठपर छोड देती है। यह एक सौंदर्यका प्रसाधन ही है।

तेजस्वी पुत्रवाली

यह उषा 'रुशद्वत्सा' (४०) तेजस्वी पुत्रवाली है, जिसके पुत्र हृष्टपुष्ट नीरोग तेजस्वी और सुन्दर होते हैं। उत्तम तरुणीको ऐसे ही पुत्र होने चाहिये।

'रुशत्पशुः' (२८४) तेजस्वी पशु जिसके पास हैं। गौवें, घोडे आदि पशुओंका पालन वह ऐसा करती है, कि वे अच्छे तेजस्वी बनकर इसके पास रहते हैं। अपने पुत्रों और पशुओंकी पालना ऐसी ही करनी चाहिये।

यह 'स्वर्जनन्ती' (८८) 'स्वरावहन्ती' (१२०), तेजस्विताको निर्माण करती है, आचरणमें तेजस्विता लाती है।

उत्तम विचार और भाषणकरनेवाली

'सुम्नावरी' (५०) उत्तम मनवाली उत्तम विचार करनेवालोंमें श्रेष्ठ तरुणी हो।

'सूनृता' (५०), 'सूनृतावती' (३७), सूनृतावरी, (१०६) सूनृतां नेत्री, (४२), सूनृता ईरयन्ती, सूनरी (११) उत्तम भाषण करनेवाली, उत्तम प्रेम करनेवाली, प्रीतियुक्त स्वभाववाली, आनंद बढानेवाली, प्रेम बढानेवाला भाषण करनेवाली, आनंद प्रसन्नताका जीवन व्यतीत करनेवाली और सुख बढानेवाली तरुणी हो।

'अजरा' (५१) जीर्ण न होनेवाली, जरावस्थामें भी तरुणीके समान दीखनेवाली, 'अमृता' (५१), 'अमर्त्या' (१) अपमृत्युकी बाधा जिसको नहीं होती, जीर्ण क्षीण और दुर्बल जो नहीं होती। वृद्ध अवस्थामें भी जो तरुणी जैसी दीखती है। 'नव्यं आयुः दधाना' (१७०), वयोवृधा (१८५) नवीन तारुण्यकी आयु ही धारण करनेवाली। आयुसे वृद्ध होनेपर भी तरुणी जैसी दीखनेवाली। 'पुराणी' (८५) (पुराणी सत्यपि नवीना) पुरानी अतिवृद्ध होनेपर भी तरुणी जैसी दीखती है।

'जनानां पथ्या (१६४) लोगोंको योग्य मार्ग बतानेवाली 'वाजं जयन्ती' (६०) अन्नको जीत कर प्राप्त करनेवाली, अन्न तैयार करनेमें अत्यंत कुशल अथवा निपुण जो होती है। 'अस्रेधन्ती' (१२२) जो किसीकी हिंसा नहीं करती, किसीका नाश नहीं करती, ऐसी जो सबका हित करनेवाली होती है।

'वाजिनी' (८५), वाजयन्ती (२३९), वाजप्रसूता (३१), वाजिनीवती (८) वाजपत्नी (१५५), क्षुमती (१५१) अन्नवाली, 'ओदती (९) मघुधा (८९) ये नाम यह अन्न सिद्ध करनेमें कुशल होनेका भाव बताते हैं। उत्तम अन्नको सिद्ध करनेवाली तरुणी होनी चाहिये।

धनवाली तरुणी

स्त्रियोंको धन पास रखनेका अधिकार वेदने दिया है। इसलिये 'रेवती' (९०) धनवाली, 'मघोनी' (४३) महान ऐश्वर्यवाली; 'सुभगा' (१०) भाग्य युक्त, उत्तम ऐश्वर्य युक्त, तथा 'वस्वी' (१२६), 'वस्व ईशाना' (४५) धनकी स्वामिनी, जिसके पास धन है ऐसी स्त्री। 'चित्रा' (४२), 'चित्रा-मघा' (१३) अनेक प्रकारका विलक्षण धन अपने पास रखनेवाली, 'आभरत्-वसुः' (११७), 'अन्तिवामा' (१५६) अपने पास भरपूर धन रखनेवाली 'हिरण्य-वर्णा' (८६) सुवर्णके वर्णके समान वर्णवाली, सुवर्णके आभूषणोंको धारण करनेके कारण सुवर्णके समान जो दीखती है। इस तरह उषा धनवाली है और ये पद सूचित कर रहे हैं, कि वेदकी संमतिसे स्त्रीको धन अपने पास रखनेका अधिकार है।

'मही' (१८६) बडी, 'बृहती' (६०) विशेष बडी, 'महीयमाना' (२६७), 'महिमानं आविष्कृण्वाना (१३८) अपने महत्त्वको प्रकट करनेवाली, विशेष योग्यता जिसमें है ऐसी यह तरुणी है।

अस्तु, इस तरह उषाके नाम और विशेषण उषाका जो स्वरूप बताते हैं वह यह है। यहां इन पदों द्वारा उषा कन्याके रूपमें, तरुणी उपवर होनेकी अवस्थामें, विवाहित होनेपर, पुत्रवती होनेपर, घरकी स्वामिनी होनेपर जिस स्वरूपमें दीखती है, उसका वर्णन इन पदोंसे हुआ है। और उषाके वर्णनके मिषसे आर्यकन्याका आदर्श भी इन पदोंद्वारा प्रकट हुआ है। पाठक इन पदोंका मनन करें और आर्यकन्या कैसी होनी चाहिये, उनको किस तरह शिक्षा देनी चाहिये, यह जानें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यहां 'यतीव न' (१४८) संन्यासिनी जैसी तरुणी नहीं बनानी है, ऐसा स्पष्ट शब्दसे निषेध ही किया है। यहां उत्तम 'गृहपत्नी, वीरपत्नी, निष्पाप, नीरोग तरुणी' बनानी अभीष्ट है। न कि सर्वसंगपरित्यागिनी भिक्षुकिनी बनानी है। उत्तम घर, उत्तम पुत्र, उत्तम रथ, उत्तम गौवें और घोडे, उत्तम ऐश्वर्यसे युक्त होकर, विशाल धनका उत्तम उपयोग करनेवाली उत्तम गृहिणी बनानी है।

वेदका ध्येय 'यतिनी' बनाना नहीं है, प्रत्युत 'तेजस्विनी गृहिणी' बनाना ध्येय है। अब इसके आगे यही वर्णन विस्तारसे देखिये—

उषाका आदर्श

वेदमें कवि उषाका वर्णन करते समय आर्य कन्याओंके सामने कन्याका आदर्श रखता है। आर्य तरुणियोंके सामने आदर्श तरुणीको रखता है, आर्य गृहिणियोंके सामने आदर्श गृहिणी रखता है, तथा आर्य स्त्रीके सामने आदर्श स्त्रीको रखता है। उषाके वर्णनके मिषसे ये आदर्श आर्योंके सामने रखे जाते हैं। वेदमंत्रोंका विचार करके ये आदर्श देखने चाहिये और अपनाने चाहियें, तथा अपने जीवनमें ढालने चाहिये। वेद मंत्रोंके मननका मुख्य विषय यह है। ये आदर्श उषाके मन्त्रोंमें किस तरह हैं, इसी विषयका मनन इस लेखमें अब करना है।

विशाल बुद्धिवाली स्त्री

उषा 'पुरं-धी' है ऐसा वर्णन है। **पुरंधीः उदीरतां, विभातीः उषसः तमसा अपगूळ्हा स्पार्हा वसूनि आविः कृण्वन्ति ॥** (६४) = उत्तम विशेष बुद्धिवाली उषा ऊपर उदय होकर आवे। तेजस्वी उषाएँ अन्धकारसे ढंके स्पृहणीय धनोंको प्रकट करती हैं। यहां उषाके लिये 'पुरंधी' पदका प्रयोग किया है। विशाल बुद्धिवाली ऐसा इसका अर्थ है। यह अपनी बुद्धिसे नाना प्रकारके धनोंको प्रकट करती है। प्राप्त करा देती है। जो धन अन्य नहीं देख सकते, उनको यह देख सकती है और दूसरोंको भी यह प्रकट करती है, दिखा देती है। यह इसकी बुद्धिमत्ताका कार्य है।

'पुरं+धी' का दूसरा अर्थ 'नगरका धारण करनेवाली' है। उषा अपनी वीरतासे शत्रुको दूर करती है और नगरका संरक्षण करती है। क्योंकि यह 'सर्व-वीरा' (५६) सब प्रकारके वीरभावसे युक्त है। और इसके विषयमें कहा है कि—

१०६ यावद्द्वेषसं त्वा चिकित्वित् सूनृतावरि। प्रति स्तोमैरभुत्स्महि ॥ ऋ० ४।५२।४

"ज्ञानी विदुषी सत्यभाषण करनेवाली और शत्रुओंको दूर भगानेवाली तुझ उषाकी स्तोत्रोंसे हम प्रशंसा गाते हैं।" यहां उषाके तीन विशेषण आये हैं, वह ज्ञानी है, सत्य सुमधुर तथा प्रेमपूर्ण भाषण करनेवाली है और शत्रुओंको दूर करती है। अर्थात् यह आदर्श स्त्री या आदर्श तरुणीका वर्णन है। आदर्श तरुणी वह है, कि जो ज्ञानवती हो, मधुर भाषण करनेवाली हो और शत्रुओंको दूर भगानेमें तथा अपना संरक्षण करनेमें समर्थ हो। इसी तरह और भी देखिये—

८५ उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि। पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनुव्रतं चरसि विश्ववारे ॥ (ऋ० ३।६१।१)

हे (वाजेन वाजिनी मघोनि उषः) अन्नसे अन्नवाली अथवा बलसे बलशालिनी धनवाली उषा! (प्रचेताः गृणतः स्तोमं जुषस्व) विशेष विचारपूर्वक स्तुति करनेवालेकी प्रशंसाका श्रवण कर। हे (विश्ववारे देवि) सबके द्वारा आदर होने योग्य देवी! तू (पुराणी युवतिः) पुरानी होनेपर भी तरुणी जैसी हो, और इस कारण तू (पुरं-धिः) नगरका धारण और रक्षण करती है और (व्रतं अनुचरसि) स्वसंरक्षणके व्रतका पालन करती है।

इस मंत्रमें (वाजेन वाजिनी) बलके कारण बलशालिनी, (प्र-चेताः) विशेष बुद्धिवाली, विशेष चिन्तन करनेकी शक्तिसे युक्त, (पुरं-धिः) विशेष बुद्धिशालिनी अथवा नगरका धारण करनेकी शक्तिसे युक्त, (मघोनी) धनशाली, अपने पास अपना धन रखनेवाली, ऐसा वर्णन है। इससे तरुणी स्त्री कैसी होनी चाहिये, उसको शिक्षा कैसी मिलनी चाहिये इसका ज्ञान हो सकता है। जो (विश्व-वारा, विश्वं वृणोति) सबको घेरती है, अपनी शक्ति या बुद्धिसे जो सबको घेर सकती है, सब पर प्रभाव डाल सकती है। वह पुरानी होनेपर भी तरुणी जैसी है। यहां 'पुराणी' शब्दका अर्थ भी देखने योग्य है 'पुरा अपि नवीना' पुरानी होनेपर भी नवीन जैसी तरुणी है। अधिक आयु होनेपरभी तरुणी जैसी है। आयुके साथ जिसका बल या उत्साह क्षीण नहीं होता। ये सब गुण आदर्श तरुणी के हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह स्वयं ज्ञानवती है और उस ज्ञानसे यह दूसरोंको भी जगाती है, इस विषयमें यह मंत्र देखिये—

७३ विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती
विश्वस्य वाचमविदन् मनायोः ॥ ऋ० १।९२।९

(विश्वं जीवं) सब प्राणियोंको (चरसे बोधयन्ती) उत्तम चालचलन करनेके लिये बोध करती है, जाग्रत करती है, ज्ञान देती है और (विश्वस्य मनायोः) सब मननशील मनुष्योंको (वाचं अविदन्) वाणीकी स्फूर्ति देती है। बोलनेकी, वर्णन करनेकी प्रेरणा देती है।'

यहां लोगोंको बोध देना और मननशीलोंको वक्तृत्वकी स्फूर्ति देना ये दो गुण वर्णन किये हैं। ज्ञानी स्त्री ये कार्य करे। स्त्री प्रथम स्वयं विदुषी बने, सब उत्तम ज्ञान प्राप्त करे, पश्चात् बोध करके लोगोंको सदाचारी बनावे और उत्तम वक्तृत्व करनेकी स्फूर्ति उत्पन्न करे। काव्य करनेकी स्फूर्ति निर्माण करे। समाजमें स्त्रियाँ सुशिक्षासे संपन्न हों और समाजको उन्नत करने का कार्य करें। यह बोध इस वर्णनसे प्राप्त होता है।

७४ एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना
समना पुरस्तात्। ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु
प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥ ऋ० १।१२४।३

'यह स्वर्गीय कन्या उत्तम मनवाली, तेजस्वी वस्त्र पहन कर सामने आरही है। यह सत्य मार्गको अच्छी तरह जानती है, परंतु कभी अपनी प्रगतिकी दिशामें भूल नहीं करती।'

यह स्वर्गीय कन्या, जैसी सुन्दर तरुणी है, यह (स मना) उत्तम संस्कारसंपन्न ज्ञानपूर्ण मनवाली है। इसीलिये इसको स्वर्गकन्या कहा गया है। (ज्योतिः वसाना) तेजस्वी वस्त्र, रेशमी वस्त्र, स्वच्छ शुद्ध निर्मल धौत वस्त्र पहनती है और ऐसी यह सजकर (पुरस्तात् प्रत्यदर्शि) सामने दीख रही है। यह अपनी ज्ञानसंपन्नताके कारण (ऋतस्य पन्थां साधु प्रजानती) सरल कर्तव्यके मार्गको ठीक तरह जानती है। अपने विशाल ज्ञानसे यह जानती है कि किस समय क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। अपने ज्ञानसे यह ठीक तरह जानती है और कदापि (दिशः न मिनाति) अपनी कर्तव्यकी दिशामें भूल नहीं करती। अपनी प्रगतिके मार्गकी दिशामें प्रमाद नहीं करती।

यह ज्ञानवाली है, कर्तव्य उत्तम रीतिसे जानती है, उत्तम वस्त्र पहनती है, सरल मार्गसे जाती है और कभी अपने कर्तव्य की दिशामें भूल नहीं करती। यह सचमुच आदर्श स्त्रीका वर्णन है। आर्य स्त्रीका यही आदर्श है।

समभाव

विदुषी स्त्री पक्षपात नहीं करती। इसका आचरण पक्षपात रहित होता है। इस विषयमें निम्नलिखित मन्त्र देखने योग्य है—

७७ एषेदेषा पुरुतमा दृशे कं नाजामिं न
वृणक्ति जामिम्। अरेपसा तन्वा३ शाशदाना
नार्भादीषते न महो विभाती ॥ ऋ० १।१२४।६

(एषा पुरुतमा) यह अत्यंत श्रेष्ठ स्त्री (कं दृशे) सुखका अनुभव करनेके लिये (न अजामिं परिवृणक्ति) न तो जो भाई नहीं है उसको त्यागती है और (न जामिं) न भाईको त्यागती है। इसीतरह (अरेपसा तन्वा शाशदाना विभाती) यह निष्पाप शरीरसे प्रकाशनेवाली उत्तम कान्तीवाली स्त्री (न अर्भात् ईषते) न छोटेसे दूर जाती है और (न महः) नाही बडेसे दूर भागती है। अर्थात् दोनोंसे यथायोग्य बर्ताव करती है। यहां 'अ-रेपसा तन्वा' (निष्पाप शरीर) ये पद स्त्रीके विषयमें अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। जिसका शरीर निष्पाप रहा है ऐसी कन्या या तरुणी होनी चाहिये।

यहां स्त्रीके वर्णन करनेके लिये (पुरुतमा) अत्यंत श्रेष्ठ, विशाल हृदयवाली, (विभाती) विशेष तेजस्वी, दिव्य तेजसे युक्त, और (अ-रेपसा तन्वा शाशदाना) निर्दोष शरीरसे प्रकाशित होनेवाली, नीरोग शरीरके कारण चमकनेवाली, जिससे पाप नहीं हुआ ऐसे शरीरसे युक्त ये शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इनमें 'अ-रेपसा तन्वा शाशदाना' ये पद अत्यंत महत्त्वके हैं। स्त्रीका शरीर निर्दोष रहना चाहिये। 'रेपस्' का अर्थ 'नीचता, पाप, धब्बा, दोष, क्रूरता, रोग' आदि प्रकारका है। ये दोष जहां नहीं है वह 'अ-रेपस्' है। स्त्रीका शरीर ऐसा होना चाहिये। पुरुषका भी शरीर निर्दोष होना चाहिये, पर स्त्रीके शरीरमें बालक नौ महिने रहता है, इसलिये राष्ट्रके हितकी दृष्टिसे स्त्रीका शरीर विशेष ही निर्दोष रहना चाहिये। राष्ट्रके बालक हृष्ट पुष्ट और निर्दोष होने चाहिये। इसकी संपन्नताके लिये स्त्रीका शरीर अत्यंत निर्दोष होना चाहिये. यह इस वेद मंत्रकी सूचना विशेष ही मननीय है।

इस मंत्रमें स्त्रीका समभाव वर्णन किया है। छोटे और बडे के साथ और भाई और जो भाई नहीं इनके साथ इसका योग्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ताव होना चाहिये। छोटे के साथ घृणा नहीं करनी चाहिये, और बडेके साथ डरकर दूर भागना भी नहीं चाहिये। दोनोंकी योग्य सेवा करनी चाहिये। इसी तरह अपने भाई के साथ पक्षपात भी न किया जाय और यह पराया है इसलिये उससे उदास भाव भी न प्रकट किया जाय। इस तरह सबसे सुयोग्य समवृत्तीसे व्यवहार करना चाहिये। घरमें ऐसी सुयोग्य व्यवहार करनेवाली स्त्री हो यह इसका आशय है।

सबका निरीक्षण

जो ऐसी विदुषी स्त्री होगी वह सबका निरीक्षण करेगी ही, अन्यथा उससे सबके साथ उचित व्यवहार होगा ही नहीं, इस हेतुसे कहा है-

विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या।
प्रतीची चक्षुरुर्विया विभाति ॥ ३१ ॥

ऋ. १।९२।९

'यह देवी (विश्वानि भुवना अभिचक्ष्य) सब भुवनोंका निरीक्षण विशेष दृष्टीसे करके प्रकाशती है। यहां सबका निरीक्षण करनेका कार्य यह करती है। पतिके घरमें तथा उसके घरके बाहर जो पदार्थ हैं, वे कैसे हैं, उनकी अवस्था अच्छी है वा नहीं, आसमन्तात् जो प्राणी तथा मनुष्य रहते हैं, उनमें अनुकूल कितने हैं और प्रतिकूल कितने हैं इसका निरीक्षण यह स्त्री करती है।

कुलस्त्रीको पतिके घरका इस तरह निरीक्षण करना चाहिये। यह कुलवधूका कर्तव्य ही है। कुल स्त्री केवल पतिके घर रहे और पतिका रञ्जन करे ऐसा ही नहीं है। पर उसका कार्य सबका निरीक्षण करना भी है। उषा सबसे पहिले उठती है, बाहर आती है, अपने सब घरका निरीक्षण करती है, घरकी अन्दर बाहरकी सब व्यवस्था देखती है। यह कुलवधूके लिये आदर्श है। उषा उठती है, अपने घरको प्रकाशित करती है। इसका प्रकाश होते ही चोर डाकू, लुटेरे भाग जाते हैं और इस का घर सुरक्षित होता है। इसी तरह कुलवधू पतिके पूर्व उठे, अपने घरमें प्रकाश करे, घरके अन्दर तथा बाहरकी परिस्थिति का निरीक्षण करे और अपने घरको सुरक्षित करे। यह कुल स्त्रीका कर्तव्य है। अर्थात् जो स्त्री पतिके पश्चात् उठती है, अपने घरके संरक्षणका प्रबंध नहीं कर सकती, वह अपने आवश्यक कर्तव्यसे भ्रष्ट होती है। यहां स्त्रीपर जो दायित्व रखा है वह मनन करने योग्य है।

स्त्रीकी सुशिक्षा ऐसी होनी चाहिये। जिससे वह स्त्री इस अपने कर्तव्य कर्म करनेके लिये पूर्णरीतिसे योग्य बने।

निर्भयता

स्त्री निर्भय होनी चाहिये। शारीरिक बलके संवर्धनकी तथा स्वसंरक्षण करनेकी सब विद्या उस स्त्रीको कुमारीपनमें ही हस्तगत होनी चाहिये। तब वह स्त्री अपना तथा अपने परिवारका संरक्षण करनेमें समर्थ होगी। इस विषयमें निम्नलिखित मंत्र देखने योग्य है—

अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः। यावय द्वेष आभर वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि ॥ १५६ ॥ ऋ. ७।७७।४

'हे (मघोनी) धनको अपने पास रखनेवाली! तू (अन्तिवामा) अपने पास पर्याप्त धन रखती है, (अमित्रं दूरे उच्छ) शत्रुको दूर करके प्रकाशित हो, अथवा दूरसे ही शत्रुको पहचान। (नः ऊर्वीं गव्यूतिं अभयं कृधि) हमारे लिये चारों ओर की भूमिको निर्भय कर, (द्वेषः यावय) शत्रुको दूर भगा दे, (वसूनि आभर) धन लाकर घरमें भर दे, (गृणते राधः चोदय) कविको धन अर्पण कर।

इस मंत्रमें अनेक कर्तव्य वर्णन किये हैं, इनमें शत्रुको दूर करना, अपने स्थानको निर्भय करना, शत्रुको दूरसे ही जानना कि वहां शत्रु है, उसको जानकर उसको दूर करके अपना स्थान निर्भय करना और अनेक प्रकारके धन लाकर अपना घर भर देना। यह सब स्त्रीके लिये अर्थात् स्त्रीका वर्णन करते समय कहा है।

सुन्दरताको बढाना

घरमें स्त्रीको सुन्दर बनकर रहना चाहिये। जैसी उषा सजधज कर विश्वमें आती है। बडी सुंदर दीखती है, तेजस्विनी प्रतीत होती है, वैसी घरमें स्त्री सुन्दर बन कर रहे। इस उद्देश्यसे कहा है-

७९ अक्षि अंक्ते ॥ (ऋ. १।१२४।८)

यह उषा स्त्री रंगोंसे सुभूषित होती है। 'अञ्जि' का अर्थ तेल लगाना, तेलमें मिश्रित रंग लगाना, सुशोभित करना। 'अञ्ज्' धातुका भी यही अर्थ है। स्त्रियां कुंकुम लगाती हैं, तथा अन्य प्रकारसे अपनी शोभा बढाती हैं। यह भाव इन पदोंसे यहां प्रकट होता है। तेल लगाकर केशोंकी शोभा बढाना,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेलमें मिला रंग लगाकर अपना सौंदर्य बढाना आदि भाव यहां हैं।

८९. मधुधा···रण्वसंदृक् रोचना प्ररुरुचे।

ऋ० ३।६१।५

'मधुरताका धारण करनेवाली स्त्री रमणीय दर्शनवाली बनकर अपने तेजसे प्रकाशती रहे।' प्रथम स्त्री 'मधु-धा' अर्थात् मधुरताका धारण करे। इसके चालचलन, भाषण तथा आविर्भावमें मीठास रहे, माधुरी रहे, अर्थात् प्रेम और प्रसन्नताकी मधुरता रहे। पश्चात् वह 'रण्व-संदृक्' रमणीय दर्शनवाली बने। जिसके केवल दर्शनसे ही रमणीयता और मधुरिमा टपकती रहे। देखते ही देखनेवालेके मनमें इसके विषयमें आदर भाव उत्पन्न हो। कदापि तिरस्कार न उपजे। इस तरह (रण्व-संदृक्) रमणीय दर्शनवाली स्त्री हो।

कई स्त्रियां गोरी होती हैं और कई काली होती हैं। गोरी स्त्रियां अपने गौर वर्णके घमेडमें काले वर्णकी स्त्रीका कदापि अपमान न करे, यह आदेश वेद दे रहा है। यहां 'रात्री' काले वर्णवाली स्त्री है और 'उषा' गौर वर्णवाली स्वभावतः सुन्दर है। ये दोनों बहिनें हैं और ये परस्पर प्रेमसे मिलजुल कर रहती हैं। काली-गोरी, कुरूप-सुरूप, शिक्षित-अशिक्षित ऐसी स्त्रियां परस्परका अपमान न करें। परंतु आनन्दसे प्रेमके साथ एक घरमें परस्परकी सहायता करती हुई रहें। यह बताने के लिये ये मंत्र हैं—

१८० सुपेशसा नक्तोषासा बर्हिः आसदे।

ऋ० १।१३।७

'(नक्ता-उषासा) रात्री और उषा ये (सुपेशसा) सुन्दर बनकर यहां आये और (बर्हिः) यह आसन उनके लिये फैलाया है उसपर आरामसे बैठें।' यहां 'सु-पेशसा' सुन्दर रीतिसे सजना, सौंदर्य-प्रसाधन करना, सजावट करना यह आदेश स्त्रीके लिये दिया है।

'पेशस्' का अर्थ 'सुन्दरता, मृदुता, कोमलता, कुशलता मनोहारिता' है। 'सु-पेशस्' का अर्थ इन्ही गुणोंकी परम उच्च अवस्था है। सौंदर्य और सजावटकी विशेषता करनी स्त्रीके लिये योग्य है। यहां रात्री काले रंगकी स्त्री है और उषा गौर वर्णवाली निसर्ग रमणीय स्त्री है। ये दोनों 'सु-पेशसा' अपनी सजावट करती हैं, दोनों अपना सौंदर्य बढाती हैं। अपने आपको विशेष रमणीय और चित्ताकर्षक बनाती हैं। रात्री काली है इसलिये वह अपने काले रंगके कारण उदास नहीं है और उषा अपने गौर वर्णके घमंडमें उन्मत्त नहीं हुई है। दोनों बहिनें एक दूसरेके साथ प्रेमपूर्ण वर्ताव रखती हैं और परस्परका आदर करती हुई प्रेमसे रहती हैं, ऐसा ही स्त्रियोंको एक घरमें प्रसन्नता पूर्वक रहना योग्य है। उनको एक स्थानपर पास बैठना चाहिये। परस्पर मिलजुल कर रहना चाहिये। शरीरका काला रंग किसी तरह धोया नहीं जा सकता और गौर वर्णके कारण कोई स्त्री पवित्र भी नहीं बनती। अर्थात् ये बाह्य वर्ण मानवकी योग्यता न्यूनाधिक नहीं करते। मानवकी योग्यता तो उसके सद्गुणोंसे निश्चित होती है। यह जानकर अपनी आन्तरिक योग्यता सद्गुणोंके द्वारा बढानी योग्य है। बाह्य वर्णसे कोई उच्च या नीच नहीं होता। यह सबको ध्यानमें धारण करना चाहिये।

१८१ भन्दमाने सुपेशसा उपासानक्ता बर्हिः आसीदतान्। ऋ० १।१४२।७

१८२ सुरुक्मे सुपेशसा श्रिया अधि विराजतः उषासौ इह आसीदताम्। ऋ० १।१८८।६

"(भन्दमाने) प्रशंसाके योग्य (सुपेशसा) सुन्दर रूप वाली (सुरुक्मे) उत्तम अलंकार धारण करनेवाली (श्रिया अधि विराजतः) अपनी निज शोभासे शोभती हैं। ये दोनों आकर (इह बर्हिः आसीदतां) यहां आसन पर बैठें।"

ये रात्री और उषा ये दोनों स्त्रियां प्रशंसाके योग्य हैं, सुन्दर रूपसे शोभनेवाली, सुकुमार हैं, इन्होंने सुन्दर वस्त्र और आभूषण पहने हैं। इनकी अपनी निज सुन्दरता इन्होंने सजावटसे बढायी है। ये इस तरह अपनी सुन्दरता बढाकर यज्ञमें आजांय और इस यज्ञमें उत्तम आसनोंपर बैठें। यज्ञमें शुद्ध होकर उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण पहनकर, सुन्दर बनकर जाना चाहिये।

रात्री काले वर्णकी स्त्री है, इसने काली ही साडी पहनी है सिरपर चन्द्रका आभूषण और अपने शरीरपर नाना प्रकारके विविध तारकाओंके भूषण पहने हैं और वे विशेष चमक रहे हैं। शरीरपर नाना प्रकारके फूल धारण किये हैं। इस तरह रात्री देवी सजधज कर संपूर्ण विश्वको सुखी तथा आनन्द प्रसन्न करनेके लिये सिद्ध हुई है।

इधर सवेरे उषा गौर वर्णवाली तरुणी अपने नाना रंगोंके वस्त्रों और आभूषणोंसे सजकर आती है। इसकी सुन्दरता इतनी विशेष होती है, कि सब विश्व इसकी ओर आश्चर्यसे देखता रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये दोनों स्त्रियों इस तरह अपना सौंदर्य बढा कर आती हैं और सबको आनन्द प्रसन्न करती हैं और अपने विषयमें बडा आदरका पूज्यभाव उत्पन्न करती हैं। देखिये इन्हीका वर्णन-

१८४ तन्वा विरूपे भन्दमाने उषसा स्मयेते ।
ऋ० ३।४।६

'ये रात्री और उषा ये दोनों स्त्रियां शरीरसे परस्पर (वि-रूपे) विरुद्ध रंगरूप वाली हैं, तथापि वे (भन्दमाने) दोनों वर्णन करने योग्य प्रशंसनीय हैं। ये दोनों यहां आकर (स्मयेते) आनन्दसे हंसती हैं।' अर्थात् यहां ये दोनों आनन्दसे रहती हैं। परस्परके विभिन्न रंगरूपके कारण परस्परका विद्वेष ये नहीं करतीं। यह बडा भारी महत्त्वपूर्ण उपदेश यहां वेदमंत्र द्वारा दिया गया है। घरमें अनेक स्त्रियां होती हैं, सबकी सब सुन्दर और गोरी नहीं हो सकतीं। कई काली, कई गोरी, कई सुरूप, कई स्थूल, कई कृश, कई शिक्षित, कई अशिक्षित होंगी। इस तरह विभिन्नता होनेपर भी इनमें परस्पर प्रेमका बर्ताव होना चाहिये। परस्पर सहकार होना चाहिये यह सुन्दर उपदेश यहां मिलता है।

दो वेणियाँ

बालोंकी रचनाके विषयमें निम्नलिखित मन्त्रसे स्पष्ट होता है कि दो वेणियां सिरमें स्त्रियां धारण करती थीं-

११३ एषा व्येनी भवति द्विबर्हा आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥ ऋ० ५।८०।४

इस मंत्रका द्वितीय चरण ७४ वे (ऋ० २।१२४।३) मंत्रमें ऐसा ही है। " (एषा व्येनी वि-एनी) यह स्त्री निष्पाप है, (द्विबर्हा भवति) यह स्त्री दो वेणियां [अपने सिरके बालोंकी] करती है, [अर्थात् ये दोनों वेणियां अपनी पीठपर छोड देती है,] (तन्वं पुरस्तात् आविष्कृण्वाना) अपने शरीरको आगेसे प्रकट करती है, (ऋतस्य पन्थां साधु अनु एति) सत्यके मार्गको ठीक तरह अनुसरण करती है, (प्रजानती इव दिशः न मिनाति) विदुषी स्त्रीके समान अपने कर्तव्यकी दिशामें प्रमाद नहीं करती।"

यहां जिस स्त्रीका वर्णन है वह (वि-एनी) निष्पाप है। दुष्ट कर्ममें कदापि प्रवृत्त नहीं होती, शुभ कर्म ही सदा करती है। (द्वि-बर्हा) बर्हका अर्थ शिखा है, सिरपर जो बाल आते हैं, उनका नाम बर्ह है। मोरके सिरपर जो शिखासी रहती है वह बर्ह कहलाती है, इसीलिये मोरका नाम ' बर्हिः ' है। गौणभावसे मनुष्यकी शिखा, स्त्रियोंके बाल, अथवा स्त्रियोंकी वेणी ये अर्थ इस पदके होते हैं। ' द्विबर्हा ' का अर्थ दो शिखाएं धारण करनेवाली है। स्त्रियां अपने बालोंकी एक या दो वेणियां करती हैं और अपने पीठपर लटकती हुई छोड देती हैं। इससे उनके शरीरकी शोभा बढती है। स्नान करनेके पश्चात् स्त्रियां इस तरह अपनी वेणियां करती हैं और धौतवस्त्र पहन कर सिरमें पुष्पमालाका या पुष्पोंका धारण करती हैं। आभूषण भी इसी समय धारण करती हैं। इस तरह सजी हुई तरुणी सुन्दर स्त्री (पुरस्तात् तन्वं आविष्कृण्वाना) आगेसे अपने शरीरको प्रकट करती है। सलज्ज स्त्री लज्जासे तो अपने शरीरको ढंकना चाहती है, पर अपने सुन्दर अवयवोंको भी प्रकट करके लोगोंके चित्त अपनी ओर आकृष्ट करना चाहती है। यहां स्त्रीकी मर्यादाका उल्लंघन नहीं है। यह तो तरुणीसे सहज ही हो जाता है अथवा उसने न किया तो भी उसकी हलचलसे उसके शरीरके अवयव लोगोंको दीखते हैं और लोगोंके नेत्र भी सहजहीसे आकृष्ट हो जाते हैं। स्त्री और पुरुष इन दोनोंकी ओरसे किसी तरह मर्यादाका उल्लंघन न होते हुए यह सहजहीसे होता है।

शरीरके अवयवोंका दर्शन

किसीको इसमें कामुकता दीखेगी, तो उसके निवारण करनेके लिये इसी मंत्रमें कहा है, (ऋतस्य पन्थां साधु अनु एति) सत्य सरल धर्मके मार्गको उत्तम रीतिसे यह अनुसरती है, किसी तरह शुद्ध धर्ममार्गसे भ्रष्ट नहीं होती। इस तरह शुद्ध धर्ममर्यादामें रहती हुई भी यह तरुणी अपने शरीरावयवोंको प्रकट करती है। कोई भी स्त्री थोडीसी हलचल करेगी तो उसके पहने वस्त्रमेंसे उसके विशेष शरीरावयवोंका दर्शन हो ही जाता है। सहजहीसे होनेवाली यह स्थिति है। इसलिये इसी मंत्रमें आगे कहा है कि (प्रजानती इव दिशः न मिनाति) ज्ञानवती स्त्रीके समान यह अपनी चालचलनकी दिशामें प्रमाद नहीं होने देती। धर्ममार्गसे जाती और प्रमाद नहीं करती, ऐसी स्वभावसे धर्ममें अपनी प्रवृत्ति रखनेवाली स्त्री अपने शरीरावयवोंको प्रकट करती है। यह सहज ही होता है ऐसा यहां कहा है। तथा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२४ एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव
स्नाती दृशये नो अस्थात् ॥ ऋ० ५।८०।५

" (एषा शुभ्रा न) यह गौरवर्ण स्त्रीके समान (स्नाती इव ऊर्ध्वा) स्नान करके ऊपर आयी तरुणी जैसी (तन्वः विदाना) अपने शरीरावयवोंको बताती हुई (नः दृशये अस्थात्) हमारे सामने खडी रहती है । " वैसी यह खडी रही है ।

यहां स्वाभाविक जो घटना बनती है,वही वैसी ही बतायी है । एक गौरवर्ण तरुणी है, वह नदीपर स्नान कर रही है, स्नान करके परिशुद्ध होकर ऊपर आगयी है और अपने शुद्ध वस्त्र पहन रही है । उस समय वह जैसी दीखेगी, वैसी उषा दीख रही है, ऐसा इस मंत्रका आशय है। यहां इन दोनों मंत्रोंमें (तन्वं आविष्कृण्वाना, तन्वः विदाना) अर्थात् अपने शरीरावयवोंको प्रकट करती है ऐसा कहा है । आगे यही भाव और देखिये—

६९ मातृमृष्टा योषा इव सुसंकाशा
कं तन्वं दृशे आविः कृणुषे ॥ ऋ. १।१२३।११

" (मातृमृष्टा योषा इव) माताद्वारा स्नान कराकर शुद्ध हुई तरुणीके समान सुन्दर दीखनेवाली स्त्री (कं तन्वं) अपने सुन्दर शरीरको (दृशे आविः कृणुषे) दिखानेके लिये प्रकट करती है । "

तरुण स्त्रीकी माता उस अपनी पुत्रीको पतिके पास भेजनेके दिन अच्छीतरह स्नान कराती है, सब प्रकार उसको शुद्ध करती है, वह अधिक सुन्दर दीखे इसलिये सजाती है, उस समय वह तरुणी अपने शरीरावयवोंको पतिको दिखानेके लिये प्रकट करनेके समान प्रकट करती है । यहां शरीरावयवोंका प्रकट करना लिखा है । यहांका अवयवोंका प्रकट करना पतिके दिखानेके लिये है ।

छातीको दिखाना

२७ अधि पेशांसि वपते नृतूरिव अपोर्णुते
वक्ष उस्रेव बर्जहम् । ऋ० १।९२।४

" यह स्त्री (नृतूः इव) नाचनेवाली स्त्रीके समान (पेशांसि अधि वपते) अपने अनेक रूपोंको बनाती है और (उस्रा बर्जहं इव) गौ अपने दुग्धाशयको बतानेके समान यह तरुणी स्त्री (वक्षः अपोर्णुते) अपनी छातीको दर्शाती है । " यहां ' नृतूः ' पद नर्तन करनेवाली स्त्रीका वाचक है । स्त्रियोंके लिये नर्तन उत्तम व्यायाम है । इससे शरीर नीरोग और सुडौल हो जाता है । आजकल हमारे भारत देशमें नृत्य हीन धंदा करनेवाली स्त्रियोंमें रहनेके कारण नर्तकीका पेशा हीन हुआ है । भगवान शंकर, श्रीकृष्ण, अर्जुन ये सब नृत्यमें प्रवीण थे, तथा राजा विराटके राजमहलमें राजपुत्रियोंको नृत्य सिखानेके लिये अर्जुनको रखा गया था । इससे अनुमान हो सकता है कि, नृत्य एक उत्तम उपयोगी कला है और यह कला सब आर्योंको सीखनी चाहिये । अस्तु । नृत्यसे उत्तम व्यायाम भी होता है और शरीर सुडौल भी होता है ।

नर्तन करनेवाली स्त्रीके समान यह उषा अपने रूप वारंवार बदलती है और अपना वक्षःस्थल, अपनी छाती भी वारंवार आगे निकालकर दर्शाती है । नाचनेके समय छाती आगे पीछे होती है यह नाचनेवालोंको पता है । कमर, छाती, मस्तक आगे पीछे करके ही उत्तम नाच होता है ।

६८ कन्येव तन्वा३ शाशदानां एषि देवि
देवमियक्षमाणम् । संस्मयमाना युवतिः
पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती ।
ऋ० १।१२३।१०

" कन्या जिस तरह (इयक्षमाणं देवं) सुख देनेवाले पति देवके पास अपने शरीरको दिखाती हुई पहुंचती है, और (संस्मयमाना युवतिः) हंसती हुई तरुणी (विभाती) चमकती हुई (वक्षांसि पुरस्तात् आविः कृणुषे) अपनी छातीके अवयवोंको प्रकट करती है । " यहां कहा है कि ' वक्षांसि आविः-कृणोति ' छातीके अंगोंको प्रकट रूपसे दिखाती है । हंसती हुई यह स्त्री ऐसा करती है, और भी देखिये—

७५ उपो अदर्शि शुन्ध्युवो न वक्षः । ऋ० १।१२४।४

" स्वच्छ छाती दिखानेके समान यह स्त्री समीप दीख रही है । " तथा—

११७ भद्रा रोचमाना शुम्भमाना वक्षः आविः
कृणोषि । ऋ० ६।६५।२

" कल्याण करनेवाली, चमकनेवाली, शोभायमान उषा देवी अपनी छाती प्रकट करती है । "

इस तरह अनेक मंत्रोंमें छातीको दिखानेका विषय आया है । जो स्त्रियां नाच खेलती हैं उनकी छाती इसी तरह खुलकर दीखती है । आज यह विद्या अपने अन्दर नहीं है; इसीलिये आजकी स्त्रियोंमें क्षयरोगकी पीडा अधिक बढ रही है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७८ सुवासा उशती जाया पत्ये हसा इव अप्सः नि रिणीते । ऋ० १।१२४।७

" उत्तम वस्त्र पहनकर, पतिकी इच्छा करनेवाली स्त्री पतिके पास जाती है, उस तरह यह हंसती हुई अपने सुन्दर अंगोंको प्रकट करती है । "

इस तरह स्त्री अपना सौंदर्य बढावे, वस्त्रों और आभूषणोंसे अधिक आकर्षक बने, नाचसे अपना शरीर सुडौल करे, गानसे अपना स्वर मधुर बनावे और अपने सुन्दर अवयवोंको पतिके सामने प्रकट करे। तात्पर्य स्त्रियोंको अपनी सुंदरता बढानी चाहिये। इस विषयमें स्त्रियोंके लिये उषा आदर्श है ।

मार्ग दर्शन

उषा अपने प्रकाश द्वारा सबको मार्ग बताती है । इस तरह स्त्रियां स्वयं ज्ञान प्राप्त करें और ज्ञानके प्रकाशसे दूसरोंको मार्ग बतावें, इस विषयके मंत्र अब देखिये-

९ नूनं दिवो दुहितरो विभातीः । गातुं कृणव-न्नुषसो जनाय ॥ ऋ० ४।५१।१

' निःसन्देह प्रकाशनेवाली स्वर्गकन्याएं ये उषाएँ लोगोंके लिये मार्ग करती हैं, मार्ग बनाती हैं, मार्ग दर्शाती है।' जो प्रकाश देता है वह मार्ग दर्शाता ही है । तथा और भी देखिये-

१२२ पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा विभाती ॥ ऋ० ५।८०।३

" सबके द्वारा प्रशंसित और सबको आदर करने योग्य यह देवी स्वयं प्रकाशती हुई जनताकी सुविधाके लिये मार्ग बना देती है। " तथा—

१२६ कृणोति विश्वा सुपथा सुगानि । ऋ० ६।६४।१

" सब मार्गोंको सबके जानेके लिये सुगम बनाती है । " और देखिये-

१२९ सुगोत ते सुपथा पर्वतेषु । ऋ० ६।६४।४

" पर्वतोंमें भी तेरा मार्ग सुगम है । " वैसा ही-

१४७ प्र मे पन्था देवयाना अदृश्रन्नमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः । अभूदु केतुरुषसः पुरस्ता-त्प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः ॥ ऋ० ७।७६।२

" हिंसा न करनेवाले और निवासक तेजोंसे सुसंस्कृत हुए देवोंके जानेके मार्ग (मे प्र अदृश्रन्) मुझे अब दीखने लगे हैं । (पुरस्तात् उषसः केतुः अभूत् उ) सामने उषाका ध्वज फहर रहा है । (प्रतीची हर्म्येभ्यः अधि आ अगात्) पश्चिम दिशाके प्रासादोंपर उषा प्रकाश डाल रही है । "

उषाका उदय पूर्व दिशामें होता है और उसका प्रकाश पश्चिम दिशाके राजमहलोंपर पडता है। और राजमार्ग इस प्रकाशसे दीखते हैं । इस तरह स्त्री स्वयं ज्ञानसंपन्न बने और दूसरोंको सन्मार्ग बतावे ।

दिव्य व्रतोंका पालन

स्त्रीको दिव्य व्रतोंका पालन करनेके लिये सदा उद्यत रहना चाहिये इस विषयमें यह मंत्र उत्तम आदेश देता है—

१४० एते त्ये भानवो दर्शतायाः चित्रा उषसो अमृतास आगुः । जनयन्तो दैव्यानि व्रतानि आपृणन्तो अन्तरिक्षा व्यस्थुः । ऋ० ७।७५।३

' दर्शनीय सुन्दर उषाके ये विलक्षण प्रकाश किरण आगे बढ रहे हैं, ये (अन्तरिक्षा आपृणन्तः) अन्तरिक्षको भर देते हैं और (दैव्यानि व्रतानि जनयन्तः) दिव्य व्रतोंका पालन करते रहते हैं । '

उषा अपने प्रकाश किरणोंसे चारों ओरके स्थान भर देती हैं । सर्वत्र प्रकाश भरपूर होनेके बाद दिव्य शुभ कर्मोंका प्रारंभ होता है। अन्धेरेमें कर्म नहीं होते । प्रकाशमें ही होते हैं । अन्धेरेमें असुरोंके घातपात लूट आदि कुकर्म होते होंगे जो असुरोंके हैं । दिव्य श्रेष्ठ लोगोंके दिव्य शुभ यज्ञ कर्म तो प्रकाशमें ही होते हैं । ये शुभ कर्म उषा अपना प्रकाश फैलाकर करवाती है । इस तरह स्त्री अपने प्रभावसे शुभ कर्म करे और करावे ।

शुभ कर्म करनेकी प्रवृत्ति

स्त्रियोंको सदा शुभ कर्म करनेमें अपने आपको लगाना चाहिये । शुभ कर्म करनेसे ही जीवनका सार्थक्य हो जाता है इसलिये कहा है-

९ वि या सृजति समनं व्यर्थिनः पदं न वेत्योदती । वयो न किष्टे पतिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनीवति ॥ ऋ० १।४८।६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'(या समनं विसृजति) जो मननशीलोंको शुभ कार्य करनेके लिये प्रेरित करती है। (या आर्थिनः वि सृजति) यह धन कमानेवालोंको उनके कर्म करनेके लिये भेजती है, (ओदती पदं न वेति) यह स्वयं जागती हुई एक स्थानपर ठहरती नहीं। सदा स्वयं कार्यमग्न रहती है और दूसरोंको कार्यमें लगनेके लिये प्रवृत्त कराती है। (वयः) उडनेवाले पक्षी भी उषाका प्रकाश होते ही (न आसते) एक स्थानपर बैठते नहीं।' इस तरह उषा स्वयं सवेरेसे पहिले जागती है और दूसरोंको भी जगाकर सत्कर्ममें प्रवृत्त करती है। स्त्रीको ऐसा ही करना चाहिये। तथा—

२५ उषासः वयुनानि पूर्वथा अक्रन्। ऋ० १।९२।२

'उषाएं पूर्वके समान कर्म करती रहती हैं।' सदा कर्म करनेमें तत्पर रहती हैं। स्त्रीको इसी तरह कर्ममें तत्पर रहना योग्य है। इसी तरह और भी देखिये—

२९ उच्छन्ती उषा वयुना कृणोति। ऋ० १।९२।६

'प्रकाशनेवाली उषा अनेक शुभ कर्मोंको करती है।' यह स्वयं कर्मोंको करती है और दूसरोंको भी शुभ कर्मोंमें प्रवृत्त करती है। यदि कोई स्त्री स्वयं प्रभातमें न उठे, तो वह दूसरोंको कैसी उठा सकेगी, यदि वह जलदी उठकर अपने कार्य न करेगी, तो वह दूसरोंको किस तरह कर्म करनेके लिये प्रेरणा दे सकेगी? उषाके आदर्शसे यहां यह बताया है कि, स्त्री जलदी उषःकालके पूर्व उठे, और अपने कर्म करने लगे। इस तरह उषा स्त्रियोंको जलदी उठकर अपना कार्य करनेका आदर्श दर्शाती है।

उद्यमशीलता

स्त्री घरकी स्वामिनी है, इसलिये स्त्रीको उद्यमशील ही होना चाहिये। इसलिये कहा है—

१४१ एषा स्या युजाना पराकात् पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति। अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी॥

ऋ० ७।७५।४

'(एषा स्या दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी) यह वह स्वर्गकन्या सब विश्वका पालन करनेवाली (पञ्च क्षितीः युजाना) पांचों मनुष्योंको कार्यमें जोडती है और (जनानां वयुना अभिपश्यन्ती) सब मनुष्योंके कार्योंका निरीक्षण करती है। और (पराकात् सद्यः परिजिगाती) दूरसे ही शीघ्र भ्रमण करके आती है, सब देखकर आती है। सबका पर्यालोचन करती है।

यहां ज्ञानी, शूर, किसान, व्यापारी, और शिल्पी इन पांचों प्रकारके मानवोंको कर्तव्य कर्मोंमें जोड देती है, और उन सबके कार्योंका निरीक्षण करती है। ये दो कार्य कहे हैं। अपने लोगोंको कार्यमें लगाना, और उनके कार्योंकी देखभाल करना ये दो कर्तव्य स्त्रीके लिये कहे हैं। यदि घरकी गृहिणी ऐसी होगी, तो उस घरमें लक्ष्मी निवास करेगी, इसमें संदेह ही क्यों होगा? यहां उषाका वर्णन है। उषा द्यु और पृथिवीकी पुत्री है, सूर्यके साथ इसका संबंध है, अर्थात् यह बडेसे बडे देवके साथ संबंध रखनेवाली है। तो भी सबसे प्रथम उठती है, सबको कार्यमें जोड देती है और उनके कार्योंका निरीक्षण भी करती है। उषाका कुल भी अच्छा है और संबंध भी बडेके साथ हुआ है। इतना होते हुए भी वह सतत परिश्रम, उद्योग तथा शुभ कर्म करती रहती है। यह देखकर सब स्त्रियोंको उचित है कि, वे इसी तरह सतत उद्योग करें और अपने घरका ऐश्वर्य बढावें।

१६५ उपसः युक्ता विशः न यतन्ते। ऋ० ७।७९।२

'उषाएं कर्म करनेवाली प्रजाजनोंके समान प्रयत्न कर रही हैं।' अर्थात् सतत प्रयत्न करती हैं। आलसमें अपना समय व्यर्थ गमाती नहीं। प्रयत्न ही धन है, प्रयत्नसे ही उन्नति हो सकती है। सतत प्रयत्नशीलता ही उषा व्रता रही है।

२६ अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेनयोजनेना परावतः॥ ऋ० १।९३।३

'(अपसः नारीः न) कर्ममें कुशल स्त्रीके समान (समानेन योजनेन) एक ही आयोजनासे (परावतः विष्टिभिः अर्चन्ति) दूरसे ही अपने किरणोंसे सुशोभित करती हैं। जिस तरह कर्ममें कुशल स्त्री अपने कौशल्यपूर्ण कर्मसे सौंदर्य बढाती है, उस तरह उषा अपनी किरणोंसे विश्वकी शोभा बढाती है। शोभा बढानेका कार्य कर्म कौशल्यसे होता है। इसलिये स्त्री इस कर्म कौशल्यको अपने अन्दर बढावे।

२०९ शुचिभ्राजाः यशस्वतीः अपस्युवः सत्याः।

ऋ० १।७९।१

'शुद्ध प्रकाश देनेवाली, यशस्विनी, कर्ममें प्रवीण स्त्रियां सत्यस्वरूपी हैं।' 'अपस्यु' का अर्थ, कर्ममें प्रवीण है। जो कर्ममें प्रवीण है वही यश प्राप्त करती है और वह सत्यमार्गसे अभ्युदय प्राप्त करती है।

इसलिये स्त्रियोंको उद्यमशील होना चाहिये। वे स्त्रियां शुद्ध रहें, पवित्र रहें, यश प्राप्त करें, सत्यमार्गसे जाय, कर्ममें प्रवीण और कुशल बनें। प्राविण्य प्राप्त करें, कर्म करनेमें पीछे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न रहें। कुछ योजना तैयार करके उसको अच्छी तरह निभानेका प्रयत्न करें। घर उद्योगका केन्द्र बने। घरमें धन हुआ तो भी स्त्री पुरुष उद्योग करते रहें। उद्योगी पुरुषको ही लक्ष्मी प्राप्त होती है।

वस्त्र बुननेका कार्य

स्त्रियोंको चौदह विद्याएं और चौसष्ट कलाओंमें प्रवीण होना चाहिये। परंतु कमसे कम वस्त्र बुननेका कार्य तो उनको आना ही चाहिये। वस्त्र बुनना तो घरेलु काम है और घरके लोगोंको सुखसे रहनेके लिये अत्यावश्यक है। इसलिये कहा है कि उषा वस्त्र बुनती है देखो-

१८२ साध्वपांसि सनता न उक्षिते उषासान-
क्ता वय्येव रण्विते। तन्तुं ततं संवयन्ती
समीची यज्ञस्य पेशः सुदुघे पयस्वती।

ऋ० २।३।६

'(नः अपांसि साधु सनता) हमारे कर्मोंको उत्तम रीतिसे संपन्न करती है, (उक्षित वय्या इव रण्विते) स्नेहसंपन्न होती हुई कपडा बुननेवालीके समान प्रशंसनीय होकर (ततं तन्तुं समीची संवयन्ती) फैले हुए तानेको उत्तम रीतिसे समेटने वाली (सुदुघे पयस्वती) उत्तम दूध देनेवाली गौके समान (उषासा नक्ता) उषा और रात्री (यज्ञस्य पेशः) यज्ञकी सुंदरता बढाती है।'

यहां दिनरात्रीरूपी कालका वस्त्र उषा और रात्री क्रमसे आती हैं और अपना बुननेका कार्य करती हैं ऐसा कहा है। उषा और रात्री ये दोनों स्त्रियां हैं, ये क्रमसे आती हैं और अपना बुननेका कार्य करके चली जाती हैं। इस तरह घरकी स्त्रियां क्रमपूर्वक आयें, और फैलाये हुए तानेपर बानेसे वस्त्र बुननेका कार्य करें ऐसा यहां सूचित किया है। घरमें एक कमरेमें वस्त्रका ताना फैलाया रहे, घरका पुरुष ताना ठीक तरह फैलनेका कार्य करके अपने दूसरे कामको चला जाय। और जैसी जैसी फुरसत मिले, वैसी घरकी स्त्रियां आकर बुननेका कार्य करती रहें। इस तरह कपडा घरवालोंके लिये बनाया जाय। उषाके वर्णनके मंत्रसे यह उपदेश यहां मिलता है। वैदिक समयमें वस्त्र बुननेका और चर्खोंपर सूत्र कातनेका कार्य ये घरेलु काम थे। तथा और देखिये-

२१७ तुभ्युमुषासः शुचयः परावति भद्रा वस्त्रा
तन्वते दंसु रश्मिषु चित्रा नव्येषु रश्मिषु।

ऋ० १।१३४।४

'(शुचयः उषासः) शुद्ध उषाएं (परावति भद्रा वस्त्रा तुभ्यं तन्वते) सुदूर आकाशमें उत्तम वस्त्रोंको फैलाती हैं (दंसु नव्येषु रश्मिषु चित्रा) दर्शनीय नवीन सुन्दर किरणोंमें अनेक रंगोंके वस्त्र (तन्वते) फैलाती हैं।' उषा आकाशमें नाना प्रकारके रंगी बिरंगी वस्त्रोंको फैलाती हैं। उस तरह घरकी स्त्री घरके वस्त्रोंको धोकर सुखानेके लिये रसीपर टांग दे। अथवा नाना रंगोंके वस्त्र बुने और दर्शानेके लिये फैलाकर रखे।

ऋणको दूर कर

घरमें स्त्री पुरुष उद्योग करके धन कमायें और यदि ऋण हुआ होगा तो, उसको दूर करें। स्त्री भी ऋणको दूर करे-

१८३ उष ऋणा इव कृष्णंतमः यातय।

ऋ० १०।१२७।७

'उषा ऋणको दूर करनेके समान अन्धकारको दूर करे।' अन्धकार यह ऋण है, उषा आती है, प्रकाश फैलाती है अन्धकार दूर करती है। इसी तरह स्त्री उद्यम करे, धन कमावे और अपने कुटुंबका ऋण दूर करनेका प्रयत्न करे। ऋण रहना नहीं चाहिये। ऋण बडा दुःखदायी है, उसको रखना नहीं चाहिये। हमने गुरुसे ज्ञान लिया है वह भी ऋषिऋण है। हमारा रक्षण सैनिक और रक्षक करते हैं, वह क्षत्रियोंका ऋण है। हम वैश्योंसे धन लेते हैं वह धनरूप ऋण है। और अन्न, जल आदि हम विश्वसे लेते हैं वह देवोंसे लेनेके कारण देव ऋण है। ये सब ऋण उतारने चाहिये। इस ऋणको दूर करनेमें पुरुष और स्त्री इन दोनोंका भाग हो। ज्ञानका प्रचार करनेसे ऋषिऋण दूर होता है, नगर रक्षण करनेमें अपना भाग देनेसे क्षत्रियोंका-पितरोंका-रक्षकोंका ऋण दूर होता है, धनसे वैश्य ऋण दूर होता है और साफ सफाई, यज्ञ आदि करनेसे देवऋण दूर होता है।

इस तरह ऋण उतारनेकी विधि है। पुरुष भी ये ऋण उतारे और स्त्री भी ऋण उतार दे। इस तरह कुटुंबके सब लोग उऋण हों और आनन्दमें रहें।

संरक्षण करनेवाली स्त्री

अपना, कुटुंबका, परिवारका और नगरका संरक्षण करनेकी विद्या सीखना आवश्यक है। जीवनमें ऐसे समय आते हैं कि, जिस समय स्त्रियोंका संरक्षण करना कठिन हो जाता है। ऐसे समयमें स्वसंरक्षण करनेकी विद्या पास रहेगी तो ही स्वसंरक्षण हो सकता है। इसलिये उषाके नामोंमें 'सर्ववीरा' नाम है। सब प्रकारके वीरभावोंसे युक्त यह उषा है। ऐसी स्त्री होनी चाहिये। अतः इसका वर्णन इस तरह मन्त्रमें होता है-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२१ सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उषस्त्वम्।
तेन सुश्रवसं जनं प्र अव अद्य दुहितर्दिवः।
ऋ० १।४९।२

'हे स्वर्गकन्ये! उत्तम सुखदायक सुंदर रथपर बैठ और उत्तम श्रेष्ठ मनुष्यका आज तू संरक्षण कर।' यहां उषा रथपर बैठती है और रथ चलाती है और युद्ध करके सबका संरक्षण करती है। रथ जोडना, रथपर बैठना और रथको चलाना आदि स्त्रियोंको भी इनमें प्राविण्य संपादन करना चाहिये। रथपर चढकर शत्रुसे लडना और अपने लोगोंका संरक्षण करना यह भी यहां स्त्री ही करती है। ऐसी वीर स्त्रियां अपने राष्ट्रमें हों।

६१ विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योति-
ष्कृणोति सूनरी। अप द्वेषा मघोनी दुहिता
दिव उषा उच्छदप स्निधः॥ ऋ० १।४८।८

'(विश्वं जगत् अस्या ननाम) सब जगत् इस स्त्रीको प्रणाम करता है। (सूनरी ज्योतिः कृणोति) यह उत्तम संचालन करनेवाली प्रकाश करती है। (मघोनी दिवः दुहिता उषा) धनवाली स्वर्गकन्या यह उषा (स्निधः द्वेषः अप उच्छात्) हिंसक शत्रुओंको दूर करती है।' यह स्त्री ऐसी है कि सब इसको प्रणाम करते हैं, यह अपने पास धन रखती है और दुष्ट शत्रुओंको युद्ध करके दूर भगाती है। शत्रुको दूर भगा देनेकी शक्ति इसमें है, इसीलिये सब लोग इसको प्रणाम करते हैं। सब लोगोंका संरक्षण करके सबसे प्रणाम स्वीकारने वाली स्त्री हो। और देखिये—

६९ यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदृक्षत।
सा नो रयिं विश्ववारं सुपेशसमुषा ददातु
सुग्म्यम्॥ ऋ० १।४८।१३

'जिसके शत्रुनाशक प्रकाश कल्याण करते हैं ऐसा दीखता है, वह उषा सुंदर, सुखदायी, आदरणीय धन हमें देवे।'

उषाका तेज शत्रुका नाश करता है, और वह उत्तम धन देती है। इस तरह स्त्री शत्रुनाश करनेवाली हो और वह सुख दायक धन भी देवे। स्त्री धनकी स्वामिनी हो और अपने धनका वह सत्पात्रमें दान भी करे।

५० यावयद्द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरी
सूनृता ईरयन्ती। सुमंगलीर्बिभ्रती देववी-
तिमिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ॥ ऋ० १।११३।१२

'(यावयत्-द्वेषाः) शत्रुओंको दूर करनेवाली, (ऋतपाः ऋतेजाः) सत्यका पालन करनेवाली और सत्यका पालन करनेके लिये जन्मी, (सुम्नावरी) सुख देनेवाली, (सूनृता ईरयन्ती) उत्तम भाषण करनेवाली, (सुमंगली) उत्तम कल्याण करनेवाली, (देववीतिं बिभ्रती) देवोंके लिये यज्ञका धारण करनेवाली (श्रेष्ठतमा) अत्यंत श्रेष्ठ ऐसी उषा आज यहां प्रकाशती रहे।' यहांके सब विशेषण आदर्श स्त्रीका गुण-वर्णन करनेवाले हैं। इनमें 'यावयत्-द्वेषः' शत्रुओंको दूर भगानेवाली यह विशेषण विशेष मनन करने योग्य है। शत्रुओंको दूर भगानेके लिये शूरता और वीरता चाहिये। वह स्त्रीमें रहे। यहांके 'ऋत' पदका अर्थ, सरलता, सत्य, यज्ञ, शुभ कर्म, जिसमें टेढापन नहीं ऐसा शुभकर्म है। श्रेष्ठ स्त्री वह है कि जो सबसे प्रथम शत्रुको दूर करके अपना घर सुरक्षित करती है। सत्यभाषण करती है, मधुर भाषण करती है। सदा शुभ कर्म करती है, और कभी छल कपट टेढी चाल आदिमें अपना मन डालती नहीं। सदा मंगल कामना करती है और मंगल कर्मोंको बढाती हुई सबका मंगल करती है।

१०६ यावयद्द्वेषसं त्वा चिकित्वत् सूनृतावरि।
प्रति स्तोमैरभुत्स्महि॥ ऋ० ४।५२।४

'तू ज्ञानी और सत्यभाषण करनेवाली है और तू शत्रुओंको दूर करती है, इसलिये स्तोत्रोंसे तेरा वर्णन हम करते हैं।' इसमें भी ज्ञान और सत्य निष्ठाके साथ शत्रुको दूर करनेकी शक्ति इस स्त्रीमें है ऐसा कहा है। तथा—

१२४ द्वेषः अपबाधमाना ऋ० ५।८०।५

'द्वेष करनेवाले शत्रुओंको दूर करनेवाली' ऐसा उषाका वर्णन किया गया है। और भी—

१३८ व्युषा आवो दिविजा ऋतेनाविष्कृण्वाना
महिमानमागात्। अप द्रुहस्तम आवरजुष्ट-
मंगिरस्तमा पथ्या अजीगः॥ ऋ० ७।७५।१

'दिव्य उषा रक्षण करती है, (ऋतेन महिमानं आविः कृण्वाना) सत्यसे अपनी महिमाको प्रकट करती हुई आरही है, (द्रुहः अजुष्टं तमः अप आवः) द्रोह करनेवाले शत्रुको तथा अनिष्ट अन्धकारको दूर करती है और (पथ्या अजीगः) मार्गोंको बताती है।' इस मंत्रमें भी द्रोह करनेवाले शत्रुओंको भगाती है ऐसा कहा है। अपनी महिमाको प्रकट करती है। और द्रोही दुष्टोंको दूर भगाती है। स्त्रीमें ऐसी शक्ति रहनी चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४४ सत्या महद्भिः सत्येभिः दृळ्हानि रुजत् ।

ऋ० ७।७५।७

' सत्य पालन करनेवाली यह वीर स्त्री सत्य शक्तिवाले बडे वीरोंके साथ (दृळ्हानि रुजत्) सुदृढ और सुस्थिर हुए शत्रुओंको भी नष्ट भ्रष्ट कर देती है । ' सुदृढ हुए दृढमूल हुए शत्रुओंको भी स्थानभ्रष्ट करनेका सामर्थ्य जिस स्त्रीमें है ऐसी स्त्रीका यह वर्णन है ।

१५६ अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छ ऊर्वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः ॥ द्वेषः यावय ॥

ऋ० ७।७७।४

' (अन्तिवामा) अपने पास धन रखनेवाली यह वीर स्त्री (अमित्रं दूरे उच्छ) शत्रुको दूर भगा देवे और (ऊर्वीं गव्यूतिं नः अभयं कृधि) विशाल भूमिको हमारे लिये निर्भय करे । ' यह स्त्री धन अपने पास रखती है, जो स्वसंरक्षण कर सकती है वह स्त्री धन अपने पास क्यों न रखे ? यह वीर स्त्री शत्रुको दूर भगाती है और अपने प्रदेशको निर्भय करती है ।

इसी मंत्रमें (द्वेषः यावय) शत्रुओंको दूर कर ऐसा कहा है । यह भी मननीय है । स्त्रियां ऐसी समर्थ होनी चाहिये कि जो अपनी शक्तिसे शत्रुको दूर भगा सकती हैं ।

१७७ सूनृतावती स्त्रिधः अप उच्छत् ।

ऋ० ७।८१।६

' सत्य बोलनेवाली वीर स्त्री हिंसक शत्रुओंको दूर करे । ' इसी तरह–

१२८ अस्ता शूर इव शत्रून् अपेजते ।

ऋ० ६।६४।३

' शत्रुका अचूक वेध करनेवाले शूर वीरके समान यह वीरा स्त्री शत्रुओंको दूर भगाती है । '

इस तरह उषा देवीके वर्णनसे स्त्रीके उत्तम शौर्य वीर्यादि शुभगुणोंका वर्णन किया है और यह बताया है कि स्त्री भी शूरा और वीरा बने, युद्ध करनेकी विद्या सीखे, पदाति युद्ध, रथयुद्ध आदि करनेकी कला हस्तगत करे । और अपने स्थानका संरक्षण करे और अपने नगरको निर्भय करे । स्त्रीको भी सामर्थ्यवान्, प्रभावशाली, शूर, वीर, युद्ध विद्यामें कुशल तथा शत्रुओंको यथायोग्य दण्ड देनेमें समर्थ बनना चाहिये । स्त्री अबला नहीं, वह स्त्री होनेपर सामर्थ्यवती भी है और सर्व रीतिसे पुरुषपर अवलंबित रहनेवाली ही नहीं है । इस तरह स्त्रीकी शूरता और वीरताका वर्णन उषा सूक्तोंमें है ।

पहिले जागना

स्त्री अपने घरमें रहनेवालोंके पहिले उठे और जागे । और अन्योंको उठावे, इस प्रकारका उपदेश उषाके मंत्रोंमें मिलता है–

४३ जिह्मश्ये३ चरितवे मघोन्याभोगाय इष्टये राय उ त्वम् । दभ्रं पश्यद्भ्य उर्विया विचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ॥

ऋ० १।११३।५

' (जिह्मश्ये चरितवे) सोनेवालोंको घुमानेके लिये, (आभोगाय) भोगोंको प्राप्त करनेके लिये, (इष्टये राये) यज्ञ करनेके लिये तथा धन प्राप्त करनेके लिये, (दभ्रं पश्यद्भ्यः विचक्षे) जिनको कम दीखता है उनको अधिक स्पष्ट रीतिसे दिखानेके लिये धनवाली विशाल उषा (विश्वा भुवना अजीगः) सब भुवनोंको जगाती है । ' अर्थात् लोगोंको अपने अपने कार्य करानेके लिये उषा स्वयं पाहिले जागती है और दूसरोंको जगाती है । इसी तरह स्त्री अपने घरमें करे । तथा और भी–

४४ क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै । विसदृशा जीविताभिप्रचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ॥

ऋ० १।११३।६

' युद्धादि क्षात्र कर्मके लिये, अन्न प्राप्ति तथा यश प्राप्तिके लिये, बडे यज्ञ करनेके लिये, धन प्राप्त करनेके लिये और प्रगति करनेके लिये, विविध प्रकारके जीवन साधनोंको देखनेके लिये उषा सब भुवनोंको जगाती है । '

अर्थात् उषा सबसे पहिले उठती है और दूसरोंको इन कार्योंको करनेके लिये जगाती है । इसी तरह स्त्री अपने घरमें करे ।

४६ जीवं उदीरयन्ती, कंचन मृतं बोधयन्ती ।

ऋ० १।११३।८

' यह जीवोंको उठाती है, मरे जैसे सोनेवालोंको पुरुषार्थ करनेके लिये ज्ञान देती है । ' उठाती है, जगाती है ।

४७ यन्मानुषान् यक्ष्यमाणाँ अजीगः तद्देवेषु चकृषे भद्रमप्नः ॥

ऋ० १।११३।९

' जो तू याजक मनुष्योंको अर्थात् ऋत्विजोंको जगाती है, वह कर्म देवोंमें कल्याणकारक है, ऐसा माना जाता है । ' उषा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आनेपर ही याजक उठते हैं और यज्ञ करने लगते हैं इसका यह वर्णन है ।

६० विश्वस्मात् भुवनात् पूर्वा अबोधि । ऋ. १।१२३।२

' सब प्राणी उठनेके पूर्व ही यह स्त्री उठी है । ' घरमें गृहिणी सब अन्य लोग उठनेके पूर्व उठे, घरमें प्रकाश करे और कार्य करनेका प्रारंभ करे । तत् पश्चात् दूसरोंको जगा देवे । वे भी उठकर अपने अपने कार्योंका प्रारंभ करें । कोई आलसी न रहे ।

७५ अज्ञसत् न ससतः बोधयन्ती । ऋ० १।१२४।४

" घरमें रहनेवाली स्त्री जैसी स्वयं उठनेके बाद अन्य सोनेवालोंको जगाती है । वैसी उषा जगाती है । "

८१ प्रबोधय उषः पृणतो मघोनि
अबुध्यमानाः पणयः ससन्तु । ऋ० १।१२४।१०

' हे धनवाली उषा ! तू दाताओंको जगा दो । जो (अबुध्यमानाः पणयः ससन्तु) जो न जागनेवाले पणी हैं वे सोते रहें, उनकी हानि होगी । यदि वे जाग उठेंगे तो उनका कल्याण होगा । '

८३ उत् ते वयः चित् वसतेः अपप्तन्
नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ । ऋ० १।१२४।१२

' पक्षी भी उषःकालमें अपनी वस्तीसे उठते हैं और उडने लगते हैं । अतः मनुष्य भी उषःकालका प्रकाश होते ही अन्न प्राप्तिके लिये प्रयत्न करनेके लिये उठें और प्रयत्न करने लगें । '

३४ अचित्रे अन्तः पणयः ससन्तु
अबुध्यमानास्तमसो विमध्ये । ऋ० ४।५१।३

' घने अन्धकारमें सोते रहनेवाले, और न जागनेवाले पणी अन्धकारमें पडे रहें । ' जो जगानेपर भी नहीं उठते, उनके लिये किया क्या जाय ? वे पीछे रहें । उद्यमी लोग आगे बढेंगे ।

९६ प्रबोधयन्तीः उषसः ससन्तं
द्विपाच्चतुष्पाच्चरथाय जीवम् । ऋ० ४।५१।५

' ये उषायें द्विपाद और चतुष्पात् प्राणियोंमें जो सोये रहते हैं, उनको उद्यममें प्रेरित करनेके लिये जगाती हैं । '

१२१ एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः
कृण्वती यात्यग्रे । बृहद्रथा बृहती । ऋ० ५।८०।२

' यह (दर्शता) सुन्दर स्त्री लोगोंको जगाती है, मार्गोंको जाने योग्य सुगम बनाती है । स्वयं बडे रथमें बैठकर आगे जाती है । ' स्वयं आगे जाती है और दूसरोंको अपने पीछे लाती है । स्वयं उठती है दूसरोंको उठाती है । स्वयं कर्म करने लगती है और दूसरोंको कर्म करनेकी प्रेरणा करती है ।

१३१ एषा मानुषीः क्षिती अजीगः । ऋ. ६।६५।१

१३९ महे सुविताय बोधि । ऋ. ७।७५।२

१६४ उषा व्यावः मानुषीः पञ्च क्षितीः बोधयन्ती । ऋ. ७।७९।१

' यह उषा मनुष्योंके पांचों जातियोंको उठाती है । सबको जगाती है । उनका कल्याण करनेके लिये प्रकाश करती है । '

इस तरह गृहिणी अपने घरमें उषःकालमें उठे, स्वयं घरमें प्रकाश करे, दूसरोंको जगावे और कर्मके लिये उनको प्रवृत्त करे ।

द्वार खोल दो

१६७ दृळहस्य अद्रेः दुरः व्योर्णोः । ऋ० ७।७९।४

' सुदृढ कीलेके द्वार खोलो ' यहां शत्रुके कीलेके द्वार खोलो ऐसा भाव है । शत्रुपर आक्रमण करो, उसका पराभव करो और उसके कीलेमें प्रवेश करो । यह वीरताका कार्य यहां स्त्री करती है ।

९३ व्रजस्य तमसः द्वारा उच्छन्तीः शुचयः
पावका अव्रन् । ऋ० ४।५१।२

' गौवोंके बाडेके अन्धकारमें बंद रहे द्वार खोलो और शुद्ध प्रकाश फैलाओ । '

५१ देवी कृष्णां निर्णिजं अप आवः । ऋ. १।११३।१४

' यह देवी काले घने अन्धकारको दूर करती है, अर्थात् प्रकाश करती है ।

स्त्री प्रातःकाल उठे, अपने घरमें प्रकाश करे, घरके सब द्वार देखे, गौओंके बाडेके द्वार खोले और गौओंको बाहर चरनेके लिये छोडे । इस तरह घरका काम करें ।

घरमें प्रकाश करो

२३ व्युच्छन्ती– उषा प्रकाश करती है, उषा उठती है तत्पश्चात् पहिला कार्य जो वह करती है, वह है घरमें प्रकाश करना ।

२३ विश्वं रश्मिभिः आभासि । ऋ. १।४९।४

' अपने किरणोंसे सबको प्रकाशित करती है । ' अपने पासके प्रकाशसे सबको प्रकाशित करती है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२७ विश्वस्मै भुवनाय ज्योतिः कृण्वती उषा तमः व्यावः ।

' सब भुवनोंको प्रकाशित करनेके लिये प्रकाश करती है और अन्धकारको दूर करती है । '

३२ अस्य तमसः पारं अतारिष्म ।

' इस अन्धकारके परे हम इसके प्रकाशसे पहुंचे हैं ।

१०८ ज्योतिषा तमः व्यावः ।

' प्रकाशसे अन्धकार इसने दूर किया है । '

१६० उषादेवी विश्वा दुरिता तमांसि ज्योतिषा अपबाधमाना याति ।

' उषादेवी सब गाढ अन्धकारको अपने प्रकाशसे दूर करती हुई जाती है ।

१६१ अजुष्टं तमः अपाचीनं अगात् ।

' अप्रिय अन्धकार दूर भाग गया है । '

१६९ विश्वा भुवनानि आविः कृण्वन्ति ।

' उषाएं सब भुवनोंको प्रकाशित करती हैं ।'

इस प्रकार अनेक मंत्रोंमें उषाके प्रकाश करनेकी बात वर्णन की है । उषा उठती है और अपने घरमें प्रथम प्रकाश करती है । प्रकाश करनेके बाद द्वार खोलती है । गोशालामें जाकर गौओंको देखती है । पश्चात् गौओंको चरनेके लिये बाहर भेजती है । इससे पूर्व दूध निकालती है । घरवाले सोते रहे तो उनको जगाती है । उनको कार्यमें लगाती है । इस तरह इस देवीका कार्य शुरू होता है । यह स्त्रीका आदर्श है । घरकी स्त्री ऐसे कार्य करे यह इसका तात्पर्य है ।

विरुद्ध रूपवाली दो बहिनें

उषा सूक्तोंमें विरुद्ध रंगरूपवाली दो बहनोंका वर्णन है । एक बहिन रात्री है, यह काली है, कुरूप है, भयानक दीखनेवाली है । दूसरी बहिन उषा है, यह गोरी है, सुंदर है, चमकदमकवाली है, वारंवार अपने वस्त्र बदलती है और अपना सौंदर्य अधिक सुंदर बनाती है । लोकमें हम देखते हैं कि गोरी स्त्री काली कुरूप स्त्रीका मान नहीं रखती । उसको हीन मानती है, उसका अपमान करती है । अपने सौंदर्यकी घमण्डमें गोरी स्त्री रहती है और कालीको तुच्छ समझती है । काली बिचारी अपने काले रंगके कारण पीछे पीछे रहती है । ऐसा व्यवहार हम जगत्में देखते हैं ।

पर वेदने बताया है कि ये दोनों बहिनें परस्परके साथ मिलजुलकर रहती हैं, परस्पर प्रेम करती हैं । परस्परके विषयमें आदर रखती हैं । ऐसा ही आदर्श अपने व्यवहारमें स्त्रियोंको धारण करना चाहिये ।

६५ अपान्यदेत्यभ्य१न्यदेति विषुरूपे अहनी संचरेते । परिक्षितोस्तमो अन्या गुहाकरद्यौदुषाः शोशुचता रथेन ॥ ऋ० १।१२३।७

(' विषुरूपे अहनी संचरेते) विरुद्ध रूपवाली रात्री और उषा, ये दो स्त्रियां संचार करती हैं । (अन्यत् अप एति) एक चली जाती है और (अन्यत् अभि एति) दूसरी सामने आ जाती है । (परिक्षितोः अन्या) इन घूमनेवालीयोंमेंसे एक रात्रीने (तमः गुहा अकः) अन्धकारसे सबको छिपा रखा था, और दूसरी उषा (शोशुचता रथेन अर्थात्) तेजस्वी रथसे प्रकाशती हुई चलती है । '

रात्री आती है और सब विश्वपर अन्धेरा छा देती है । भय, डर, शत्रु चोर आदिके आक्रमण इस समय होते हैं । दूसरी उषा अपने चमकदमकके साथ चमकदार रथमें बैठकर अपने प्रभावसे आती हैं और सबको प्रकाशित करती है, शत्रुको दूर करती है और सबको निर्भय बना देती है ।

२०४ सनात् दिवं परिभूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती स्वेभिरेवैः । कृष्णेभिरक्तोषा रुशद्भिर्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या ॥ ऋ० १।६२।८

' (विरूपे पुनर्भुवा युवती) परस्पर विरुद्ध रंगरूपवाली पुनः पुनः आनेवाली ये दो स्त्रियां (स्वेभिः एवैः) अपने सामर्थ्योंसे (सनात् दिवं भूमा परिचरतः) अनादि कालसे द्युलोक और भूलोकके मध्यमें भ्रमण करती हैं । (कृष्णेभिः अक्ता) अन्धकारसे रात्री और (रुशद्भिः वपुर्भिः उषा) तेजस्वी शरीरावयवोंसे उषा (अन्या अन्या पर्याचरतः) एकके पीछे दूसरी आती है और अपना कार्य करके चली जाती है । '

दोनोंके रंगरूप विभिन्न हैं, दोनोंके कार्य भी विभिन्न हैं । पर ये अपने अपने कर्तव्यमें दत्तचित्त रहती हैं और दूसरेके कर्तव्यके क्षेत्रमें हस्तक्षेप नहीं करती । इस तरह इन दोनों बहिनोंका कार्य चल रहा है । इस तरह स्त्रियां अपने कार्यमें दत्तचित्त होकर रहें और दूसरेके कार्यमें हस्तक्षेप न करें । दूसरेकी कुरूपताकी निंदा न करें और अपनी सुंदरताकी घमंड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी न करें। अपना कर्तव्य करती रहें। यह आदर्श स्त्रियोंके लिये यहां दिया गया है।

४१ स्वस्रोः अध्वा समानः अनन्तः।

'इन दोनों बहिनोंका-रात्री और उषारूप दोनोंका मार्ग एक ही है और वह अनन्त है।'

४१ देवशिष्टे अन्या अन्या तं चरतः।

'ईश्वरकी आज्ञानुसार ये दोनों बहिने एकके पीछे एक उस मार्ग परसे चलती हैं।'

४१ नक्तोषासा सुमेके विरूपे समनसा न तस्थतुः न मेथेते।

'ये रात्री और उषा दोनों परस्पर प्रेमपूर्वक परस्पर विरुद्ध रंगरूपवाली होनेपर भी (समनसा) एक मनसे कार्य करती हैं, (न तस्थतुः) कभी एक स्थानपर न ठहरती है, न आराम लेती हैं और (न मेथेते) परस्परका कार्य कभी बिगाडती भी नहीं।' ये दोनों परस्पर प्रेमसे अपना अपना कार्य करती हैं। इसी तरह स्त्रियोंको परस्पर प्रेमपूर्वक रहना और कर्तव्य करना चाहिये।

७९ स्वसा ज्यायस्यै स्वस्रे योनिं आरैक्, अस्याः प्रतिचक्ष्य इव अपैति। ऋ० १।१२४।८

'यह उषा नामकी बहिन अपनी (ज्यायस्यै स्वस्रे) बडी बहिन रात्रीको (योनिं आरैक्) स्थान करके देती है। (अस्याः प्रतिचक्ष्य) इस उषाको देखकर (अप एति) वह रात्री स्वयं दूर चली जाती है।'

एक दूसरीके लिये रहनेके लिये स्थान करके देती है और स्वयं दूर चली जाती है। परस्परके प्रेमसे ऐसा किया जाता है। ऐसा प्रेम स्त्रियोंमें परस्पर रहना चाहिये। दूसरीके लिये स्थान देना और स्वयं वहांसे दूर देशमें जाना यह उदारतासे होता है। ऐसी उदारता स्त्रियोंमें रहनी चाहिये।

१०३ स्या सूनरी जनी स्वसुः परिव्युच्छन्ती।

'यह उषा उत्तम भाषण करनेवाली (जनी) पुत्रको जन्म देनेवाली (स्वसुः) अपनी बहिन रात्रीको भी प्रकाश देती है।' जिस समय उषा आती है उस समय जो रात्री रहती है, उसको प्रकाश मिलता है। इस तरह इन दो बहिनोंमें परस्पर प्रेम है।

यहांका वर्णन आलंकारिक है। इस अलंकारसे मनुष्योंने अपने आचरणमें लानेके योग्य बोध लेना चाहिये। इसलिये यह वर्णन है।

उत्तम गृहिणी

उत्तम गृहिणीका आदर्श भी उषाके मंत्रोंमें हमें मिलता है। यह उषा 'योषा' (तरुण स्त्री) के रूपमें वर्णन की गयी है-

८ सूनरी योषा उषाः आयाति।

'सत्य बोलनेवाली (सू-नरी) उत्तम नेतृत्व करनेवाली यह तरुण स्त्री उषा आ रही है।' यहां 'सू-नरी' शब्द है। उत्तम नेतृत्व करनेवाली, उत्तम संचालन करनेवाली यह अर्थ इस पदमें है। तथा और देखिये—

११ सूनरी ज्योतिः कृणोति।

'यह उत्तम नेतृत्व करनेवाली स्त्री प्रकाश करती है।' यह सबसे प्रथम उठती है और अपने घरमें प्रकाश करती है। तथा-

१३ हे सूनरि! यत् उच्छसि, त्वे हि विश्वस्य प्राणनं जीवनम्।

'हे उत्तम नेतृत्व करनेवाली स्त्री! जब तू प्रकाशती है, तब तुम्हारे अन्दर तुम्हारे आश्रयसे ही सब विश्वका प्राण और जीवन है।' तुम्हारे जीवनके साथ सब विश्वका जीवन जुडा हुआ है।

४१ भास्वती सूनृतानां नेत्री अचेति, चित्रा नः दुरः व्यावः।

'तेजस्विनी सत्कर्मोंका संचालन करनेवाली यह तरुणी इधर आ रही है। यह विलक्षण सुन्दर स्त्री हमारे लिये द्वारोंको खोलती है।'

६७ ऋतस्य योषा न मिनाति धाम अहरहर्निष्कृतं आचरन्ती। ऋ० १।१२३।९

'यह तरुणी स्त्री सत्य यज्ञके स्थानोंका नाश नहीं करती और प्रतिदिन नियत कर्तव्यका आचरण करती है।' प्रशस्त कर्म करना गृहिणीका कर्तव्य है।

३०० उषसः अर्यपत्नीः यः चकार।

'उषाओंको आर्य स्त्रियां जिसने बनाया' अर्थात् उषाके वर्णनमें आर्य स्त्रीका आदर्श है। वह उषाके मंत्रोंमें देखना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६९ त्वं भद्रा वितरं व्युच्छ।
ते तत् अन्या उषासः न नशन्त।

'तूं कल्याण करनेवाली तरुणी है, अतः तूं अच्छी तरह प्रकाशित हो जाओ। तेरा वह उत्तम सौंदर्य दूसरी उषाएं विनष्ट नहीं कर सकती।' तुम्हारा सौंदर्य तुम्हारे पास ही रहेगा। तुम अपना सौंदर्य बढाओ और कल्याणकारक कर्मोंको करो। यही तरुण स्त्रियोंको शोभा देनेवाला कार्य है।

७४ एषा समना दिवो दुहिता ज्योतिः वसाना पुरस्तात् प्रत्यदर्शि।

'यह शुभमनवाली स्वर्गकन्या तेजस्वी वस्त्र पहनकर सामने दिखाई दे रही है।'

८२ इयं युवतिः पुरस्तात् अच अश्वैत्।

'यह तरुणी सामने काम करने लगी है।' प्रगति करती है। अपना कार्य व्यवहार करती है। आलस्यमें अपना समय नहीं गमाती।

८२ अरुणानां गवां अनीकं युंक्ते।

'लाल रंगवाली गौओंके झुण्डोंको संभालती है।' गौओंकी पालना करती है। गोरक्षा करनेवाली यह तरुणी है।

१२५ युवतिः ज्योतिः पूर्वथा अकः।

'इस तरुणीने पहिलेके समान ही प्रकाश किया।' अर्थात् यह तरुणी सबसे पहिले उठी और अपने घरमें इसने प्रकाश किया और यह सब जैसा यह पहिले करती थी वैसा ही इसने आज भी किया है।

१५३ युवतिः योषा न उषा रुरुचे
विश्वं जीवं चरायै प्रसुवती।

'यह तरुणी तरुण स्त्रीके समान चमक रही है और सब प्राणियोंको अपने कर्म करनेके लिये प्रेरित करती है।' यह स्वयं जलदी उठती है और दूसरोंको भी अपने अपने कर्तव्य कर्म करनेके लिये प्रेरित करती है।

१७० एषा उषा नव्यं आयुः दधाना
ज्योतिषा तमः अबोधि।

यह उषा नवीन तारुण्यकी आयु धारण करती है और अपने प्रकाशसे अन्धकारको जानबूझकर नाश करती है।

अर्थात् अपने घरमें प्रकाश करती है और अपने घरका अन्धेरा दूर करती है और पश्चात् कार्यकर्ताओंको उठाती है।

१७० अग्रे अह्रयमाणा युवतिः एति।

'लज्जा न करनेवाली तरुणी स्त्रीके समान यह तरुणी आगे बढ रही है।'

१८७ अर्किणी रूपा चित्रा प्रत्यदर्शि।

'तेजस्विनी सुंदर रूपवाली विलक्षण प्रभाववाली स्त्री सामने दीख रही है।'

१८८ सुशिल्पे दर्शते मही बृहती।

'उत्तम शिल्पक्रियामें निपुण दर्शनीय सुन्दर-बडी महत्त्व-वाली यह स्त्री है।'

१८९ सुशिल्पे दिवो दुहितरा योनौ सीदताम्।

'उत्तम शिल्पकर्ममें निपुण स्वर्गीय कन्यायें अपने घरमें उत्तम आसनपर बैठती हैं।'

१९० दिव्ये योषणे सुरुक्मे शुक्रपिशं अधिश्रियं दधाने योनौ सीदताम्।

'ये दोनों दिव्य स्त्रियां उत्तम अलंकार धारण कर, शुद्ध सुंदररूप और शोभा धारण करके यज्ञस्थानमें आकर बैठें।'

२०७ सनीळाः उशन्तीः जनयः उशन्तं पतिं नित्यं न उप प्रजिन्वन्।

'एक घरमें रहनेवाली पतिकी इच्छा करनेवाली स्त्रियां स्त्रीकी इच्छा करनेवाले पतिके पास जैसी सदा जाती हैं।' वैसी सुन्दर स्त्रियां अपने पतिके पास जांय।

उत्तम गृहिणीका आदर्श इस तरह उषाके मंत्रोंमें वर्णन किया है।

मातापिताकी तृप्ति

७६ पित्रोः उपस्था उभा आपृणन्ती।

'मातापिताके समीप रहकर दोनोंको सन्तुष्ट करती है।' पुत्री माता और पिताके पास रहकर उनकी सेवा करे और उन दोनोंको सन्तुष्ट करे। विवाहित हो जानेपर भी मातापिताका प्रेम न छोडे।

पिता

१९१ इन्द्रः उषसं जजान।
११८ यः उषसं जजान।
१९० उषसं साकं जजान।

इन मंत्रोंमें उषाका जनक पिता इन्द्र है, ऐसा कहा है।

...jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतिप्रेम

३०० यः उपसः अर्यपत्नीः चकार।

'जिसने उषाओंको आर्यवीरोंकी पत्नी बनाया।' उषा दिव्य कन्या थी, उसका विवाह आर्यवीरसे हुआ। इस तरह वीरा कन्या वीर आर्यके साथ विवाहित हुई। इसी तरह सुयोग्य कन्याका विवाह सुयोग्य पतिके साथ होना योग्य है।

२१ विभाती सुप्रतीका सौमनसाय स्मयेते।

'तेजस्विनी सुन्दर स्त्री पतिके मनकी प्रसन्नताके लिये हंसती है।' इस तरह स्त्री पतिके सामने हास्यमुख करके सब व्यवहार करे। कभी क्रोधित या दुर्मुख होकर पतिके सामने न आवे।

पुत्रवाली स्त्री

४० रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्या आगात्।

'जिसका बालक तेजस्वी है, ऐसी स्वयं तेजस्विनी गौरवर्ण स्त्री आरही है।' यहां बालक तेजस्वी होना चाहिये ऐसा कहा है। स्त्री अपने मनमें यही विचार धारण करे कि मेरा पुत्र तेजस्वी तथा वीर्यवान् बने।

१३३ मर्त्येषु श्रवस्युः अस्मे धेहि।

'मनुष्योंमें यशस्वी पुत्र हमें दो।' सब मानवोंमें जिसका यश फैलता है, सब मानव जिसके यशका वर्णन करते हैं ऐसा पुत्र हमें दो। मातपिता ऐसी इच्छा मनमें सदा रखें।

२५५ मातुः उपसः सप्त विप्रा जायेमहि।

'उषा माताके सात पुत्र होते हैं।' सात पुत्र हों और कुछ कन्या भी हों। ऋग्वेदमें अन्यत्र '**अष्टौ पुत्रासः अदितेः**' अदितिके आठ पुत्र कहे हैं। और '**दश अस्यां पुत्रान् आधेहि**' इस स्त्रीमें दस पुत्र उत्पन्न कर ऐसा कहा है। यहां सात पुत्रोंका वर्णन है। संतति संपत्ति अच्छी होनी चाहिये।

पति और श्वशुरकी सेवा

उषा श्वशुरकी भी सेवा करती है और पतिकी भी। इस विषयमें निम्न लिखित मंत्र देखने योग्य है–

३७९ सा वसु दधती श्वशुराय वयः उषो यदि वष्ट्यन्ति गृहात्। अस्तं ननक्षे यस्मिन् चाकन् दिवा नक्तं श्नथिता वैतसेन॥ ऋ० १०।९५।४

"(सा श्वशुराय वसु वयः दधती) वह स्त्री अपने श्वशुरके लिये दीर्घायुतक बसानेवाला अन्न देती है। (यदि वष्टि) जब चाहता है तब (अन्ति गृहात्) अन्दरके कमरेसे आकर उसकी सेवा करती है। (अस्तं ननक्षे) अपने पतिके घर जाती है और (दिवा नक्तं) दिनरात (वैतसेन श्नथिता) नम्रभावसे रहकर पतिको स्नेहभावसे परम संतोष देती है।"

श्वशुरके लिये उत्तम अन्न देती है। 'वसु' का अर्थ जिससे सुखपूर्वक निवास हो सकता है और 'वयः' का अर्थ आयुको बढानेवाला अन्न। ऐसा अन्न श्वशुरको देती है। उसको वृद्ध आयुमें जैसा चाहिये वैसा अन्न देती है। इस तरह श्वशुरकी सेवा करती है और पतिके पास जानेके लिये अपने कमरेमें जाती है और वेतसके समान नम्रभाव धारण करके पतिके सामने अपना स्नेह भाव प्रकट करती है। वेतस् सख्त नहीं रहता। नरम, कोमल रहता है। दूसरेके साथ लपेटा जा सकता है। वैसी वृत्ती आलिंगन देनेकी वृत्ती है। यह प्रेम और स्नेहकी वृत्ति है। इससे पतिको परम संतोष होता है। इस तरह श्वशुर और पतिको स्त्री परम संतोष देवे।

घर

उषा उत्तम घर देती है इस विषयमें निम्नलिखित मन्त्र देखने योग्य है—

१८ प्र नो यच्छादवृकं पृथु छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः॥ ऋ० १।४८।१५

'उषा देवी हमें अहिंसक विशाल घर देवे और गौओंके साथ उत्तम अन्न देवे।' घर विशाल हो और (अवृकं) हिंसक जानवरों और हिंसक मानवोंका उपद्रव वहां न हो। इसी तरह उसमें गौवें हों और उत्तम पौष्टिक अन्न हो। ऐसा वडा घर हमें रहनेके लिये मिले।

यहां झोपडी रहनेके लिये मांगी नहीं है, पर विशाल और पक्का सुदृढ घर मांगा है, जो सुन्दर और सुरक्षित हो। जहां घातपात होनेकी संभावना न हो। आसपासकी वसती अच्छी हो। तथा—

५९ अर्या मानुषाय क्षयाय चिकित्सन्ती कृष्णात् उदस्थात्। ऋ० १।१२३।१

"यह श्रेष्ठ उषा (मानुषाय क्षयाय चिकित्सन्ती) मानवोंके सुखपूर्वक निवासके लिये ज्ञानपूर्वक यत्न करती है और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसीलिये रात्रीके अन्धकारसे ऊपर उठकर आती है। "मानवी (क्षयगृह) घरोंको सुख पहुंचानेकी इच्छा करती हैं।

६२ गृहं गृहं अहना यात्यच्छा दिवे दिवे अधि नामा दधाना। ऋ० १।१२३।४

'प्रतिदिन यश प्राप्त करती हुई उषा घर घर पहुंचती है।' अर्थात् प्रत्येक घरका निरीक्षण करती है। अपने अनुयायियोंके घरोंकी परिस्थिति कैसी है यह देखना स्त्रीका मुख्य कार्य है।

रथ, घोडे और गौवें

उषाके पास रथ और घोडे बहुत होते हैं, उन रथोंमें वह बैठती है और अच्छे घोडोंको जोत कर वह रथोंको चलाती है। इस विषयमें ये मंत्र देखने योग्य हैं।

८६ उषो देव्यमर्त्या विभाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती। आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये॥ ऋ० ३।६१।२

"हे उषा देवी! (चन्द्र-रथा सूनृता ईरयन्ती) चन्द्रके समान सुन्दर रथमें बैठनेवाली और मधुर भाषण करनेवाली तू (विभाहि) प्रकाशती रह। (ये पृथु पाजसः सुयमासः अश्वाः) जो विशेष बलवान और स्वाधीन रहनेवाले घोडे हैं वे (हिरण्य-वर्णां त्वा) सुवर्णके समान रंगवाली तुझको (आवहन्तु) ले आवे।"

यहां उषाका रथ 'चन्द्ररथः' चन्द्रमाके समान तेजस्वी कहा है। यह रथ यह चांदीका बना होगा जो चन्द्रमाके समान दीखता है।

उषाके घोडे (सु-यमासः) उत्तम शिक्षित हैं जो इशारेसे चलते और स्वाधीन रहते हैं। साथ साथ वे (पृथु-पाजसः) विशेष बलवान भी हैं। ऐसे रथमें यह बैठती है।

१३ सा हि बृहता रथेन।

'वह बडे रथसे आवे।' यहां उषाका रथ बडा है ऐसा कहा है।

२१ हे उषः! त्वं सुपेशसं सुखं रथं अध्यस्थाः।

'हे उषा! तू अत्यंत सुन्दर और सुखदायी रथमें बैठती है।' रथ बडा है, सुन्दर है और बैठनेवालोंको सुख देनेवाला भी है।

५९ दक्षिणायाः पृथुः रथः अयोजि।

'इस दक्ष उषाका बडा रथ घोडे जोतकर तैयार हुआ है।'

१२१ बृहद्रथा बृहती उषा।

'बडे रथमें बैठनेवाली यह उषा बडी है।' यहां भी उषाका रथ बडा है ऐसा कहा है।

९५ वः सनयः नवो वा यामः अद्य कुवित् बभूयात्।

'तुम्हारा यह रथ पुराना ही है, अथवा आज नया लाया है।' जो आज बहुत घूम रहा है।

३८ अरुणान् अश्वान् युंक्ष्व।

'हे उषा! तू आज लाल घोडोंको जोत' यहां उषाके घोडोंका रंग लाल और पीला मिला हुआ अर्थात् अरुण रंग है ऐसा कहा है।'

५२ अरुणेभिः अश्वैः सयुजा रथेन आयाति।

'लाल रंगके घोडे जिसके साथ जोते हैं ऐसे उत्तम रथसे उषा आती है।'

१३३ चन्द्ररथाः उषसः अरुणयुग्भिः अश्वैः वि ययुः।

'सुन्दर चमकदार रथमें बैठनेवाली उषाएँ लाल रंगके घोडोंको जोतकर चली गयी।'

१४३ शुभ्रा विश्वपिशा रथेन याति।

'यह गौरवर्ण उषा उत्तम सुन्दर रथसे आती है।

६ रथानां जीरा उच्छात्।

'रथोंको चलानेवाली उषा प्रकाशने लगी है।' यह उषा रथको स्वयं चलाती है।

२० अरुणप्सवः त्वा उपवहन्तु।

'लाल रंगके घोडे तुझे ले आवे।'

१० इयं सुभगा उषा मानुषान् शतं रथेभिः अभि वियाति।

'यह भाग्यवाली सुन्दरी उषा मनुष्योंके पास सेंकडों रथोंके साथ आती है।' अर्थात् उषाके रथके साथ अन्य अनुयायियोंके भी अनेक रथ रहते हैं।

१० एषा सूर्यस्य उदयनात् अधि अयुक्त।

'यह उषा सूर्यके उदयके पूर्व ही अपना रथ जोडती है और घूमने लगती है।

१५९ बृहता ज्योतिष्मता रथेन।

'उषा बडे तेजस्वी रथसे आती है।

१६२ स्वधया युज्यमानं रथं आस्थात् यं सयुजः अश्वासः आवहन्ति।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

' अन्नसे भरपूर भरे हुए रथपर उषा बैठी है और उसके रथके साथ उत्तम शिक्षित घोडे जोते हैं जो उसके रथको खींचते हैं ।

२६१ उषा देवी सुवितास बोधयन्ती सयुजा रथेन ईयते ।

इस तरह उषाके रथका वर्णन है । वह रथ बडा है, चन्द्रमाके समान वह तेजस्वी है, सूर्योदयसे पूर्व ही वह रथ जोता जाता है, उसके घोडे उत्तम शिक्षित हैं, वे इशारेसे चलते हैं, वे लाल रंगके हैं । इस तरह रथका वर्णन है । वैदिक समयकी स्त्रियां इस तरह सुन्दर रथमें बैठकर घूमनेके लिये जाती थीं । यह स्त्रीका आदर्श है । स्त्रियां स्वयं रथको चलावें । सवेरे ही उठकर रथमें बैठकर भ्रमण करें । यह स्त्रियोंके स्वास्थ्यके लिये भी अत्यंत आवश्यक है ।

५६ गोमतीः अश्वदाः ताः सर्ववीराः उषासः ।

" उषाएं गौवोंसे युक्त, घोडोंको दानमें देनेवाली, और सब प्रकारके वीरोंसे युक्त होती हैं । " गौवें और घोडे घरमें रहें और घरके सुपुत्र वीर बनें । घरके बालकोंको ऐसी सुशिक्षा मिलनी चाहिये कि जिससे वे उत्तम वीर बनें और अपना तथा अपने राष्ट्रका संरक्षण कर सकें ।

७० गोमतीः अश्वावतीः भद्रा उषासः ।

' गौओंसे युक्त और घोडोंसे युक्त ये उषाएं कल्याण करनेवाली हैं । ' लोगोंका कल्याण करती हैं । घरकी स्त्रियां घरकी गौओं और घरके घोडोंका पालन अच्छी तरह करें ।

९६ उषसः ! ऋतयुग्भिः अश्वैः भुवनानि । परि प्रयाथ ।

' हे उषाओ ! तुम सरलतासे जोते जानेवाले घोडोंको अपने रथको जोतकर सब भुवनोंमें जाती है । ' इस मंत्रमें वर्णन किया है कि उषाके रथके घोडे अत्यंत उत्तम शिक्षित रहते हैं, जो सहजहीसे जोते जाते हैं । ऐसे शिक्षित घोडे अपने पास होने चाहिये यह इसका आशय है ।

१०४ गवां माता उषा ।

१०५ गवां माता असि । वस्व ईशिषे ।

' उषा गौओंका पालन करती है । वह धनकी स्वामिनी है । '

१४३ उषसं वहन्तः अरुषासः चित्रा अश्वाः ।

' उषाके रथको जोते घोडे लाल रंगके हैं और वे विलक्षण चित्र विचित्र दीखते हैं । '

इस तरह उषाके रथका और घोडोंका वर्णन वेदके मंत्रोंमें है । यह देखनेसे पता चलता है कि घोडे कैसे होने चाहिये, रथ कैसे सुन्दर होने चाहिये और घरमें गौवें भी कैसी उत्तम दुधारू होनी चाहिये ।

अन्न

उषा अपने पास अन्न और धन रखती है और यह इनका दान भी करती है । इस विषयके मंत्र अब देखिये—

२६ सुकृते सुदानवे विश्वा इषः वहन्तीः ।

' उत्तम कर्म करनेवालों और उत्तम दान देनेवालोंके लिये अनेक प्रकारके अन्न यह उषा लाकर देती है । ' तथा—

६० बृहती सनुत्री वाजं जयन्ती युवती आगन् ।

' बडी दान देनेवाली अन्नको जीतकर लाती है ऐसी तरुणी स्त्री आगयी है । ' तरुणी स्त्री ऐसी हो कि वह अपना धन संरक्षण करनेमें समर्थ हो, जो विजय प्राप्त कर सकती है । '

११७ हे दिवः दुहितः । नः गोमतीः इषः आवह ।

' हे स्वर्गकन्ये ! हमें गौके दूधके साथ अन्न ला दो । ' हमें ऐसे अन्न चाहिये कि जिनके साथ गायका दूध, दही, मक्खन, घी आदि पर्याप्त प्रमाणमें मिल सकता हो । अन्नके साथ पर्याप्त गोरसका होना अत्यंत आवश्यक है ।

१३४ उषसः दाशुषे मर्त्याय श्रवः वाजं इषं ऊर्जं वहन्तीः वीरवत् रत्नं अवः निधात् ।

' उषाएं दाता मनुष्यको यश, अन्न, बल, और सामर्थ्य लाती हैं और वीर युक्त रत्न और संरक्षण देती हैं । '

उषा उत्तम अन्न तैयार करती है, उससे बल, सामर्थ्य वीर्य आयु बढती है । इस अन्नके साथ गोरसके पदार्थ रहते हैं । ऐसा अन्न मनुष्योंको मिलना चाहिये ।

धन

स्त्री अपने पास अपना निज धन रख सकती है वा नहीं । इस विषयमें उषाके मंत्रोंमें स्पष्ट निर्देश ऐसे हैं कि स्त्रीका निजधन होता है । इस विषयमें ये मंत्र देखिये—

११ मघोनी उषा ।

४५ एषा दिवः दुहिता शुक्रवासाः युवतिः विश्वस्य पार्थिवस्य वस्वः ईशाना व्युच्छन्ती प्रत्यदर्शि ।

' यह उषा (मघोनी) धनवाली है । यह स्वर्गकन्या शुभ्र वस्त्र पहनकर सब पार्थिव धनकी स्वामिनी स्त्री प्रकाशती है ऐसा दीख रहा है । '

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५२ वार्याणि आवहन्ती चेकिताना
चित्रं केतुं कृणुते ।

'सब उत्तम धनोंको धारण करनेवाली यह स्त्री ज्ञान फैलाती हुई अपने विलक्षण प्रकाशध्वजको फैलाती है ।'

६२ वसूनां अग्रं अग्रं भजते ।

'धनोंमें श्रेष्ठ धनका ही यह सेवन करती है ।

१२६ मघोनी वस्वी दक्षिणा अभूत् ।

'धनवाली उषा धनको पास रखती है और दक्षतासे रहती है ।'

१४२ वाजिनीवती चित्रामघा वसूनां राय ईशे ।

'धनोंवाली विलक्षण बडी संपत्ति अपने पास रखनेवाली उषा सब प्रकारके धन ऐश्वर्योंपर स्वामित्व करती है ।'

२३८ उषसः रेवत् ऊषुः

'उषायें धनके साथ प्रकाशती हैं ।'

इस तरह उषा स्त्री होनेपर वह धन ऐश्वर्य अपने पास रखती है । स्त्रीका पूर्ण स्वामित्व धनपर होता है यह इन मंत्रोंसे स्पष्ट हुआ । पूर्ण स्वामित्व धनपर रहनेसे ही वह उषा स्त्री धनोंका दान अपनी इच्छासे करती है । इस विषयके मंत्र अब देखिये-

स्त्री धनका दान करती है

उषा धनका दान करती है इस विषयमें निम्न लिखित मंत्र देखिये-

१२ अस्मभ्यं भूरि सौभगं आवहन्ती ।

'हमें देनेके लिये बहुत उत्तम धन उषा लाती है ।'

५८ चित्रं भद्रं अग्रः उषसः वहन्ति ।

'विलक्षण कल्याण करनेवाला धन लाकर हमें देती हैं ।'

१३० अवाता उक्षभिः वरं वहसि ।

'अप्रतिहत गतिवाली बैलोंपर लदकर श्रेष्ठधन लाती है ।

१६६ सुकृते वसूनि विदधाति ।

'उत्तम कर्म करनेवालेके लिये उषा अनेक प्रकारके धन देती है ।'

१७४ पुरु स्पार्हं वहसि, दाशुषे मयः रत्नं ।

'बहुत स्पृहणीय धन धारण करती है और वह आनन्द-दायक रत्न दाताको देती है ।'

इस रीतिसे अनेक मंत्रोंमें उषाके दान करनेके विषयमें वर्णन है । उषाके पास धन है और वह धन सत्पात्रको दानमें देती है । इसीलिये मांगनेवाले लोग उषाके पास धन मांगते हैं । ऐसे मंत्र भी अनेक हैं, उनमें कुछ मंत्र देखिये —

३ त्वं वाजेभिः आगहि, अस्मे रयिं निधारय ।

'तूं धनोंके साथ आ और हमें धन दो ।'

४ बृहता द्युम्नेन सह ।

'बडे तेजस्वी धनके साथ आजाओ ।

५ मघोनां राधः चोद ।

'धनवानोंके पास जैसा धन है वैसा धन हमें दो ।'

१५ हे उषः ! गोमत् अश्ववत् उक्थ्यं सुवीर्यं वाज अस्मासु धाः ।

'हे उषा ! तू गौओं और घोडोंसे युक्त प्रशंसनीय और वीर्य बढानेवाला धन हमें दे ।' हमें धन ऐसा चाहिये कि जिसके साथ हमारे घरमें बहुत गौवें और घोडे हों, और जिस धनसे हमारा वीर्य बल और सामर्थ्य बडे और बहुत प्रशंसा हो ।

१६ सा नः विश्ववारं सुपेशसं सुग्म्यं रयिं ददातु ।

'वह उषा हमें सबको स्वीकरणीय, सुन्दर, सुखदायी धन देवे ।'

१७ सा शुक्रेण शोचिषा राधसा

'वह उषा तेजस्वी वीर्य और बलके साथ हमारे पास आवे ।'

१९ हे उषः ! बृहता विश्वपेशसा राया,
विश्वतुरा द्युम्नेन, इळाभिः वाजैः संमिमिक्ष ।

'हे उषा ! तू बडे सबसे अधिक सुन्दर धनसे, शत्रुनाशक तेजस्वी वैभवसे तथा बलवर्धक अन्नोंसे हमें युक्त कर ।'

२० भद्रेभिः आगहि

'कल्याण करनेवाले धनोंके साथ आओ ।'

३० प्रजावतः नृवतः अश्वबुध्यान्
गो अग्रान् वाजान् उपमासि ।

'संतानों और वीर पुरुषोंके साथ रहनेवाले, घोडों तथा गायोंके साथ रहनेवाले अन्नों, धनों, बलों और सामर्थ्योंको हमे दे दो ।'

३१ यशसं सुवीरं दासप्रवर्ग्यं
अश्वबुध्यं रयिं अश्याम् ।

'यशस्वी, वीरों, सेवकों और घोडोंके साथ रहनेवाला धन हमें चाहिये ।' ऐसा धन हमें दे दो ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३६ अस्मभ्यं चित्रं आभर
येन तोकं तनयं च धामहे ।

' हमें विलक्षण श्रेष्ठ धन भरपूर भर दे, जिससे हम पुत्र-पौत्रोंका भरण पोषण उत्तम प्रकार कर सकेंगे । ' अर्थात् हमें पुत्र-पौत्र हों, उनका पोषण उत्तम रीतिसे होता रहे और हम सदा धनधान्य ऐश्वर्यसे समृद्ध हों ।

३८ नः विश्वा सौभगानि आवह ।

' हमें सब प्रकारके धन और ऐश्वर्ययुक्त भाग्य दे । '

६४ विभातीः उषसः तमसा अपगूळ्हा
स्पार्हा वसूनि आविः कृण्वन्ति ।

' तेजस्विनी उषाएं अन्धकारसे छिपे स्पृहणीय धनोंको प्रकाशित करती हैं । '

८४ युष्माकेन अवसा शतिनं सहस्रिणं
वाजं सनेम ।

' उषाओंकी कृपासे सैंकडों और सहस्रों प्रकारके धन हम प्राप्त करेंगे । '

१०१ विभातीः देवीः अस्मासु
प्रजावन्तं रयिं यच्छत ।

'प्रकाशनेवाली दिव्य उषायें हमारे लिये सन्तानयुक्त धन देवें ।'

१०१ स्योनात् वः प्रतिबुध्यमाना
सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।

' उषाओंके द्वारा हम सुखसे जाग्रत हो जानेपर उत्तम वीर्य युक्त धनके स्वामी बनें । '

११० हे उषः ! नः महे राये बोधय ।

' हे उषा ! हमें बडा धन प्राप्त करनेके लिये जाग्रत कर। '

११५ सूरिषु वीरवत् यशः आधाः
अन्हयाः राधांसि नः अरासत ।

' 'ज्ञानियोंको वीरयुक्त यश, संतानयुक्त धन दे और क्षीण न होनेवाले ऐश्वर्य दे । '

११६ द्युम्नं बृहत् द्युम्नं यशः आवह
अश्व्या गव्या राधांसि न भजन्ते ।

' बडा तेजस्वी धनयुक्त यश हमें दो, और घोडों और गौवोंसे युक्त धन भी दो । '

१३० सा वरं आवह ।

' वह तू श्रेष्ठ धन हमें ले आ । '

१३१ दाशुषे मर्त्याय भूरि वामं वहासि ।

१३५ विधते दाशुषे वीराय रत्नं निवहथ ।
१३७ सुवीरं रयिं रिरीहि, उरुगायं श्रवः धेहि ।

' दाता मानवके लिये बहुत धन दो, रत्न दो और उत्तम वीरोंके साथ रहनेवाला धन और अत्यंत प्रशंसा होने योग्य यश दे दो । '

१३९ चित्रं यशसं रयिं अस्मे धेहि ।

' विलक्षण यशस्वी धन हमें दे दो ।'

१४५ अस्मे गोमत् अश्वावत् वीरवत् रत्नं
पुरुभोजः धेहि ।

' हमें गौओं, घोडों और वीरोंके साथ रहनेवाला रत्न दो और बहुत अन्न भी दो ।

१५१ दीर्घश्रुतं रयिं अस्मे दधाना ।

' बहुतों द्वारा प्रशंसित धन हमें उषा देती है ।

१५६ वसूनि आभर ।

' धनोंको भरपूर भर दो । '

१५८ सा अस्मासु बृहन्तं ऋष्वं रयिं धाः ।

' वह उषा हमारे लिये बडा धन देवे । '

१६८ देवं देवं राधसे चोदयन्ती ।

प्रत्येक कर्मकर्ताको ऐश्वर्य प्राप्त करनेके लिये प्रेरणा करती हैं। ये ऐसे अनेक मंत्र हैं । इनमेंसे कुछ मंत्र यहां नमूनेके लिये दिये हैं । इनसे स्पष्ट हो जाता है कि उषा धन देती है और धन प्राप्त करनेके लिये प्रेरणा भी करती है । धनकी मांग उसके ही पास की जाती है कि जिसके अधिकारमें धन होता है। जिसके पास अपना धन न हो वह धन दूसरोंको किस तरह दे सकती है ?

११९ हे उषः ! एतावत् वा भूयः वा दातुं अर्हसि ।

' उषा इतना अथवा इससे अधिक दान करनेके लिये समर्थ है । ' इसका कारण यही है कि जो धन उषाके पास है वह उसका अपना निज धन है । उसका इच्छानुसार दान करनेके लिये किसी दूसरेसे पूछनेकी अथवा दूसरेसे आज्ञा लेनेकी आवश्यकता नहीं है ।

इससे सिद्ध होता है कि उषादेवीके पास धन रहता है, जो वह दूसरोंको देती है । दान करनेका पूर्ण अधिकार उसका अपने धनपर रहता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

' यद्देवा अकुर्वन्, तत् करवाणि ' (श० प० ब्रा०) जो देव करते हैं वैसा मैं करूंगा। यह मानवोंके व्यवहारकी प्रणाली है। जो देव करते हैं वह मनुष्योंको करना योग्य है। इस नियमानुसार उषा अपना धन रखती है, योग्य सत्पात्रमें दान देती है, वैसा ही मानवी स्त्रियां अपने पास धन रखें और सत्पात्रमें उसका दान करें।

उषाके लिये नमन

इस उषाको पूर्वोक्त कारणसे सब लोग नमन करते हैं, देखिये।

११ विश्वं जगत् अस्याः चक्षसे ननाम।

' सब जगत् इसको देखते ही नमस्कार करता है। ' इतना इसका महत्त्व लोग मानते हैं। यह उठकर सबको जगाती है, कर्म करनेके लिये प्रेरित करती है, धन देती है, छिपा धन प्रकट करती है, ऐसे इसके अनंत उपकार हैं। इसलिये कृतज्ञ होकर सब लोग इसको नमन करते हैं।

उषाका ध्वज

उषाका अपना ध्वज है। वह लाल रंगका ध्वज है। देखिये—

२४ उषसः केतुं अक्रत।

' उषाएं अपने ध्वजको फहराती हैं। '

१४७ पुरस्तात् उषसः केतुः अभूत्।

३१६ उषसः पुरस्तात् जायमानः केतुः।

' उषाका ध्वज पूर्व दिशामें दीख रहा है। पहिलेसे दूरसे उषाका ध्वज ऊपर फहर रहा है। ' उषा अपने ध्वजको अपने रथपर चढाती है, जिसको देखनेसे उषाके आनेका ज्ञान लोगोंको होता है।

इस रीतिसे उषाके ध्वजका वर्णन मंत्रोंमें है।

न्यायालय

७८ अभ्राता इव प्रतीची पुंसः एति
धनानां सनये गर्तारुक् इव।

' जिसका (अ-भ्राता) भाई नहीं है ऐसी स्त्री, (धनानां सनये) धनोंके अपने विभागको प्राप्त करनेके लिये (गर्त-आरुक्) न्यायालयकी सीढी चढती है, उस तरह आश्रय रहित स्त्री पंचोंके पाससे अपने विभागका निर्णय करावे। यहां उषा भ्रातृरहित स्त्री न्यायालयमें अपने धनका विभाग प्राप्त करनेके लिये आती है, ऐसा आलंकारिक वर्णन है। यह वर्णन इसलिये यहां अलंकार रचकर किया है कि असहाय स्त्रीको भी पंचोंद्वारा योग्य न्याय मिलना चाहिये, यह सब लोकोंको विदित हो जाय। असहाय स्त्रीको भी आर्य जातीमें कष्ट नहीं पहुंचने चाहिये। उसको धनका योग्य विभाग मिलना चाहिये। और उसकी आजीविका चलानेका प्रबंध राज्यप्रबंध द्वारा होना चाहिये, पिता, माता, पति, भाई ये क्रमसे स्त्रीके सहायक हैं, भाईके पश्चात् दूरके संबंधी। दूरके संबंधी भी न रहे तो ' ग्रामसभा ' के सदस्य उसके सहायक हों। यह भाव यहां है।

उषाके प्रायः सब वर्णन आलंकारिक हैं। उषाकी बहिन रात्री है, भाई दिन है। दिन न हों तो उषा भ्राताके विना हो जाती है। द्यु और भूमि उषाके पिता और माता हैं। यह भूमंडल उषाका घर है। सूर्य उषाका पति है। और जार भी है। जारका मूल अर्थ ' वयोहानि करनेवाला ' है। सूर्य आनेसे उषाकी मृत्यु ही होती है अर्थात् पूर्ण आयुकी हानि होती है। इसपर ऐसा अलंकार रचा गया है कि जारके साथ संबंध हो जानेसे स्त्रीका सर्वस्व नाश होता है, उसका पता लोगोंको लगे। वह भयानक प्रसंग अब देखिये—

जारसे संबंध

स्त्री अपने पतिसे संबंध अवश्य रखे, पर जारके साथ कभी संबंध न रखे। उषा द्युलोककी पुत्री, भू माता इसकी माता। ऐसे श्रेष्ठ कुलमें यह जन्मी इसलिये यह कुलीन है, विद्यावती है, धनवती है, उत्तम तरुणी है। पर इतना होनेपर भी इसकी आंख जारपर पडी, और सूर्य भी इसके पीछे पीछे घूमने लगा। इस तरह होते होते इसका संबंध इस जारसे हुआ।

३४ योषा जारस्य चक्षसा विभाति।

" यह स्त्री जारके प्रकाशसे प्रकाशने लगी है। ' जारने दिये आभूषणों और सुंदर वस्त्रोंसे अपना देह यह स्त्री सजाने लगी।

१४८ यतः जारः इव पर्याचरन्ती
पुनः यती इव न।

' यह उषा जारकी सेवा करने लगी। यती जैसा रहनेका व्रत इसने छोड दिया ' और यह जारिणी बनी। जारने दिये कपडे पहनने लगी, जारने दिये आभूषण धारण करने लगी। जारके पीछे पीछे जाने लगी। संयमसे रहनेका यतिव्रत इसने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोड दिया और जारके साथ नाचने लगी और उषा और सूर्यका संबंध क्षणक्षणमें बढने लगा ।

२०५ शुक्रः उषः जारः न ।

' तेजस्वी बलवान यह सूर्य उषाको जारके समान ही है ।' यह उषा अब इस सूर्यरूपी जारके घरके पास जाकर रहने लगी । उसके साथ घूमने लगी । उस जारपर अपना मन रखने लगी ।

२०६ उषः न जारः

**२११ मर्यः योषां न सूर्यः रोचमानां
उषसं देवीं पश्चात् अभ्येति ।**

' जिस तरह पुरुष स्त्रीके पीछे जाता है, उस तरह यह सूर्य तेजस्वी सुन्दरी उषादेवीके पीछे पीछे जाने लगा ।' इस तरह उषाका संबंध इस जारके साथ बढने लगा ।

२१६ जारः ससतीं पुरंधिं आ प्रबोधय ।

' जार जिस तरह सोती स्त्रीको जगाता है ।' उस तरह यह सूर्य उषाको सवेरे ही जगाने लगा और उषा भी उसका जगानेका संकेत सुनकर जागने लगी और उसके साथ घूमने लगी ।

इस तरह यह स्वर्गीय कन्या जारिणी बनने लगी । तो ऐसी बडे कुलमें उत्पन्न हुई सुन्दर तरुणीकी भी वैदिक राज्यमें क्षमा नहीं हो सकती । बडे घरानेकी है, धनवाली है, सुन्दरी है, कर्ममें कुशल है, इसकी प्रशंसा करनेवाले बहुत हैं तथापि वैदिकशासनमें ऐसे अपराधकी क्षमा नहीं हो सकती । इस जारिणीको भी बडा कठोर दण्ड भोगना पडा–

२२९ उषसः अनः वज्रेण संपिपेष । ऋ० २।१५।६

२६६ स्त्रियं दुर्हणायुवं वधीः दुहितरं दिवः । ऋ० ४।३०।८

**२६७ दिवः दुहितरं महीयमानां उषासं इन्द्रः
सं पिणक् ।** ऋ० ४।३०।९

**२६८ वृषा यत् सीं निशिश्नथत् ।
उषा विभ्युषी संपिष्टात् अपसरत् ।** ऋ० ४।३०।१०

३८६ उषा अनः अजहात् । ऋ० १।१७२।४

**२६९ एतत् अस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्याः ।
ससार सीं परावतः ।** ऋ० ४।३०।११

' उषाका रथ इन्द्रने वज्रके आघातसे तोड दिया । स्वर्ग-कन्या भी जब वह दुष्ट विचार और दुराचार करने लगी, तब उसका भी उस इन्द्रने वध किया । स्वर्गकन्याका भी रथ उसने चूर्ण चूर्ण कर दिया । जब इन्द्रने उसका रथ तोड दिया, जब वह भयभीत हो गयी और उस टूटे रथसे पीछे हट गयी । उषाने अपना टूटा रथ छोड दिया । यह टूटा हुआ इसका रथ विपाशा नदीके किनारेपर पडा है और उषा वहांसे दूर भाग गयी है ।'

इस तरह दुराचारमें प्रवृत्त हुई तरुणीको बडा कठोर दण्ड मिला है । यह देखकर कोई स्त्री या पुरुष ऐसा जार कर्म करनेके लिये कभी प्रवृत्त न हो । जब द्युलोककी कन्याको भी ऐसा दण्ड भोगना पडता है, तब अन्योंको दण्ड भोगना पडेगा इसमें संदेह ही क्या है ?

इसलिये कोई स्त्री जारसे संबंध न रखे । स्त्रीको सतिधर्मसे चलना चाहिये । पति सेवा परायण होना चाहिये । कभी जारके संपर्कमें नहीं जाना चाहिये । एक पांव इस बुरे मार्गमें गया तो वहांसे स्त्रीपुरुष फिसल ही जाते हैं । एक बार बुरे मार्गमें पांव पडा तो बचना कठिन हो जाता है । इसलिये पहिलेसे ही दक्ष रहना चाहिये । आत्मसंयम करना चाहिये । अपना स्वाधीन आचरण रखना चाहिये । आत्मसंयम ही मानवोंका तारण करनेवाला है ।

यहां सर्वत्र अलंकारका वर्णन है । एक बडे कुलमें उत्तम पुत्री हुई वह आगे बढते बढते बहुत अच्छी हुई । आगे दुराचरणमें प्रवृत्त होकर फंस गयी और विनष्ट हुई । इस कथामें सर्वत्र अलंकार होनेपर भी बडे बोध मिलते हैं । जो अच्छा है उसका स्वीकार करना चाहिये और हानिकारक है उसका त्याग करना चाहिये ।

वेद अलंकारोंके वर्णनोंसे किस तरह उत्तम बोध देता है, यह इस उषा वर्णनमें पाठकोंको पता लग सकता है । पाठक स्त्री-पुरुष इससे बडा बोध प्राप्त कर सकते हैं ।

समाप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.